प्राचीन इतिहास।

A MANUAL OF ANCIENT HISTORY IN HINDI

Translated chiefly from Taylor's Manual of Ancient History, for the use of the Students preparing for the Proficiency in Arts Examination of the Punjab University College.

BY

BHAI GURMUKH SINGH,

Patiala Translator and Assistant Professor of General Knowledge (Hindi Side).

AT THE

Oriental College, Lahore,

UNDER THE DIRECTION OF

DR. G. W. LEITNER, M.A., LL. D.,

REGISTRAR, PUNJAB UNIVERSITY COLLEGE.

VOLUME I.

(up to the end of the Greek period).

प्रथम भाग।

LAHORE:

PRINTED AT THE "ANJUMAN-I-PUNJAB," PRESS, BY HARKISHAN DAS.

1881.

प्राचीन इतिहास ।

A MANUAL OF ANCIENT HISTORY IN HINDI

Translated chiefly from Taylor's Manual of Ancient History, for the use of the Students preparing for the Proficiency in Arts Examination of the Punjab University College.

BY

BHAI GURMUKH SINGH,
Patiala Translator and Assistant Professor of General Knowledge (Hindi Side).
AT THE
Oriental College, Lahore,

UNDER THE DIRECTION OF

DR. G. W. LEITNER, M.A., LL. D.,

REGISTRAR, PUNJAB UNIVERSITY COLLEGE.

VOLUME I.

(up to the end of the Greek period).

प्रथम भाग ।

LAHORE:
PRINTED AT THE "ANJUMAN-I-PUNJAB," PRESS, BY HARKISHAN DAS.
1881.

प्राचीन इतिहास ।

A MANUAL OF ANCIENT HISTORY IN HINDI

Translated chiefly from Taylor's Manual of Ancient History, for the use of the Students preparing for the Proficiency in Arts Examination of the Punjab University College.

BY

BHAI GURMUKH SINGH,

Patiala Translator and Assistant Professor of General Knowledge (Hindi Side).

AT THE

Oriental College, Lahore,

UNDER THE DIRECTION OF

DR. G. W. LEITNER, M.A., LL. D.,

REGISTRAR, PUNJAB UNIVERSITY COLLEGE.

VOLUME I.

(up to the end of the Greek period).

प्रथम भाग ।

LAHORE:

PRINTED AT THE "ANJUMAN-I-PUNJAB," PRESS, BY HARKISHAN DAS.

1881.

मिसर का इतिहास

पहला अध्याय

भूगोल

मिसर देशमें राज्याधिकार और प्रजापालन व्यवहार का अन्यदेशों मे पहलेही प्रचार था (इस विषयमे प्रमाण बहुत मिलते हैं) परन्तु हम यह नहीं कहसकते कि हिन्दुस्तान में इससे पहले पूर्वोक्त प्रचार नथा इस देशवासियों के ऐसे वृद्धि वैभवों का कारण इस (मिसर) देशकी नैसर्गिक अवस्था थी।

सब देशोंमें नदियों के किनारे पर जो भूमि होती है वहांके वासियों की वृद्धि हृद्धि किसानि करने से होती है और मिसर में नील बहुत बड़ी नदी है अतएव इसके तट निवासियों की वृद्धि खेती करने से बढ़ीनील नदी मिसर का एक बड़ा भारी चिन्हही नहीं किन्तु इसके विशेषतः वार्षिक प्रवाहोंसे भी मिसरियों के धर्माचार और वृद्धि पर बहुत असर हुआ क्योंकि इसके बिना मिसर समीपि देशोंकी तरह ऊषर रहता जब इजिकेल भविष्यद्वक्ताने मिसर पर क्रोध प्रकट किया तो यह कहा कि परमेश्वर इस नदी और देशका नाश करे।

इस देशमें शिष्टाचार का प्रारम्भ नदीके दक्षिण से उत्तर को हो-
ता गया।

मिसर में नील का प्रवेश सिएनि के पास यहां एक बड़ा झ-
रना है होताहै वहां से जो नील के चौड़ाव में केमिस तक आतीहै
यहांसे चौड़ाव बढ़जाता है कारकेसारस तक निरन्तर बहकर
आगे दो धारों में विभक्त होती है और इन धारोंके बीच की भू-
मि डेलटा कहलाती है डेलटा एक यूनानी त्रिकोणाकार अक्षर है
सिएनि और केमिस के बीच की जो भूमि है उसे दक्षिण मि-
सर अर्थात् अपर इजिप्ट और उसके आगे जो भाग है उसे मध्यमि-
सर वा मिडल इजिप्ट डेलटा को लोवर इजिप्ट वा उत्तर मिसर कह-
ते हैं लोवर में मेह न्यून होता है मिसर नीलनदी के वार्षिक
चढ़ाव से उर्वरा होती है जब इथोपिया में मई से नियमानुकूल
वर्षा होती है दक्षिण देशों की नदियां सब इसमें आकर मिलती
हैं और इस नदीका चढ़ाव महीने जून के मध्य से होता है और
अगस्त में इतनी बढ़ जाती है कि तटसे बाहिर निकलजाती है
और सब देश पानीही दिखाई देता है और नगर टापू दिखाई
देते हैं अकटूबर के महीने घटने लगती है और इसके अनन्त-
र सब घट जाती है और वह भूमि यहां पानी फिरजाता है उर्व-
रा होजाती है।

वर्षमें दो फसलें होती हैं और नहरें निकाली गई हैं जिनके
द्वारा दूरतक पानी पहुंच जाता है।

नील की घाटी के पूर्व एक पर्वतश्रेणी है जिसमें से संगमरमर प-

त्थर निकलता है इसमें खेती तो नहीं होती किन्तु कहीं २ चारा होता है इन पर्वतों के दक्षिण ओर फिलि नाम नगर की तरफ सख्त पत्थर बहुत है इसकी खानों में से इतनी बड़ी शिला निकलती थीं कि एकही शिलासे मिसरी जन बड़े २ स्मरणार्थक स्तम्भ बनाते थे और इन पहाड़ों में आजतक वह चिन्ह खुदे हुए पाये जाते हैं जिनसे मिसरी लोग बड़ी २ मूर्तियें बनाते थे और इन मूर्तियों को एक प्रकार की लोहे की सड़क पर मनुष्यों के बल द्वारा जहां वे चाहते थे ले जाते थे। सियेनि के उत्तर लाटोपोलिस नगर तक खारी अथवा रेतले पत्थरों के पहाड़ हैं और इन्हीं पत्थरों से मिसरियों ने बड़े मन्दिर बनाए थे जो दक्षिण मिसर में स्थित हैं यह पत्थर बहुत सख्त नहीं है इसलिये इसकी नाना प्रकार की प्रतिमा बहुत सुगमता से बन सकती थीं इन पहाड़ों के उत्तर भाग में चूनामय पत्थर है और इन्हीं पहाड़ों से पिरामिड वा सूचीकार स्तम्भ (अलबेस्टरस) बनाने की मूल वस्तु ली गयी थीं यह पहाड़ लगातार नहीं चलेगये परन्तु कहीं २ इनकी घाटियां पूर्व से पश्चिम तक हैं और इनके रेड सी (लाल) समुद्र तक फैलने से वाणिज्य के लिये अच्छे मार्ग बने हुये हैं।

नील की पश्चिमी घाटी पर एक पहाड़ी है जो रेत से ढकी हुई है और जिसका ढाल बड़े रेगिस्तान तक चला जाता है परन्तु इसकी खेती उर्वरा और ऊसर भूमि को जुदा करती नहीं दिखाई देती मध्य मिसर में यहां पर घाटी चौड़ी होने लगती है वहां रेतली ऊसर भूमि भाग जो कि तीन मील चौड़ा है पहाड़ और खेतीवाली भूमि के बीच आगया है यह स्थान प्राचीन काल से बड़ा भयदायक है

और इसमें और पहाड़ियों में असंख्य समाधियां बनी हुई हैं — इस उदासीन और मोदक स्थान का भी मिसरियों के जाती स्वभाव पर बड़ा भारी गुण हुआ पश्चिमी पहाड़ी जंगल की रेतसे नील की घाटी के दबने से बचाती है परन्तु सारा नहीं बचासकती क्योंकि कई मीनार आधे रेतमें दब गये हैं तो भी यह पहाड़ी यदि न होती तो सम्पूर्ण मिसर रेतमें दबजाता मिसर के पश्चिम किनारे पर बड़ा रेतका जंगल है इसमें कहीं २ उर्वरा स्थान हैं जिनमें खजूरके पेड़ हैं इनको उएसिस कहते हैं उनमें से दो जगह पुरातन समय से प्रसिद्ध हैं प्राचीन भूगोल विद्याजनोंने उन्हें मिसर मेंही वर्णन किया है उनमें से बड़े स्थान में जूपीटर ऐमनन का विख्यात मंदिर था जिसमें आकाशवाणी होतीथी और जिसपर वहांकेलोग यूनानी और कई एक और जाती निश्चय रखती थीं उत्तर मिसर में पहले समय की बहुत मूर्तियें और मंदिर पायेजाते हैं पहले हूनें से आगे बढ़कर दो फिली और एलफेनटाईन नाम टापू हैं जिनमें बड़े२ भारी ऊंचे प्राचीनस्थान बने हुए हैं इनके चारों ओर खजूरों के वृक्ष उन गिरे हुये स्थानों में हैं जिनको यूनान रोम और अर्बवालों ने बनायाथा परन्तु जो सब कालपाकर गिरजाते रहे मिसर के प्राचीन सीमान्त सियेनी के दक्षिण आमबोस सिलसिलस और इलिथ्या बड़े प्रसिद्ध नगर थे इससे आगे एक और अपालो नाम बड़ा नगर था जिसमें थीबस नगर को छोड़ सबसे सुंदर मंदिर थे और उत्तर को जाते हुए हुनविस और लाटापोलिस और हर्मोनथीस नगर गिरेपड़े हुए पाते हैं इनके आगे थीबस इस आश्चर्य देशकी राजधानी थी

जिसको मेमथ अर्थात् मनु[illegible] के उद्योग का एक बड़ा हाथी बना हुआ है कहते थे थीबस। [illegible]सको डियोपोलिस भी कहते थे (अर्थात् जुपीटर वा थेमनन का नगर) होमर नामक कवी से ले आजतक लोगों में पृथिवी पर अद्भुत स्थान समझाजाता था नदीकी दोनों ओरकी दोनों घाटियों में जिनका अन्तर नौ मील के समीप है बहुत से मंदिर थे जिनमें नाना प्रकार की बड़ी स्फिनिक्स आदि मूर्तियां बनी हुई थीं जहां बसती नहीं थी वहां समाधें और कबरें दूरतक फैलती चली गई थीं यह नगर नदी के दोनों ओर बसा हुआ था परन्तु यह निश्चिय नहीं कि इन तटोंके बीच कोई पुल भी था वा नहीं पश्चिम तट पर तो चारों ओर श्रेष्ठ मनुष्यों की समाधियां थी इसलिये जानाजाता है कि वहां बहुत बस्ती नथी।

परन्तु नदी के दूसरे तट पर सारी समाधियां नदी के निकट बनी हुई थीं और इन और पूर्वी पहाड़ों के बीच में अवश्य ही बहुत लोग रहते होंगे — पश्चिम दिशा पर मदिनिट बाहू — मेमन की प्रतिमा — ओसमनडियास की समाधि और गुरु का मंदिर ये सब प्रसिद्ध स्थान थे इन पर मिसर का वृत्तान्त बहुत से चित्रादि में लिखा था और यह भी जानागया है कि तोलने पर सब से बड़ी मूर्ति ८०० टन अर्थात् २२४०० मन की हुई थी पूर्वदिशा में लक्सोर और कारनक बड़े भारी गिरेहुये स्थान थे जिनमें सुन्दर और गुणदायक वृत्तान्त मूर्तियों में खुदे हुये मिलते हैं।

लीविया के पर्वत श्रेणीयों में बहुत गुफा हैं जो बड़े राजाओं और श्रेष्ट लोगों के लिये समाधें बनी हुई थीं नाना प्रकार के चित्रादि खुदे हुए हैं जिनसे प्राचीन मिसर निवासियों के वृत्तान्त पाये जाते हैं। थीवस के दक्षिण में टिनटाईरिस या जिसको अब डेनडीरा भी कहते हैं इस के बड़े भारी मंदिर पर ग्रह मंडल बना हुआ है। मध्य मिसर की घाटी ऊर्ध्व घाटी से अधिक चौड़ी है इस देश में मोईरिस नामक एक बड़ा जलाशय नील के चढ़ाव के पीछे उस नदी के पानी रोकने को बना हुआ है नहरों के कारण इस भाग में खेती बहुत होती है विशेष करके फयूम नामक परदेश की भूमि जो आरिसनोई नगर के (जिसको कराकोडाईल का नगर भी कहते थे) निकट थी इसीकारण उर्वरा थी और इसी के समीप एक बड़ा बहुचक्र मार्गी किला था जिसके खंडरों का अब बड़ा भारी ढेर बना पड़ा है।

आरसिनोई के दक्षिण नील के पश्चिम तट पर मेमफिस नामक प्रसिद्ध नगर था इसी में वह फैरोह हुये जिनके समय में इब्राहीम यूसफ और इसराईल वंशवाले मिसर में आये और मानिता पाई उनके पीछे हैक्सोस जाती वालों ने भी उस नगर को अपनी राजधानी बनाया और यही कारण मालूम होता है कि इनके निकाले जाने के पीछे थीवस राजधानी हुआ इस नगर के खंडर बहुत कम मिलते हैं परन्तु यहां से बड़े २ सूचीकारस्तम्भ हैं जो मेमफिस और डेलटा के बीच में लीबिया के पहाड़ों पर स्थित हैं और चोपस के बड़े सूचीकारस्तम्भ (पिरामिड) का ५०००००

वगेफ़ुट क्षेत्रफल था। लोअर अर्थात् डेल्टा की भूमि नदी के फैलने से और स्थानों की अपेक्षा अधिक उर्वरा है पश्चिमी पहाड़ों की श्रेणी यहांपर लीबिया के रेगस्तान में गुप्त होजाती है और पूर्वी श्रेणी काइरो नामक नगर के समीप अन्त होजाती है

डेल्टा की सारी भूमि उर्वरा नहीं है क्योंकि कहीं २ ऊसर भूमि भी है यद्यपि यहां शिष्टाचार का बहुत दिनों के पीछे आरम्भ हुआ था तथापि यहां बड़े २ विख्यात नगर थे जैसे साइस न्यक्रेटिस और इसकंद्रिया काल पाकर यहां बहुत परिवर्तन होतेगये और समुद्र के किनारों के जलबन्धकों और नहरों के सुधारने पर लोगों ने ध्यान देना छोड़ दियाथा इसलिये बहुतसे नगरों के खंडर समुद्र में डूबे हुए मिलते हैं सीरिया (शाम) देश की ओर फ्लूसा वा आरम्रीश नगर था इस जगह अच्छा नाव बन्धन स्थान था परन्तु नगर इसकंदरिया जो पश्चिम की ओर रेगस्तान की सीमा पर स्थित है अपने बनाने वाले के नामसे प्रसिद्ध है और इस नगर के बड़े भारी व्यापार से इसको ऐसे स्थान पर बनाने वाले की बड़ी निपुणता और बुद्धि जानीजाती है मिसर के अधिक शिष्टाचार और सभ्यलोग नदी पार के उर्वरा मैदानों में रहते थे और वहां उन्होंने लोगोंपकार और शिल्पविद्या में ऐसी उन्नति की कि यदि समाधियें और मंदिर न होतीं उसका कोईभी विश्वास न करता।

पुरोहित और राजाधिकारियों का यह आशय था कि प्रजा को अच्छी अवस्था में रखें और उनको खेती वाणिज्य और शिल्पविद्या के काम में प्रवृत्त रखें इस लिये गड़रियों और गोपालों

गों को मिसर देशीय लोग अति नीच समझतेथे इसीकारण मिसर
के राजा फैरोह ने गोशन नाम बड़ा उपजाऊ प्रदेश इसराईलियों को
देदिया था क्योंकि इससे न तो उसने देशाचार छोड़ा और न उसको
शाम और अर्ब देश के लोगों के चढ़ाव का भय रहा।

दूसरा प्रकरण

मिसरियों की राजसम्बन्धी और सांसर्गिक अवस्था का वर्णन।

समाधियों के अवशेष से जान पड़ता है कि मिसरियों का श्याम
रंग था और नीच जातियों की अपेक्षा उच्च जाती के लोग सुंदर होते
थे इन वर्णों से यह भी जान पड़ता कि इनकी उत्पत्ति मिश्र वंशों से
हुई थी और उच्च जाती के लोग मीरोई नाम स्थान से आकर नील के
तटों पर बसे हुये चले गये थे इससे अधिक और कुछ निश्चित नहीं
होसकता कई२ यह भी कहते हैं कि मिसरी लोगोंने शिष्टाचार रीति
यें हिन्दुओं से सीखी थीं क्योंकि इन दोनों जातियों के आचार बहुत
मिलते हैं परन्तु यह बात कि हिन्दुस्तान के लोग जहाजों के बिना
अन्य देश को क्योंकर गए विचार से बाहर है हां इसबात में तो संदेह
नहीं कि उस (हिन्दुस्तान) देश के कुछ लोग सिंधु नदी के पास से
अफ्रिका में गए और वहांसे नील नदी पर जा बसे परन्तु यह निश्चय
नहीं होसकता कि ये थोड़े लोग किस भांति इस (मिसर) देश के राजा
और मालिक बन गये इसमें कुछ भी सन्देह नहीं कि हिन्दुस्तान के क्षत्रि
जाती लोग किसी और देश से आकर गंगा के तट पर बसे और अपने

राज्यधर्माचार को इसके तट पर स्थापन किया परन्तु हम यह नहीं कह सकते कि ये लोग कहांसे आएथे और मिसर से कुछ सम्बन्ध रखते थे वा नहीं।

देश प्रकृति से लोगों के आचरण भी भिन्न २ थे इवंके पहाड़ी देशों में कृषी कर्म्म नहीं होसकता था अतएव वहां के लोग गोपाल और गडरिये थे नील के तट समीपी लोग मछुये और नाविक थे और नदी की घाटी के लोग उत्तम और शिष्टाचारी थे इन्होंने जो अपने समय में गृहजीविक व्यवहार और सांसर्गिक शिल्पविद्या में उन्नति की थी सो थोड़ेकाल से जानीगई है इनमें हिन्दुओं के तुल्य जातीभेद होनेथे जो इनकी जीविक व्यवहार की भिन्न २ रीतियों और कदाचित् वंशकी भिन्नता से नियत होगये होंगे इनमें योधा और पुरोहित जातियें उत्तम गिनी जातीथीं और उनसे नीचे काश्तकार व्यापारी और शिल्पविद्या के जानने वाले थे और सबसे नीच जाती गडरियों की थी।

पुरोहित वर्ण के लोगोंने अपने देशका एकही समय में त्याग नहीं किया था किन्तु नदीकी घाटी के अच्छे २ प्रदेशों में समय पाकर बसे गये थे प्रत्येक बस्ती में एक २ मंदिर होताथा और उसके चारों ओर जो काश्तकार रहते थे और खेती करते थे उनसे भिन्न २ नगर बसगये थे इन बस्तियों का नाम जब मिसर में एक अधिपति हुआथा नोम रखागया था इन बस्तियों के विभागों का पता पिछले समय में भी मिलसकता था सेंटसिरिल साहिब लिखते हैं कि मिसरियों ने नोम संज्ञा एक नगर की ओर इसके पड़ोस

की वसतियें और उन ग्रामों की जो इस नगर के अधीनता में होते थे रखी थी प्रत्येक नोम के धर्म्माधिकार और राजाधिकार में बड़ा भेद रहता था यद्यपि मिरोई से मिडिटरेनियन समुद्र तक सामान्यतः तो एकही प्रकार की पूजा प्रचलित थी तो भी देशाचार में प्रत्येक स्थान में भेद होगया था प्रत्येक नगर में एक विशेष देवता माना जाताथा और जो पशु एक नोम में पूजा जाता था दूसरे स्थान में उसकी बहुत प्रतिष्ठा नहीं होती थी इन नोमों का विशेष वृत्तान्त नहीं मिलता तथापि इतना तो जाना गया है कि ये सब अन्त में थीबस और मेम्फिस की राजधानी के अधीन होगये थे। मिसर के सीमान्त वर्त्ती जंगली और भ्रमने वाले लोग नील के समीपस्थ प्रदेशों की धन सम्पत्ती को बढ़ती देखकर प्रायः मिसर पर आक्रमण करने को प्रवृत्त होतेथे अर्बदेश जो कि प्राचीनकाल से आजतक लुटेरे और गड़रियों का धाम होता चला आया है वहां के लोग भी मिसरियों को बहुत कष्ट देते थे इनको हैकसोस अर्थात् गड़रिये राजे कहते थे और इन्होंने बहुत से हमलों के पीछे उत्तर और मध्य मिसर को लेकर पलीऊ सियम के समीप अवरिस नाम एक किला अपने बचाव और स्वदेशियों के आने जाने के लिये बनाया था।

हैकसोस के निकालेजाने पर मिसर में एक अधिपति नियत हुआ और जातिभेद और नोमों के विभाग का भी इसी समय में आरम्भ हुआ मालूम होता है पुरोहित वर्ण के बहुत से कुल विभाग थे जिनमें से प्रत्येक कुल के लोग भिन्नः देवता की

पूजाकरते थे थीवस नगर के थेमनन देवता के मंदिर का पुजारी हिलियोपोलिस नगर के सूर्य्य के मंदिर का पुजारी नहीं होसकता था इसीतरह सूर्य्य के मंदिर के पुजारी थेमनन के मंदिर के पुजारी नहीं होसकते थे नोमों की भिन्न२ आदि उत्पत्ति के कारण जिनको पुरोहित जाती ने स्थापनकिया था यह निबन्ध नियत होगया था इन नोमोंके स्थापन करने वालोंने मंदिर बनाये और वहांके लोगों को खेतिकरना सिखलाया और शिष्टाचार बनाया इसीकारण नोम उनके पैत्रिक धन बनगये इन पुरोहितों के प्रत्येक कुल विभाग में एक अधिष्ठाता हुआ करता था जिसकी गद्दी पैत्रिकधन समझी जाती थी और इसपर विश्वास होसकता है कि राजधानी के मंदिरों के पुजारियों के अधिपति का प्रभुत्व राजाओं के तुल्य होता था और यह प्रभुत्व उनके प्रत्येक शास्त्र वा विद्या के अधिकारी होनेसे और भी अधिक होता था क्योंकि वे लोग केवल पुजारीही नथे किन्तु न्यायाधीश और भविष्यद्वक्ता वैद्य गृह बनानेकी विद्या जानने वाले और पत्थरकी मूर्ति भी बनातेथे।

योधावंश वा क्षत्री लोग दूसरे दर्जे पर थे राज वंश भी उनमें सेही होताथा पहले राजाही सेनापति होता था पुरोहितों की तरह योधाओं के दो भेद थे परन्तु इनका सम्बन्ध विदित नहीं इनकी जीविका के लिये उत्तर मिसर में नोम नियत थे कारण यह था कि मिसर पर एशिया की ओरसे आक्रमणों का भय बहुत रहता था और यहभी कि नील के ऊपर के भाग पर पुरोहित लोग पहले आकर बसेथे।

मिसरियों ही ने सब से प्रथम सेना प्रबन्ध के प्रकार और प्राचीन युद्ध की रीतियें निकाली थीं इसलिये उनके युद्ध कर्म्म का वर्णन न केवल उपकारक ही होगा किन्तु उसके द्वारा ऐशिया के वीर समय के बड़े २ राजाओं और सेनानियों का भी वृत्तान्त मालूम होगा मिसर की सेना में युद्ध योग्य रथ मुख्य गिने जाते थे जो कि इस समय के सवारों के स्थान में काम आते थे यह रथ लकड़ी के होते थे और उनका चौखटा कभी २ पीतल का भी होता था और कभी २ इनपर धातु के पत्र जड़े हुए होते थे इनके पहिये आरों वाले होते थे और सारे बड़ी निपुणता से बनाये जाते थे और इसी कारण रथचक्र निपुणता एक कहावत होगई थी रथ दोनों ओर से कुछ २ खुले होते थे पीछे से सम्पूर्ण खुली होती थी चौखटा बहुत नीचा होता था जिससे रथों के उतरने और चढ़ने में कुछ भी क्लेश न होता था रथ में बैठने की जगह नहीं होती थी लड़ाई और मृगया में योधा खड़े २ रहते थे परन्तु जब दूर जाना होता था उसकी पटड़ी पर चोकड़ी मार बैठते थे। रथों में दो घोड़े जोतते थे और दो मनुष्य चढ़ते थे एक सारथी दूसरा लड़ने वाला सेनानियों का भी यही नियम था और होमर कवि के बहुत से श्लोक इस बात में प्रमाणीक हैं जैसे एक स्थान पर कहा है कि पराक्रम राजा के दो पुत्र एक रथ में चढ़कर युद्ध करने लगे इनमें से एक तो रथवाही था और दूसरा युद्ध करता था

भिन्न २ जातियों के रथों के आकार भिन्न २ होते थे।

मिसरी लोग अश्वपालन और उनकी शिक्षापर बहुत ध्यान देतेथे यहांतक कि और लोग भी नील की घाटी से युद्धयोग्य घोड़े मंगवाया करतेथे राजाओं के घोड़ों का साज नाना प्रकार के रंग और स्वर्ण चांदीआदि से विभूषित होताथा रथों पर एक २ तूणीर और धनुष कोष लगे हुए होते थे जिनपर बहुतसे चित्र बने हुए होतेथे इन धनुर्धारी मिसरियों के तुल्य उस समय मे कोई धनुर्विद्या में प्रवीण नथा यहांतक कि उनकी निपुणता पिछले अंग्रेजी योधाओं के तुल्य थी धनुषही उनका मुख्य जातीय शस्त्र था ये लोग धनुष को यूनानियों और रोमियों की तरह छातीतक नहीं खेंचते थे किन्तु कांन तक खेंच कर मारते थे इसीकारण उनके धनुष बाण अधिक बल रखते थे।

योधावर्ण अपने लड़कों को बालकपन से धनुर्विद्या सिखाते थे और अफ्रिका के रहने वाले जो मिसर के अधीन थे इसीतरह करतेथे अतएव जब जिरिमाया नाम भविष्यद्वक्ता ने मिसर की सेनाका वर्णन किया तो लीडिया के लोगों को धनुषकर्म्म में निपुण कहा इस कहने से उसका तात्पर्य्य छोटे एशिआके लीडिया नगर के निवासियों से नथा किन्तु उस लीडिया देशसे जो आफ्रिकाके उत्तरमें है।

बाण एक गज लम्बे बांसी के बनते थे और इनके मुख कांसे के बने हुये होते थे और पंख भी लगाए जाते थे पैदलों के धनुष सामान्य होतेथे परन्तु रथस्थ योधाओंके धनुओं पर श्रेष्ठ चर्म्म और रत्नादि भी लगे हुए होतेथे। शस्त्रधारी पैदलों के शस्त्र भाले कटार छोटी तलवारें शिरस्त्र ढाल और खड्ग होते थे भाले प्रायःदो

गज लम्बे होतेथे और उनके मूठ धातुके बने हुए होतेथे और ऐसे हलके थे कि एक हाथमे भी फेंके जातेथे तलवार छोटी सरल और दोनों ओर धार वाली होतीथी परन्तु बहुतसे योधा गुरुखड्ग धारण करतेथे गुरुखड्ग बड़े भारी होतेथे यहांतक कि उनका प्रहार करना बड़े बलवान योधाओंका काम था अतएव सामान्यतः बहुत काम में नहीं आतेथे कई प्रकार के कुल्हाड़े गदा और २ शस्त्र भी कभी २ काम में आतेथे इनपर धातु लगीहुई होतीथीं और जब बलवान योधाओंके हाथसे चलतेथे तो अनिवारणीय होतेथे। मिसरियोंकी ढाल चतुष्कोण होतीथी और उसका ऊर्द्धभाग तो गोल और अधोभाग समचतुष्कोण होता था और ऊपरकी ओर छेद होताथा जिसमे पेटी डालकर कांधे पर लटका रखतेथे बहुतसी ढालें बड़ी भी होतीथीं उनपर विविध प्रकारकी आकृति और चिन्ह देते थे जिनसे योधाका वंश और जातिजान पड़तीथी। राजाओं और बड़े २ अफसरोंके ढालों पर बहुत स्वर्णमय और रंगीन अलंकार बने हुए होतेथे मिसरियोंमे और प्राचीन लोगोंमें ढालका खो जाना बहुत निन्दनीय था शिरस्त्राणशस्त्र प्रायः पीतल वा किसी और धातुका बनताथा परंतु सामान्यतः तो वह रूई वा ऊनका बनताथा क्योंकि यह वस्त्र न केवल पहनने के लिये कोमल होती थीं किन्तु शस्त्रोंके प्रहारों को दुर्बल करदेती थीं जब योधा लोग आपसमे अति समीप होकर लड़तेथे उस समय कुल्हाड़े काम मे लाते थे क्योंकि इनपर जो भारी लोहा लगा हुआ होताथा इनका प्रहार प्राण घातिक होताथा

और इनसे केवल कोमल और नरमवस्तु बचातीथी मिसरीयोंके शिरोंपर कलगी नहीं होतीथी मुख्य२ योधा कवच भी पहनतेथे ये कवच प्रायः रूईके अंगरखे होतेथे इनपर धातुपत्र जड़े होतेथे और स्त्री बन्दीजन प्रायः इन्हें बनातेथे और विविध रंगों से चित्रित होतेथे अतएव ऐसे कवच की प्राप्ति बड़ी अपूर्ववस्तु गिनीजातीथी प्रमाण यहहै कि जब मिसिरा नामकयोधा की माताने झरोखेमें से देखाकिउसकेबेटेका रथ नहीं आया तो अपनी साथियोंसे कहा "कि बहुत विलम्ब हुआ और मेरा बेटा नहीं आया तो उन्होंने उत्तर दिया कि हां विलम्ब तो हुआ इसपर इसने कहाकि कदाचित युद्धकी लूटका अभी विभाग नहुआ होगा और जब विभाग होगा तो और योधा तो स्त्रियां लावेंगे और मेरा पुत्र योधाके योग्य विविध वर्ण चित्रित कवच लावेगा" बहुत से मिसरी योधा अपने कवचों पर पत्र नहीं लगातेथे और इसका यह प्रयोजन था कि उनके शिरस्त्र रूईके होतेथे और इस प्रकार के युद्ध वस्त्रको वह धातुपत्रके वस्त्रोंसे अधिक अच्छा जानतेथे यूनान में इफिक्रेटिस नामक सेनानी के समयसे यही रीति चलपड़ी थी।

छोटे शस्त्रधारी पियादोंके पास सरलाकृति और वक्रावक्र कुल्हाड़े और गदा होतेथे उनको नतो कवच से और न नैपणीय शस्त्रसे काम पड़ताथा तत्त्वतः तो इनकी नियत सेना नहीं होतीथी किन्तु लड़ाई के समय ऐसे लोग समीपस्थ नगरों से भर्ती करलीये जातेथे मिसरियोंका स्थौक्त युद्ध विधान यूनानियों के युद्धविधान के तुल्यहीथा केवल यही अन्तरथा कि यूनानी भालोंको बहुत

काममें लातेथे। मिस्र देशमें सेना के युद्धाभ्यास और कवाइदकी रीति श्रेष्ठ थी क्योंकि प्रत्येक सेनामें एक २ ध्वजा होतीथी और उसपर किसी न किसी पशुपक्षकी आकृति होतीथी जिससे यह ज्ञान होताथा कि वह लोग अमुक नोम वा जाती के हैं।

जब कोई मनुष्य भर्ती होताथा तो उसके शरीर के विशेष चिन्ह और उसका नाम रजिष्टर मे लिखे जातेथे और जब भर्ती होचुकतीथी तो योधाओं को नियत कालमें ड्रमकी आवाज पर चलना सिखाया जाताथा यह बात निश्चित नहीं कि मिसरी मूसाके समय में असवारी सेना रखतेथे वा नहीं परन्तु इसबातका तो सम्पूर्ण निश्चय है कि बहुत कालतक उन्होंने ऐसी युद्धयोग्य सेना नहीं रखीथी।

बन्दियों की बड़ी दुर्दशा होतीथी अर्थात् मिसरी उनको मारडालतेथे वा दास बनालेतेथे। इस देशमें धर्म्म और राजाधिकार दोनों मिले रहतेथे प्रत्येक कर्म्मका नियत अनुष्ठान होताथा कि जिसको राजाभी नहीं टला सकताथा अतएव पुरोहित वर्णका प्रभुत्व सबपर फैलगया था और इस प्रभुत्वके स्थिर रखने के लिये छोटी जातियोंमे विविध प्रकारके मिथ्याधर्म्म और पशु पूजन की उन्नति करतेथे परन्तु यह बात तो निश्चित है कि नीच जातियों के धर्म्माचारोंसे इनका धर्म [illegible] और बुद्ध्यनुकूल होताथा उनके सारे धर्म्मानुष्ठानके वृत्तान्तकी जगह यही कहना योग्य होगा कि उनके धर्म्मका मुख्य प्रयोजन और उद्देश्य किसानी करनाथा इसीलिये वे लोग ग्रह विद्याको बहुत मानतेथे क्योंकि इस शास्त्रके द्वारा किसानी योग्यकाल और ऋतुकाल का निर्णय होताथा

और इसीहेतु से वे लोग वर्षा और उत्पाद के आदि देवताओं का पूजन करतेथे (सबी जातियोंने ग्रहविद्या को ग्रहफल सूचक विद्या से मिश्रित करदिया है) और ऐसा सम्भव होता है कि मिसरी और देशोंके लोगोंसे ज्योतिषियों पर अधिक विश्वास रखते थे।

प्रत्येक कार्यके लिये शुभग्रह देखे जातेथे और ग्रहोंका शुभाशुभ बतलाना केवल पुरोहितोंही पर नियत था अतएव वे लोग रूठे थे वा रहतेथे तथापि वे राजा और प्रजापर प्रभुता रखते थे। मिसरी लोग जीव का अमरत्व मानतेथे परन्तु इस में दो भेदथे एकतो पुरोहित वर्ण का मत दूसरा सामान्य लोगों का मत पुरोहितों का तो यह मतथा कि जीवका पुनर्जन्म होता है कदाचित यह मत हिन्दुस्तान से लिया होगा और सामान्य जनों का मत यहथा कि जीव तबतक रहताहै जबतक शरीर रहता है अतएव वे शरीर को मृत्युके पीछे बड़ी भावनाके साथ सुगंधितामें रखतेथे अन्तकर्म धर्म क्रिया के अनुसार करतेथे और पर्वतों में बहुत धन खर्चकर समाधियां बनातेथे।

नीच जातियों की अवस्था भिन्न२ समय में पलटती रही परन्तु शिल्पकर्म और व्यापार जातियों मे नियत रहे और इस का अभिप्राय यह था कि प्रत्येक जाति तत्कर्म में श्रेष्ठता को पहुंचे और मिसरियोंने गृह निर्माण विद्या में और जातियों की अपेक्षा बड़ी निपुणता दिखाई थीबस के भवन देखने से यह ज्ञात पड़ता है कि वह मनुष्यों के बनाये हुये नहीं हैं किन्तु जादूगरोंने अपनी माया द्वारा रचेहैं और वर्तमान कालकी क

त्त विद्या से यह नहीं ज्ञात होता कि वे लोग इतनी बड़ी शिला-
ओं को किस तरह उठाकर ऊंचे स्थानों पर रखते थे।

शीशे और कांचका काम बहुत बनताथा और इनपर र-
त्नादिकी आकृतियें भी बनाई जातीथीं उनके बरतनों और असबा
ब के आगे वर्तमान शिल्पकारियों की कारीगरी तुच्छजान पड़-
ती है इसबातका सविस्तर वर्णन मिस्रदेश के व्यापार प्रकरण
में होगा व्यायाम वा कसरत और संगीत ये दोनों विनोद कारक
गिनी जाती थीं और खानेके समय न तो पूर्वीजातियों की तरह
चौकड़ी मारकर बैठतेथे और न रोमीओं की तरह लेटकर खाते
थे किन्तु यूरुपवालोंकी तरह मेजों कुरसीयों पर बैठकर खातेथे
मिस्र में स्त्रियों का और पूर्व जातियों की अपेक्षा बड़ा आदरमान
होताथा परन्तु यदि स्त्री कोई अपराध करे तो पति उसको दण्ड देस
कताथा। थोड़े अपराधोंके लिये छड़ी से दण्ड होताथा परन्तु
यह अधिकार नथा कि कोई नियत संख्यासे अधिक मारसके बूढ़े
पुरुषों का बड़ा आदर होताथा समाधियों से स्पष्ट ज्ञात होता है
कि प्रत्येक पुरुषकी प्रतिष्ठा के अनुसार वे लोग प्रणाम साष्टाङ्ग द-
ण्डवत् आदि करते थे। प्राचीन मिस्र में चार प्रकार आडू
और अंगूर दाखके बहुत होतेथे और दाखके पेड़ोंकी रक्षा
बहुत होतीथी जब ये फल पकते थे तो वे लोग उनको पांवसे म
लतेथे और एक प्रकारके यंत्रसे रस निकालतेथे और मद्य बना
तेथे यह मद्य बड़े और प्रतिदिन मनुष्य पीया करतेथे इस देश
के जंगली और कृषि उत्पत्तिमें से कमल और पेपाईरस (एक प्रका

रकापत्र, जैसा कि हिन्दुस्तान में भोजपत्र लिखने के काममें आता था) कपास सन दालें ककड़ी आदि होतेथे इन औषधि उत्पत्तियों का इतना बहुल्यथा कि चार हज़ार मनुष्य अलकन्द्रिया में इनको बेचकर उपजीविका करतेथे (जिस समय अर्ब वालोंने उस नगर को लिआथा)। मिसरियों के गृह पालित जीव वेही होतेथे जो और देशोंमें होतेहैं बिल्ली का बड़ामान होताथा और इसके द्वारा नीलके तटस्थ पक्षियों को पकड़ने और शकार करतेथे अतएव बिल्ली बहुत उपकारिणी थी कुत्ते भी बहुत प्रकारके होतेथे शिकारी कुत्तों का जुदा वर्गथा और शिकार करने वाले भी एक जुदी जातीमेसेथे उच्चजातीके लोग भी शिकार खेलनेमे रुचि रखतेथे प्रायः पहाड़ों और जंगलों में शिकार करने जातेथे यहां केवल कुत्तेही नहीं पालेजाते थे किन्तु सिंहों को भी हरिणों के मारने के लिये पालते थे परन्तु चीते का जो पूर्व मे शिकार के काममे बहुत आता है शिकार करने वाले जीवोंमे वर्णन नहीं है।

पहाड़ों और जंगलों में जंगली बैल बकरी हिरन इत्यादि पशु बहुत होतेथे और जंगली शिकारी जीवोभेड़िये चीते आदि होते थे मिसर की वृद्धिके समय में इसके नदाधिपति दक्षिणी देशोंसे जो इसके आश्रयथे वानर हाथी और२ पशुओं का करलेते थे।

जल जंतुओंमेसे घड़ियाल और ग्राह बहुत प्रसिद्धथे ग्राह का मारना केवल विनोदकारी नहीं था किन्तु उसके चर्म की ढालें बनती थी इसका पकड़ना बहुत कठिन था पहले जालमें फंसाया जाताथा फिर भाला मारतेथे और जब उसको घाव लगता

था भालेको (इस भालेके साथ रस्सा लगा हुआ होता था जिससे भालेको) खेंचलेतेथे तब वह नीचे गहरे पानीमें जा छुकताथा और ऊपर आने पर फिर भाले मारते थे अन्तमें थक कर बाहिर निकल आताथा इस प्रकार उसको दाउ देदेकर और थका२ कर मारते थे। जंगली और ग्रामी पक्षी बहुत होनेथे नीलकी बतकें, बड़े पीरू और बटेरे आदि नील की घाटी में और जंगल के समीप मिलतेथे गृह पक्षी भी बहुत होतेथे बतकें और२ गृहपक्षीओंके अंडे तन्दूरमें सेंउतेथे इसीरीति से वर्तमान समय में कापट (मिसरीओंका इस समय का नाम) लोग सेंउते हैं।

३ प्रकरण।

मिसर का इतिहास प्राचीन काल से फ़ारिक्स राजाके राज प्राप्ती तक ॥

सन १९०० ई॰ पे॰ से ६५० ई॰ पे॰ तक।

पहले कहागया है कि मिसर बहुत छोटे२ प्रदेशों में विभक्त था और ये सब मनिथो इतिहासक की नामावली के अनुसार दक्षिण मिसर में नियत कियेगये थे इनमें से बड़े प्रतिष्ठित थीवस इलफैनटायन थीस्स और हेरेक्लिया थे (मध्य मिसर में) मेम्फिस भी इन्हीं में था। हर्वोड इतिहास वेत्ता के इतिहास के अन्तमें केवल उत्तर मिसर के वंशों का वर्णन है जैसा कि टैनिसमेनडी और

डूवासटिस यद्यपि पूर्वोक्त राजधानियोंमें से थीवस अतिप्राचीन था तथापि मेम्फिस का वृत्तान्त उससेभी प्राचीन है यह नगर बड़ा प्रसिद्ध था और यहांके राजा फैरोह की सभामें बहुत से प्रतिष्ठित और मिसर की ऊंची जातियों के लोग रहतेथे और जब कि इसराईलियों का कुलाधिपति इब्राहीम मेम्फिस में आया तो उसने इस नगर में धान्यादि का बड़ा व्यापार देखा राजाने इब्राहीम का बड़ा आदर किया और बहुमूल्य पारितोषिक उसको दिया इससे जान पड़ता है कि उस समय तक मिसरवाले इतर देशके लोगों और गड़रीजाती के सरदारों से द्वेष नहीं करतेथे।

इब्राहीम के मिसर देशके त्याग और यूसफ के पोटीफर के हाथ बिकने के अन्तर में हैक्सोस लोगों और भ्रमण वाली जातियों ने मिसर पर आक्रमण किये और नीलकी घाटी के उर्वरा स्थानों का नाश करदिया। इसी कारण यूसफ को जो इस समय राजा का बड़ा मन्त्रीथा अपने भाईयों के जिन्होंने उसको बेचाथा और जो अब मिसर मे आएथे अपिवादित करने का यह अवसर मिला कि "हमलोग गुप्त दूत हो और मिसरके अरक्षित स्थानोंके देखने को आये हो" मिसरी लोग भ्रमण वाली पशुपाल जातियों से बड़ा विरोध रखते थे यहांतक कि इबरानीओं के साथ मिलकरे खाते भी नहीं थे अतएव जब फैरोह नामक राजाने इसराईलियों को गोशन प्रदेश रहने को दिया तो इससे उसकी निपुणता और दया दोनों प्रकट हुई क्योंकि मिसर सीरिआ (शाम) और पैलिस्टायन देशों की ओर से अधिक आक्रमणीय था और इसराईलीलोग

इस प्रदेशमें रहकर मिसर को बाहरके हमलों से बचावेंगे. इस प्रबन्धसे राजाकी इच्छा पूरी हुई क्योंकि इसराईलियोंने वहां बस कर राजाके पशुओंकी जो सीमावर्ती देशमें होतेथे रक्षाकी और हमले करने वाले लोगोंके हमले रोके उनसे बदला लिया और उनके प्रदेशों पर आक्रमण किये इंजील में लिखा है कि इन हमलों में यूसफ के कई एक पौत्र मारे गये थे।

यूसफ के मरणे के पीछे राज्यवंश में परिवर्तन हुआ और नवीन वंशके राजा इंजील में लिखा है कि "यूसफ को नहीं जानते थे" इससे यह जान पड़ता है कि ये राजा अन्यदेशीय थे क्योंकि मिसर देशीय राजातो यूसफ के व्यवहार के उपकारों को नहीं भूल सकते थे किन्तु अन्यदेशीय वंशके राजाओं का इन उपकारोंको भुला देना सम्भव होसकता है इससे अधिक सहती यह है कि जब प्रजापीडक राजा फैरोह (फिराऊन) ने यह कहा कि इसराईलवंश हमसे संख्या और बल में अधिक है तो इससे यह स्पष्ट प्रतीत है कि इसराईलवंश मिसरदेश के लोगोंसे संख्या और बलमें अधिक नहीं होसकता था हां उनका अन्यदेशीय लोगोंसे जो राजा के साथ मिसरमें आये होंगे अधिक होना सम्भव है और बहुत से कामोंमेसे जो इसराईलवंशियों को करने पड़तेथे एक यहथा कि वे लोग सञ्चित धनस्थान बनातेथे प्रयोजन यहथा कि जो धन मिसरियोंसे छीना हुआथा उनस्थानों में रखाजावे इसबात से यह स्पष्ट है कि राज्यवंश अन्यदेशीय था क्योंकि जब यूसफ ने अनाज बेचकर बहुतसा धन इकठ्ठा कियाथा तो कोई किला नहीं बनाया

था यह सर्व उपाय तो अन्यदेशीय और विजयी राजाके समय मे ही अवश्यकथा। चौथी आपद के पीछे जिसको मसियों का आपद बोलते हैं एक ऐसी बात हुई कि जिससे यह स्पष्ट प्रतीत होताहै कि इसराईलियों का दुःखदायक राजा अन्यदेशीय था फेरोहने मूसा और आरन को बुलाकर कहा कि तुम अपने परमेश्वर को पशु बलि दो इसपर मूसाने उत्तर दिया कि हमें यह उचित नहीं क्योंकि यदि हम मिसर के पूज्य पशुओं की बलि देवेंगे तो मिसरी लोग हमें मारडालेंगे इससे यह स्पष्ट है कि मिसर देशीय राजा गोआदि पशुओं को जोकि उस देशमें बड़े पूज्य थे इसराईलियों को बलिकरने की अनुज्ञा कभी न करता हां अन्यदेशीय राजा मिसरियों के धर्म्माचारों का निरादर करसकताथा और अन्तमें जब कि मूसाने इसराईलियोंसे कहा कि तुमको किसी मिसरनिवासीसे द्वेष नहीं रखना चाहिये तो उसने इस कहनेसे उनका जिनोंने इसराईलियों को कष्ट दिया और जिनोंने उनका आदर किया भेद निरूपण किया।

सबसे अधिक क्लेश जो इसराईलवंशी सहतेथे वह यहथा कि ये लोग ईंटे बनातेथे मिसरदेश के अत्युग्र सूर्य्यातपमें ईंटों के लिये मट्टी बनाना बड़ा दुःखदायकथा और यह काम बन्दीजन और दास किया करतेथे और समाधियोंपर चित्रोंसे मालूम होताहै कि उनका जीवन ऐसे सख्त काम करने के कारण अति क्लेशत बनगयाथा क्योंकि शासिता लोग भेड़ेके चर्म्मके कोरड़े लिये खड़े रहतेथे और जब कभी ये लोग काममें शिथिल होतेथे तो उ-

नको वे कोरड़े मारते थे। गैंडों के चर्म के कोरड़े अबतक फेलाह (मिसरदेशके वर्तमान समय के ग्रामवासी और नीच जातीके लोगोंका नाम) नामक लोगों के दण्ड देनेके काममें आते हैं।

परन्तु जब इस प्रकार के क्लेश सहने पर भी इसराइलियों के वंशकी वृद्धि होती गयी तो फेरोहने उनके सारे लड़कों को मरवा डाला इस संहारमें केवल मूसाही बचाथा क्योंकि फेरोह की बेटीने जो उसे नदीसे उठा लाई थी अपने घरमें ला उसको पालाथा यद्यपि मूसा मिसरियों के सब शास्त्रों में विशारद होगयाथा तोभी उसने अपनी उत्पत्ति और जाति को नहीं भुलायाथा और फेरोह की सभामें बड़ा आदर होने पर भी राजा के सभासद उसको स्मरण करा देतेथे कि वह नीच जातीमें से है इस बातकी यह सहती है कि जब मूसाने एक इसराईलीको अपने सजातीय के दुःख देने के लिये निन्दित किया तो उस (इसराईली) ने कहा कि तुझे हमारा शासिता और अधिपति किसने बनाया इसवाक्यमें अधिपति शब्दका अर्थ मनुष्य समझना चाहिये क्योंकि प्राचीनकाल में जेता लोग अपनी प्रजाको मनुष्य नहीं समझते थे जैसा हिन्दुस्तानमें तीन वर्णसे अधिक और सब लोग नीच गिनेजाते हैं और अंग्रेजी शब्द बैरन का अर्थ मनुष्य है यह शब्द नारमन जाती के समय इङ्गलिस्तान में प्रचलित हुआथा क्योंकि उस जाती के लोग अपने को बैरन बोलतेथे और सैक्सन जातीको अपनेसे नीचजातीमें गिनतेथे अर्थात् मनुष्यकी पदवीके नीचे समझतेथे अतएव जब उस इसराईलीने मूसासे ऐसेंक्रवा

का कहा तो इससे उसका नीचपन प्रकट हुआ क्योंकि इसराइलियों की इस समय ऐसी दुर्दशा थी कि वे अपने आपको नीचजाती में अर्थात् मनुष्य पदवीसे नीचे गिनते थे और अपनी जाती के सरदार को मनुष्य पदवी नहीं देनी चाहते थे।

जब मूसा को मिसर देशसे एक अन्यायी के मारने के कारण निकलना पड़ा तो उसने मिडियन देशमें जा शरण ली और जबकि वहां पशुओं को होरिब नाम पर्वत पर चार रहाथा तो परमेश्वर ने उसको जलती हुई झाड़ी (के स्वरूप) में दर्शन दिया और इसराइलियों को मिसर से छुड़ा लेजाने की दिव्य शक्ति दी परन्तु फैरोहने इतने बड़े उपकारक दासी लोगोंके छोड़ देने का इनकार किया तब मूसाने मिसर पर बहुतसी आपतियां डालीं जिनमें से सबसे बड़ी यहथी कि एक रातमें मिसरियों के प्रथम गर्भोत्पन्न नष्ट होगयेथे इसपर फैरोहने इसराइलियों को जाने की आज्ञातो देदी परन्तु फिर भी लोभवश होकर उनका पीछा किया जब इसराईली लोग लाल समुद्र पर पहुंचे तो उनके लिये परमेश्वर की आज्ञासे उस समुद्रमे मार्ग बन गया परन्तु जब मिसरियों की सेना उतरने लगी तो पानीमें डूब गयी और नष्ट होगई इस आपद से ४४९१ ई॰ पै॰ हैकसोस राजाओं का बल बहुत घटगया (क्योंकि थीवस की राजधानी की वृद्धिका उनको पहलेसेही भय होरहाथा) इस कालसे प्रथम (मिनिस नाम राजा जिसने राजधानी स्थापन की थी) और फैरोह (ओसिरटीसन) के बिना जिसके समयमे यूसफ मिसरमे आ-

या था और मिसर के राजाओंके नामों और उनके राज्य समयोंका सम्भावनीय हतान्त नहीं मिलता परन्तु अब से हमें स्मरणार्थक स्तम्भोंके प्रमाणोंको इतिहास वेत्ताओंके प्रमाणों से परस्पर उपमित करने से राज्यसमयों का कुछ निर्णय होसकेगा इस समय में (मिनथो नामक) इतिहास वर्णित अठारवां और उन्नीसवां राजवंश जिन्होंने बहुत बड़े २ स्मरणार्थकस्तम्भ दक्षिण मिसर में बनाये थे राजकरते थे अमिनोफ प्रथम के राज्यमें थीबस के अधिकारकी बहुत वृद्धि हुई और थीबस वालोंने न्यूबिया देश का भी कुछ भाग लेलिया था इस समयमें कच्चीईटोंके गोरे बनने लगेथे और कांच भी नभीसे काममें आने लगा था (१५४० ई॰पै॰) इस वंशके चौथे राजा थाथमिस तृतीय के समय में इसराईल वंशने मिसर को छोड़ा और इसी राजाने थोड़े दिनों के पीछे हैक्सोस को जोकि पूर्वोक्त आपद से बड़े दुर्बल होगये थे मिसर के बहुत प्रदेशों से निकाल दिया और उनको उनके किलों में बंदकर दिया इसी राजाके बेटे थाथमिस चौथेने हैक्सोस का एक बड़ाभारी दुर्ग छीन लिया तब वे लोग मिसर छोड़ शाम देश को चले गये।

इसराईली लोगोंकी यात्रा और हैक्सोस के मिसरसे निकाले जानेके समयों में इतना थोड़ा अन्तर था कि बहुतसे इतिहासकोंने तो इन दोनों हत्तान्तोंको परस्पर मिला दियाहै इसके पीछे अमिनोफ तृतीय बड़ा प्रसिद्ध राजा हुआ और पहले अपने भाई के साथ मिलकर राजकरता था परन्तु थोड़े दिन पीछे अ

पने भाई को निकाल कर फिर आप राज करने लगा ऐसा जान पड़ताहै कि प्राय: डानाउस नामक योधा जो (यूनानी कहते हैं) मिसर से जाकर आरगोस का राजा बन गयाथा (कईएक यह कहते हैं कि डानास पीछे हुआ) इस राजाका यही भाई था (१४७५ ई॰ पै॰) इसी राजाके समय में मिसर में ऐमनन शब्द करने वाले देवता का मंदिर और२ बहुत से मंदिर बनेथे और न्यूबिया के कई एक प्रदेश लियेगये थे इसीवंश के और राजाओंमें से रामासिस (राजाका नाम) बड़ा प्रसिद्ध है यह नाम चार राजाओं का था दोनो अठारवें और दो उन्नीसवें वंशमें हुएथे इनमेंसे पहले को जिसको उसके भाई ने निकाल दियाथा इसीलिये कई एक लोग पूर्वोक्त डानास से मिलाते हैं और दूसरा जिसको मिआमन (ऐमननप्रिय) कहते हैं बड़ा शूरवीर था इसने थीवस में मेदीनिटआबू का राजभवन बनाया था।

अमिनोफ चौथा अठारवें वंशका अन्तिम राजा हुआ इसके समयमें हैक्सौसने फिर चढ़ाव किये और अमिनोफ अपना पुत्र जो पांच वर्षका था एक मित्र को दे आप इथोपिया देशको भाग गया इसपर हैक्सौस ने मिसरमे आकर बड़ा अनर्थ किया ग्रामों और घरोंको फूंक दिया मिसरके मंदिरोंके पूजित पशुओंको मारकर भक्षण किया और पुरोहितों के हाथसे मरवाकर उनकी बलि दिलाई अमिनोफने अन्तमें इथोपियासे बड़ी सेनालेकर अपने बेटेकी सहायतासे हैक्सौस को निकाल दिया और अपना राजस्थापन किया।

महां रमसिस जिसको सिसोस्ट्रिस भी कहते हैं मिसर के सब राजाओं में प्रसिद्ध हुआ इस राजाने इतनी जय पाई कि यदि स्मरणार्थक स्तम्भों के प्रमाण न मिलते तो उसके जीवन पर सर्वथा विश्वास न होता यह बात संदिग्ध है कि यह राजा वही था जिसने मदिनिटआबू का राजभवन बनाया था वा अमिनोफ का वह पुत्र था जिसने बलख तक पूर्व में और ओसन के पश्चिम में विजय पाईथी और जिसके सिंहासन के पास इथोपियादेश के श्याम वर्ण और काफ पर्वत के हिम प्रदेश वन्दी वन्दीजन खड़े रहतेथे परन्तु इस जेता के जीवन उसके युवावस्था में साहस कर्म करने (जब कि उसने सिंह मारेथे) हैकसोस के निकालने और पराजय जातियों से बहुत सा धन प्राप्त करने में कुछ सन्देह नहीं क्योंकि अबतक उसके साहस के वृत्तान्त उन स्थानोंकी दीवारों पर लिखे हुए मिलते हैं जिनको उसने बनाया था। इस राजाने मिसर के पूर्वी पहाड़ी प्रदेशों को और अर्ब देश के कुछ भागों को अधीन करके हिन्द समुद्र में जाने के लिये युद्धयोग्य जहाज बनाये थे और मदिनिटआबू और करनक के दीवारों पर जो वृत्तान्त लिखे हुए हैं वे इतिहासकों के वर्णनों को सिद्ध करते हैं इनसे यह ज्ञात होता है कि इसने अपना अधिकार हिन्दुस्तान के पश्चिमी समुद्रतट तक फैलाया था इथोपियादेश भी इसके अधीन होगया था और वहां के लोगों को हस्ती सुवर्णादि का करदेना पड़ताथा इथोपिया देशवालों से युद्ध उन पर विजय और उनसे करलेने का वृत्तान्त नियूबीया के उत्तर मे

कलवशी के स्मरणार्थकखम्भों पर स्पष्ट लिखाहै इस स्थान के एक ओर इथियोपियाका राजा इस निर्दय विजयमान के हाथसे माराजाना हुआ लिखा हुआहै और दूसरी ओर में उस पराजय की विधवा अपने वेटों सहित जेता की शरण मांग रही है एक स्थान पर पशुओं और स्वर्णादि के करका निरूपण किया गयाहै अरब में भी इस राजाने वहुत विजय पाई उनमें तो उसने सीरिया (शाम) अनाटोलिया और ग्रेस देशों को लेलिया था पूर्वमें उसने बलख और हिन्दुस्तान तक विजय पाई थी असीरिया देशमें तो उसके युद्ध करने का संदेहही नहीं होसकता क्योंकि इसका वृत्तान्त ग्रीस मेनाइदिस के स्थान पर लिखा हुआ है दूवीं उसारे पर पेशिया के राजा से बहुतसे नगरोंका लियाजाना चित्रों में लिखाहुआ है और इन नगरों के नाम गूढ अक्षरों (हाईरागलीफिक्स) में लिखे हुएहैं। इसप्रकार के चित्रों से प्राचीन कालके युद्धों का निदर्शन अच्छी तरह जान पड़ता है जैसे एक सैनिक किसी बन्दीजन की डाढ़ी को खींच रहाहै और२ सैनिक उसी को मार रहे हैं और इनके परे बहुतसी लूट रक्खी है और एक सरदार तो एक सैनिक की नमस्कार ले रहाहै और दूसरा अपने धनुष को चढ़ा रहाहै लूट इतनी है कि एक गधा जो कि लूट लाता है उसके बोझसे दबा जाताहै उनके परे राजा अपने रथ जिसके घोड़े बड़ी कठिनता से रुकरहे हैं और पङ्खाकरने वालों सहित अपने पुरोहितों और प्रजाका धन्यवाद ले रहाहै

नीचेकी ओर दो बंदीजनों को जो हथ्या राजाकी शरण मांग रहेहैं बार मिसरी मारने को प्रयुक्त हैं पश्चिमी अङ्ग पर एक लड़ाई की रचना है जिसमें राजा शत्रु के गणों पर बाण मार रहाहै एक स्थानपर मेमफुकुल्हाड़े के साथ बहुत से अन्यदेशीय बंदीजनोंको मारने पर प्रवृत्त हैं।

दक्षिण रुवीं दीवार पर भी एक युद्ध रचना निरूपित है इसमें राजा अपने उस शत्रुका जो नदीकी ओर भागा जाता है पीछाकर रहा है ऐसा ज्ञात होता है कि पराजय राजाके सेवक जिनका अधिपति नदी में डूब गया है उसके शरीर में से पानी निकालनेका व्यर्थ यत्न करते हैं कि वह जी उठे और अन्नाकी दया और क्षमा मांग रहे हैं। बड़े घरकी दक्षिण ओर दीवार पर एक और युद्ध रचना है इसमें सीढ़ियों पर चढ़ और बड़ी २ ढालोंकी टट्टीबांध कर मिसरी सेना लड़ रही है। बहुत साहस कर्मोंमें से जो इस राजाने किये बड़ा भारी यहथा कि इसने "पालिस्टाईन और शाम देशमें लुटेरों ने जो पहाड़ों पर दुर्ग बनाए थे" उन को लेलिया था इनके लेने में मिसरी सेना(देवमवा)इतनी बड़ी ढाल जिसमें सैनक छिपजाय काममें लाते थे कई एक ऐसा कहते हैं कि इस प्रकारकी ढालें (ईसाई) धर्म्म युद्धके समयसे प्रचलत हुई यह बात बड़े आश्चर्य्य की है कि ऐसे नामी योधा का अंजील में कुछभी वर्णन नहीं है क्योंकि उसने शाम और किनान देशों को जोकि मिसर के राजाओं के बड़े प्रलोभी थे अवश्य लिया होगा मिलमन साहिब का यह

विश्वास है कि यह राजा उस समय में हुआ था जब कि इसराईली म
रु जंगल में भ्रम रहा था इस दैवगति कारण से उन लोगों को प्र
तिज्ञात भूमि (कैनान) का लेना कठिन न रहा हां यह बात
तो निसन्देह है कि किसी न किसी (मिसरी) राजा ने कई एक
उन साहस कर्मों में से जो कि सिसोस्ट्रिस के नाम पर लगाये जा
ते हैं किये होंगे परन्तु यह निर्णय नहीं कि वह (सिसोस्ट्रिस) क
ब हुआ। हेरोडोटस इतिहासिक कहता है कि उसके समय में
इस जेता की दो प्रतिमा एशिया माइनर में थी और एक पर य
ह लिखा था कि इस देश को मैंने अपने परिश्रम से लिया है।
इस राजा का एक स्तम्भ लीकस नाम नदी के तट पर स्थित है।

सिसोस्ट्रिस के उत्तराधिकारी राजे पूर्व के और राजाओं की
तरह आलसी हो गये इसके पीछे सेसंकिस के समय तक जि
सको अंजील में शिशाक कहते हैं और जो बाईसवें वंश का प्र
थम राजा था मिसर के इतिहास में केवल राजाओं के नाम ही लि
खे हैं सुलेमान के पुत्र रेहोबोम के राज में शिशाक ने पालस्टा
इन देश पर आक्रमण किया जरुसलम नगर को बहुत लूटा
(९७० ई॰पू॰) इस राजा की सेना में न केवल मिसरी ही थे
किन्तु लिबिआ और इथियोपिया देशों के लोग भी थे इसके शा
सन में मिसर के राज का बल बहुत घट गया और इस देश
को सोबाको नामक इथियोपिया के भेजा ने जिसका वर्णन अ
गले अध्याय में किया जावेगा ले लिया इसके पीछे सियोस
नामक पुरोहित पूर्वोक्त क्रम त्यागकर राजा बन गया इतने

योधा वर्ण का इतना निरादर किया कि वे लोग उसकी रक्षा नहीं करनी चाहते थे इसकाल में सिनाकेरिब नाम राजाने मिसर पर चढ़ाव किया और (७१२ ई.पै.) पिलूजियम तक आन पहुंचा जब योधावर्ण ने युद्ध करने से इनकार किया तो राजा और जातियों के लोगों को लेकर सिनाकेरिब से लड़ने को चला परन्तु सिनाकेरिब की सेना में मरी पड़जाने से मिसरी सेना बच गई जब सियोस मरा तो बारह तोमाधिपतियों ने राज्य को परस्पर बांटलिया और एक दूसरे से लड़कर अपने में से समेटिकस सियास के अधिपति को मिसर से निकाल दिया इस पर समेटिकस यूनानी और केरिया देश के लोगों की सेना लेकर मिसर पर चढ़ आया और सब तोमाधिपतियों को जीत कर सारे देश का राजा बन गया इसके समय में मेडिटेरेनियन (मध्य समुद्र) के समीप वर्ती सर्वी जातियों से गमनागमन बहुत होगया बहुत से यूनानी मिसर के बंदरों में आकर बसे दलालों और द्विभाषियों की एक नई जाति उत्पन्न होगई परन्तु सम्पूर्ण योधा वर्ण अपना निरादर देखकर मिसर को छोड़ इथियोपिया में जा बसा —

४ प्रकरण ॥

समेटिकस के राज्यसे कैम्बाईसिस के मिसर को लेने तक

६५० ई.प. से ५२५ ई.पै. तक

मिसर में समेटिकस के राज्यारम्भ सेही प्राचीन व्यवहारों

में परिवर्तन होनेलगा अन्यदेशों के वेतनार्थी मिसर के योधा-
ओं की जगह काम करने लगे प्राचीन राजाओं के अपहारक
आक्रमणों के स्थान शामदेश में जय करने के उपाय होने लगे
और पुरोहित वर्णका अधिकार प्रतिदिन घटने लगा बहुत
कालसे राजाओं का यह उद्देश्य होता चला आया था कि सीरि-
या और फिनिशिया देशोंके बंदर लेलेने चाहिये क्योंकि इन
के लेने मे केवल धनकीही प्राप्ती नहींथी किन्तु सम्पूर्ण व्या-
पार हिन्दुस्तान और मिडिटरेनियन (मध्य) समुद्रोंके बीचके
मार्ग रोकनेसे मिसरियोंके हाथमे आजायगा इन मनोभ्यदे-
शों की प्राप्तीके लिये सेटिकसने अशोटसनाम नगर को (जो
शामका सीमावर्तीनगर था) घेरा और उनतीस वर्ष लड़कर इ-
सको लेलिया इस राजाके पीछे उसका बेटा (६१६ ई॰ पू॰) नी-
कस जिसे अंजील में फैरोहनीको कहते हैं गद्दी पर बैठा यह
राजा बड़ा प्रसिद्ध हुआ इसने मिडिटरेनियन (मध्य) और ला-
ल समुद्र मे युद्धयोग्य जहाज बनाये और इन दोनों समुद्रों
को मिलानेके लिये स्वेज डमरूमध्य के बीच में एक नहर निका-
लनी चाही परन्तु इस कामको डरायस हिस्टासपिस ईरान
के राजाने पूरा किया था अब वैबिलन और मीडराजधानियोंके
अधिकार की [illegible] नीको को [illegible] हुआ तब उसने असीरिया
देश पर चढ़ाव किया और यूफ्रेटिस नदीकी ओर चला परन्तु
जूडिया देशका राजा जूसियाने इसको रोका इस पर नीकोने
उससे कहा कि मैंने जूडियापर चढ़ाई नहीं की जूसियाने उस-

की बात न सुनी किन्तु युद्ध करने को उद्यत हुआ मेगिदो की घाटीमे पराजय हुआ और मारा गया इसके पीछे नीकोने कारकेमिशनाम नगर लेलिया और उसमे अपनी सेना नियत की मिसरको आते हुए उसने यिरोशिल्म (बैतुल्मुकदस) को ले वहांके राजा जिहोआहज़ को कैदकर लिया और जिहोईकम को उस जगह का राजा बनादिया।

असीरिया राज्यके नाश होने पर कलडिया राज्य बहुत वृद्धि को प्राप्त हुआ और निबुकदनज़रने "जो उस राजधानीमे सब से बड़ा प्रसिद्ध और बली राजा हुआ" कारकेमिश लेलिया नीको यह सुनकर उसके साथ लड़ने को गया परन्तु पराजित हुआ यहां तक कि सिरिया और फिनीशिया देशोंके पिलूशियम तक सब सूबे उसके हाथसे निकल गये जेरीमाया भविष्यद्वक्ताने नीकोकी पराजय का परमेश्वर की आज्ञासे पहलेही कहदियाथा (जेरेमाया—४६—१ अंजील) फैरोहनीको ने उस समय जब वह सिरिया देशमे युद्ध कर रहाथा जहाज़ यात्रा की उन्नति नहीं छोड़ी थी एक जहाज़ समूह बनाया और समुद्रयात्रा पर भेजा इसने बाबुल मण्डप जल डमरु मध्य में से होकर आफ्रिका महाद्वीप के दक्षिण गुड्होप नाम अन्तरीपका वह मार्ग निकाला जिसको दो हजार वर्ष पीछे डायज़ और वास्कोडेगामा समुद्रगामियों ने मालूम किया और वह आटलांटिक समुद्र मे से होकर जिबरालटर जल डमरुमध्य के मार्गसे मिसर में आ पहुंचा।

नीको के पीछे इसका बेटा सेमिस राजा हुआ (६०० ई॰ पै) उस के समय एक ऐसी बात हुई जो मिसर और यूनान के विधानों के सम्बन्ध को प्रकट करती है यूनान के इलिस नगर से एक दूत मिसर में औलिम्पिया नाम मेले के निर्वाह के लिये नियम पूछने आया और जैसे मिसर के पुरोहितों ने कहा यूनानीयों ने उसी तरह किया अप्रीस ने जिसे अंजील में फैरोह होफ्राह कहते हैं राज्य पाने पर (५८४ ई॰ पै॰) फिनीशिया देश पर चढ़ाव किया और जिद्दनक नगर को अपने अधीन कर लिया और अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार जुडिया देश के राजा की सहायता करने के लिये गया बाबिलन के राजा उसका आना सुनकर उससे लड़ने को आया परन्तु फैरोह होफ्राह लड़ने से भय खाकर अपने देश को चला आया और जिहूया के राजा को बाबिलन वालों से स्वयं युद्ध करना पड़ा इस छल के कारण परमेश्वर ने इजिकेल के द्वारा मिसर के राजा पर अपना क्रोध प्रकट किया (इजिकेल -२९-८ अंजील) यह आकाश वाणी शीघ्र ही चरितार्थ हुई क्योंकि कुछ यूनानी लोगों ने जो सारैनी (देश) में बसने थे और बल में बढ़ गये थे अपने तीसरे राजा बाटिस के समय लिबिया देश पर चढ़ाई की और वहां के राजा को निकाल कर उस देश को अपने अधीन किया इस पर लिबिया के अनजीकस एक राजा ने फैरोह की शरण ली और सहायता मांगी फैरोह ने उस की सहायता के लिये एक बड़ी सेना उसके साथ कर दी परन्तु सिरीनी देश की सेना ने उनको पराजित किया और इस युद्ध में

बहुत से मिसरी लोग मारे गए और जो बचे उन्होंने मिसर में आ
कर कहा कि फैरोह ने हमको छल से मरवाना चाहा था इस
लिये सारा मिसर बिगड़ गया और देश में युद्ध होने लगा इस
युद्ध के समय में नैबूनसर ने मिसर के उत्तरी प्रदेशों को लूटा
था बहुत दिनों के पीछे अमेसिस ने फैरोह को गद्दी पर से उतार
और कैद में मरवा आप राजा बन गया (५६९ - ई॰ पै॰) यह राजा
नीच जाति में से था परन्तु अपनी बुद्धिमत्ता से प्रजा और पुरोहित
जाति को प्रसन्न रखता था इसने यूनानियों के साथ मित्रता कर
ली और सिरीनी देश की एक रानी से विवाह किया मिडिटेरेनि
यन (मध्य) समुद्र के व्यापार के लिये सैपरस द्वीप ले लिया
और बाबिलन राज्य के नाश होने पर एशिया के पश्चिमी प्रदेशों
में अपना राज्य फैलाना चाहा इसलिये क्रीसस (काहून) का
सहायक बनकर साइरस (खुसरो) के साथ लड़ने को गया
परन्तु पराजित हुआ और फारस के राजा (खुसरो) के अधीन
हो गया साइरस के मरने पर अमेसिस ने स्वतन्त्र होना चाहा
इसी कारण साइरस के उत्तराधिकारी कैम्बाइसिस को मिसर पर
चढ़ाकर लाना पड़ा इसी समय अमेसिस ने फेनस यूनानी सेना के
सेनापति और अपने मित्र सैमोस के राजे पोलीक्रेटिस से वि
रोध कर लिया परन्तु फारस के राजा के चढ़ाव से पहले ही
मर गया (५२५ - ई॰ पै॰) ऐसी राज्य की बिगड़ी हुई दशा में
अमेसिस का बेटा सैमिनिटिस गद्दी पर बैठा परन्तु थोड़े काल के
पीछे कैम्बाइसिस ने इस पर चढ़ाव किया पिलूज़ियम को ले लि

या और स्केनिटिस को जो उससे लड़ने को गयाथा पराजित किया कैम्बाईसिस ने अपने एक दूतके मारे जाने से मिसर के सारे कुलीन लोगों को मारडाला और उनकी स्त्रियों और बालबच्चों को दास बनालिया कैम्बाईसिस ने मिसरी राजाको मारना नहीं चाहाथा परन्तु जब उसका विरोध देखा तो उसको विष खिलाकर मारडाला कैम्बाईसिस मिसरियों के धर्म और पुरोहितजाति का बड़ा शत्रु था और उसने उनके देवता प्रतिमाओं को लज्जित किया और उनके पूज्य पशुओं को मारा उनको दास बनाया और उनके मंदिरों को लूटा जबतक मिसर देश फारस राजधानी के अधीन रहा मिसरियों और फारसदेशवालों मे सर्वदा विरोधही रहा इस विरोध का कारण यह जान पड़ता है कि फारसदेश के लोग जो पहले मीडजाति (जो पुरोहित वर्ण होताथा) के अधीन थे जब उससे स्वतन्त्र हुए तो हर जातिके पुरोहितवर्ण के शत्रु बन गए मिसरी लोग अपने पुरोहितों के कहने पर फारसवालोंसे बिगड़ते रहतेथे परन्तु स्वतन्त्र होनेका बल नहीं रखतेथे इसलिये उनको उनके बलवोंके कारण बड़ी क्रूरता से दण्ड दियाजाताथा और जो इज़केल का भविष्यत् कथन था सो पूर्णहुआ (इज़केल - ३० - १२ आयत)

५ प्रकरण।

मिसर के शिल्प और व्यापार का वर्णन॥

पहले प्रकरण मे कहा गया है कि मिसर की भूमि

खेती करने के लिये बहुत अच्छी है अतएव इसजगा उसका अधिक वर्णन करना आवश्यक नहीं खण्डरों से मालूम होताहै कि मिसरी शिल्पविद्या में बड़े निपुणथे यहां हम केवल उनके मुख्य शिल्प कर्म्मोंका वर्णन करेंगे मिसरमे कपड़ा बहुत बनता था क्योंकि यहां रूई और सन बहुत होतीथी परन्तु नीलके तटस्थ झूरियों के भांसें जालादि वस्त्रोंके बनानेमें बहुत काम आतेथे अतएव इशय्या नामक भविष्यद्वक्ताने मिसर पर आपद् वर्णन करने में ऐसा कहाथा देखो (इशय्या-१९-९ अंजील)।

यह सबकाम और विशेषकरके जो वस्त्र पूजाके लिये बनतेथे पुरोहित लोग अपनी अध्यक्षता से बनवाते थे इनपर सोने और चांदी का भी काम होताथा और ऐसे एशियाके तेजस्वी रंगोंसे रंगेजातेथे कि उनके तुल्य स्वरूपके रंग नहीं होसकते धातु बहुत काममें लातेथे किन्तु लोहे के गुणों को नहीं जानतेथे क्योंकि बहुत शस्त्र पीतल वा तांबे के बनतेथे और तांबेको ऐसी विधिसे कठिन वा नरम करतेथे जो वर्तमान समयमें मालूम नहीं काठ के काममें भी बड़े चतुरथे उनके पलंगोंके आकारके नमूनों पर हम अपने पलंग बनाते हैं उनके बीनोंके आकार भी बहुत सुन्दर थे यहांकी मिट्टी बर्तन बनानेके लिये बहुत अच्छीथी क्योंकि यहां के बर्तन रंग रूपमें यूनान और इटलीया के सदृश होतेथे जब मिसरियोंने फनिशिया देश लिया था उसी समयसे जहाज अधिक बनाने लगेथे किन्तु नीलनदी के व्यापार करने के लिये नौका पहले सेही बनाया करतेथे और थीवा-

यह नगर व्यापार के लिये प्रधान था इसमें दक्षिण एशिया इथि
योपिया आफ्रिका और पश्चिमी प्रदेशों का वाणिज्य होताथा
इस नगर के समीप एक सोने की खानथी।

इथियोपिया और हबशदेश के व्यापारी लोग सियेनी नगर
में सोना हाथीदान्त आबनूस और दास लाकर बेचा करते
थे धूप अर्बसे और मसाले हिन्दुस्तान से मिसरमे लेजाया
करते थे फनीशिया और यूनानके व्यापारी लोग इन वस्तुओं
को मध्य समुद्र के तटस्थ बंदरों से खरीद लेजातेथे मिसरदे
श से अन्न और कई प्रकारके कपड़े इतर देशों में भेजे जातेथे
क्योंकि मिसर देश अनाजकी खान समझा जाताथा व्यापारपर
जो पुरोहित जाति ने प्रतिबन्ध लगाये हुयेथे स्मेटिका के राज्य
में सब हटाये गये थे फारसके राजाओं के समयमे फिर कुछ
रोक लगाई गईथी परन्तु टालामी वंशके राजाओंने व्यापार
फिर वृद्धि को पहुंचाया॥

अध्याय २

इथियोपिया (हबश) देश का इतिहास ॥

प्रकरण १

भूगोल और प्राकृत वृत्तान्त

आफ्रिका के उत्तर भाग में लिबिया जाति के जंगली मनुष्य रहते थे ये वर्तमान समय के मूर और बर्बजाति के लोगों से भिन्न थे और इनकी सन्तान अब अटलास पर्वत में बसती है नील के पूर्वी भागों में जिनको अब न्यूबिया और सेनार कहते हैं प्राचीन काल से बर्ब और इथियोपिया जाति के लोग बसे चले आए हैं और ये जातियें आजतक जुदी २ ही हैं इस देश में विशेषतः नील के तट पर बहुत से स्मारक स्थान बने हुये हैं और इस में कई एक जातियें बसती थीं जिन में से ट्रोग्लोडाईटिस जाति के लोग पहाड़ों की गुफाओं में रहते थे मक्रोबियन (अर्थात् जो बड़ी आयुतक जीते रहते थे) अबीसीनिया में रहते थे और धूप गोंद और दासियों का व्यापार करते थे एक थीओफेगी जाति के लोग (जो मछलियों का जीविका करते थे) लाल समुद्र के समीप प्रदेशों में रहते थे ये शिष्टाचार में सब से नीचे दर्जे पर थे अतएव इन देशों में सब प्रकार के (अर्थात् जंगली मनुष्य

...भाले खेती करने वाले और शिकारचार) लोग रहते थे इनमे से शिकारचार लोगोंने जो विद्या और शिल्प में उन्नति की थी वही प्रसिद्ध थी   अतबेरास (अतारा) नदी के मिलने से पहले नील एक घाटीमे से बहती है जिसके दोनों ओर पर्वत श्रेणी हैं जो उस रेता (के फल) को जो इसके आगे है नदीतट प्रदेशोंमें घाटीमे घुसने से रोक नहीं सकती इस लिये जहां कहीं रेत नहीं घुस सकी वह स्थान बहुत उर्वरा हैं अतबेरास के मिलने से परे की जो घाटी है वह कभी मिसरियों और कभी इथियोपिया वालों के हाथ आजाती रही दक्षिण में उर्वरा भाग है और न्यूबिया घाटी में बहुत स्मरणार्थक स्थान हैं जो थीबस के स्थानों के तुल्य हैं इथियोपिया और न्यूबिया देशोंकी उत्पत्ति मिसर देशकी उत्पत्ति से बहुत भिन्न नहीं केवल यही अन्तर है कि यहां जंगली शिकारी और विषाक्त जीव मिसर से अधिक हैं मिरोई के द्वीप (क्योंकि यह नदियों से घेरा हुआ था) में ऊंट बहुत होते हैं मिरोई के समीपस्थ देशों में शिकार योग्य पशु बहुत होते हैं और प्राचीन शिकारी इनका शिकार करते थे यहां ऊंट-गाय, नीलगाय आदि बहुत पशु होते हैं किन्तु हस्ती एबीसीनिया में होते हैं।

प्रकरण २।

इथियोपिया का इतिहासक वर्णन॥

मिरोई देश के प्राचीन इतिहास का कुछ निश्चय नहीं परन्तु यहां के स्मरणार्थक स्थानों से यह मालूम होता है कि मिसर वा-

लोंने इनके नमूने पर अपने स्थान बनाये थे पहले कहा गया है कि मिसर के कई एक राजाओंने इथियोपिया पर चढ़ाव कर उसको अधीन कर लिया कहते हैं कि ९०० ई. पू. मे सबीया मिस अ- सीरिया की रानी ने इथियोपिया पर चढ़ाव किया था परन्तु इस पर विश्वास नहीं होसकता इस देश के लोगों के बली हो- ने में कुछ सन्देह नहीं क्योंकि इन्होंने ९७१ ई. पू. मे मिसर के राजे शिशाक को ...पर चढ़ाई करने मे सहायता दी और १८ वर्ष के पीछे आप मिसरी सेना सहित ...पर चढ़ाव कि- या परन्तु पराजित हुए (२ तवारीख - १४ - ८ - अंजील) इससे मालूम होता है कि इथियोपिया वाले युद्ध विद्या में नि- पुण थे लालसमुद्र का व्यापार इनही के हाथ मे था और ब- लमे इतने बढ़ गये थे कि मिसर को भी दबा कर लेलिया था इन के तीन राजाओंने (सेबेकोन सिबिकस और टराकस जिसको इंजील में टिराकाह लिखा है) मिसर में राज्य किया सिविकस जिसे इंजील में सो कहते हैं बड़ा स्वार्थी था वह इस्रा का राजा होशिया उसकी सहायता की आशा पर असीरिया के राजा से बिगड़ा परन्तु सिबेकस ने होशिया की सहायता नकी इसलिये असीरिया का राजा इस्राईल वंश के दसव- शों को बन्दी कर ले गया था (२ राजे - १७ - ४ अंजील)

टराकस नामक राजा बड़ा बलवान हुआ जब असीरिया के राजा सिनाकेरिब ने अरूसलम् पर चढ़ाव किया तब वह भी उससे लड़ने के लिये गया (२ राजे - १९ - ९ अंजील)

सेटिका के राज में मिसर का सब योधा वर्ग इथियोपिया के दक्षिण भाग में मिरोई देश से ६० दिन के मार्ग पर जा बसा और वहां वालों को मिसर की युद्ध विद्या और शिष्टाचार सिखाया।

जब फ़ारस का राजा केम्बाईसिस गद्दी पर बैठा तो उस ने इथियोपिया पर चढ़ाव किया परन्तु सेना के खाने दाने का कुछ प्रबंध न किया जब (उसकी) सेना हरे जंगलों में पहुंची तो अन्न के न मिलने से उनको नाना क्लेश सहने पड़े यहां तक कि घास पात खा कर जीते थे परन्तु अन्त में जब घास भी न मिला तो अपने साथियों में पर्चियें डाल कर प्रति १० में से एक को खाने लगे।

कहते हैं कि इथियोपिया में पुरोहित वर्ग में से राजा बनाया जाता था और जब वह लोग उससे अप्रसन्न होते तो उसे मरने का हुकम भेजते थे इरगेमिनिज़ राजा ने जो दूसरे टालमी के समय में हुआ और यूनानी वेदान्त शास्त्र का पण्डित था इस अनर्थक रीति को तोड़ एक नया मत चलाया।

इस देश में रानियें भी राज करती थीं एक केण्डेस नाम रानी ने रोम के अगस्टस सीज़र (कैसर) से ईसा से बीस वर्ष के समीप पहले युद्ध किया परन्तु सुलह करली और केण्डेस नाम दूसरी रानी के समय में उसका मन्त्री यरूसलम की यात्रा को गया और रास्ते में जब वह पीछे आ रहा था फिलप ने उसे ईसाई किया (५३-ई०प०) उसी मन्त्री ने इथियोपिया में आकर इस मत का प्रचार किया॥

प्रकरण ३

(मिरोईके) शिल्पविद्या और व्यापारका वर्णन.

इस देश के सूचीकार स्तम्भ मिसर के स्तम्भों से छोटे हैं परन्तु सुन्दरताई में अधिक हैं यहांवालोंका सबसे भारी सबूत उन की गृह निर्माण विद्या में उन्नति करने का उनके बनाये हुये इन खंडहरों से मिलता है और स्मारणार्थक स्थानों पर जो वर्तनों की आकृतियां लिखी हैं यद्यपि नाना वर्णों से चित्रित नहीं तथापि उनके आकार ऐसे हैं कि आजतक फिर वैसे नहीं बनाये गये और मूर्ति तराशने और रंगकरने में भी वे मिसरियों के तुल्य थे।

मिरोई ऐसे स्थान पर था कि यह उत्तर दक्षिण पश्चिम और पूर्व के व्यापार का मध्य स्थान था धातु और लोहे का काम बहुत बनता था और रथ भी मिसरियों के रथोंकी अपेक्षा सुन्दर होते थे मिरोई अपने व्यापार योग्यस्थान के कारण [illegible] को पहुंचा परन्तु व्यापारी मार्गों के बदलने अनेक राजाओं के चढ़ाइयों अर्बवाले [illegible] के लूटने और रेता के घुस आने से मिरोई की राजधानी नाश को प्राप्त हुई॥

अध्याय ३ ॥

बाबिलोनिया और असीरिया देश का इतिहास

प्रकरण १ ॥

भूगोल (प्राकृति) वृत्तान्त ॥

बाबिलोनिया अथवा कलडिया देश दजला (पश्चिममें) और फ़रात (पूर्वमें) नदियों के मध्यमें था (इनका अंग्रेज़ीनाम यूफ्रेटिस और टाईग्रिस हैं) ये दोनों नदियां आरमीनियां देश के पर्वतों से निकल कर (उत्तर से) दक्षिण को बहती हुईं बसोरा नगर के निकट (मिल कर) फारस की खाड़ी में जा गिरती हैं यह देश भी इन नदियों के इतना ही आश्रित था जितना कि मिसर नील के आश्रित था इन नदियों के बीच की भूमि का ढाल पश्चिम से पूर्वकी ओर है इसलिये दजला का तल फ़रात के तल से बहुत ही नीचा है गर्मी ऋतु में जब बरफ ढलती है फ़रात नदी का जल कई एक स्थानों पर तटों से बाहर आजाता है और तट समीपी प्रदेश जलमय होजाते हैं इस (नदी के) चढ़ाव से जो हानि होती थी, उसके दूर करने के लिये बहुतसी नहरें बनाई गई हैं।

नमनः जो बाबिलोनिया फ़रात के नीचे के (भाग पर के) भ

देश का नाम था इसके उत्तर में मेसोपोटेमिया का बड़ा मैदान है और इससे आगे बढ़ कर आरमीनियां का प्रदेश है कई एक कहते हैं कि महाप्रलय के पीछे नूह और उसका वंश इसी आरमीनियां प्रदेश में बसे थे।

मिडिया देश और और जंगली लोगों के आक्रमणों से बचने के लिये यहां के लोगों ने बाबिलोनियां और मेसोपोटेमिया के बीच जिस स्थान पर दोनों नदियों मे बहुत कम अन्तर है मिडिया नाम दीवार और तीन २ मील के अन्तर पर ४ नहरें बनाई हुई थीं इन नहरों मे लदे हुये जहाज़ चल सकते थे और इनके कारण (समुद्र तक पहुंचने से पहले) फ़रात नदी का जल बहुत घट जाता था वर्तमान समय मे यह नदी समुद्र से ६० मील के समीप दजला से मिल जाती है परन्तु यह भी जाना गया है कि फारस की राजधानी के समय तक इसका पुराना मार्ग स्थित था

दजला नदी से जो परे प्रदेश है उसको असीरिया कहते थे इसके उत्तर और पूर्व सीमान्त पर्वतों मे प्राचीन काल से आजतक जंगली लुटेरे लोग जा शरण लेते हैं रबशेकाह सेनानी ने जिसको सनाकेरिब ने यहूदा के राजा हिज़कायाह से लड़ने को भेजा था असीरिया की भूमिका ऐसा वर्णन किया है कि इस भूमि मे अन्न और मधु अंगूर और मद्य बहुत होते हैं परन्तु असीरियां राज्य के नाश के पीछे इस देश का भी बहुत लड़ाईयों के कारण नाश होगया और थोड़े से नगरों

के समीपस्थानों के सिवाय सब उजाड़ पड़ा है बाबिलोनिया की भूमि जो फ़ुरात नदपर थी बड़ी उर्वरा थी और किसानों को बड़ा लाभ होता था तिल बहुत पैदा होते थे और खजूरों के दख़्तों के सिवाय जंगल जलपाई और अंगूरों के वृक्ष बहुत कम होते थे बाबिलोनिया वालों ने ही सबसे पहले खजूर के पुंजाति और स्त्री जाति के वृक्षों का भेद निकाला था और वृक्षों से ही वे गुड़ खांड और मदिरा निकालते थे लकड़ी के कम होने के कारण व्यापार पर बहुत ध्यान नहीं देते थे क्योंकि नौका के बिना समुद्र मे जाना कठिन था पत्थर और संग मरमर लकड़ी से भी न्यून होते थे परन्तु यहां की मिट्टी ईंटों बनाने के लिये बहुत अच्छी थी ईंटें ऐसी पक्की होती थीं कि आजतक खंडरों में अखंड पाई जाती हैं मटिया तेल और शिलाजित वर्तमान समय के हित नगर के समीप बहुत निकले थे और चूना वा गारे का काम देते थे और ऐसे टिकाऊ होते थे कि खजूरों के पत्त जो ईंटों मे उस समय रखे गये थे अब ऐसे मालूम होते हैं मानो कि पिछले वर्ष में रखे गये थे।

प्रकरण २।

बाबिलोनिया और असीरिया राज्यसम्बन्धी और सांसर्गिक अवस्था का वर्णन॥

असीरिया के राजाओं की प्रभुता स्वतन्त्र होती थी उनकी इच्छा ही कानून होता था और वे अपने को ईश्वर का अवतार

समझते थे राज्य और धर्म में आपही मुख्य होते थे राणियांभी जिनके रक्षक ख्वाजेसरा होते थे बहुत रखते थे बड़े अफसरों और अधिकारियों मेंसे १म रक्षकाधिपति होताथा जो राजाज्ञानुसार अपराधियों को दण्ड दिया करता था २य ख्वाजेसराओं का सरदार जो राजमहल का रक्षवाला होता था और राजसभासदों के लड़कों को शिष्टाचार सिखाता था ३य भविष्यत वक्ताओं का गुरु ४ थे महामंत्री जो राजद्वार पर बैठ राज्यव्यवहार और न्याय करता था यह निर्णय नहीं हुआ कि पुरोहित लोगों का जिनको कालड़ी बोलते थे एक वर्ण वा जाति थी परन्तु यह तो निश्चय है कि बाबिलोनिया वालों में मिसरी और फारस वालोंकी तरह पुरोहित वर्ण होताथा इनका धर्म सेबी कहलाताथा और वे प्रतिमा और सूर्य चंद्रादि ग्रहों को पूजते थे और पीछे अवतारों को भी मानने लग गये थे इनका बड़ा देवता बाल था कभी इसे सूर्य्य कभी मनुष्य रूप मानतेथे इसके नीचे असटारटि (शाम देशके लोग इस नामसे बोलतेथे) अथवा मिलहा (बाबिलोनिया वाले इस नामसे बोलतेथे) नामक एक देवी थी जिस में पुरुष और स्त्री दोनों के गुण पाये जातेथे।

इस देवी की पूजा बड़ी निर्लज्जता और विषय संबंधिनी थी इसलिये उसका मध्य और पश्चिमी एशिया माईनर के प्रदेशोंमे प्रचार भी बहुत था अंजील में उसके वा उसके मंदिरको (सकाथ बेनाथ) बेश्यागृह कहा है इस देवीको एकतो समेरामिस राणी का अवतार और दूसरा चन्द्रमा मानते थे इस लिये माईनस

राजा और समेरामिस राणी का वृत्तान्त खगोल शास्त्र से मिलेहु ये हैं। इन के धर्म्माचारी के सत्यविरुद्ध निर्दयता और निर्लज्जता थे मनुष्यों की बलि होती थी और व्यभचारी पन पुण्य गिना जाता था हिन्दुओं के देवताओं की तरह इनके देवताओं के आकार नाना प्रकार के होते थे।

इहां की स्त्रियों की बड़ी दुर्दशा होती थी किसीको यह अधिकार नहीं था कि वह अपनी बेटी का व्याह (अपनी इच्छानुसार) कर सके किन्तु उसको बाजार में सबसे बड़े मूल्यपर बेच डालता था जो स्त्रियें सुन्दर नहीं होतीथी उनको कम मोल देनेवाले वा निर्धन खरीदतेथे इस प्रकार के आचारों और सब लोगों के मदिरा पीने से विषय आदिकों से पाप बढ़ते होतेथे।

इन्होंने यंत्र और खगोल विद्या में बड़ी निपुणता प्राप्त की थी परन्तु खगोल विद्या ज्योतिष्य शास्त्र से मिली हुई थी बुनने और धातु का काम भी होता था और लकड़ी की कमी के कारण मटिया तेल से काम लेते थे बाबिलोनिया देशकी बोली उस सेमिती (सेमीटिक) भाषामें से थी जिसकी अर्बी इबरानी और शामी शाखा हैं- और ईटों पर लिखी जाती थी क्योंकि कागज़ निर्माण वस्तु वहां पर पैदा नहीं होती थीं

प्रकरण ३।

असीरिया और बाबिलोनियांका इतिहास।

२२०४ ई॰ पू॰ से ५३८ ई॰ पू॰ तक॥

प्राचीनिक समय के राजवंशो और जातियों की उत्पत्तिका

ठीक २ इतिहास नहीं मिलता क्योंकि जो उनका वृत्तान्त पुस्तकों में दिया हुआ है उसमे असत्य और अधिक कथन होता है इस लिये असीरिया का प्राचीन सच्चा इतिहास जानना सम्भव नहीं डायोडोरस और टेसियस यूनानी इतिहासकों के पुस्तकों मे असीरिया के योधा राजाओं और राणियों के साहस की कथा लिखी है अंजील में असीरिया के राजाओं के युद्धों का वर्णन है और हैरोडोटस यूनानी इतिहासक ने बहुत वर्णन नहीं किया किन्तु जो उसने लिखा है वह अंजील के कथन को सिद्ध करता है (अर्थात् एक बलवान जातिने असीरिया में राज स्थापन किया) जब कि बाबल जिसे नमरूद राजा के दास बना रहे थे देवाज्ञा से अचानक बनने से रहगया तब (उत्पति १०-८ से ११- अंजील) राजाने उसे छोड़ दिया और असीरियामे जाकिनवेह नगर बनाया असीरिया की राजधानी १२३० ई० प० मे स्थापन हुई मालूम होती है नमरूद जिसे नाइनस भी कहते हैं असीरिया का पहला राजा और बड़ा शूरवीर हुआ इसने समेरा मिस से जो एक अफसर की स्त्री थी विवाह किया और उसी के उपदेश के अनुसार राज्य व्यवहार करता था जिसका यह फल हुआ कि राज की वृद्धि होती गई नाईनस के मरने के पीछे समेरामिस अपने बेटे के नाम पर राज करनेलगी उसने बाबिलन नगर को बहुत बढ़ाया और मिसर और इथियोपिया देश तक उधर और हिन्दुस्तान तक इधर आक्रमण किये, इसमें सन्देह नहीं होसकता ... जब हम वर्तमान

समय के मुगलों को देखते हैं जिन्होंने कई एक देशों पर हमले किये थे और उनको लूटा था समेरामिस रानी के बाद उसका बेटा निनियस गद्दी पर बैठा परन्तु इसने विषयासक्त और आलसी होकर अपने राज्य व्यवहार मंत्रियों के हाथ सौंप दिये उसके कुल के बहुत उत्तराधिकारियों ने इसी तरह किया जिसका यह फल हुआ कि राजधानी का बल घटता चलागया अंजील के वर्णन के अनुसार असीरिया के राजे पूलके समय मे (७७१ ई. पू.) असीरिया वालोंने अपने राजको फ़रात नदी के पश्चिम ओर इतना बढ़ाया कि इसराईल राजकी सीमातक पहुंच गया तब यहां के अनअधिकारी राजा मिनहमने १००० चांदीका टैलेंट सिक्का (एक इबरानी टैलेंट ३५० वा ३९०० रुपैये का होताथा) देकर अपना बचाउ किया (२० राजे-१५-१९ अंजील) उसके पीछे तिग्लाथ पुलासर ७४० ई. पू. में राजा हुआ इसने इसराईली राजधानी को लेलिया और वहां के बहुत से लोगों को निकाल कर अपने राज्यके हास्य प्रदेशों में बसाया (२० राजे-१५-२९-अंजील) यहूदा के राजा अहाज(१) के कहने से असीरिया (शाम) देश पर चढ़ाव किया और दिमिश्क राजधानी को छीन कर वहां के लोगों को भी फ़रात नदी के पार जा बसाया।

उसके पीछे शालमनासर ७२८ ई. पू. में राजा हुआ उसने इसराईली राजधानी पर चढ़ाव किया और उसकी राजधानी के नगर समेरिया को तीन वर्षमे लिया दस वर्गों के ब-

(१) अहिअज़

इतने लोगों को बन्दी करके लेगया और उनकी जगा और देशों के लोग ला बसाये इसके पीछे शालमनासर ने टायर नगर पर भी चढ़ाव किया परन्तु जहाजोंके नाहोनेके कारण सर्व आक्रमण निष्फल हुए। इसके पीछे सिनेकेरिब नामक राजा ७२४ ई॰ प॰ मे हुआ इसनेयहूदा के राजा हैजेकाया पर चढ़ाव किया और मिसर के राजा को भी धमकाया परन्तु इबरानियों के परमेश्वरकी निन्दा करने के कारण उसकी सारी सेना नष्ट होगई और जब घरमें पहुंचा तो उसके दो बेटों ने मिल कर उसे मार डाला।

असरहेड्न सल वा सारडनापलस अपने बड़े भाईयोंकी जगह तखत पर बैठा क्योंकि उसके दो बड़े भाईयों से जिन्हों ने अपने पिताको माराथा राजगद्दीका अधिकार छीना गिया था इस राजाका हत्तान्त अच्छी तरह ज्ञात नहीं केवल यह ज्ञात है कि उसने यहूदादेश को अपने अधीन कर लिया और मिसर पर भी आक्रमण किया परन्तु पीछे विषयासक्त होगया और राजकाज छोड़ बैठा इस पर मिडिया और बाबिलोनियां के सूबियों ने मिलकर निनवहनगर को आघेरा जब सारडनापलस की आंख खुली तो देखा कि सब प्रजा उससे बिगड़ गई है और कोई उसकी सहायता नहीं करता तो अपने बालबच्चों और स्त्रीयों के साथ जल मरा (७७६ – ई॰–प॰) इसी राजा के साथ असीरिया के राज्य का अन्त हुआ परन्तु बाबिलोनिया के राजधानी की वृद्धि होने लगी॥

कालडी अर्थात् कासदीम (पश्च पालिक और अमाणिक) लोग काफ और टारस पर्वतों के (पहाड़ी प्रदेशों में) रहने वाले थे असीरिया के राजाओं ने इन लोगों को अपनी सेना में भरती किया और बाबिलोनिया प्रदेश में उसकी रक्षा के लिये उनको (वहां) बसाया था जब असीरिया की राजधानी निर्बल हुई तो इन्होंने और सर्व देशीय लोगों की तरह असीरिया के राजा से बिगड़ कर अपनी राजधानी स्थापन की — और बाबिलोनिया में सब से उच्च जाति की पदवी ली क्योंकि वे लोग विजयी थे (यशयियाह — २३-१७ अंजील)।

बाबिलोनिया के कालडी लोगों के इतिहास का आरम्भ नेबोनसर के समय से होता है (७४७ - ई. प.) इसके राज में सिसरी सूर्य्य वर्ष (संक्रांती के हिसाब वर्ष) बाबिलोनिया में प्रचलन हुआ इसके बाद उत्तराधिकारियों के समय में फिर पराधीन हो कर सारडानापलस के राज्य तक असीरिया के वश में रहा।

असीरिया राज्य के नाश के पीछे निबोपुलासर वा नेबोपोलसर बाबिलोनियां का राजा (६२६ ई. प. में) हुआ इसके समय में फैरोह नीको ने फ्रात नदी की ओर अपना राज बढ़ाना चाहा और कारकेमिस नगर को अपने अधीन करके सीरिया और फनीशिया के हाकमों को बाबिलोनियां के राजा से बिगड़ने को उकसाया परन्तु निबोपोलसर ने अपने बेटे (नेबूकैड़नज़र) की सहायता से इन सूबों को फिर अधीन कर लिया नेबूकैड़नज़र ने फैरोह नीको को (६०५-ई. प.) कारकेमिस की

लड़ाई में पराजय किया और मिसर पर आक्रमण करना चाहा परन्तु पिताके मरने की खबर सुनकर बाबिलन को हट आया।

हैरोडोटस लिखता है कि "नेबूकेडनजर की रानी नि-क्रोटस ने बाबिलोनियां में बड़े २ मन्दिर बनाये मिसर पर चढ़ाव करने से पहले निबुकेड नेजर ने यहूदा की राजधानी जीतली और वहांके बड़े २ अधिकारियों को कैदकर लिया इनमें दानियल एक बड़ा प्रसिद्ध भविष्यद्वक्ता था इसने बाबिलोनियां में एक राजा के स्वप्न का फल जिसे और कोई ज्योतषी वा स्वप्नविचारी न बता सका बताया तब राजाने उसे बाबिलन का (राज-शासक) हाकम बनाया (दानियल- २-१ अंजील)।

जब सिथिया देशके लोगों ने बाबिलन पर चढ़ाई की तो यहूदाके लोगों ने भी अपने आपको स्वतन्त्र करना चाहा निबुकेड नेजर जो इस समय साईएकसेरस (दारवेश) मीडिया के राजा सहित निनवह नगर को घेर रहाथा इस नगर को ले और उसको नष्ट कर जरूसलम पर चढ़ आया यहूदियों के इस पवित्र नगरको लूटा इसके राजा को मार डाला उसके पुत्रको कैद कर लिया एक नया राजा अपने अधीन स्थापन किया और वहांके इतने लोग पकड़ लाया कियहूदादेश उजाड़ होगया फिरभी यहूदी लोग बिगड़ने से नारह सके परन्तु तब उनकी पहले से अधिक दुर्दशा हुई। इसके पीछे जेताने फनिशिया देशको लेलिया और मिसर के उत्तरीय (नीलके घाटी परके) प्रदेशों को लूटा जब यहां से लौटा तो उसने डूरा के स्थानमें एक सुवर्ण की मूर्ति खड़ा

के निमित्त स्थापन की (दानियल - ३ - १ अंजील) शाडरक
मेशक और अबदनीगो नामक यहूदियोंने उसको पूजा करने
का इनकार किया इस पर वे अग्नी में डाले गये परन्तु परमे
श्वरकी शक्तिसे बचगये अन्तमें निबूकेडनिजर पागल हो-
गया और जंगलों में (दानियल - ४ - ३३ अंजील) फिरता
मर गया। निबूकेडनिजर के पीछे मेरेडोक जो उसका
री था गद्दी पर बैठा परन्तु थोड़े दिन पीछे अपने बहनोई ने-
रिगलिसर के हाथसे मारा गया। "बालशहजर को निक्रोटस
ने जो उसकी मा जान पड़ती है छिपा कर बचा रक्खा था" परन्तु
इस समय मीड लोगों का बल बहुत बढ़ गयाथा तो नेरिग-
लिसर राजाने (उनके रोकने के लिये) और पश्चिमी अधीन राजों
को साथले उत्तरमें मीडिया वालों से (जिनके सेनापति साईएक
सरीस और साईरस थे) जा लड़ा परन्तु पराजित हुआ और मारा
गया। उसके मरने पर उसका बेटा लबोसोरवाड राजा हुआ
५५५ - ई॰ पू॰ परन्तु अन्याय के कारण थोड़े मास राज करने
के पीछे गद्दी परसे उतारा गया और निबूकेडनिजर का पौत्र
बालशहजर गद्दी पर बैठा और क्योंकि राजा लड़का होथा इस
लिये राज्य का काम निक्रोटस रानी करती रही बाबिलन में बहु-
त और सुन्दर स्थान बनाये फ़ुरात नदी पर पुल बान्धा बाबिलन
के उत्तर नदीके जल रोकने को एक झील बनाई और नदीके नी-
चे से रस्ता निकाला परन्तु जब बालशहजर राजा हुआ तो वह
राज काज छोड़ कर विषयासक्त होगया और मिडजाति के लोगों

को शत्रु बना लिया साईरस ने सैरिस मीडिया के राजे ने अपने भतीजे सैरिस के साथ बाबिलन नगर को घेरा बालशज़र दीवारों की दृढ़ता के भरोसे शत्रुओं पर हँस रहा था और अपनी विजय की आशा में मदिरा पान और रागरंग के भोग कर रहा था साईरस ने उसी समय (सन्ध्याकाल) सेना को हुकम दिया कि नदी का जल झील में डाला जावे और जल जब बहने से बन्द हो तो नदी के तल परसे नगर में दाखिल हों जब बालशज़र रागरंग में पड़ रहा था उसने (दानियल ५-१से ३१ अंजील) किसी अज्ञात मनुष्य को अपनी सामने दीवार पर कुछ अक्षर लिखते देखा और जब बाबिलन के विद्वान उन का अर्थ कहने में रह गये तो दानियल को बुलाया गया उसने कहा कि यह "मिनी मिनी टेकल उफारसिन" लिखा है और इसका अर्थ यह है कि तेरा राज्य पूरा हुआ और मीड और फारस वालों को दिया गया। नगर में जो यह होरहा था उधर नगर के बाहर मीड लोग अंधेरी रात के कारण राज्यागार तक बेधड़क चले आये जैसा कि वे द्वारपालों से लड़ रहे थे राज्य सभा के लोगों ने रोशनदान का द्वार खोल दिये तब सेना एक ही बार राज्य मंदिर में घुस गयी इस समय बाल्तशज़र बड़ी शूरवीरता से लड़ा परन्तु मारा गया और उसके मारे के साथ बाबिलोनिया के राज्य का अन्त हुआ (५३८ ई० पू०)।

प्रकरण ४।

निनवह और बाबिलन नगरों का वर्णन॥

निनवह नाम नाईनस राजा के नामसे जिसने उसे बसाया था पड़ा मालूम होताहै यह नगर दजला के पूर्वी तटपर बाबिलन से उत्तर की ओर ३०० मील के समीप था एशिया के और प्राचीन नगरों की तरह चतुष्कोण था इस (की शहर पनाह) का घेरा ४८ मील, लम्बाई १५ मील और चौड़ाई ९ मील थी इसके घर मिले हुए नहीं थे किन्तु जुदे २ थे प्रत्येक घर के साथ एक बाग और चरागाह वा खेती योग्य भूमि होती थी अर्थात् निनवह छोटे २ ग्रामों का एक समूह था यूनः नामक भविष्यद्वक्ता ने इसकी बाबत (यूना ३-३ और ४-११ अंजील) कहा है कि इसकी फेरी तीन दिन में पूरी होती थी १२०००० से अधिक की आबादी थी पशु भी बहुत थे शहर पनाह की दीवार भी बड़ी भारी और पक्की थी अर्थात् १०० फुट लम्बी थी और चौड़ी इतनी थी कि तीन रथ बराबर चल सक्ते थे इसकी रक्षा के लिये १५०० बुर्जे बने हुये थे नहूम नामक भविष्यद्वक्ता ने इस नगर के नाश भविष्यत कथन मे इसका वर्णन किया है (नहूम ३-१-३ वा १५ से १९ अंजील) जब मीडिया वालों ने इस नगर का नाश किया तो उस के कई एक छोटे २ ग्राम बच गये किन्तु समय पाकर यह भी उजड़ गये अब तो उजाड़ सा मैदान पड़ा है। बाबिलन (बाबल) एक मैदान में बसा

था इसका आकार वर्गरूपथा और फ़रात नदी जिसके जलसे शहर पनाह की खाइयें भी भरी रहती थीं उसके बीचमें से होकर बहती थी १०० दरवाजे थे जिनके कपाट पीतलके थे गलियें और बाजार ठीक २ सूधे थे और एक दूसरे से समकोण रूपमें थे इसलिये ६५२ चौकथे जिनमेंसे प्रत्येक सवा दोमील के घेरेका होताथा। बाल नाम देवता का मंदिर यथासम्भव बाबल के मंदिर के स्थान पर बना हुआ था जब इस नगर को निबूकेडनिजर ने बनाया तो इसका घेरा ६० मील काथा क्योंकि एक तरफ़ १५ मील लंबी थी दजला और फ़रात नदियों के बीच पत्थर लकड़ी नहीं मिलती थी परन्तु वहांकी मिट्टीही पत्थरका काम देतीथी। बाबिलन से ८ दिन के मार्ग पर "इस" (अबहित बोलते हैं) छोटेसे नगर के समीप जो इसी नामकी नदीपर (इसनदी) स्थित था मटिया तेल बहुत होता था बाबिलनके शहरपनाह की दीवार ८५ फ़ुट चौड़ी और ३०० फ़ुट से अधिक ऊंची थी दरवाजों और दीवारों की रक्षा के लिये बुर्ज बने हुये थे नदी पर एक फ़रलांग (मीलका आठवां हिस्सा) लंबा और ३० फ़ुट चौड़ा एक पुल बना हुया था और नदी के नीचेसे एक रास्ता भी था बाबिलन में सबसे बड़ा प्रसिद्ध मंदिर बिलस (बाल) का था वर्तमान समय में हिलाह नगर के पश्चिम में जो एक बड़ा भारी ऊंचा खंड़रोंका ढेर है जिसे (बिरस नमरूद) नमरूद का बुर्ज कहते हैं उसे उसी मंदिर समझते हैं यह मंदिर एक फ़रलांग लम्बा और उसी के समीप चौड़ा था इसकी ऊंचाई ६०० फ़ुटसे अधिक थी इसके ८ मं-

जले, तो ऊपरकी ओर घटती जाती थीं और इस पर चढ़ने का मार्ग इसके चारों ओर फैलता था — जिसके इन्जिनर ने उसे बहुत बढ़िया और दो मीलकी दीवार से इसको घेरा था।

यहां का अधिदेवता बाल या बिलस था इस मंदिर में स्व र्ण और स्वर्ण मूर्त्तियां रखी हुई होती थीं मंदिर के पास पुरा ना राज्यभवन था और नदीके दूसरे तट पर नया राज्यभवन था जिसके उद्यान आदिकोंकी भूमी ८ मीलके घेरेमें थी इसी घेरे में वे बागथे जो लटक बाग कहलाते थे जबसे इस नग र को फारस वालोंने लिया तबसे वह घटने लगा सिकन्दर ने इसे अपनी राजधानी बनाना चाहाथा, किंतु समय पाकर उजाड़ हो गया यहांतक कि जंगली जीवों का निवास स्थान बनगया (यसइयाह—१३— १९ से २२ इंजील)॥

प्रकरण ५।

बाबिलन वालों के शिल्प और व्यापारका वर्णन।

यहां रूई उनके कपड़े और दरियें बहुत होतीथीं औ र सिन्डान नाम एक बहुत उत्तम वस्त्र राजाओं के लिये बनता था रूई सीरिया (शाम) और किरमान देशों से आतीथी और सुगंधजल लकड़ीकी छड़ी जिसपर बेल बूटे खुदे होतेथे खुदे हुये पत्थर और मोहरें (पत्थरकी) यहांसे अन्यदेशों को जाती थीं मणि रत्नादिकी जड़त ऐसी करतेथे कि यूरूपवाले वैसी न हीं कर सकते इसका व्यापार पूर्वसे उत्तर हिन्दुस्तान और फारस

वालोंसे होताथा जिनसे स्वर्ण मणियें रंगादि खरीदतेथे कंदहार और काश्मीर से ऊन जाती थी(ये सब वस्तु बलख से होकर बाबिलन में जातीथीं) पन्ने और मणियें कोबीके जंगल से और लालारंग हिन्दुस्तान से जाताथा हिन्दुकुश (बदखशान) और तिब्बत वालों से भी व्यापार होताथा। जो मार्ग बाबिलन से - मिडटेरेनियन (मध्य) समुद्र को जाता था उसके(आरमनि पर्वतों के पास)दो मार्ग होजातेथे एक पेशिया माइनर और दूसरा सीरिया को जाता था मेसोपोटामियां के पर्वतीय प्रदेशों में से जो छोटा मार्ग है उसमें लुटेरों के भयसे उस समयसे आजतक नहीं चलते।

हिन्दुस्तान के समुद्र में बाबिलन(प्रदेश)के लोग फिनीशी लोगों के द्वारा व्यापार करते थे फारस खाडी के द्वीपों और लंका से मोतियों का व्यापार करते थे और जब फारसियों का राज्य हुआ तो उन्होंने इस व्यापार को बन्द कर दिया लंका द्वीप के मोती फारस खाडीके द्वीपोंके मोतीयों जैसे सच्चत नहीं होते फारस की खाडी के द्वीपों से रूई और लकडी मिलती थी॥

अध्याय ४

पश्चिमी एशिया (अर्थात् एशिया माइनर सिरिया और पालिस्टाइन देशों) का इतिहास

प्रकरण १।

एशिया माइनर।

प्राचीन इतिहासकों के पुस्तकों से एशिया माइनर शब्द[1] नहीं मिलता क्योंकि यह केवल पीछेसे (अर्थात् मध्य समय) उस देश के (जो कि इजीयन ब्लैक (काला) कास्पी और लिवेंट नामक समुद्रों के बीच में प्राय द्वीप है जिसे अनाटोलिया भी कहते हैं) निरूपण करने के लिये बनाया गया था इस देश में बहुत से छोटे २ प्रदेश थे जिनकी सीमा समय पाकर पलटती रही उत्तर में मीसिया, बिथीनिया, पफलगोनिया पोनटस मध्य में लीडिया फ्रीजिया गलेशिया लकोनिया इशोरिया कैपेडोसिया आरमेनिया और दक्षिण में कैरीलीसिया पिसीडिया पम्फीलिया और सलीसिया बड़े प्रसिद्ध प्रदेश थे। समुद्र हेलस्पान्टस्य मीसिया के पश्चिमी भाग को ट्रोअस वा छोटा फ्रीजिया कहते थे इसी प्रदेश में ट्रोय नगर था जिसको होमर नामक कवीश्वर ने अमर कर दिया — यद्यपि काल के प्रभाव से उस नगर के ठीक २ स्थानों का मिलना तो असम्भव है रोडियम और सिजियम अन्तरीप जो क्रम से उत्तर और द-

[1] मध्य समय वह समय है जो प्राचीन और वर्तमान समयों के बीच में होता है।

सिए में हैं उनके बीच में टेनिडोस नामक द्वीप के पास एक बंदरगा-
ह है यहांसे एक मैदान जिसमे सेकेमेंद और सिमाइसनदियें
वहती थी उन पहाड़ियों तक चला जाता था - जो आइडा
पर्वत के चारोंओर थीं इस देशमें ट्राय वा ईलीयम नामक नगर
इन्हीं पहाड़ियों पर बना हुआ था और इनमेंसे एक पर परगेम-
स नाम किला बना हुआ था और प्रोपान्टिस समुद्र के एक द्वीप
में सीसीकस बड़ा नगर स्थित था इसमें बहुत प्राचीन कालमे
यूनानियों की कई एक बस्तियें थीं बिथीनिया - पफलगोनिया
और पोनटस काले (बलैक) समुद्र के तटस्थ प्रदेश थे
इनमें यूनानदेश की व्यापार वृद्धि के समय में यूनानियों
की बहुत बस्तियां थीं हालिस और संगारस एशिया माइ-
नर की बड़ी प्रसिद्ध नदियें काले समुद्र में गिरती हैं एशि
या माइनर के सारे पश्चिमी समुद्रतट पर यूनानी लोग ब-
से थे इनलोगों के आईओनिया और ईओलिया और केरिया प्रदेशों
में बड़े २ व्यापारी नगर प्राचीन समय मे प्रसिद्ध थे फिर ये
नगर फारसवालों ने लेलिये थे लीडियामें जिसे मीओनिया
भी वोलते थे सिवाय और यूनानी नगरों के जो उस प्रदेश के
समुद्र तट पर थे सारडस बड़ा प्रसिद्ध राजस्थान था यह न-
गर पैकटोलस नदी के किनारे पर मोलस पर्वत के नीचे
स्थित था और लीडिया की राजधानी थी जब पारसवालों
ने इस नगर को लेलिया तो उनके राज्य में एक बड़ा प्रसिद्ध
नगर गिनाजाता था।

फ्रीजिया देश की सीमा बारंबार बदलती रही इसके प्राची-
न नगर गारडीयस और सिलीनी थे परन्तु जब मैसीडोनि-
या वालोंने इस देशको लेलिया तो उन्होंने बहुत नवीन
नगर बनाये थे जिनमें से मुख्य नगर ये थे आपामी लेओ-
डिसिया आदि ग्लेशिया नाम गाल्स जाति से पड़ा था
जो इस देशमें तीन ई, पै, से आबसे थे।

इसारिया और लाइकोनिया प्रदेशों में तारस पर्वत की
श्रेणी थी। कैपैडोशिया हालीस और यूरात नदियों
के मध्यमें था इसका प्रसिद्ध नगर मयाका था।

आरमीनिया उस पहाड़ी प्रदेश का नाम था जो कास्पीयन
समुद्र के तट पर था इसकी बड़ी नदियें साइरस और
आरकसी थीं बहुत काल तक तो इसदेश में कोई नगर
नथा परन्तु अन्त में टिगरेनस राजाने एक टिगरानोसर्ट
नाम नगर बनाया। केरिया के समुद्र तट पर बहुत
यूनानी बसे थे लीसिया पसीडिया और पम्फीलिया पहाड़ी प्रदे-
श थे सिलीशिया और सीरिया (शाम) में अमेनस पर्वत
था इसमें (सिलीशिया में) टारसस और आंकीएल नगर थे
जिनको सारडेनेपल्स राजाने बसाया था।

प्रकरण २।

एशिया माइनर (छोटा एशिया) का (प्राचीन) इतिहास।

एशिया माइनर में ट्राय फ्रिजिया और लीडिया की

राजधानियें प्रसिद्ध थीं ट्राय देश का हमान्त कवियों के कथन से जानाजाता है परन्तु यह कथन प्रमाणीक नहीं और इस से समय भी निरूपण नहीं होसकता कहते हैं कि डारडेनस जो समाथ्रेस का वासी था और अपने देश से निकाला गया था जब यहां आया तो – पश्चिमी मिसिया के ट्यूसर नाम राजाने उसे कुछ राज और अपनी बेटी दिई डारडेनस ने इस दिये हुये राज्य मे एक नगर बसाया (१५०० ई. पै) जिसका नाम डारडेनिया रखा।

डारडेनस के पीछे एरिच थोनियस गद्दी पर बैठा यह राजा इसलिये प्रसिद्ध है कि इस के पास घोड़े बहुत थे उसके पीछे ट्रोस राजा हुआ इसने डारडेनिया नगर का नाम ट्राय रखा उसके पीछे ईलस राजा हुआ इसने उस नगर का नाम ईलियम रखा उसके पीछे ल्योमीडन राजा हुआ इसके राजमें हरक्युलीज ने उस नगर को लूटा था अन्त में पडार्कस जिसका नाम परायम भी था राजा हुआ पारिस अथवा सिकन्दर प्रायम का बेटा जब वकील बनकर यूनान में गया तो स्पारटा के राजा मेनीलेयस की हेलीना नामक औरत को निकाल लाया इसकारण यूनान के सब राजाओं ने मिलकर ट्राय पर चढ़ाई की और १० वर्ष तक लड़ाई होती रही अन्त में यूनानियों ने ट्राय नगर जीत कर फूंक दिया।

फ्रिजि जाति का शुरू हाल मालूम नहीं परन्तु इतना जान पड़ता है कि यह जाति बड़ी शूरवीर होचुकी है क्योंकि

यूरोप में इनके देवतों की पूजा बहुत होती थी यात्रिक लोगों(१) ने अपने अनुसन्धान से इस जाति की उन्नति के और भी सबूत दीये हैं क्योंकि इन (लोगों के) कई एक पर्वतों में खुदे हुये मंदिर पाये जाते हैं इनकी देवी का नाम सिबिली था (यह नाम पृथिवी की उपजाऊ शक्ति का था) और सिबिली के पुजारियों का नाम कोरिबेन्ट था ये लोग अपने शरीर को काट २ देवी के साह्मने नाचते थे परन्तु शिष्टाचार लोग इनके ऐसे नाचने और पूजने को बुरा समझते थे कई एक फ्रीजिया के राजाओं के नाम मायडेस अथवा गार्डियस थे परन्तु इनका क्रम से निर्णय नहीं है। गार्डियस प्रथम १ जिसने गार्डियम नगर बसाया था जाति का किसान था जब वह राजा हुआ (तब) उसने अपनी गाडी को देवताओं को चढ़ाया और गाडी के लट्ठे से जूप को बहुत पक्का करके बांधा उस समय यह आकाश वाणी हुई कि जो इस गांठ को खोले वह एशिया का राजा होगा जब यह खबर बड़े सिकन्दर ने सुनी तब उसने आकर इस गांठ को तलवार से काटा मेडस पांचवें के समय में फ्रीजिया की राजधानी लीडिया के राजा के अधीन होगयी। लीडिया जाति जिनको मियोनि भी कहते थे केरिया जाति की एक शाखा थी इस जाति पर तीन वंशों ने राज्य किया १ एरिएडी जो १२३२ ई. पै. अम्फेल (हरकुलीज) की रानी के मरने पर अन्त हुआ। २ द्रियाडीडी वंश कैंडालस राजा के मरने पर समाप्त हुआ

(१) जो लोग देशों के देखने लिये फिरते है

था इस राजा को लीडिया के सरदार गिगिसने उसकी स्त्रीसे म-
रवायाथा ७१० ई.पै. २ गिगिस से मरमनेडी नाम वंश
चला इस वंशके समय में लीडिया राजधानी बहुत बढ़गई
गिगिसने उन यूनानी लोगोंसे लड़ना शुरू किया जो एशि-
या में बसते थे कई नगर लेलिये परन्तु मिलिटस नगर में
इसकी पराजय हुई आर्डस जो इस वंश का दूसरा राजा हु-
आ इसके समय में किमरी जातिके लोग(जो उत्तर प्रदेशों
के जंगलों में बसते थे और जिनको सिथिया जाति के लोगों
ने उनके घरोंसे निकाल दिया था) एशिया माइनर को लूट
ने लगे और १५० वर्षतक लूटते रहे आर्डस के पोते एलीएटी-
स ने उन जंगली लोगों को निकाल दिया — फिर मीडिया
के राजा खुसरो के साथ लड़ना शुरू किया और उसकी राज्य
वृद्धिके रोकने के लिये ६ वर्ष तक लड़ता रहा अन्तमें ए-
क समय जब दोनों सेना लड़ रही थीं पूर्ण सूर्य्य ग्रहण
लगा तो दोनों ओर की सेना उसको देखकर डरकर भाग
गई ६०५ ई.पै. इस ग्रहण की खबर मिलिटस नगर
के रहने वाले थेल्स ने पहलेही से देदी थी पश्चिमी इति-
हासमें यह सबसे पहला ग्रहण वर्णन किया है एलिये-
टस ने मिलीसि लोगों के साथ भी लड़ना प्रारम्भ किया
प्रतिवर्ष उनपर चढ़ाव करके उनकी खेतियों का नाश-
कर देताथा एक चढ़ाव में मैनरवा देवी का मंदिर जला-
या गया इसपर जब लीडिया के राजाने डेलफी देवताओं

से कोई कठिन बात पूछने को दूत भेजे तो डेलफीसे उत्तर आया कि जब तक मेनरवा देवी का मंदिर न फिर बनेगा तब तक कुछ उत्तर नहीं दिया जावेगा जब लीडिया के राजा के दूत उस मंदिर को बनाने के लिये मिलिटस नगर में गये तब वहां के राजा ने अपनी प्रजासे कहा कि जितना तुम्हारे पास धान्य है उसका बाजार में ढेर लगाओ वकीलों ने बहुत धान्य को देख अपने राजा से कहा कि लड़ाई में उन की कुछ भी हानि नहीं हुई यह सुन कर लीडिया के राजा ने मिलिटस के राजासे सन्धि करली।

क्रीसस (कारून) एलियेटिस का बेटा जो राज्याधिकारी था उसने एशिया माईनर की यूनानी राजधानियों को लिया और अपने राजको पूर्वकी ओर हालिस नदीके किनारे तक फैलाया इस राजाकी राजधानी सार्डिस नगरमें थी यहां अनेक देशों के यात्री पण्डित और विद्यावान लोग उसकी राज्यसभा मे आते थे और बड़ा मान पाते थे जब सोलन नाम एक यूनानी पण्डित यहां आया तो राजाने उस से "अपना सारा धन दिखला कर" पूछा कि मैं परम सुखी हूं कि नहीं सोलनने कहाकि जिसको अन्त समय सुख नहो वह सुखी नहीं राजा यह बात सुन कर प्रसन्न नहुआ कुछ दिनों के पीछे क्रीसस ने डिलफीकी आकाश वाणी पर विश्वास करके फारसवालों से लड़ाई की परन्तु पराजित हुआ सैरीस फारस के राजाने उसे जलादेनेका हुकम दिया तो क्रीसस

ने चिता पर चढ़ने के समय सोलन सोलन कह कर पुकारा त
ब सैरस ने विस्मित होकर इस बातका कारण पूछा तो क्रीस
स ने सारा वृत्तान्त कह सुनाया सैरस ने प्रसन्न होकर क्रीस
स को मरने से बचाया और अपना मंत्री बना लिया (५४६
ई॰ पै॰) लीडिया और पशिया माइनर सिकंदर के समय
तक फारस की राजधानी के अधीन रहे।

प्रकरण ३।

सीरिया (शाम) भूगोल॥

यूनानी लोग सिरिया उसी देश को (जिसे हम सिरिया और इब्रानी लोग आरम कहते हैं) नहीं बोलते थे किन्तु उसके साथ मिसोपोटामिया और पशिया माइनर के कई प्रदेशों को भी मिलादेते थे ततमः सीरिया उस देश को कहते थे जिस के उत्तर में अमेनस पर्वत पूर्व में फ़ुरातन दी पश्चिम में फिनिशिया और दक्षिण में अर्ब हैं इसदेश के कई भाग हैं परन्तु मुख्य तीन हैं १ म॰ असली सिरिया जिस में सिल्युकस, का मेजिनि और किलि[1] सिरिया हैं २ य॰ फनिशिया और फिलिसटाईन ३ य॰ पेलिस्टायन जिसका वर्णन आगे एक अलग अध्याय में होगा।

कामेजिनि मे मुख्य नगर समुसाट (फ़ुरात नदी पर स्थित) था और यहां और भी नगर थे सिल्युकस में अनटियोक और सिल्युसिया बड़े प्रसिद्ध नगर थे जिनको महासिकंदर के

(१) अर्थात् खाली सिरिया

उत्तराधिकारियों ने बनाया था यहां हीरापुलीस वा (वर्तमान समय का) अलेपो जिसमें विरोई देवीका मंदिर था और हिलयोपोलरिस (बालबक - जिसके अब कंडर पड़े हैं) थे सारी सीरिया के नामका कारण यह था कि वह लिवानस पर्वतों की दो समानान्तर श्रेणीयों में था यहां का प्रधान नगर डमेसकस " वा दमिशक जो पहले सीरिया की राजधानी थी" बहुत प्राचीन नगर है यहां तक कि इब्राहीम बैबीला और लैउडी शिया के समयों में भी स्थित था सीरिया के बालूमय जंगल में जो यहांसे समीप है।

टाउमर (पालमीरा) नाम नगर था जिसको सुलेमान राजा ने बनाया था इसके खंडर बालबक से सुंदरताई और विस्तार में न्यून नहीं थे इसके समीप फ़ुरात पायाब थी

फनीशिया जिसे फनीशी भी कहते थे मेडीटे रि (मध्य) सागर के तीर पर था यहां सैडून और टायर[1] बड़े प्रसिद्ध नगर थे इनमें नवीन टाइर तो एक द्वीप पर और पुराना टाइर समुद्र तट पर थे इनके सिवा अराडस रिपोलिस बिबलस और बिरीटस जिसको वर्तमान समय में बिरूत कहते हैं नगर थे सैडून नगर से पुराना टाइर बसाया परन्तु सैडून की तरह एक बड़ा भारी व्यापारिक स्थान बन गिया था।

निबूकडनिज़र ने इस नगर को तेरें वर्षतक घेर रखा परन्तु फिर भी उसे ले न सका और जबकि बैबिलन के लोग इस नगर को घेर रहे थे तो टाइर के लोगों ने एक पासके

(१) इसको सूर भी कहते हैं

द्वीप में आश्रय लेकर वहां नया शहर बसाया था— हिराम ने जोकि दाऊद और सुलेमान के समय में हुआ था इस नगर को अपनी राजधानी बनाना चाहा और उस ने इस नगरमें अधिदेवता मिलकारथ का मन्दिर बनाया यह नगर बहुत बड़ा नहीं था और इसी कारण यहां के घर बहुत ऊंचे थे यहां दो बन्दर थे एक तो सैदून की ओर और दूसरा मिसर की दिशा में महासिकन्दर के आक्रमण के पीछे यह नगर मिसरदेशस्थ सिकन्दरिया नगर की वृद्धि होने से घटने लगा

प्रकरण ५

सीरिया लोगों के राजसम्बन्धि और सांसर्गिक अवस्था का वर्णन।

सीरिया देशमें केवल एक बड़ी नदी ओरोण्टिस थी इसका पानी मैला होताथा इसके वेगके कारण इसमें नौका नहीं चल सकती थी परन्तु यहां छोटी छोटी नदी भी बहुत थी इनमें से क्रिसारीरो इस नाम्नी नदी अपनी निर्मलता और मत्स्य बाहुल्य के लिये बड़ी (दिमिशक के समीप) प्रसिद्ध थी यहां की भूमि पशुचरण के लिये कृषि कर्म्म से अधिक योग्य थी और (आगे कहा जावेगा कि) यहां मिसर से धान्य आताथा इस देशमें लवणाकर बहुत थे और लबनान पर्वतसे जहाज़ और नौका के लिये लकड़ी लठे मिलतेथे अतएव यहां दो प्रकारके लोग रहतेथे एक तो जंगली और दूसरे

व्यापारी इस कारण वहांके राज्यमें बहुत सा परिवर्त्तन होजाता था नगरोंमें तो प्रजाधिपत्य था और ग्रामोंमें छोटे २ राजा राज्य करते थे इनका धर्म्म यही था कि ये लोग वर्षा सूर्य्यादि नैसर्गिक शक्तियों की पूजा करते थे और अस्टारटिजिस का वर्णन बाबिलन के धर्म्म प्रकरण मे कियागया बहुत मानी जातीथी अबतक उस देशके सिक्कों पर उसकी आकृति बनी हुई मिलती है फिनिशियाके लोग सिरियाके लोगों की नाईं समेटिक जातिके थे परन्तु यह निश्चय नहीं कि ये लोग पूर्व देशसे वा एशिया के उत्तर भागोंसे मिडिटरेनियन के तट पर कैसे आकर बसे थे।

इसी समुद्र के तीर पर बहुतसी खाड़ियां और नौकाके आश्रयस्थान थे और यहां बहुतसे पहाड़ जिन पर लकड़ीके जंगल थे - समुद्रतक फैलते हुए चले जातेथे इसतीरके पास बहुतसे द्वीप भी थे जिन परकई नगर और व्यापारी स्थान थे ये(सब)नगर एक प्रकार की सभासे जिसके अधिष्ठाता शेहरके लोग थे शासित किये जाते थे परन्तु व्यापार ईर्षाके कारण इनमें विरोध बहुत रहता था पुरोहित वर्गका अधिकार बहुत होताथा परन्तु यह निश्चित नही कि इनकी एक विशेष जातीथी फिनिशियाके लोगोंका धर्म्म और सब जन पदोंसे बहुतही निष्ठुरता का था इनके देवता मोलोक को. मनुष्यकी बली होती थी और बालदेवता के पुरोहित अपने देवता के सन्तुष्ट करने के लिये अपने शरीरों को खु-

ड़ों से काटतेथे माऊज़ देवता की पूजा में बड़ी निर्लज्जता होती थी परन्तु इस पूजा को वे लोग गूढ़ार्थक गिनते थे।

प्रकरण ५

सीरिया और फिनिशिया का इतिहास।

सीरिया देश बहुत से अल्प भागों में विभक्त था इनमें से कई एक जहूदा के राजा दाऊद ने १०४४ ई॰पे॰ अपने वश करलिये थे सुलेमान यहूद के राजा के अन्त मे रेजन नामक (एक दासी जन) ने अपने देशको यहूदा से स्वतन्त्र करके सीरिया की राजधानी काइम की बिनहादद जोकि इसके उत्तराधिकारियों में से बड़ा प्रसिद्ध था इसराईली राजाओं(आहाब और जिहोरम)से बहुत दिनतक लड़ता रहा हेजलने जो बिनहाददका दासथा उसको मारकर आप राजा बन गया[1] यह राजा भी बड़ा वीर्य्यवान् था और यहूदा और इसराईल के राजाओं से लड़ाई करके उनको अधीन कर लिया और उनसे कर भी लेता रहा इसने इलायतनामक नगर जोकि रेडसि (लालसमुद्र) पर था लेलिया परन्तु इन सब उद्योगों का फल उसके पुत्र बिनहादद द्वितीय के समय में जाता रहा- रेजन के समय में सीरिया के लोग फिर बलवान होगये रेजन इसराईल के राजा पिकाह से मिलकर जूडिया के राजा अहाज़से लड़ने लगा इन दोनों राजाओं ने इतनी विजय पाई कि अन्तमें अहाजने अ सीरिया के

(१) (८८४- ई॰पे॰)

राजा टिगलाथ पिलेसर की शरण ली और टिगलाथ पिलेस
र ने दमिश्क नगर पर जो सीरिया की राजधानी थी आक्र
मन करके उसको लूटा वहां के लोगों को बन्दी करके लेग
या (७५० ई.पै.) और सीरिया के राज्य का अंत किया।
पहले कहा गया है कि फिनिशिया देश के कई एक नगर
परस्पर स्वतन्त्र थे इनमें से केवल टाइर का सही २ हाल
मालूम है यहां का प्रथम राजा अबिबाल हजरत दाऊद का सम
कालीन था (१०५० ई.पै.) और उसके पुत्र हिराम ने दा-
ऊद और सुलेमान से मित्रता का सम्बन्ध बांधा और उस
ने सुलेमान को मन्दिर बनाने के लिये लकड़ी भेज दिये
इन दोनोंने मिलकर लाल समुद्र में इजियोन गिबर और
इलाथ नामक बन्दरों में व्यापारी जहाज तैयार किये और
ओफिर नामक (जो हिन्द समुद्र के तटस्थ था) देशों के सा
थ बड़ा वाणिज्य किया इसी समय टाइर फिनिशिया की
राजधानी गिनी जाती थी हिराम के उत्तराधिकारियों में से
इत्तबाल प्रथम - जो कि यहूदा के राजा अहाब(१) की रानी
ईजेबेल का पिता था और पिग्मेलियन कि जिसके
समय में (लिबिया के [illegible]) कार्थेज नगर बसा (८८०
ई.पै.) बड़े प्रसिद्ध हुये पिग्मेलियन ने अपने भगिनीपति
(इलीसा वा डाईडो) सिचियस के धन का लोभ करके उसे मार
डाला इस पर उसकी भगिनी डाईडो बहुत से अमीर दे-
शीय लोगों की सहायता से अफ्रीका के उत्तर भाग में जाकर

(१) अहाब

कारथेज नगर जोकि व्यापार की दृष्टि मे टाइर के सदृश होग या था बनाया — पिगमेलियन के राज्य इतिहास से मालूम होता है कि यहां प्रधान धनपात्र बहुत थे जो राजा केवल (वर्त्तमान समय के विनिस नगर की तरह) को नहीं बढ़ने देते थे टाइर के लोग अपने आश्रित नगरों पर इतना अनर्थ करते थे कि फिनिशिया वालोंने असिरिया की और फिर बाबिलन के राजाओं की शरण ली असिरिया के लोग टाइर को न लेसके परन्तु नेबूकडनिजरने इस नगर को घेरकर इतना तंग किया कि वहां के लोगोंने दुःखी होकर नया टाइर एक समीप टापू पर बनाया — इसके पीछे यहां के राज्यमें भी परिवर्तन हुआ और राजाओं की जगह सोफेटस नामक शासिता प्रतिवर्ष नियत होनेलगे जब सैरस ने बाबिलन को अपने अधीन कर लिया तो ये लोग स्वयंही फारस के राजाकी शरणागत हुए (५३८ ई॰पू॰) तथापि इनको अपनेही राज्य प्रबन्ध रखनेका अधिकार मिला हुआ था — जब महासिकन्दरने टाइरनगरको (३३२ ई॰पू॰) लिया तबसे यह नगर घटने लगा और समय पा कर सम्पूर्ण नाशको प्राप्त हुआ।

प्रकरण ६

फिनिशियावालोंके इतर देशों मे बस्तियों और व्यापार का वर्णन

जो नगर वा राज्य व्यापारी होतेथे उनकी यह रीति थी कि और देशों मे अपनी नवीन बस्तियें स्थापन करती इनके स्थाप-

न करने का यह तात्पर्य था कि व्यापारकी वृद्धि होवे क्योंकि अपने देशकी वस्तु उन दूसरे देशोंमें भेजी जातीथीं और वहांकी उनके बदले अपने देशमें मंगवाई जाती थीं और वे बस्तियें रोम देश वा वर्तमान हसूकी बस्तियों की नाईं नहीं थीं उन बस्तियों पर ऐसे राजाधिकारी स्थापन किये जातेथे जो बड़े बुद्धिवान शिष्टाचार और राजनीति और व्यापारविद्या मे प्रवीन होतेथे इस लिये उन बस्तियों के लोग पिछले देशों की अपेक्षा अधिक शिष्टाचार और स्वतन्त्रता रखते थे परन्तु इसरीति में कईएक अवगुण भीथे। सदीप काल नवीन बस्तियों वालों की यही लक्षण थी कि उनका राज्य बढ़ता जाये (और उनके व्यापारिक व्यवहारों मे ईर्षा और स्पर्द्धा उत्पन्न होजाती थी) इसीकारण उन देशों के वासियों को जहां बस्तिये होतीथीं बस्तियों वाले दुःखदेतेथे क्योंकि जितना बस्ति वालों का बल बढ़ता था उतनाही देशवासियों की स्वतन्त्रता घटती थी और क्लेश मिलताथा जैसे अफरीका वाले कारथेज वालों से और दक्षिणीय अमीरिका वाले ...... स्पेन वालोंसे दुःखीथे व्यापारी स्थानों मे नगर वासी और सिपाहीमे अति भेद होताथा (वर्तमानसमय मे भी यही देख पड़ता है) क्योंकि सिपाही (उनके) नोकर नहीं होतेथे किन्तु थोड़े कालके लिये वेतन पर और देशोंसे मंगवाये जातेथे हिज़किएल महीने टाइर की बाबत ऐसा कहा है (हिज़किएल २७-८ से ११ तक) अरवादके लोग और फिनिशिया देशके वासी और देशोंमें

जाते थे और बस्तियें स्थापन करते थे जो ये मेलकार्थ बाहर क्रु-
लीज़ देवताकी सहायतासे चलाते थे। साइप्रस द्वीप जिस-
का नाम अंजील मे किट्टीम वा चित्तीम (क्योंकि इसके उस सम-
य की राजधानी का नाम किटीयम था) लिखा है टायर के आ-
धीन था। साइप्रस से वे क्रीट और २ यूनान के समुद्रस्थ
न द्वीपों मे गये इससे बढ़कर उन्होंने अफरीका सिसली और
सार्डीनिया मे बस्तियें बनाई परन्तु ये बस्तियें केवल व्यापारी
जहाज़ों के लिये बनी थीं इससे आगे स्पेन (हस्पानिया
जिसको अंजील मे टार्शीश लिखा है क्योंकि वहां टार्टिसस ना-
मक नगर था) मे जा व्यापार करते थे जहां इनकी बस्तियें भी थीं
जबरालटर जल डमरू मध्य (जिसको उस समय मे हर्क्युलीज
के स्तम्भ कहते थे) के बाहर जाकर ब्रिटेन वालोंसे उत्तर मे और
मेडीरा द्वीप वालोंसे भी व्यापार करते थे- अफरीका के उत्तर
मे जो बस्तियें लेपटिस कारथेज यूटीका आदि थीं फनिशिया के
व्यापारी स्थानोंके अभाव और विपत्ति मे बढ़ गई थीं।

एशिया माईनर मे भी फनिशिया वालोंने यूनानियों से पह-
ले व्यापारस्थान बनाये परन्तु यह मालूम नहीं कि यह स्थान उ-
नसे यूनानियोंने कैसे छीन लिये- इसीकी ओर फनिशिया
वालोंने फारस की खाड़ी पर व्यापार स्थान बनाये थे परन्तु सबै
की कारीगर ऐसा मालूम पड़ता है कि जबतक दाऊद राजाने इडू-
मीया वालोंको जो उस खाड़ी मे व्यापार करते थे नहीं जीता था
व्यापार स्थान नहीं बने थे- उस समयसे दक्षिण की ओर भी व्या

पार करने पर ध्यान देने लगे और मिसर वालोंसे मित्रता करली

प्रकरण ८

फनिशिया देश के शल्प और व्यापार का वर्णन

सैडन के बिने हुये वस्त्र और टाइर के बैंजनी रंग के कपड़े प्राचीनक समय से मशहूर थे इन कपड़ों के बनाने के लिये वे लोग मिसर से सन रूई और बटा हुआ उनका सूत मंगवातेथे क्योंकि मिसरी लोग यद्यपि बिनने मे सैडन वालों के तुल्य नही थे तथापि कातने और सूत बटने मे उनसे प्रवीन थे- टाइर का बैंजनीय रंग एकही रंगका नाम नहींथा परन्तु बैंजनी और रक्त वर्णोंके मिलने से जो रंग बनते हैं और जो साया और चमक देते हैं सबका वही नामथा जो रंग घासों और बूटियोंसे मिलते हैं उनको भी काममे लाते थे- सैडन और सैरेपटा नगरों मे कचका कामभी बनताथा कई एक(इस लिये) कहते हैं कि कचका काम प्रथम फनिशिया मे बनने लगाथा परन्तु इसबातका निश्चय नहीं क्योंकि मिसरवाले कहते हैं कि सबसे पहले उनके देशमे काचका काम बना- लकड़ी और हाथी दान्त की खुदी हुई वस्तु भूषण और खिलौने (टाइर मे) बनते थे और टाइरवाले इतर देशोंकी वस्तुयें अपने देशकी वस्तुओं से बदलते थे भूमी मार्गो द्वारा जो व्यापार होताथा उसके तीन भाग होसकते हैं- एक अरबकी ओर जिसमें हिन्दुस्तान का व्यापार भी आजाताथा दूसरा बाबिलनकी ओर जिसमे मध्य एशिया

आजाता था और तीसरा आरमीनिया जिसमे सीथिया और काफ पर्वत प्रदेश आजातेथे यमन से जिसको सुखदायक अवे कहतेथे और जो अर्ब प्राय द्वीपका दक्षिणीय भागथा कारवानें[1] (व्यापारी) लोग सुगंधियें स्वर्ण और हीरे मोती आदि लातेथे – परन्तु जबतक फनिशियावालोंने लालसमुद्र पर अपने व्यापारीस्थान नहीथे बनाये तबतक हिन्दुस्तान और अफरीका की वस्तुयें दालचीनी हाथीदान्त और आबनूस आदि अर्बदेश द्वारा मंगवाने थे डिज़किपलनवीने इसव्यापार का ऐसे वर्णन किया है (डिज़किपल २७ – १५से २३ तक) अरबदेश के द्वारा जो व्यापार होताथा वह प्रायः व्यापारी पथिकगण के द्वारा होताथा और इसदेश के उत्तर भागके रहने वाले और विशेषतः केदार और मिडिया मार्ईट के अधिपति तो केवल महाव्यापारी थे और इडूमि राज्य व्यापारमें बड़ी वृद्धि को प्राप्त हुआ समुद्रतट पर इडूमियावेलोगों के पास इलाथ और इजिओन गिबर नामक बड़े स्थानथे और मध्यदेशमें पेट्रा नामक नगर जिसके अवशेष अभी निकले हैं बड़ा प्रसिद्ध था – हिज़ किपलने इडूमिया देशको सीरिया के साथ में मिलाया है (डिज़किपल २७ – १९) व्यापारीलोग इकठे होकर चलतेथे[2] और अपनी वस्तुओं को ऊंटों पर जोकि जंगल के क्लेशोंको सह सक्ते हैं लेजाया करतेथे – उनके साथ सरदार वा राजा लोग अपनी सेना रक्षार्थ दे देतेथे परन्तु प्रायः वे लोग एक लुटेरेगण को बहुतसा धन देकर अ-

(१) पथिकगण वा व्यापारी यात्री लोग

(२) इसीका नाम कारवान वा पथिकगण है

पनी रक्षा के लिये अपने साथ लेलेते थे — इनके चलने औ र उतरने के समय नियत थे और उस समय में चलते थे ज ब कि उन उन नगरों में जहां कि वे जाते थे (वहां २) बड़े उत्स व होते थे — और मेले लगते थे मिसर के साथ ये लोग भू मि मार्गसे तबतक व्यापार करते रहे जबतक थीवस मि सर की राजधानी थी परन्तु जब मेमफिस राजधानी होग ई — तो उन लोगोंको उस नगर का एक नियत भाग मिल गया तबसे मिसर के साथ समुद्र द्वारा व्यापार होने लगा

फिनिशिया का व्यापार पूर्व दिशा में यहूदा और सिरिया से होताथा — यहूदा से अन्न मिष्टान्न और मद्यादि दमिशक से अलिप्पो नगर का मद्य और ऊन आते थे अतएव इन लोगों ने पैलसटाईन देशपर अन्न के आश्र य होनेसे उस देशके दाऊद और सुलेमान राजाओं से स म्बन्ध कर लिया परन्तु इस व्यापार का मुख्यभाग तो वह था जो बाबिलन और एशिया के मध्य प्रदेशों से होताथा और यतः इस व्यापार के करने में सिरिया के जंगलमे से होक र आना जाना पड़ताथा इसलिये इस (मार्ग) के सुलभ करने के और अपनी प्रजा को इस लाभजनक व्यापार में भागदेने के लिये (उस जंगल मे) सुलेमान राजाने बालबिक और टाड मर (पालमाइरा) दो नगर बनाये — परन्तु इसराईल की द शा वर्गों के उपद्रव करने से यह उद्देश्य पूरा नहीं होसका इन लोगों के उत्तर दिशाके व्यापार का ईज़कियेल में वर्णन

करना है कि जावन (यूनानियों की ग्रईओना आदि बस्तियों) टबाल और मेशिव (काले और केसपी समुद्रों के तटस्थ प्रदेशों) के लोग तेरे व्यापारि थे और तेरे बाजारों में गुलाम और पीतल के भाण्ड बेचते थे आरमीनिया और कपिडोसिया के लोग तेरे साथ घोड़ों का वाणिज्य करते थे" हिज़किएल २७-१३ से १४ अंजील) परन्तु मिडिटरेनियन समुद्र में से तो इन लोगों का सब से मुख्य व्यापार मार्ग था (जिस समय यूनान देश की वृद्धि होने पर मदर्थिन्स और कौरिन्थ वालों ने अपने व्यापारी जहाज बनाये तो वे लोग फिनिशिया के लोगों के पक्षपाति होगए और उनसे केवल उन वस्तुओं को मोल लेते थे जो उनके अपने देश में वा एशियामाइनर में नहीं मिलती थी) स्पेन देश में जाकर वहां के लोगों को दास बनाकर उनसे उस देश की धातु आकरों में काम लेते थे और वहां से स्वर्ण लोहा जस्त और तांबा लाते थे (हिज़किएल २५-१२ अंजील) यहां से ये लोग आटलेंटिक समुद्र में (जाकर) ब्रिटेन द्वीप से कारनवाल देश का टीन लोहा और उत्तर में और आगे जाकर रशिया देश से तैलस्फटिक लाया करते थे पूर्व में इन लोगों के व्यापारिक स्थान फारस और अर्ब की खाड़ियों पर भी थे और वहां से वे लोग हिन्दुस्तान अफरीका और लङ्काद्वीप के साथ वाणिज्य करते थे- फैरो हनीको के राज्य में उन्होंने गुडहोप अन्तरीप का मार्ग पाया परन्तु टाईर नगर पर जो नबूके देनजार के आक्रमण से आपत्ति पड़ी इससे उस उद्यम का फल प्राप्त नहीं हुआ

अध्याय ५।

पैलस्टाइन (पवित्र भूमि) देशका इतिहास

प्रकरण १।

भूगोल

पैलस्टाइन वा पवित्रभूमि के उत्तर में फिनिशिया दक्षिण में इडूमिया पूर्व में अस्फाल्टिक झील - जार्डन नदी और गैलिली झील और पश्चिम में मिडिटरेनियन (मध्य) समुद्र है — यह देश पहले इसराईल वंशके बारह वंशों में विभक्त किया गया था फिर इसमें यहूदा और इसराईल के दो राज्य स्थापन हुए और फारस यूनानी और रोमी सेनाओं के समय में भिन्न २ प्रदेशों मे बांटा गया था।

पर्वत - पैलस्टाइन देशमे उसके पर्वत एक मुख्य चिन्ह हैं लबानन (श्वेत) पर्वत का नाम इसवास्ते पड़ गया था कि इसकी चोटियें बरफ से ढकी रहती थी इसकी चार श्रेणी थी जिनमेंसे प्रत्येक एक दूसरे से ऊंची थी और इसकी चोटियों पर देवदारु वृक्षोंका जंगल था हर्मन पर हिम बहुत होताथा जो फिनिशिया देशवासी अपने जल शर्बत और मद्य के शीतल करने के काममे लाते थे ताबर पर ईसाने रूपान्तर कियाथा कारमल पर द्राक्षाओंके बाग बहुत होने से मेवीथा

था कैलवरी पर्वत जरूसिलम नगर के पास है इन गडि़मे छोटी २ नदियें और नाले बहुत थे और इबाल और गिरिज़म पर्वतों पर मूसाके नीतिशास्त्र सब को सुनाए गये थे इन पर्वतों और उनकी घाटियों के कारण पेलस्टाईन देश में पर्वत घाटियें और उच स्थान बहुत थे केवल दोही बड़े मैदान थे एक तो जार्डन नदी था और दूसरा इसड्राइलन या जेज़ीरी लका मैदान- इन घाटियों और मैदानों में कईतो अति उर्वरा और कई अति ऊपर थे - नदियें- यहां की जार्डन नामक सबसे मुख्य नदी असफालटिक या डेडसी झील में जोकि सोडम और गमोराह नामक नगरों के स्थान में है गिरती है इस समुद्र का जल किसी दूसरे समुद्रमें नहीं जाता अतएव उसका जल खारा है- गैलिलि झील का जल बहुत सुन्दर है और इसमें मछलीयें बहुत होती हैं।

नगर(१)- यहां के बड़े नगर ये थे जरूसिलम जोकि यहूदा और इसराईल की राजधानी थी यह नगर मसीहके समय में चार भागों में विभक्त था प्रथम दाऊद नगर जहांकि दाऊद राजाने अपना राज भवन बनाया था- दूसरा जोकि ...... जिसको सुलेमान राजाने बढ़ाया- तीसरा वह भाग जहां कि व्यापारी रहते थे और चौथा मोरियाह पर्वत जिसपर मन्दिर था।- दूसरा बड़ा नगर समेरिया जोकि इसराईल की राजधानी थी। इज़राइल देश पेलस्टाईन के उत्तर ...... पर्वत के परे था यह देश सम्पूर्ण ......

(१) ...... [illegible]

था परन्तु अरबमें जो वाणिज्य होता था सो इसीदेश के द्वारा होता था इसीलिये इसदेश मे हर बात की उन्नति होगई थी और यहांपर गेट्राह नामक बड़ा प्रसिद्ध नगर था इस देश को हजूद ने अपने वश कर लिया था पैलस्टाइन की घाटियों की भूमि सामान्य करके उर्वरा थी और इसदेश की भूमि के ऊंची नीची होनेसे यहां की ऋतु हवा विविध प्रकार की थी पहाड़ों में पशुचारण योग्य घासादि और घाटियों मे अन्न बहुत होता था द्राक्षादि के वृक्ष बहुत होतेथे और मक्षिकाओं के छत्तों से मधु बहुत मिलता था गैलिली झील और जार्डन नदी में मछलियें बहुत होती थीं और यद्यपि अस्फालटिक झील में जीव नहीं रह सकता था तथापि जो लवण इस झील में से निकलता था कहते हैं कि [illegible] विविध प्रकार के आपदों से यहां की भूमि सम्पूर्ण रूपसे ऊषर पड़ गई परन्तु फिर भी यहां ऐसे स्थान हैं कि जिनसे इसदेश की प्राचीनता [illegible] जानी जाती है।

प्रकरण २।

पैलस्टाइन का इतिहास (१९२० — ५७५ ई. पू.)

परमेश्वर ने १९२० — ई. पू. इबराहीम को कैलडिया देश के त्याग करने और पैलस्टाइन देश में जाकर बसने की आज्ञा दी ताकि उसदेश मे उसकी सन्तान बढ़े जो परमेश्वर की प्यारी कहलावे इबराहीम ने १९२१ — ई. पू. में अपने सन्

समयमें यही (प्रतिज्ञा भूमिमें बसने की) आज्ञा अपने पुत्र इज़हाक को सूचन करदी और इज़हाकने अपने मरने पर याकूब अपने पुत्र को भी इसी बात का अनुशासन किया याकूब के और पुत्रोंने अपने भाई यूसफ से ईर्षा करके उसे दासके समान व्यापारियों के हाथ (जो कि इसे मिसर में लेगए) बेच डाला वहां वह एक दुराचारिणी स्त्रीके हाथ से बचकर मिसर के राजा फैरोह का प्रधान मंत्री होगया और जब उसके भाई मिसर में अन्न लेनेको गए तो उसने उन्हें अपने तईं बतलाया और अपने कुटम्ब को मिसर में रहने केलिये बुलाया — कालपाकर इसराईल वंश के बलकी इतनी वृद्धि हुई कि मिसर का राजा उनसे ईर्षा करने लगा और उनको नाना प्रकारके क्लेश देने लगा इस पर परमेश्वरने मूसाको इसराईल जातिको मिसरसे लेजाने पर प्रयुक्त किया और जब मूसाने मिसर पर नाना प्रकारकी आपदें डाली तो फैरोह ने उन को जाने दिया पर मन लोभ वश होकर फिर भी उनका पीछा किया जिस जब लाल समुद्र पर आया तो इसराईलीलोग निकल गए और फैरोह की सारी सेना नष्ट होगई। (१४९१-ई.पू.) जबकि इसराईलीवंश परमेश्वर का इतना अनुग्रह था कि इन लोगों के लिये लालसमुद्र में मार्ग बन गया तो यह विश्वास होसक्ता है कि परमेश्वर की सहायता से और मूसा के नेतृत्व होने पर उनको केनान देश के

लेने मे कुछ भी अधिक नही होगा ॥ यदि उनको केवल मार्ग
क्लेशादि ही सहने पड़ते तो उनकी यात्रा शीघ्रही उनको
प्राप्त होजाती - परन्तु इतने दिनों तक बन्दी रहने से ये लो
ग दासीशील उपद्रवी हठी और अस्थिर होगए थे और इस
कारण इनके नेता को तो बड़ा क्लेश और इनको बहुतसी
आपदें सहनी पड़ीं अरब देशकी भूमि गोशान प्रदेशकी
उर्वरा भूमिकी अपेक्षा ऊषर थी और जब इसराईलियों ने
यह विरुद्ध सम्बन्ध देखा तो कहा कि "हम यहां मारने के लि
ये लाये गये हैं" फिरभी उनकी मनो कामना सब देवआज्ञा
से पूरी होगई बेशक पहाड़ों में से मूसाकी दिव्य शक्ति से
(जब उसने पहाड़को अपनी छड़ी मारी थी) जल निकलने
लगा मारह के कूप मीठे होगए और मान्ना नामक मिष्टा-
न्न विशेष उनके लिये (रोटी के स्थान में) आकाश से बर्ष
ने लगा परन्तु वे लोग सन्तुष्ट न हुए क्योंकि कहते थे कि
"हमें गोशान देश के स्वच्छ फल और मछियों का स्मरण हो
ता है और यहां मान्ना से अधिक और कुछ नही देख पड़ता"
इस पर परमेश्वर ने उनकी तृष्णा के तृप्त करने के लिये ए
क बर्तिका पक्षीगण उनके डेरे में भेजा परन्तु उनके उपद्र
व के लिये उन पर एक ऐसी आपद (मरी) डाली कि उनमें
से हजारों मर गए - ये लोग प्रथम सेनाई पर्वत की
ओर चले परन्तु मार्ग में उन पर अमलकाईट लोगों ने
जोकि मिसर और सीरिया मे वहां के बड़े योधा गिने जाते

से आक्रमण किया इस पर मूसाने पहाड़ पर जाकर परमेश्वर से विजय की प्रार्थना की और जबतक वह अपने हाथों को प्रार्थनामे ऊपरकी ओर खड़े रखा तबतक इसराईलियों की विजय रही पर जब उसने थककर हाथ नीचे कर लिये तब अमलकाईट लोगों की जय होने लगी — इस बात को आरन और हर नामक इसराईलीसेनाके दो और नायकों ने देखा और पहाड़ पर जाकर मूसाके हाथों को थांबे रखा इस से अन्तमें इसराईलियों की जय रही इस जयकी कीर्ति को सुनकर जिथ्रो नामक मूसाका ससुर उसके कुटुम्बसहित वहां आया और इसके कहने से मूसाने इसराईलियों के लिये राज्य और युद्ध सम्बन्धि विषय हारों के निवाहने के लिये अफसर नियत किए।

इसराईली लोग गोशनसे चलकर तीसरे मासके शुरू मे सेनाई पहाड़ पर पहुंचे और मूसा उस पहाड़ पर परमेश्वरसे धर्म्म और नीतिके नियम अंगीकार करनेको गया। "और तीसरे दिन प्रातः काल मेघ गरजने लगे और बिजली चमकने लगी और पहाड़ पर एक काला बादल छागया और तुरीकी सी बड़ी भारी आवाज आई यहांतक कि सब लोग कम्पायमान होगए और पहाड़ पर धूआ होगया क्योंकि परमेश्वर उस पर अग्नी (रूप) मे उतरा था" इस समय मूसाने परमेश्वरसे धर्म्म और नीति शास्त्र ग्रहण किया इसका मुख्य प्रयोजन यहथा कि इसराईलीलोग

परमेश्वर की आज्ञानुसार चलें और ईश्वर ही उनका राजा क-
हलावे परमेश्वर की आज्ञा के द्योतन करने के लिये कुछ धर्म
अधिकारी और आचार्य जोकि केवल आरन के वंशमें से
लिये जाते थे स्थापन हुये और २ सब अन्य अधिकारी लि-
वाईट जातिमें से होते थे इसका मुख्य उद्देश यह था कि
इनलोगों में सत्यधर्म्म रहै और इसकारण इन लोगों को
परमेश्वर ने नतो बहुत बलवान और न बहुत धनवान
किया — जब कि मूसा पहाड़ परही था तो इसराईली
लोगों ने आरन के पास आकर उससे कहा कि " हमें वे मू-
र्तियां जोकि हमारी इस मार्ग में रक्षा करें बनादो क्योंकि ह-
में यह मालूम नहीं कि मूसा को जिसने हमको मिसर से लाया था
क्या हाल हुआ" आरनने इसबात को मानलिया और उन
के सारे स्वर्ण भूषण गलाकर एक बछड़े वा छोटे वृष
(सांड) की मूर्ति बनायी इसका कारण यह था कि मिसर
देशमें और विशेषतः मेमफिस नगर में तो एपस नामक
वृषकी पूजा बहुत होतीथी इस वृष के चारे के लिये भू-
मी भाग और उसकी रक्षा के लिये बहुतसी स्त्री और पुरुष
नियत थे यह कर्म्म पौविक धन और और कामों से यशदा-
यक गिना जाताथा जब कोई किसी पूज पशु को अज्ञान से
मार डालताथा तो उसको पुरोधा लोग दण्ड देते थे और
जब कोई जानकर मारताथा तो उसको तो लोग स्वयं ही
कुध होकर मारदेते थे इस कारण जब कोई मनुष्य कि-

की रुग्णपशुको मराहुआ देखताथा तौ वह उससे दूर खड़ा होकर रोताथा और आपको उस पापका कर्त्ता नहीं ठहराता था सबसे बड़ी आश्चर्य्य की बात यह है कि जब एक समय मिसर मे काल पड़ा इतना कि लोग एक दूसरे को खाने लगे थे तो उन्होंने रुग्ण पशुओं को ग्रहण नहीं कियाथा जब कभी कोई रुग्णपशु मरजाताथा तौ लोग उसके मरनेका ऐसाही शोक करतेथे जैसाकि अपने पुत्रके मरने का और हमे यह मालूम हुआ है कि टालोमी (लेगस पुत्र) नामक राजाके समय में जब एपस वृष मरा तौ उसके रक्षक ने उसके अन्तकर्म्म मे १२,००० रुपये व्यय कियेथे - अतएव मेमफिस में इतने दिन रहने से इसराईली लोग मिसर के मिथ्या धर्म्मको मानने लगे और मूर्त्ति उपासक भी होगयेथे - जब मूसाने सेनाई पहाड़ से आकर इस बातको देखा कि वे लोग उस मूर्त्तिकी परिक्रमा कर रहे हैं तौ उसने बहुत क्रुध होकर उन पत्थरकी शिलाओं को जिनपर नीति और धर्म्म के नियम लिखे हुये थे तोड़ दिया और लिवाई जातिके लोगोंने जोकि इस अपराध में साझी नहीं थे तीन हजार अपराधियों को मार डाला और उस मूर्त्तिको तोड़कर लोगोंको वह पानी जिसमे उसकी धूलि मिली हुई थी पिलाया मूसा फिर पहाड़ पर गया और चालीस दिन के पीछे दो नवीन तखते जिन पर परमेश्वर के दस आज्ञा लिखी हुई थी लाया सेनाई से चलकर इसराईली लोग का दश अरबी देशमें आये और यद्यपि

परमेश्वर उनपर इतना अनुग्रह करता था किन्तु फिरभी वह उपद्रव करने से नहीं हटतेथे और इसकारण उनको (परमेश्वरसे) दण्ड मिलताथा — यहांसे उन्होंने बारह दूत केनान देशमें भेजे वे दूत चालीस दिनके पीछे फिर आए और उस देशके फल आदि वस्तुये दिखलाने के लिये लाये परन्तु उन्होंने यह भी कहाकि वहांके लोग बड़े बलवानहैं और हमारा उनपर जय पाना कठिन है केवल जाशुआ और केवल उन दूतोंमें से निधड़क थे इसपर इसराईल लोग जिन का कि धैर्य्य मिसरमें इतने चिरकालतक सता रहने से क्षीण होगयाथा यह कहने लगे कि यदि हमें परमेश्वर मिसरमेंही मारदेता तो अच्छा होता यहां हमें इन लोगोंके हाथसे मरनेको क्यों लायाहै यह उपद्रव बढ़ताजाताथा कि परमेश्वरने उनके मन्दिर में अपना दर्शन दिया इससे उपद्रव तो शान्त होगया किन्तु जब मूसा परमेश्वर की आज्ञा मालूम करने को मन्दिर में गया तो उसको यह आज्ञा हुई कि जाशुआ और केवल के बिना और कोई प्रतिज्ञात भूमीमें नहींजाने पावेगा और इस अपराधका दण्ड यह है कि इन लोगोंको चालीस वर्ष और भ्रमण करनी होगी इससे यह लोग इतने डरे कि इन्होंने शस्त्र बांध मूसाके पास आकर अमलका इट लोगोंसे लड़ने की इच्छा जाहि्र करी यद्यपि उन्हें बहुतसा समझाया तथापि उन्होंने एक भी नमानी और उन लोगोंपर जा आक्रमण किया — परन्तु पराजित होकर जंगलकी दिशाको भागे — इस यात्रामें बड़ी दैन-

के खम्भ जोकि उनको मिसर से मार्ग बताता हुआ चला आया था उनके साथ रहा और माना उनके भोजन के लिये बर्षती रही और उनके वस्त्रादि भी परमेश्वर की आज्ञासे सब नहीं फटेथे परन्तु इतने अनुग्रह पर भी वे लोग उपद्रव कर कर परमेश्वर को क्रुध करतेथे - मिसर के प्रस्थान से २८ वर्ष के पीछे वे कैनान की दिशामें फिर चले दक्षिणकोन गिबासेका देश की दिशामें होतेहुए ज़िन नामक बनमें पहुंचे यहां से कैनान में एक छोटेसे मार्गसे जाना चाहतेथे परन्तु उनको वहां आरद के राजाने जाने नहीं दिया और यद्यपि दूसरी बार उन्होंने उसे पराजित भी किया तौभी इस मार्गको बड़ा कठिन देखकर (उन्होंने) कैनान देशपर पूर्वसे आक्रमण करना चाहा - इस यात्रामें मूसा और हारनने परमेश्वर शक्ति पर अविश्वास किया और उनको भी यही आज्ञा हुयी कि वे प्रतिज्ञात भूमी में नहीं जाने मिलेंगे वहांसे चलकर इसराईली लोग इडूमिया की दिशा में आये परन्तु वहांके राजाने उन्हें अपने देशमें जाने न दिया इस पर उन्होंने उससे लड़ना चाहा परन्तु परमेश्वरने उनसे कहा कि "ये लोग तुम्हारे भाई बन्धु हैं इसलिये तुम इनसे मत लड़ो" फिर वे होर नामक पहाड़ की दिशामें चले और जब वहां पहुंचे तो हारन मरगया और वहां उसकी समाधि उस पहाड़ पर आजतक दिखाई देती है - वहांसे प्रस्थान कर इसराईली लोगोंने अमोराइट लोगोंके राजा सिहोन और बसन के अधिपति ओग पर बड़ी विजय पाई .... जिससे उनका ब

ता भय होगया यहांतक कि मोबके राजे बालक ने जिसके राज्यके समीप इसराईली लोग जरडन नदी उतरने के लिये ठहरे हुयेथे उनसे भय मान होकर (न केवल मीडियानाइट और ऐमोनाइट वालोंको किन्तु) एक बालम नामे नबी जिसका नाम उसदेश मे बड़ा प्रसिद्ध था सहाय मांगी जब बालम बालक राजाके कहने पर इसराईलियों को शाप देनेको चला तो परमेश्वरने उसको रोका और मार्ग मे देखे २ शकुन और लक्षण दिखाये जो सम्पूर्ण इसराईलियों के लिये अच्छेथे तोभी बालम जब एक पहाड़ी पर चढ़ कर इसराईलियों को शाप देने लगा तो जो शब्द उसके मुखसे निकलता था वह इसराईलियों के लिये आशीश बन जाता था जब बालम ने देखा कि परमेश्वर शाप नहीं देने देता तो उसने बालक राजाको कहा कि इसराईलियों के आचार भ्रष्ट करने चाहिये इस पर बालक राजाने बालपुर देवताका मेला किया और उसमें इसराईली लोग भी बुलाये तब वे लोग मोब और मीडियन जाति की सुन्दर स्त्रीयों को देखकर लोभायमान होगये और अपने डेरे में लाकर उन जातियोंके से कर्म करने लगे इसपर परमेश्वरने अति क्रोध होकर इसराईलियों मे मरी डाल दिई जिस से बीस हज़ार से अधिक पुरुष और स्त्रीयें मरे कई एक जो उस मेले मे जानेवालों मे मुख्यथे उनको दण्ड दिया गयाथा थोड़ी देरके पीछे बालम एक लड़ाई में मारा गयाथा यह

लडाई पांच मीडिया जातिके राजाओं के साथ हुई थी और इसमें वे राजे भी मारे गये थे - इस लडाई के पीछे मूसाने परमेश्वर की आज्ञासे इसराईलियों की गिनती ली और उनके वंशों को कैनान देशके भाग रहने के लिये नियत कर दिये इस समय परमेश्वर की आज्ञानुसार जाशूआ और कैवलेके सिवा और कोई पुराना इसराईली नहीं बचा था। और जब मूसाने देखा कि उसका अन्त समय आन पहुंचा तो इसराईली लोगोंको इकट्ठा कर उनके सामने जाशूआ को अपनी जगह स्थापन किया और उनको परमेश्वर के मार्ग पर चलने की आज्ञा दिई तब नीबू पर्वत पर चढ कर कैनानकी भूमिको देखा और १४५१ ई॰पे॰ मे मरा। मूसाकी कबर नहीं बनाई गयी थी क्योंकि इसराईली लोग उसको देवता मान कर उसकी कबरको पूजा ना करें।

प्रकरण ३।

जाशूआ का कैनान देशको जीत लेना

मूसाके मरने के कारण इसराईली लोग उसके शोक मे जरडन नदी पारकी तरफ रहे इसके पीछे जाशूआ कैनान देशके लेनेमे उद्योग करने लगा इस समय जाशूआके पास छे लाख युद्ध योग्य सिपाही परमेश्वर उसका सहायक था और वह आप भी युद्धकर्म और राजनीतिमे प्रवीण था परन्तु कैनान देशका लेना एक सुगम बात

* अर्थात् अब शोक का समय समाप्त हुआ।

(१)

नहीं थी क्योंकि उस देशके लोग बलवान और बड़े रणवीर थे इसलिये जाशूआने जरडन नदीके पार उतरनेके पहले कैनानमे दो दूत भेजे उनसे पैलस्टाईन के सीमावर्ती जेरीको नगरका सारा वृत्तान्त जाना जावे जब वे दूत उस नगरमे पहुंचे तो एक राहब नामी स्त्रीने जो यह जानती थी कि परमेश्वर इसराईलियोंका सहायक है और थोड़े दिनोंके पीछे कैनान देश उनके अधीन होजावेगा उन दो दूतोंका बड़ा आदर मान किया और जब जेरीको नगरके राजाने उन दूतोंकी ढूंड की तो उनको अपने घरमे छिपा रक्खा और बचाकर भाग जानेका हेतु बना दिया परन्तु इस सब उपकारका उनसे यह प्रत्युपकार चाहा कि जब इसराईली लोग इस नगरको लेलेवेंगे तब उसे और उसके कुटुम्ब को न मारें दूतोंने आकर कहा कि हमारे आक्रमणके भयसे सारा कैनान डर रहाहैं और लोग यह कहते है कि "परमेश्वर ने हमें उनके हाथमें डाल दिया है" इस पर जब सारी सेना नदीके उतरने पर उद्यत हुई तो वहां उन्होंने परमेश्वरकी कृपा का एक अकाट्य चिन्ह देखा अर्थात् जब उन दूतोंके याद जो नियमनो का अर्थात् नाहनको लियेजाते थे जल पर पड़े तौ नदीका पानी पीछे हट गया और सारी सेना पार उतर गई जाशूआने पार जाकर नदीके तटपर प्रत्येक वर्गके नाम एक २ पत्थर उठाकर बली स्थान बनाया और उस पर परमेश्वरको बली दी हूबन गैड और आधे म

नासाह वर्गोंके लोगोंने जरडन नदीके सर्वओर बसनेकी अनुज्ञा चाही (जोशूआने उनको इसबातकी अनुज्ञादी) परन्तु अपने भाईयों की सहायताके लिये अपने मेसे चालीस हजार सेना दी फिर इसराईल लोगोंने पासोवर नामक बड़ाभारी पर्व किया यह पर्व इसबातकी स्तुतिके लिये होताथा कि जब परमेश्वरने मिसरके सारे प्रथमगर्भोत्पन्न प्राणियों को नष्ट किया तो वह इसराईल लोगों के घरोंको उलंघन कर गया और पासोवर का उलंघनकरना अर्थहै — जबसे वे लोग सेनाई पर्वतसे चले यह पर्व नहि किया गया था क्योंकि मार्गमे धान्य नहीं मिलसकता था और अब इनके बड़ी उत्पादक भूमीमें आजानेके कारण माना भी वर्षने से बन्द होगई थी — इसराईलीसेना से कैनानी लोग इतना डरे कि उन्होंने पूर्वोक्त पर्वके करने में कुछभी विघ्न न डाला फिर जोशूआने जरीको नगर पर चढ़ाई की परन्तु दीवारोंके तोड़ने के स्थान परमेश्वरके आज्ञानुसार अपनी सेनाको उस नगर के चारों ओर ले जाया करता और सेनामे सब चुप रहते केवल शृंग तूणीकी ध्वनि वही सुनाई देतीथी छे दिन तक यही होता रहा सातवें दिन जोशूआने अपनी सेनाको शब्द करने की आज्ञा दी और कहा कि परमेश्वर ने इस नगरको अब तुम्हारे हाथमें देदिया है इस पर सेना गणने शब्द किया और उनके शब्द करनेही उस नगर की दीवार अपने आपही गिरपड़ी और

(१) जो फिरिश्ता (ईश्वरदूत) मिसरियों के प्रथम गर्भोत्पन्न नष्ट करने के लिये आकाश से भेजागया था वह इसराईलियों के घरोंको छोड़ता वा लंघता जाता था।

सेनाको नगर मे जानेका मार्ग मिलगया - इन लोगोंने नग-
र में जाकर राहाब और उसके कुटम्ब को छोड़ और सब लोगों
को मारा वहांके सारे आभूषणोंको लाकर परमेश्वरके मन्दि-
र में रखा और नगर को जलादिया अचन नामक यहूदा वंश
के अधिपतिने जरीको की कुछलूट (जिसमे कि एक बाबिलन
देशका बनाहुआ वस्त्र और कुछ सुवर्ण था) अपने पास रख
लिई इस अपराध के कारण इसराईल लोग अई नामक न-
गर की जोकि जरीको से बहुत छोटा था सेनासे पराजित हो
गए जब जाशूआ ने परमेश्वरसे प्रार्थना की तो उसको अ-
चनका अपराध इस पराजित का कारण मालूम हुआ इसपर
जाशूआने अचनको पकड़ कर मारडाला और इसराईल
लोगों पर फिर परमेश्वरका अनुग्रह होगया - इस समयमें
अईके राजाने बिथिल नामक नगरसे सेना लेकर जाशूआ से
लड़ना चाहा परन्तु जाशूआ के छल को मालूम न करसका
छल यह था कि जाशूआ (अपनी सेना को बिथिल और
अई नगरके बीचमें छिपा) थोड़ी सी सेना लेकर ई नगर पर आ-
क्रमण करने आया अई का राजा उसके साथ इतनी थोड़ी
सेना देखकर उससे लड़ने गया परन्तु जाशूआ भागा और
वहांकी सेना को अपने पीछे दोड़ाया - इस समयमें जब
अईकी सारी सेना जाशूआ के मगर पड़ी तो इसराईली सेना
के उस भागने जो छिपा हुआथा नगर पर चढ़ाई करके उसे जला
दिया और अईकी सेनाने जब पीछे फिर कर देखा तो सारा

नगर जलता हुआ मालूम हुआ और जब पीछे हटे तो उनको भागने का कोई मार्ग न मिला इस प्रकार शैरे में आकर सब मारे गये फिर जाशूआ ने परमेश्वर के लिये एबल पर्वत पर बलीस्थान बनाया और आधे लोगों को एबल पर्वत पर और आधों को गिरिजिम पर्वत पर स्थापन करके

मूसा को जो नीति और धर्मशास्त्र प्राप्त हुये थे स बके आगे पत्थर की तख्ती पर लिखकर पढ़ सुनाये जरीको और अई नगरों के नाश होने से तत्समीपस्थ लोग बहुत डरगए, गिबियन लोगों ने इस्राईलीसेना का पौरुष देखकर उनसे (अपने आपको दूर देश के रहने वाले ठहरा कर) सन्धि की परन्तु उनके मन में छल और कपट था क्योंकि वे लोग फटे कपड़े और जीर्ण वस्त्र पहन कर इस्राईलियों के डेरे में आये थे और खोज लगाते फिरते थे इस्राईल के अधिपतियों ने तीन दिन में इस छल को मालूम किया और यद्यपि अपनी प्रतिज्ञा न तोड़ी तौभी उन कपटियों को परमेश्वर के मन्दिर में बली के लिये जल और समिधादि लाने पर नियुक्त किया - अडोनिजेडिक जिरूसिलम का राजा गिबियन लोगों की सन्धि से इतना क्रुद्ध हुआ कि उसने अपने पासके चार राजाओं को सहायता के लिये बुलाया उन्होंने इस बात को मान लिया और पांचों राजे मिलकर गिबियन लोगों से लड़ने को चले गिबियन लोगों ने जाशूआ की सहायता चाही जाशूआ सेना लेकर उन लोगों की सहायता को चला युद्ध में पांचों राजाओं को

पराजय हुआ इस संग्राम के दिन परमेश्वर की आज्ञासे जबतक इसराईली सेनाका विजय नहुआ ...... तबतक सूर्य भी अस्त न हुआ — सात वर्षतक इसराईली लोग कैनान देशको अपने वशकरने में उद्युक्त रहे परन्तु इसके युद्ध के पीछे उन्हें और कोई युद्ध नहीं करना पड़ाथा उन्होंने फिर परमेश्वरकी आज्ञाको तोड़ा क्योंकि उस देशके अधर्मिक लोगोंका सम्पूर्ण नाश नहीं कियाथा उनके आज्ञा न मानने का यह कारणथा कि इतने दिनके निरन्तर युद्धमे लग रहने से वे बहुत थक गये थे और हतबल भइ ...... और मेनसा वर्गोंके योधा लोग अपने देशको जाना चाहतेथे इस आज्ञाभंगके कारण इसराईल लोग विविध प्रकारके क्लेशोंमे पड़े रहे क्योंकि कैनानके लोग इनसे प्रत्येक क्षण लड़ने पर उद्युक्त रहतेथे और जब लड़ नहीं सक्तेथे तो उनको अपने अधर्मिक कर्मोंमें डालतेथे फिर जब जोशूआने यह देखाकि प्रत्येक वर्गको नियत भाग मिलगया है और सारे देशमे शान्ति होगई है तब इसने सारे लोगों को एक स्थानमें बुलाकर उनसे परमेश्वर की उपासना करनेकी प्रतिज्ञा करवाई और ११० वर्षकी अवस्थामे अन्यलोक को प्राप्त हुआ जोशूआने जिस बुद्धिमत्तासे इसदेशको जीत लिया था उसी बुद्धिमत्तासे इस देशके राज्यव्यवहारका निर्वाह किया और उसके समयमें इसराईली लोग परमेश्वरके सत्य मतमें रहे।

प्रकरण ४

इसराईली जाति के (न्यायाधीश) शास्ताओं के समय का इतिहास।

मूसाने जो नीति परमेश्वर से ग्रहण की थी उसके अनु-
सार इसराईली लोगों पर परमेश्वर की आकाशवाणियों से
शासित अर्थात् अधिपति नियत होतेथे परन्तु नायकों के
मरने के पीछे इसराईली लोग प्रतिमा पूजने लगे और अधि-
पति नियत करने की रीति भुलादी अर्थात् सब जनपद
स्वतन्त्र होगए थे और जो चाहे सो करने लगे यहूदा
वर्ग के लोग तो पहलेसेही कैनान के जीतने पर उ-
मुक्त थे परन्तु और वर्गों के लोग कैनानी स्त्रियों के सौन्दर्य
से इतने मोहित होगए कि बहुतोंने तो इनसे सम्बन्ध कर लि-
ये और इसकारण इनके धर्मको भी मानने लगे परन्तु ऐसे
सम्बन्धोंसे उन पर बड़ी विपद पड़ी और परमेश्वरने क्रुध होकर
उनको उनके शत्रुओं के हाथमें डालदिया — मिकाह नामक
धनाढ्य पुरुषने चांदीकी मूर्ति बनाकर एक लिवाईको उस
का पुजारी बनाया दान वर्गके लोगोंने इस मूर्ति और पुजारी
को लेजाकर अपने स्थानमें मूर्ति उपासना नियत की उसी
समय गिबियाह नगर निवासी बिन्यमीन वर्ग के लोगोंने
एक भ्रमते वाले पुजारी पर इतना अनर्थ किया कि सो इसरा-
ईली लोग उनसे क्रुध होकर लड़ने को गए परन्तु युद्धमें बिन्यमी-

सब लोगोंका नाश होजाता यदि इसराईलीलोग उन पर दया करके उनको छोड़ न देते परन्तु थोड़ेसे दिनोंमेंही किनानिय न लोग अपने हरे मथुन को फिर प्राप्त होगए इसके पीछे परमेश्वरने इसराईलीलोगोंको उनके मूर्ति पूजाके अपराध के कारण मेसोपोटेमिया के राजाके वश करदिया और वे लोग आठ वर्षतक उस राजाके वशमें रहे परन्तु जब उन्होंने पश्चात्ताप किया तब ओथनील नामक (प्रा शासिता) योधाने उनको स्वतन्त्र किया और वे लोग उसके शासनामें चालीस वर्ष आनन्दमें रहे परन्तु फिर उपद्रव के कारण वे लोग मोआबी य लोगोंके वश करदिए गए और फिर एहूद (शासिता) ने मोआब के राजाको मारकर इन लोगोंको उसके हाथसे छुड़ाया — शा मगर (तृतीय शासिता) ने फिलसताईन लोगोंके आक्रमणसे इसराईलियोंको बचाया और शत्रुके बहुतसे लोगोंको पैने अङ्कुश से मारडाला परन्तु इसराईली लोग फिर अपराधकारी हुए और फिर परमेश्वरने उनको जाबिन नामक किनानके राजाके हाथमें डालदिये यह राजा बड़ा बलवान था और उस के पास नौ सौ लोहेके रथ थे और उसके सेनानियों में से सिसिरा नामक बड़ा योधा प्रख्यात — बीस वर्षतक ये लोग उस राजाके वशमें रहे अन्तमें बारक नामक इसराईलियों के मुख्य योधाने डेबोरह नामक स्त्री भविष्यद्वक्ता की सहायतासे उनको स्वतन्त्र किया — एक नये अपराधके कारण इसराईली मिदिया न लोगोंके वश होगए और सात वर्षतक उनके अधीन रहे इस

बन्दसे छुड़ानेके लिये गिडिअन नामक योधाने जिसने कि
प्रथम बालदेवता की वेदीको तोड़ाथा नियत हुआ इस कारण
गिडियन का नाम जेरूबाल (बालदेवता अपनी रक्षा आपकरे)
पड़ गयाथा इस योधाने केवल तीन सौ सेना लेकर मिडियन से
ना पर आक्रमण किया और अपनी सेनाके प्रत्येक योधाको एक
एक तुरही और दीपक देकर शत्रुगण को भुलवादिया और (इस
राईली लोगोंने) इस प्रकार उनका पीछाकर उनको मारा और परा
जित किया — गिडिअन के अधिपत्यमें ये लोग चालीस वर्ष
तक शान्तिके साथ रहे परन्तु उसके मरने के पीछे सिकिम के
लोगोंने अबलमेक नामक गिडियन के एक पुत्रके कहनेसे
उसके और भाइयोंको मार डाला और उसे राजपदवी देदी
अबलमेकने राजाहोकर सिकिमके लोगोंमें से बहुतेरोंको मा
र डाला परन्तु वह भी जब यहूदा के एक नगरको घेर रहाथा
एक स्त्रीके हाथसे मारा गया — टोला और जापर नामक शासि
ताओंके समयमें कोई बड़ी बात नहीं हुई — इसके पीछे इस
राईली लोगोंमें इतनी (मूर्त्तिपूजाकी) पाप ढीठ हुई कि परमेश्व
रने उनको अमोनाईट और फिलसटाइन लोगोंके हाथमें डाल
दिया फिर इसराईलीलोगोंने बड़ा क्लेश पाकर गिलियड के पुत्र
जेफथाह को जो (जब उससे पैत्रिक धन का अधिकार छीना ग
याथा तो वह घरसे निकलकर) अडन के नरोंपर लूटता हुआ फिरा
करताथा अपना अधिपति बनाना चाहा जेफथाह ने इनसे
अपने बचाव और सर्वोपकारकी शपथ सहित प्रतिज्ञा कराकर

अमोन लोगोंसे युद्ध किया युद्ध करने से पहले उसने यह सं-
कल्प कर लिया था कि जो कोई मेरे घरमेंसे जबकि मैं विजय क-
र के आऊंगा मेरे सामने आवेगा उसे मैं बलि करूंगा जब वह
जय करके आया तो उसकी एक पुत्री अपनी सहेलियोंके
साथ उस देशकी रीतिके अनुसार (मिसर और पैलस्टाइन
मे यह रीतिथी कि जब कोई विजयी घरको आता तो नगर
की सब कुलीन वा नीच जातिकी कुवारी कंन्या नाचती और
मंगल गाती हुई उसे मार्गमे जा मिलती) अपने पिता का ध
न्यवाद करने आयी परन्तु उसके पिताके संकल्पके कारण
उनका सारा हर्ष दूर होगया क्योंकि यद्यपि उसने उसकी बलि
न दी किन्तु उसको परमेश्वर के मन्दिर में सेवाके लिये चढ़ा
दिया इससे उसकी कुल वृद्धिकी आशा जाती रही।

जेफथाह के पीछे इबजन इलोन और अबडान नामक
शासिता हुए परन्तु इनके समय में कोई बड़ी बात नही हुई फिर
इलाई शासिता हुआ वह दोनो शासिता और प्रधान याजक
हुआ इसके समयमें इसराईली लोग फिलिसटाईन लोगों
के अधीन होगए फिलिसटाइन लोगोंने उनको बड़ा क्लेश दि
या यहांतक कि उनसे शस्त्र लेलिये और उनके देशमें कोई
लुहार न रहने दिया इसलिये इसराईली लोग अपने कुल-
हाड़ और छुरियें फिलिसटाईनमें बनवाने जाते थे।

इसी समय में सैमसन नामक योधा इसराईली लोगों
मे बड़ा प्रसिद्ध हुआ इसके जन्मकी आकाशवाणी पहलेही

होगई थी और परमेश्वर की आज्ञा यह थी कि यह योधा अप-
ने जन्मसे नेज़ेराइट रहै अर्थात् वह परमेश्वर को चढ़ायाजावे
प्रत्येक अशुद्ध वस्तुसे बचे और उस के केश न कटाये जावें
परन्तु जब वह बड़ा हुआ तो उसने अपने मा बापकी आज्ञा
से विरुद्ध फिलिसटाइन लोगोंसे सम्बन्ध करना चाहा और
मार्गमें जाते हुए एक सिंहको ऐसा मारडाला जैसे कोई ब-
करे को मार डालता है - थोड़े से दिनों के पीछे अपनी स्त्री
से लड़पड़ा और उसको छोड़ घरको चला आया परन्तु जब
उसने यह सुना कि उसकी स्त्री और के साथ ब्याही गई थी तो
क्रुध होकर फिलिसटाइन लोगों के खेतों को जला दिया इस
पर फिलिसटाइन लोगोंने उस स्त्री और उसके पिताको मारदि-
या और सैमसन ने इसके बदले बहुत से फिलिसटाइन लो-
गों को मार डाला तब फिलिसटाइन लोगोंने सेना लेकर
यहूदा पर आक्रमण किया और सैमसन भागा परन्तु जब सै-
मसन अपनी इच्छानुसार बान्धा जाकर उनके वश किया गया
तो उसने उनसे पहुंचकर बन्धों को ऐसा तोड़डाला जैसे कोई
सूतको आगसे डाल जला कर देता है और उसी स्थान पर एक मृ-
त पशु (गधे) की अस्थि लेकर एक हजार फिलिसटाइन लो-
गों को मार डाला - फिर जब वह गाजा नामक नगरमें एक
रातको गया और जब फिलिसटाइन लोगोंने यह बात सुनी और
उसको पकड़ना चाहा इसलिये उस नगरके दरवाजे बं-
द कर दिये कि निकल न जावे परन्तु सैमसन एक दरवाजे के

तबनिचैबेलाड़ कर हर एक पहाड़ पर लेगया और उनके
हाथसे बचकर चलागया परन्तु अन्तमे उसने डेलाईलाह
नाम्नी एक दुराचारिणी स्त्री के छलमें आनकर उसे यह ब
ताया कि मेरा दैविक बल मेरे बालों में है तब इस डिलाई
लाह ने फिलिस्टाइन लोगोंसे बहुतसा रुपया लेकर छल
से उसके बालोंको काट डाला और सैमसन को उनके हाथमें सौं
प दिया उन्होंने उसकी आंखें निकाल कर उसको एक चक्की
पीसने को (दास और पशुओं के समान) नियत किया काल
पाकर उसके बाल बढ़गये परन्तु फिलिस्टाइन लोगों को
यह बात मालूम नहीं हुई फिर उन लोगों ने उसको अपने प
र्व उत्सव के समयमें अपने विनोद ... करने के लिये डेगन (म
च्छ अवतार) देवता के मंदिर मे बुलाया और जब सैमसन वहां
न मे सह स कर्म्म दिखा चुका तो उसने ... उस मंदिर के जि
न्हों कि वे लोग बैठेथे) दोनों खम्भोंको उठाकर मंदिरको गिरा
दिया और आपभी उनके साथ दबकर मरगया इसी कारण जि
तने लोगोंको कि उसने अपने अन्त समय में मारा था उतनों
को उसने अपने जीते जी कभी नहीं मारा - परन्तु इसराई
ल लोग अपने शत्रुओंकी इस विपद से कुछ उपकार न उ
ठा सके - क्योंकि इलाई बहुत बूढ़ाथा अर्थात् सौवर्ष का हो
गयाथा और उसके पुत्र होफनी और फिनहस बड़े दुराचारी
थे सेमुएलने जो कि अपनी युवा अवस्था सेही भविष्यद्वक्ता
होगया था इलाई पर परमेश्वर का शाप निरूपण किया स

लिये सब उसको इलाई का उत्तराधिपति मानने गले हो-
कनाई और फिनिहस ने सेना लेकर फिलिस्टाईन लोगों प
र आक्रमण किया जब अपना पराजय होने लगा तो उन्हों
ने इश्वरीनौका मङ्गवाई ताके सेना भाग न जावे परन्तु फि
र भी पराजित होगए और वह नौका फिलिस्टाईन लोगों
के हाथ आयी जब इलाई ने यह बात सुनी तो वह तो मू-
र्छोखाकर मरगया — इसके पीछे सेमुएल शासिता नि-
यत हुआ और उसके नियत होनेही नौका भी इसराईली
लोगों को दी गई क्योंकि जब फिलिस्टाईन लोगोंने उसे
डेगन नामक अपने देवता के मंदिर मे रखा तो उसीरात
डेगन नौकाके आगे गिराहुआ पाया और जबतक वह व
हां रही तब तक उन पर नाना प्रकारकी विपद पड़ती रही
इसलिये उन्होंने उस नौका को बथशेमश मे भेजदिया जब
वहांके लोगोंने उत्साहसे नौका को खोलकर देखना चाहा
तो इस पापके लिये परमेश्वर से उन्हे दण्ड मिला फिर व-
ह नौका किरजथजेरेममें जहांकि वह सत्तर वर्षतक रही
भेजी गई इसके पीछे सेमुएल ने सबलोगोंको एक
स्थानमें इकट्ठा करके उनके मूर्त्ती उपासना का निष्फल-
ता सूचन किया और उन लोगोंने भी उसकी आज्ञा अनु-
सार परमेश्वर के उपासना करने की प्रतिज्ञा की।

इससे उनको फिलिस्टाईन लोगोंपर बडा जय लाभ
हुआ और तबसे फिलस्टाईन सेमुएल के समयमें शान्ति

से रहा— बीस वर्ष के पीछे सैमुएल ने अपने पुत्रों को अपना सहायक नियत किया परन्तु वे दोनों उस पदवी के योग्य नहीं थे तब लोगों ने एक राजा स्थापन करना चाहा— सैमुएल ने उनको बहुतेरा समझाया परन्तु वे न माने और अन्त में परमेश्वर की आज्ञा से उसने किश के पुत्र[1] को जो कि बिन्यामिन वंश में से था मिज़पाह में सब वंशों के साम्हने राजा नियत किया और उनको उसकी आज्ञानुसार चलने का उपदेश किया॥ (१०९५- ई॰ पै॰)

प्रकरण ५

इसराईल के युक्त राज्य का इतिहास

बहुत से लोग साल के राजा होने से सन्तुष्ट नहीं हुए थे क्योंकि वे ऐसे मनुष्य की जो कि थोड़े से दिन हुए उनके समान था आज्ञानुसार चलना अच्छा नहीं समझते थे और इस कारण जब वे मिज़फाह से लौटकर आये तो अपने असन्तोष को प्रकाशित करने लगे परन्तु साल ने थोड़े ही दिनों के पीछे युद्ध में अपना बल दिखा के इन लोगों को सन्तुष्ट किया अमोनाइट लोगों के राजा नेहाश ने इसराईल देश पर आक्रमण करके जावेश गिलिअड नगर को घेरा और जब वहां के लोगों ने सन्धि करना चाहा तो उसने उत्तर दिया कि मैं सन्धि तब करूंगा जब मैं तुम्हारे दहिने नेत्रों को निकाल कर इसराई-

[1] जिसका नाम साल था

ल देश पर एक लोकापवाद छोड़ जाऊंगा इस बातको सुनकर वहांके लोग बड़े दुःखी हुए परन्तु साउलने धैर्य बान्ध और सेना इकठी कर आप अमोनाईट लोगोंसे लड़ने चला और उनको इतना पराजित किया कि उनमें से दो पुरुष भी एक स्थानमें न रहने दिये जब इसराईली लोगोंने साल का यह पौरुष देखा तौ वे उनको जोकि उसके राजा होनेसे सन्तुष्ट नहीथे मारने पर उद्युक्त हुए परन्तु साउलने उनको इस बातसे वर्जित किया और कहाकि आज परमेश्वरने हमको जयदी है तौ हमें आज किसीको मारना नहीं चाहिए फिर सेमूएलने सब लोगों को गिलिगल नामक स्थान पर बुलाया उनको साउलकी आज्ञा मानना समझा कर अपना अधिपत्य त्याग किया और (लोगोंको) अपने शासन की श्रेष्ठता का साक्षी करके उनको परमेश्वर के राज्य से असन्तुष्ट होनेसे निन्दित भी किया जब वह कह चुका तौ एक आंधी और मेंह की वर्षा और बिजली के चमकने से परमेश्वर का क्रोध प्रकट हुआ— साउलने अपने पुत्र जोनाथन को (अपना युवराज और) सहायक बनाया यह पुरुष एक वीर्यवान और पराक्रमी था— इसने थोड़ीसी सेना लेकर फिलिस्टाइन लोगों के एक गीबा नामक दुर्ग पर चढ़ाई की और युद्ध उत्पन्न कर दिया इसराईली लोग युद्ध के लिये प्रस्तुत नहीं थे इसलिये जब वे गिलगालमें इकठे हुए ... तौ ... युद्ध करनेसे डरते हुये मालूम हुये और सेमूएल

के इस समय मे (बलि देने को) न होने से और भी डरे अतएव
सावलने यह सोच कर कि प्रायः सब लोग छोड़ कर न चले
जावें आपही बलि की इसपर सेम्यूएल ने आकर उसको
उसकी कादरी के कारण परमेश्वर का क्रोध सूचन किया
और कहा कि तेरे वंशमें राज्य नहीं रहेगा फिलिसटाइन
लोगोंने साल को जिसके पास केवल छः सौ योधा थे
गिबियाह में आघेरा- परन्तु जोनाथनने अपने पिता को
इस विपदसे बचाया और थोड़ेसे योधा लेकर फिलिसटा-
इनों के एक सेना भाग पर आक्रमण किया फिलिसटाइन
लोगों को इसराईली लोगों के आक्रमण की आशा नहीं थी
इसलिये जोनाथन के आक्रमण से वे लोग सहसा
तितर बितर होगए और परस्पर (आपसमे) ही युद्ध करने
लगे बहुत से इसराईल लोग जो कि उनकी सेनामें भर्ती
थे (उनकी विपद को देख कर) उनसे लड़ने को प्रयुक्त हुए
जो लोग कि पहाड़ों में (फिलिसटाइन लोगोंसे डरकर) जा
छिपे थे वे भी फिलिसटाइन लोगों को भागता हुआ देखकर
उनके पीछे पड़े इस प्रकार परमेश्वरने इसराईलियों को उस
दिन बचाया और उनके शत्रुओं को पराजित किया इसराई-
ली लोगोंका विजय सम्पूर्ण होजाता यदि वे लोग भूखसे
पीड़ित न होते- क्योंकि सालने यह संकल्प कर लिया था
कि सन्ध्यासे पहले कोई अन्न न खावे जोनाथन के इस
संकल्प को भङ्ग करने से साल उसको मारने पर प्रयुक्त हुआ

परन्तु लोगों के कहने से उसको छोड़ दिया — इसके पीछे साल उन सीमा वर्त्ती जातियों से जो उसकी प्रजा को बहुत सताती थीं — ...... युद्ध करने लगा और जब उन पर विजय पाचुका तो सेमूयल ने उसे परमेश्वर की आज्ञा सूचन की और कहा कि तू अमिलकाईट लोगों पर आक्रमण कर और उनका सर्वशः नाश कर अर्थात् पशु पक्षी और मनुष्य को जीता न छोड़ क्योंकि परमेश्वर को भली भांति मालूम है कि इन लोगों ने इसराईली लोगों के मार्ग में जब कि वे मिसर से आते थे क्या क्या विघ्न डाले थे साल ने इस आज्ञानुसार अमिलकाईट लोगों पर आक्रमण किया और सबको मार डाला परन्तु वहां के राजा आगाग को बचा लिया इसपर सेमूयल ने क्रुद्ध होकर आगाग को मार डाला और राजा पर परमेश्वर का क्रोध प्रकट किया और कहा कि तेरा राज्य छिन जावेगा — इसके पीछे सेमूयल फिर साल के पास न आया किन्तु बेथ लेहम नगर में जाकर जैसी के पुत्र दाऊद को राज्याभिषेक किया और उस समय से दाऊद में परमेश्वर की ओर से दैविक शक्ति आगई इसी समय में साल का चित्त भ्रान्त होगया और वह प्रायः शोक मग्न रहने लगा — इस बात को देखकर उसके मन्त्रियों ने यह सोचा कि कदाचित यह उदासी सङ्गीतादि से दूर हो जावेगा तो इसलिये उन्होंने दाऊद को जो कि सङ्गीत शास्त्र में बड़ा निपुण था बुलाया और दाऊद ने अपने गाने से राजा

की चिन्ता को तोड़ा और उसकी बीमारी हर किई शाल की
इस दुर्दशा को सुनकर फिलिसटाइन लोगों ने इसराईलियों
पर आक्रमण किया और जब दोनों ओर की सेना लड़ने को
सामने हुई तो फिलिसटाइन के गोलेथ नामक गाथ के
एक बड़े वीर ने आगे बढ़कर इसराईली सेना के किसी योधा
से लड़ने को ललकारा इसपर साल ने यह प्रतिज्ञा की कि
"जो कोई इसे जीतेगा उसे मैं अपनी पुत्री दूंगा" किन्तु इसयो
धा का बल कद्दूता और शरीर की लम्बाई देखकर वे लोग
सब डरगये अन्त में दाऊद ने जानकर उससे युद्ध करने को
अङ्गीकार किया जब वे दोनों लड़ने लगे तो दाऊद ने उसे एक
गोफन फेंक कर मारा कि वह गोले के लगते ही मूर्छित हो कर
गिर पड़ा तब दाऊद ने उस का शिर खड्ग से काट कर लाया
अपने सेनाधिपति के मरने से फिलिसटाइन सेना भागी औ
र भागती हुई बहुत मारी गयी दाऊद के पूर्वोक्त पौरुष से
उसकी जोनाथन से बड़ी मित्रता होगयी परन्तु साल दाऊ
द की कीर्ति को सुनकर उससे ईर्षा करने लगा और अपनी
पुत्री देने से पहले उसकी बहुत सी बातों में परीक्षा की
और तब कि उसने उसे अपनी बेटी (मीचलनामी) देभी दी
थी तब भी उसके मारने पर उद्युक्त रहा - दाऊद को एक
बार तो उसकी स्त्री ने और एक बार जोनाथन ने मारने से ब-
चाया - परन्तु जब उसने साल के पास अपना निर्वाह न
देखा तब वह वहां से रेगिस्तान में चला गया - मार्ग में उसका

जाजक लोगों बड़ा सत्कार किया परन्तु जब सालने यह बात सुनी तो उसने उन सब लोगोंको मारडाला- फिर दाऊद फिलिसताइन की बहुतसी जगह मेसे होता हुआ ईस्रराईल को आया और वहां कुछ अल्प योधाओं को लेकर बनमें रहने लगा- परन्तु यहांभी उसको सालने नहीं छोड़ा और यद्यपि इसको साल के मारने की शक्ति थी तौभी उसने परमेश्वराभिषिक्त राजाको मारना नही चाहा फिर दाऊद ने सालको उसके मारेजाने की खबर दिई इसलिये दाऊद और सालमे कुछ देरतक मित्रता रही परन्तु अन्तमे जब दाऊदने देखा कि साल उसके मारने कोफिकर मे है तो वहांसे भाग एक फिलिस्ताइन जातिके राजा आकिस के पास चला गया समूएल के मरने से सालको बहुत दुःख हुआ सब नबी (भविष्यद्वक्ता) उससे भाग गये क्योंकि याजक लोग मारे गये थे और जब कभी वह परमेश्वर की इच्छा किसी विषय में जाननी चाहता तो उसे (परमेश्वरसे) कुछ भी उत्तर नहीं मिलता था इसी समय फिलिसटाइन लोगोंने इस्राईल राज्य पर आक्रमण किया दाऊद तो इनके साथ नहीं था क्योंकि वह अमलकाई इजाति से लड़ने को गया हुआ था परन्तु आकिस राजा के (सहायकों के मिलनेसे) फिलिसताईन की सेना बहुत बढ़ गयी थी साल अपनी सेना लेकर गिलबोआ नामक पहाड़ पर उनसे लड़ने को आया परन्तु उसकी सेना शत्रुओं से हारगयी फिर जब सालने अपने भविष्यत् जानने की इच्छा की तो [illegible] के [illegible] उसे एक [illegible]

ओर स्थान की एक स्त्री के जो भूतविद्या जानती थी ...... लेगए थे-
र साल ने उस स्त्री को कहा कि सैमुएल को समाधि से उठा
सैमुएल का आकार सन्मुख आगया परन्तु उसने राजा की
मृत्यु और पराजय की भविष्यत् वाणी कही इससे दिन सा
ल फिलिसटाइन लोगों से युद्ध करने को गया परन्तु इस
युद्ध में इसराईली लोगों ने धनुष्य बाण का अभ्यास जो कि
सदा उनके विजय का कारण होता चला आया था छोड़
दिया और इस कारण उनका पराजय हुआ और साल अप
ने पुत्रों सहित मारा गया (१०५५, ई० पै०) फिलिस
टाइन लोगों ने उन[1]की देहों को बड़ी दुर्दशा से चीर फाड
कर ...... बेथशान नगर में अपने विजय के चिह्नों की नाईं
लटकाया — परन्तु जाबेश गिलिअड के लोगों ने साल की
उस काल की सहायता को अनुस्मरण करके (११ १०-
पंक्ति ९) जब उनकी आंखें बचाई थी कुछ योधाओं को उस
के और उसके पुत्रों के मृत शरीरों को शत्रु के हाथ से छुड़ा
ने के लिये भेजा उनका अन्त कर्म बड़ी श्रद्धा के साथ कि
या और सात दिन तक उसके शोक में व्रत धारण किया ज-
ब दाऊद ने ज़िकलाग में आकर राजा के मरने का समाचार
सुना तो बड़ा शोक किया यहां तक कि शोक के गीत गाये
इसके पीछे दाऊद परमेश्वर की आज्ञा से हेब्रन में गया और
वहां जूडा[2] वंश के लोगों ने उसे अपना राजा बनाया - इसी
समय में साल के सेनापति अबनर ने उत्तरीय देशों के इस्रा

(१) राजा और उसके पुत्रों की
(२) या यहूदा

इन लोगों को साल के बेटे इशिवोशिथ को राजा बनाने पर प्रयुक्त किया और जरडन नदी के पार जाकर सेना इकठी करने लगा— दाऊद ने सबसे पहले तो जावेशगिलिड के लोगों को मृत राजा के अन्त कर्म के लिये धन्यवाद करला भेजा और फिर यहूदा के जवानों को युद्ध कर्म सिखाना शुरू किया और थोड़े से ही दिनों में वे लोग फिलिसटाइन ध उग्राहियों के तुल्य होगए— दाऊद (जूडा के राजा) और इशिवोशिथ (इसराइल के राजा) में युद्ध होने का विधान होने लगा— परन्तु येहूब दाऊद के सेनापति ने इशिवोशिथ को पराजित किया इसके पीछे अबनर इशिवोशिथ के लिये फिर सेना इकट्ठी करने लगा— परन्तु जब कि उसने इशिवोशिथ को अपने से असन्तुष्ट देखा तो वह दाऊद के पास सन्धि करने को आया और जब वह वहां से चला तो येहूब ने उसको धोखे से मार डाला— इसके मरने से इशिवोशिथ और भी बल हीन होगया और जब उसके दो सेना पति उसे मार कर दाऊद के पास यह सन्देशा लाये तो दाऊद ने उनसे सन्तुष्ट होने के स्थान में उनको भारी दण्ड दिया इस प्रकार दाऊद का कोई और प्रतिपक्षी न रहा तो सब लोगों ने उसको राजा माना परन्तु इसराईल और यहूदा वंशों में जो भेद पड़गया था दूर न हुआ और यदि कुछ काल तक इकट्ठे रहे फिर अन्त में जुदा होगये— जेरूसलम नगर बहुत से दिनों से जिबूसाइट लोगों के (जो कि हेकसोस

जाति[1] में से थे, पासथा ये लोग मिसर से पैलस्टाइन में आबसे थे और अपनी लूट और सेना की रक्षा के लिये इन्हों ने पैवन[2] पर एक दुर्ग (जो पीछे जरूसिलम होगया) बनाया था और इनको अपने वीर्यों और नगर के दीवारों की दृढ़ता का इतना गर्व था कि जब दाऊद ने इस नगर पर अपनी सारी सेना लेकर आक्रमण किया तो इन्होंने अपने गूंगे योधाओं को दीवारों पर लड़ने को नियत किया परन्तु दाऊद ने उनको पराजित करके उस नगर को लेलिया और उस स्थान को अच्छा देखकर उसे अपनी राजधानी बनालिया फिलिसटाइन लोगों ने दाऊद के प्रताप की वृद्धि को रोकने के लिये बेथ्लेहम नगर पर आक्रमण कर उसे लेलिया और दाऊद को पराजित किया दाऊद ने अदूलम नामक गुफा में जा शरण ली परन्तु थोड़े काल में ही सेना एकठी कर और परमेश्वर की सहायता पर विश्वास रखकर फिलिसटाइन लोगों को दो युद्धों में इतना पराजित किया कि फिर वे सिर न उठासके- टायर के राजा हिरम ने विजयी दाऊद से सन्धि की और उसे (उसका) एक राजभवन बनाने के लिये बहुत सी लकड़ी काठ और बनाने वाले भेजे फिर दाऊद ने किरजाथ जियारम से प्रभु नौका को मंगाकर बड़े उत्सव के साथ जरूसिलम में रखा (इस बात से उसकी मीकल नाम स्त्री जो साल की बेटी थी गर्व भङ्ग होगया) फिर दाऊद ने परमेश्वर की उपासना के लिये एक मंदिर बनाना चाहा

(१) हिकसो सजाति में से थे

(२) इसका नाम या यन पर्वत था

परन्तु नाथन नामक भविष्यद्वाचक ने उसे इसबातसे निषिध किया और कहा कि यह श्रेष्ठ कर्म्म तेरे पुत्रसे होगा— इसके पीछे दाऊद ने फिलिसटाइन मोअबाइट और येमलाइट लोगों को पराजित किया सिरिया और इडूमियाके लोगों से कर लेने लगा जब येमोनाइट और सिरिया के लोगों ने फिर लड़ना शुरू किया तो दाऊदने उन्हें फिर पराजित किया इन युद्धोंसे जो कुछ लूट आतीथी उसमेंसे बहुत सी परमेश्वर को(मन्दिर के बनाने के लिये) अर्पण करता था इस समय दाऊद ने एक बड़ा भारी अपराध किया जिससे परमेश्वर उस पर क्रुध होगया उसने अपने सेनाधिपति ऊरिआह की स्त्री बेथिशिबाह को अपने घर में डाला और उस को अपराधी ठहराया और मरवा दिया परन्तु जब दाऊद ने नाथन (भविष्यद्वाचक) के साह्मने इस पाप का पश्चात्ताप किया तो परमेश्वर फिर उस से सन्तुष्ट होगया— गृहस्थ सम्बन्धि क्लेशों से दाऊद बहुत दुःखी हुआ उसके पुत्र अबसेलाम ने अपने बड़े भाई अमनोन को लक्ष्मी का निरादर करने के कारण मार डाला और जब दाऊदने उसे इस अपराध के लिये क्षमा किया तो उसने इसके बदले अपने पिता से राज्य छीनने का विधान किया अबसेलाम का मुख्य मन्त्री अहियोथेल था और जो लोग कि दाऊदके राज्य से असन्तुष्ट (खासकर उत्तर प्रदेशों के रहने वाले दश वर्गों के लोगों में

से) थे वे सब अबसेलोमके साथ आमिले- दाऊद आ-
पको इनसे युद्धकरने के सामर्थ्य न देखकर राज्यत्यागके
जरडन नदी के पार चलागया मार्गमें लोगोंने उसे बड़ा
क्लेश दिया परन्तु दाऊद ने इस विपदा को अपने अपरा-
धका फल समझा —जब अबसेलोमने अहियोफेल अ-
पने मन्त्री का उपदेश दाऊद के पीछा करने के विषयमें
न माना तो वह मन्त्री यह देखकर कि इस (युद्ध) उप
द्रव का अन्त बुरा होगा विष खाकर मरगया- फिर दाऊ-
द के साथ बहुतसे लोग आमिले और उसके सेनापति
यूआब ने अबसेलोम को पराजित किया तब वह राजपुत्र
जंगल में भागता हुआ अपने केशों के दीर्घतासे एक वृक्ष
में उलझ गया और वहां यूआब के हाथसे मारागया-
दाऊद ने अपने पुत्रके मरने का बड़ा शोक किया परन्तु य-
ूआब ने उसे बहुत समझाया- उत्तरीय (दश) वर्ग फिर शी-
बाह (अपने सेनानी) की सहायता से बिगड़े परन्तु फिरभी
दाऊद ने उन्हें पराजित किया और उनके सेनापति को मारडा-
ला इसके पीछे दाऊद ने फिलिसटाइन लोगोंको चार क्रमा-
गत युद्धोंमें पराजित किया परन्तु इनसब विजयों का हर्ष
जाता रहा जब परमेश्वर दाऊद पर लोगोंकी गिनति करने से
क्रुध हुआ और उसकी प्रजा में मरी डाल दी जिससे हजारों ही
मरगये फिर दाऊद ने यह सुन कर कि उसका पुत्र अदोनिजा-
ह कई सभासदों के साथ राज्यके छीनने की सन्धिकर रहा

है" उसने अपने पुत्र सुलेमान को जो बेथशिबाह से उत्पन्न हुआ था राज्य देदिया इसके पीछे जब दाऊद ने देखा कि उसका अन्त समय आ पहुंचा है तो सुलेमान को प्रजाकी रक्षा करने और परमेश्वर की सेवा में निरन्तर रहने का उपदेश करके आप (चालीस वर्ष राज्य करके) परलोक गामी हुआ।

सुलेमान ने राज्य को पाते ही अडोनीजाह (जिसकी वह बड़ी आशङ्का रखता था) और पअब को मरवा डाला उसने अपने नई इनर देशोंके शत्रुओं से रक्षामें रहने के लिये मिसर के राजा फैरोह की पुत्री से ब्याह किया और विवाह दानमें किनान देशका एक भाग जो कि मिसर के आश्रय था लिया इसके पीछे परमेश्वरने सुलेमान को स्वपन मे दर्शन दिया और उसे कहा कि "जो तू मुझसे मांगेगा वही तुझे मिलेगा" इस पर सुलेमान ने बुद्धिमत्व मांगा और परमेश्वर ने उसे इस नियम पर कि वह (परमेश्वर का) सत्य उपासक रहे केवल बुद्धिमत्वही नहीं किन्तु दीर्घायुः धन और कीर्ति भी दिई— सुलेमान की बुद्धि की कीर्ति सारे फैल गई यहांतक कि दूर दूर देशोंके राजाओंने उससे मित्रता करली— फिर सुलेमान मन्दिर के बनाने में प्रयुक्त हुआ और साढे सात वर्ष मे बनाकर पूर्ण किया यह मन्दिर बड़ा भारी और अति सुन्दर बना था और इसके बनाने में बहुतसा अन्न धन और चतराई खरच की गई थी— जब मन्दिर बन चुका तो सुलेमान ने बड़ी धूम धाम के साथ उसे परमेश्व

र को अर्पण किया और (ओकील नाह) देविक ने जसी बादल
ने सारे मन्दिर को ढाक्छा था क्यों कि परमेश्वर बादल
के स्वरूप मे मन्दिर मे उतरा था फिर सुलेमान ने मोरियाह
पहाड के सामने (जिसपर मन्दिर स्थितथा) एक हर्म्य बनाया
सब से पहले सुलेमान ने इसराईली सेना में युद्ध योग्य र
थों का प्रचार किया — और क्योंकि उस समय पश्चिम एशि-
या में असवारी सेना नही होती थी इसलिये उसका बल इ-
तना बढ़गया कि नील और यूफ्रेटिस नदियों के बीच के दे-
श उसके वश होगए थे — सुलेमान व्यापारका बडा रक्ष-
क था उसके समय में मिस्र के साथ केवल रथों में ही
व्यापार नहीं किन्तु वस्त्रादिकका भी बहुत होताथा — इ-
स व्यापार की उन्नति करने के लिये सुलेमान ने टाडमोर ना-
मक नगर जोकि पिछले दिनों में पालमाइरा नगर नाम से
प्रसिद्ध हुआ बनाया और इजियोन गेबर नामक स्थान पर
जोकि लालसमुद्र के अकाबकी खलीज पर बडा सुन्दर नौका
स्थानथा अपनी प्रजाके व्यापार के लिये जहाज़ समूह बना-
या — सुलेमान का पाण्डित्य भी उसकी बुद्धि के तुल्य था
और जब शीबाह (अर्बस्तान के दक्षिणमें) की रानी उसकी
कीर्ति को सुन कर उससे मिलने आयी तो उससे कहा कि
नम्रः "जो कुछ मैंने तुम मे देखा है वह मेरी कल्पना से अधि-
क है" परन्तु सुलेमान वृद्धावस्था मे बहुत सी स्त्रीयों के
कहने से अधर्म्म करने लगा तो (इस अपराध के कारण)

उसके शत्रुओंने सब ओर से सिर उठाया - इदूम में उपद्रव होने का विधान हुआ - एक योधाने दमिशक को ले लिया और जिरबिआम जिसकी वृद्धि का अखिया नाम के भविष्यद्वक्ता ने सूचित कियाथा उत्तरीय (प्रदेशोंमें रहने वाले) वर्गोंका राज्य स्थापन करने को उद्युक्त हुआ - परन्तु अपने तईं युद्ध के योग्य न देखकर मिसर में चला गया कहते हैं कि सुलेमान ने अपने मरने से पहले बड़ा पश्चात्ताप किया और एक काव्य (उपदेश की पुस्तक) भी लिखी और चालीस वर्ष तक राज्य कर पीछे मरगया। (९७५ ई० पै०)

प्रकरण ६

दशवर्गों का बिगड़ कर अपनी राज्यधानी (मिस्र) स्थापन करना

इसराईलियों के राज्य का इतिहास

सुलेमान के पीछे उसका पुत्र रहबिआम राजा हुआ और राज्य गद्दी पर बैठतेही शिकम नगर में उत्तरीय वर्गों की स्वाधीनता ग्रहण करने को गया उन वर्गों को पिछले राज्य के समय में कर की वृद्धि और व्यापार की हानी से बड़ा क्लेश हुआ था इसलिये उन्होंने अपने शासिमायों और जिरबिआम को यह बात कहकर भेजा कि यदि हमारे क्लेश दूर हो जावेंगे तो हम सर्वथा अधीन रहेंगे और कर भी देंगे - रहबिआम के बुद्धिमान पुराने मन्त्रियोंने तो उसे इस बात के अ-

स्वीकार करने की मति दी परन्तु राजाने (अपने नये सभासदों
के कहने से) इस बात को न माना किन्तु (उन वर्गों के) उत्तर में
कहा कि मेरे पिताने तुम पर जो क्लेश डाला था मैं उस
क्लेश को और भी अधिक करूंगा (मेरे पिताने तो तुम्हें
कोड़ों से ही मारा था परन्तु मैं तुम्हें बिछुओं से मारूंगा)
इस बात के सुनने से उन लोगों को बड़ा क्रोध हुआ और
वे यह कहने लगे कि हमें दाऊद से वा नहंशा से क्या स-
म्बन्ध है और यह कह कर वे सब के सब राजा से फिर गए
(१ राजाओं -- १२-१६ अंजील) रहबियम को इस उपद्र-
व की हद्द का ज्ञान भी नहीं था इसलिये जब उसने अ-
दोरम को उनसे कर लेने को भेजा तो उन लोगोंने उसे पत्थ-
रों से मार डाला और जिरबियम को अपना राजा नियत कि-
या इस पर रहबियम एक बड़ी सेना लेकर उपद्रव के शा-
न्त करने और उन लोगों को अपने अधीन करने को जाना
चाहता ही था कि परमेश्वर ने (शिमाया नामक भविष्यद्व-
क्ता को उसके पास इस बात से निवर्तित करने को भेजा
और) चढ़ाई करने से रोका इस प्रकार रहबियम यहूदा औ-
र बिन्जेमन वर्गों पर राज्य करने से सन्तुष्ट रहा— दश व-
र्गों की राजधानी का नाम इस्राईली राजधानी और यहू-
दा और बिन्जेमन वर्गों की राजधानी का नाम यहूदा की रा-
जधानी पड़ गया जिरबियम ने राज्य पर बैठते ही यहूदा
से सम्बन्ध तोड़ना चाहा परन्तु यतः वहां के लोगों को तीन

जिरबियम
९ राजा

वार प्रति वर्ष यहूदा प्रदेश में यात्रा के लिये जाना पड़ता था इसलिये उसने अपनेही राज्य में पूजार्थक देवालय बना दिये एक इष्ट मूर्त्ति बिथिल में और दूसरी डान में स्थापन की और इन स्थानोंमें स्थापन करने का यह कारण था कि बिथिल में जो इसराईलीवंश के प्रथम पुरुष याकूब को परमेश्वर से दैविक ज्ञान हुआ था और डान नगर में बहुत दिनों से मूर्त्ति उपासना का स्थान था लिवाईट लोगोंने ऐसे अधर्म्म के पुजारी बनने को अङ्गीकार न किया और यहूदा राज्य में जा शरण ली - इस पर जिरबिआम ने बहुतही नीचजाति के लोगों को पुजारी बनाया - जब राजा बेथल में बलिकर रहाथा तो परमेश्वर की आज्ञासे एक भविष्यद्वाचक ने आकर कहा कि यहूदा का एक राजा (तेरी) वेदीको तुम्हारे लोगोंके साम्हने नष्ट कर देगा - इस पर राजाने उसको पकड़ना चाहा परन्तु पकड़ न सका इस बात से भी उसने मूर्त्तिपूजा न छोड़ा तब अहीयाह नामक भविष्यद्वाचक ने उसे कहा कि तेरी कुल शीघ्र ही नाश को प्राप्त होजाएगी - यहूदा और इसराईली राज्योंमें बाईस वर्षतक युद्ध होता रहा और इसके अन्तमें जिरबिआम का ऐसा पराजय हुआ कि फिर वह सिर न उठा सका और इस अपमान से अन्तमें मरगया इसके पीछे इसका पुत्र नादब राजा हुआ परन्तु इसके समय में कोई बड़ी बात नहीं हुई दो वर्षके पीछे यह जब गिबि-

नादब
२ राजा

थून नगर को घेर रहाथा तो बाशा सेनापतिने पहले उसको
और फिर उसके कुटम्ब को मारडाला (ऐसे अबीयाह की आ-
काशवाणी पूरी हुई) बाशा भी वैसेही अधर्म्म (मूर्त्तिपूजा)
करने लगा और उसने उन यात्रीयों के रोकने के लिये जो यहू-
दा में परमेश्वर की (जरूसलम के मन्दिर मे) पूजाकरने जाया
करतेथे रामाह नामक एक किला बनाया - परन्तु इस किले
को यहूदा के राजा आसा ने नष्ट कर दिया - इसने तेईस वर्ष
राज्य किया परन्तु इसके समय में इसराईल लोगों का पौरुष
क्षीण होगयाथा इसके मरने पर इसका बेटा ईला राजा हुआ
परन्तु दो वर्ष के (राज्य के) पीछे जब कि वह अपने घर के
प्रधान अरज़ा के घर जियाफत खारहाथा उसको ज़िमरि ना-
मक रथों के प्रधान ने मारडाला - जब इसराईली (सेना)
जो कि गिबेथन को घेर रही थी यह बात सुनी तो उन्होंने अ-
पने सेनापति उमरी को राजा बना दिया इसपर ज़िमरि ने
जब देखा कि लोग उसके क्रोध होगये हैं राज मन्दिर में जा-
कर उसे आग लगा दी और आपभी उसमे जल मरा उमरी
(का एक और भी शत्रु टिबनी नामक पराजित हुया) इस रा-
जा के समय में समेरिया नगर जो उस पहाड़ के शेमर ना-
मक स्वामी के नामसे जिसपर वह स्थित था सेमिरिया कह-
लाता था बसाया गया और इसराईल के राज्य की राजधानी
हुआ उमरी भी अनर्थक काम करता रहा परन्तु उसका पुत्र बुरा-
ई में उससे भी बढ़ गया था अहिआब ने राज्य पर बैठते ही से

बाशा ३ राजा

ईला ४ राजा

उमरी ५ राजा

इसने राजा की बेटी ईज़बिल से विवाह किया और उसके कह-ने से देवता बाल की पूजा नियत की इस पूजा में मनुष्य बलि होती थी और इससे अधिक और भी अनर्थ होते थे अख़ियाब ने[1] परमेश्वर के भविष्यद्वाचकों को बड़ा क्लेश दिया और वह लोग भाग कर जंगल में भाग गए - एक इलियाह नाम-क भविष्यद्वाचक (अख़ियाब से डरा नहीं था और उसने उस पर परमेश्वर का क्रोध सूचन किया परन्तु फिर वह जंगल में चला गया और वहां पहाड़ी कौवे ... उसे खुराक ला देते र-हे जिरायफ़ाह की एक स्त्री ने भी उसकी पालना की थी जिसके उपकार के लिये उसका मृत पुत्र उस की प्रार्थना से जी उठा था और राजा के अधर्म कामों के कारण देश में बड़ा भारी काल पड़ गया अन्त में जब राजा कोई उपाय न कर सका तो इलियाह को बुलाया उसने आकर बाल के सारे पुजारियों को कहा कि "आओ हम यह निर्णय करें कि आया परमेश्वर अ-धिक बलवान है या बाल" - इस पर इलियाह ने परमेश्वर का प्रभुत्व बहुत से दैव कर्मों से स्पष्ट कर दिखाया इस बा-त को देख कर लोगों ने नबी के कहने से बाल के सारे पुजा-रियों को किशोन नदी पर मार डाला तब शाप निष्फल हो गया और वर्षा बहुत हुई और काल जाता रहा - परन्तु बाल के पूजा के न होने से ईज़बिल को बड़ा क्रोध हुआ इलियाह फिर जंगल को भाग गया और परमेश्वर की आज्ञानुसार जे-हू को यह कह गया कि "तू इसराईल का राजा होगा" - इलीश

(१) अपने स्त्री के कहने से

शू को कि "तू मेरा अनुयायी होगा" और हेजल को कि "तू सि
रिया का राजा होगा" — इस समय सीरिया के राजा बि
नहदाद ने समेरिया पर आक्रमण किया परन्तु अखिअ
ब ने परमेश्वर की सहायता पर विश्वास करके उसको दो
बार पराजित किया तब बिनहदाद अफेक नगर को
भाग गया और यदि अखिअब उस पर कृपा न करता तो
वह मारा जाता परन्तु उसने इस कृपा का उपकार न मा
ना क्योंकि रामोथ गिलिअड नगर को जोकि इस्राईलीयों
का था न छोड़ा इस समय अखिअब ने एक नया अपराध
करके फिर परमेश्वर का क्रोध अपने पर डाला और वह य
ह था कि अखिअब अपने बाग़ को बढ़ाने के लिये जज़रीलके
नाबोथ एक पुरुष का बागीचा लेना चाहता था परन्तु ज
ब उसने इनकार किया तो अखिअब ने अपनी स्त्री के क
हने से उसे राज्य शत्रु ठहरा कर मरवा डाला और बागी
चा छीन लिया इस पर इलियाह ने परमेश्वर का बड़ा क्रो
ध प्रकट किया परन्तु अखिअब ने पश्चात्ताप करके पर
मेश्वर को फिर सन्तुष्ट कर लिया इसके पीछे यहूदा का
राजा यहूसफत अखिअब से मिलने आया और दोनों
राजाओंने रामोथ गिलिअड को लेने की सलाह की पर
न्तु [illegible]फत ने कहा कि उस नगर पर चढ़ाई करने से
पहले परमेश्वर की आज्ञा मालूम करनी चाहिए इस
पर अखिअब ने सारे भविष्यद्वक्ताओं से पूछा और सब

ने यह कहा कि अविमेलेख की विजय होगी परन्तु ये सब के स ब झूठे थे क्योंकि जब मकायाह नाम भविष्यद्वाचक से जो सचा था पूछा तो उसने कहा कि इसराईली पराजित होंगे अविमेलेख ने विश्वास न किया किन्तु रामोथ गिलिआड पर आक्रमण किया युद्ध में किसी योधा ने अविमेलेख को तीर से ज़ख्मी कर दिया और वह समेरिआ में पहुंचने से पहले ही मर गया - इसके पीछे अख़ज़याह राजा हुआ और अपने माता पिता नाई ही अधर्म्मिक था - अपने राज्य के दूसरे वर्ष में वह एक खिड़की से गिर कर इतना क्लिष्ट हुआ कि उसके मरने की भी आशा होगई थी तब उसने अक्रून स्थान में बअलज़बूब की आकाशवाणी पूछने को दूत भेजे परन्तु मार्ग में ईलियाशाह ने उनको राजा का थोड़े से दिन में मरना सूचित किया - इसपर राजा ने सेना गण भेजकर उसको पकड़ मंगवाया जब वह राजा के सन्मुख आया तो वहां भी उसने यही कहा और थोड़े से दिन के पीछे अख़ज़याह मर गया - इसके पीछे यहूराम राज्य पर बैठा - यह अपने पिता अख़अब और भाई से अधर्म्म में कम प्रवृत्त था और यद्यपि उसने बअल और उन की दूष मूर्त्तियों को भङ्ग न किया किन्तु सेहून वाले बअल की पूजा तो बिल्कुल बन्द कर दी अपने राज्य के आरम्भ में ही उसने मोआब वाईट लोगों को शासन करना चाहा और इस उद्देश्य की प्राप्ति के

अख़ज़याह ७ राजा

यहूराम ८ राजा

लिये यहूस फत यहूदा के राजाके साथ चला परन्तु ज
ब कि वे जंगल में पहुंचे तो वहां पानी के न होने के का-
रण उनको बड़ा क्लेश सहना पड़ा- इस पर राजाने इ-
ली शाह नामक भविष्यद्वाचक की सहायता चाही और
उसने राजाको कूप खोदने को कहा और जब कूप खुदग
ए तो उनमें परमेश्वर शक्तिसे पानी भर गया- और इस
के सिवाय जब सूर्य्य के उदय होने के समय उसकी किर
णोंका रंग रुधिर जैसा मालूम होता तो मोआबाइटलोगों
ने यह सोचकर कि यहूराम और यहूस फत मे पर-
स्पर विरोध होगया होगा उन पर आक्रमण किया परन्तु
पराजित हुए- इस समय इलियाह नामक भविष्यद्वा-
चक मृत्युके दुःख सहने बिना आकाश को चलाग-
या और उसके अनुयायी इलीशाह ने बहुत से दैवक-
र्मे दिखाने आरम्भ कीया- उसके दैव कर्मोंकी कीर्ति
सुनकर नाअमन नामक सिरिया के लोगोंका अधिपति
जोकि कुष्ठिया इलीशाह के पास आया और इससे अ-
पनी देह की शुद्धि की प्रार्थना की- इलीशाह ने उसको
जार्डन नदीमें स्नान करने को कहा और वह स्नान करने
ही अच्छा होगया- बिनहादाद सिरिया के राजाने यह
समझ कर कि कदाचित् अपराजय इलीशाह की दैवश-
क्तिसे हो एक सेनागण उसके पकड़ने को भेजा परन्तु
वह सब अन्धे होकर शत्रुके हाथ में पड़ गए- परन्तु

फिरभी बनहादद न डरा क्योंकि समेरिया नगर को घेर क-
र वहां के लोगों को इतना क्लेश दिया कि अन्न के न मिलने
से अति आतुर होगये इसपर यहूराम ने इलीशाअ को धम-
काया परन्तु इलीशाअ ने उससे कहा कि कलतक और स-
मेरिया में बाहुल्य होजावेगा उसी रात सिरिया वालों ने घो-
ड़ों और रथों का शब्द सुना और यह समझे कि इसराईली
हित्तिस और मिसर के राजाओं को उन पर चढ़ा लाये हैं
वे सबके सब उसी समय अपना माल धन धान्य असबाब
छोड़ कर भाग गए यह असबाब और अन्न इसराईलियों
के हाथ आया बनहादद को (जब वह पीछे घर में गया)
उसके नौकर हैजल ने मार कर राज्य छीन लिया ।

इसके पीछे यहूराम यहूदा का राजा और अख़ज़याह इस-
राईल का राजा रामोथ गिलिअद लेने को चले परन्तु परा-
जित हुये इसराईल का राजा ज़ख्मी होकर जिज़रील में गया
तबही इलीशाअ ने एक भविष्यद्वक्ता के द्वारा याहू को इस-
राईल का राजा स्थापन किया याहू ने राज पाते ही जि-
ज़रील में जाकर यहूराम को मार दिया अख़ज़याह भी
मार्ग में भागता हुआ मारा गया याहू को जिज़रील में पहुं-
चने में किसी ने न रोका परन्तु जब वह वहां आया तो इज़ि-
बल ने खिड़की में से देखकर उसे राजघातक कहकर गाली बा-
ली देने लगी राजा के नौकरों ने उसे खिड़की से नीचे फेंक-
कर मार डाला एलियाह के वचन से पूरे हुये परन्तु उन सब

के लोगोंने याहू की आज्ञासे आरज़ाला याहूने मूर्त्तिपूजाको
बिल्कुल नष्ट न किया इसीकारण उसके वंश में
तीन चार पीढ़ीतक राज्य रहा था - सिरिया के लोगों
ने याहू और उसके पुत्र यहूअख़ज़ के राज्य में इसराइलि-
यों को बड़ा क्लेश दिया यहूआश यहूअख़ज़ के बेटेने
जो अब राजा हुआ इलीशाह का मराईके समय मे ब-
ड़ा आदर किया और जब वह मरने लगा तो उसने राजा
को बाण मारने की आज्ञा दी परन्तु राजा तीन बाण चला
कर ठहर गया इसपर इलीशाह ने उसे कहा कि प्रत्येक
बाण सिरियावालोंपर विजय का चिन्ह था - इसीलि-
ये इसपर तुम तीन विजय पाओगे जैसेकि इलीशाह ने
प्रतिज्ञा की थी इसराईली लोगोंने सिरियावालोंपर ती-
न विजय पाई - और अपना राज्य पूर्व सीमातक
फैलाया इसी समय इसराईली लोगोंने यहूदा पर
आक्रमण किया और यरूसलमको लूटा इसके पुत्र
यहूबिआम के राज्यमें प्रजा बड़ी सुखी रही और इसराई-
ल राज्य की बड़ी वृद्धि हुई परन्तु उसके मरने के पीछे
बड़ा उपद्रव मचा और ग्यारह वर्षतक कोई राजा न
हुआ इस समयके अन्त में उसका पुत्र ज़करियाह राजा
हुआ परन्तु उसको छः महीने के राज्य के पीछे सल्लूम
नामक सेनापति ने मार दिया और सल्लूम को मुनहि-
म ने मार कर राज्य छीन लिया - इस समय असिरिया

यहूअख़ज १० राजा
यहूआश ११ राजा
यरुबिआम १२ राजा
ज़करियाह १३ राजा
मुनहिम १४ राजा

लोगोंने (हल राजा की अधीनता में) इसराईल देश पर आक्र-
मण किया परन्तु मनहिम ने उन को बहुत सा धन देकर
सन्तुष्ट किया इसके बदले हलने मनहिम को उसके औ-
र शत्रुओं के आक्रमणों से बचाया उसके पीछे फिकिहिया
ह उसका पुत्र राज्य पर बैठा परन्तु फिकि एक

फिकिहिया २ १५ राजा

सेनापति ने उसका राज्य छीन लिया - फ़िकि, भी अध
र्मिक राजा था इसने यहूदा के राजा अहाज़ पर विजय पा
ई और रेज़न सीरिया के राजा सहित यहूदा के लोगों को ब
न्दी कर लिया परन्तु पीछे उनको छोड़ दिया (कालकी दूस
री पुस्तक - २८ - ८ - अंजील) - ऐसे अनेक २ कामों
के होने से भी प्रति दिन इसराईल में पाप वृद्धि होती रही
असीरिया के लोगों ने ज़ारडन नदी के पास के प्रदेशों को लूटा
और फ़िकि को उसके सेनापति हूसीआ ने मार डाला -

हूसीआ १६ राजा

नौ वर्ष के युद्ध के पीछे हूसीआ ने अपना राज्य स्थापन किया
परन्तु इस समय टिग्लाथ पिलसर और सारडाना पलस
ने इसराईल पर आक्रमण करके हूसीआ को अधीन कर
लिया परन्तु हूसीआ ने स्वाधीन होने के लिये इथियोपिया
के राजा सो वा सवाको से (असीरिया के राजा से बिगड़ने
की) सन्धि की - इसपर शालमनेसर ने चढ़ाई कर के इ-
सराईल राजधानी पर आक्रमण किया (तीन वर्ष तक लड़ा-
ई होती रही अन्त में समीरिया लिया गया) और इसराईली
लोगों को बन्दी करके असीरिया में लेजाकर ग़ोज़ान नदी के

यार बसाया (७२१ – ई. पे.) इन बन्धुजनों और उन लोगों की सन्तान से जो समेरियामें छोड़े गये थे पिछले समय के समेरिया वाले उत्पन्न हुये थे — इसी कारण इस खिष्टाति जाति और यहूदियों में भेद चला आया ॥

प्रकरण ७

यहूदा के राज्य का इतिहास

इसराईल और यहूदा के राज्यों के परस्पर भिन्न होने से कदाचित यह विचार होसक्ता है कि यहूदा के राज्य को बड़ा क्लेश हुआ होगा — परन्तु यह बात नहीं हुई क्योंकि इन दोनों राज्यों में द्वेष तो पहले से ही चला आता था यहांतक कि दाऊद और सुलेमान के समय में परस्पर युद्ध हुए थे रहूबियाम ने तो केवल अपने मूढ़पन से इस द्वेष को अधिक करके दोनों राज्यों को परस्पर भिन्न कर दिया जब कि यहूबियाम ने इसराईल में मूर्तिपूजन का प्रचार किया तो लिवाइट और वे लोग जोकि परमेश्वर के सत्य उपासक थे यहूदा में आ कर बसे थे परन्तु तीन वर्ष में ही उन्होंने यहां इसराईल से भी अधिक अधर्म वृद्धि देखी क्योंकि रहूबियाम ने अमोनाइट देशीय देवतों की पूजा स्थापन की और उनके लिये मन्दिर बनाये इस पाप के दण्ड देने के लिये मिसर के राजा शिशाक ने एक बड़ी सेना लेकर यहूदा पर आ

(८) इसी हुलाल का नाम दस वर्गों का बद्धी को जाता है

हमला किया और सीमावर्ते नगरों को लेना हुआ जहलम के साथ ऐरा (कालकी २ पुस्तक -१२-२ अंजील) - इस हमानकी कुहिना उन चित्रोंसे जानी जाती है जो मिसर के खम्भों पर लिखे हैं जिनमें मिसका राजा बहुत से बन्दीजनों की बली करना हुआ समझ लिखा है - एमफ्चपोलियन साहिब (फरासीसी) नामक इतिहासिक इन चित्रोंमें से एक को यहूदा का राजा बताता है परन्तु उसकी बलि होना तो अंजील के वर्णन से विरुद्ध है क्योंकि वहां यह लिखा है रहूबिआम ने शिशाक को बहुत सा धन देकर अपना बचाव किया विलकिनसन साहिब (अंग्रेज) मिसरके अवशेषों के अन्वेषक ने यह लिखा है कि जिस चित्रको रहूबिआम ठहराते हैं वह उसकी मूर्ति नहीं है।

रहूबिआम के पीछे उसका पुत्र अबियाह नामक राजा हुआ और उसके समय में इसराईल के राजाने यहूद पर आक्रमण किया परन्तु युद्ध में यहूदी जय हुई जिसके कारण यहूदा की वृद्धि और इसराईली लोगों को बड़ा शोक हुआ कुछ काल पीछे अबियाह बीमारी से मरगया और उसका बेटा असा राजा हुआ इसने राज पाते ही मूर्ति पूजा बिलकुल बन्द करादी और लोगों को सत्य धर्माश्रय होने का उपदेश किया - इस पुरुषार्थ का फल उसे आपद कालमें मिला जो यह थी कि एक लुटेरों के गण ने जिनको इबरानी बोली में कुशिम लिखते हैं यहूदा देश को आ घेरा परन्तु यह लि-

मुराजा अबियाह

मुराजा असाह

तीय नहीं कि यह कूसिम लोग कौनथे अंजील में योंलि
खा है कि ज़िराह् इथियोपिया का राजा दस लाख सेना औ
र तीन सौ रथ लेकर चढ़ाव किया था परन्तु यदि यह ठी
क है तो ज़िराह् ने मानो मिसर को अपने वश कर लिया
होगा या वहांके राजासे सन्धि कर ली होगी - असाने
परमेश्वर से प्रार्थना की और सम्पूर्ण विजय हुई - जिस
दिशामें वे लोग भागे उससे यह मालूम होता है कि वे
अरब देशके लोग थे क्योंकि अंजीलमे यह लिखा है कि
वे गिरार नगर की दिशाको भागे असाने सत्यधर्म्म
की सहायता की और इसराईल से जो लोग भाग कर आ-
ते थे उनको शरण दी परन्तु जब वहांके राजा बअशा ने
उन लोगोंके रोकने के लिये अपने राज्य सीमापर एक कि-
ला बनाया और युद्धका विधान किया तो असाने सिरिया
के राजाको उसकी सहायता लेने के लिये बड़ा धन दिया
परन्तु पिछले दिनोंमे असा अधर्म्मिक होगया और पांवके
रोगसे मरगया - इसके पीछे इसका पुत्र यहूसफत रा-
जा हुआ और उसने सत्यधर्म्म का प्रचार किया और इस
की उन्नतिके लिये उपाध्याय नियत कीए राज्य व्यवहा-
र और सेना विधान को भी शुद्ध किया - इसके राज्यमें य
हूदा की ऐसी वृद्धि हुई कि फिलिस्ताइन और अरब देशके
हरबी लोग भी कर देने लगे - इसने अपने पुत्र को
अहाब राजा की पुत्री अथलियाह से (जोकि अपनी मा-

राजा ६
यहूसफत

ना इज़बल से कम दुराचारिणी नहीं थी) ब्याह किया राबे-
थ गिलियद की लड़ाई मे से जिसमे अखिअब मारा गयाथा
परमेश्वर की सहायता से बचकर आया था फिर यहूसफ-
त ने लाल समुद्र के उस व्यापार को जिसे सुलेमान ने
स्थापन किया था बढ़ाने के लिये अखिअब के पुत्र अखि-
ज़्याह के साथ मिलकर इज़ियोन गिबर नगर मे एक जहाज़ों का समूह बनाया इसके पीछे इसका बेटा यहूराम
राजा हूआ इसने राज्य गद्दी पर बैठते ही मूर्त्ति पूजन का
प्रचार किया जिसका फल यह हूआ कि इदूमियां के लो-
ग बिगड़ गए और अरब और फिलिस्तीन देशों के लोग
राजा के कई एक पुत्रों और स्त्री को बन्दी करके लेगए अन्त
मे राजा एक बड़ी बीमारी से मरगया— इसके पीछे उसका ल-
हुरा बेटा अखिज़्याह राजा हूआ— इसने एक वर्ष राज्य कि-
या और जब यहूराम को जो जिज़्रील में ज़ख़्मी हूआ था दे-
खा मिलने गया तौ वहां येहू की आज्ञा से मारा गया—

५ राजा यहूराम

६ राजा अखिज़्याह

जब अथलियाह ने यह बात सुनी तौ उसने यहूदा के
घराने के राज्य वंश को मार डाला केवल यूआश[1] यहूयादा
याजक की सहायता से बचरहा और मन्दिर में छः बरस तक
पलता रहा तब उस याजक ने सब लोगों को इकट्ठा करके
यूआश को राज्यगद्दी दी और अथलीयाह को मार डाला
जबतक यहूयदा मन्त्री रहा तबतक परमेश्वर की सच्ची उपास-
ना नियत रही और अधर्म्म बिल्कुल बन्द होगया— परन्तु

७ राजा यूआश

(1) क्योंकि इसकी पत्नी ने उसे छुपाया था

जब वह एक सौ तीस वर्ष की अवस्था में मरा तो उसके पीछे
अखाज ने मूर्तिपूजा शाहकी बहुत से भविष्यद्वाचकों
ने उसे इस पापके लिये अपवाद किया परन्तु उसने ए
क भी न मानी इस अपराध के कारण सिरिया के लोगोंने
यहूदा पर आक्रम किया (और परमेश्वर ने उनके हाथमें ब
हुत यहूदी लोगों को दे दिया) यह राजा भी रोगसे मरा -
और उसकी प्रजा उस के अनर्थ से ऐसी असन्तुष्ट थी कि
उसके शरीर को राजसमाधि में भी गड़ने न दिया।

इसके पीछे अमिसयाह राजा हुआ और उसने राजा होतेही
अपने पिता के मारने वालों को मारडाला (क्योंकि इसका पिता
जो रोगसे मराथा अन्त समय नौकरों के हाथसे मारागयाथा)
फिर राजाने सेना लेकर इडूमियाके लोगों पर चढ़ाव किया
और उनको पराजित किया परन्तु उसने उसदेश के देवताओं
को लाकर उनका पूजन नियत किया - बहुत से भविष्यद्वा-
चकों ने उसे इसबात से वर्जित किया परन्तु उसने न माना
इस समय इसराईल का राजा यआश यहूदा पर चढ़ आया
अमिसयाह को पराजित करके बन्दी कर लिया और सर्वेरिया
को बहुत सी लूट ले गया - अन्तमें उसके कई एक फसादी
लोगोंने मिलकर उसको मार्गमें भागते हुये को मार डाला।
उसका पुत्र उज्झियाह राज पर बैठा उसने मूर्तिउपासना वि-
स्कुल बन्द कर दी राज्य व्यवहारों को सुधारा और फिलिस्ता-
इन और अरब देशीय लोगों पर विजय पाई अपने राज्यकी

रक्षा के लिये बहुत से दुर्ग बनाये और जलाशय और कूये
बनाने से बहुत से प्रदेश खेती योग्य और उपजाऊ कर दि-
ए फिर जब पुजारियों के स्थान मन्दिर में आप धूप जलाई
तो इस अपराध के लिये उसको कोढ़ हुआ और राज्य का-
ज छोड़ना पड़ा जब वह मरा तो उसका पुत्र यूताम बड़ा
बलवान राजा हुआ उसने सत्यधर्म का प्रचार किया अ-
म्मोनाइट लोगों पर विजय पाई परन्तु अपने राज्य के सोलह-
वें वर्ष मर गया— इसका उत्तराधिकारी अहज़ बड़ा अध-
र्मिक और दुराचारी राजा हुआ इसने किसी प्रकार का अ-
धर्म भी न छोड़ा और दुष्टजनों के नाईं अपने बालकों को
बलि करता था इस समय सिरिया और इसराईल के राजा-
ओं ने इसके राज्य पर आक्रमण किया और बहुत से लोगों
को बन्दी करके लेगए परन्तु उन्होंने उसे छोड़ दिया फिर
जब फिलिसताइन लोगों ने यहूदा पर आक्रमण किया तो
अहज़ ने असीरिया के राजा तिग्लाथपिलनेसर की सहाय-
ता चाही उस राजा ने कर तो लेलिया परन्तु सहायता न की
इसके पीछे अहज़ ने परमेश्वर का मन्दिर बन्द कर दिया
और जरूसिलम के प्रत्येक भाग में मूर्तिपूजन नियत कि-
या उसके मरने के पीछे हिज़कियाह राजा हुआ और अ-
पने राज्य के आरम्भ में ही उसने मूर्तिपूजा बन्द करादी सारी
मूर्तियां तोड़ डालीं मंदिर को खोला और लिवाइट और पु-
जारी लोगों को उनके कामों पर नियत किया फिर परमेश्वर

१० राजा यूताम

११ राजा अहज़

१२ राजा हिज़कियाह

मक पर्व का विधान किया और उसमें केवल यहूदा के लोगों
को ही नहीं किन्तु इसराएल के लोगों को भी बुलाया और जब
यह पर्व हो चुका तौ हिज़कियाह ने पीतल के सर्प को जो कि
मूसा के समय से चला आता था तुड़वा डाला - इसने ये
सब काम यशायाह नामक भविष्यद्वाचक के कहने से किए
इसके समय में यहूदा के राजकी उन्नती हुई इसे कि हिज़कि
याह ने फ़िलीस्तिया लोगों से युद्ध करना चाहा और (असीरि
या के राजा शालमनेसर को यद्यपि फ़िनिशिया के नगर लेने
की आकांक्षा रही पर चढ़ाउ न करने दिया) सनाखिरिब
एक बड़ी सेना लेकर लाकिश नगर को आया हिज़कियाह
ने सनाखिरिब को बहुत सा धन देकर सन्तुष्ट करना चाहा
परन्तु इस धन से सनाखिरिब को लोभ और उत्साह होगया
और उसने जरूसिलम पर बड़ी सेना भेजी परन्तु हिज़कि
याह ने परमेश्वर से आज्ञा लेकर युद्ध का विधान किया।
सनाखिरिब के सेनापति रबशाकह ने जरूसिलम के लो
गों को अधीन होने को कहा और बहुतसी धमकियां दीं
इस समय हिज़कियाह रोगार्त था परन्तु उसने परमेश्वर
की सहायता पर अपने बचाउ का निश्चय किया और परमे
श्वर ने इस निश्चय दृढ़ करने के लिये उस दिन सूर्य मंडल
को उलटा फेरा थोड़े दिनों के पीछे रबशाकह को मोरोई वा
इथियोपिया के राजा तिरहाकह के आक्रमण से जिसने मिसर
को अधिकार किया था और फ़रात नदी की ओर राज फैला रहा

था असीरिया को बचाना पड़ा सनाखिरिबने अपने शत्रुओं पर विजय पाकर फिर ज़रूसलम को आ घेरा - परन्तु रात को परमेश्वर का एक दूत (फ़िरिश्ता) आया और सेनाखिरिब की सारी सेना को मार गया और सेना को मरवा कर जब सेनाखिरिब घर पहुंचा, उसके पुत्रों ने उसे मार डाला। इस (देव सहायता से) बचाउ का समाचार सारे फैल गया और बाबिलन के राजा मेरोडाक बेलेडन ने हिज़कियह के पास अपने दूत भेजे ताकि उसको धन्यवाद कर आवें और सूर्य्य मंडल फिरने का कारण पूछ लावें परन्तु जब हिज़कियह ने इन दूतों को अपना सारा धन दिखा दिया और यह न जाना कि सब धन परमेश्वर का दिया हुआ है तो यशइयाह ने उसे अपराधी ठहराया और कहा कि यही लोग तेरे राज्य का नष्ट कर देंगे हिज़कियह के मरने पर उसकी प्रजा ने बड़ा शोक किया इसका पुत्र मनस्सी बारह बरस की आयु में राज्य करने लगा यह राजा मूर्त्ति पूजक था क्योंकि उसने बालादि देवताओं की वेदियां जिनको हिज़कियह ने तोड़ दिया था फिर बनादिया और उनकी पूजा स्थापन कर दी कहते हैं कि यशइयाह नबी इसी के राज्य में आरे से चरवा कर मारा गया था (क्योंकि मूर्त्ति पूजा का खण्डन करता था) जब असीरियों लोगों ने यहूदा पर आक्रमण किया और मनस्सी को बन्दी कर बाबिलन में लेगये[1] वहां मनस्सी ने बड़ा क्लेश पाया किंतु जब अन्त में परमेश्वर से अपने छूटने की प्रार्थना की तो

(१) – (६९८-ई. पू.)

५ अध्याय

वह छोड़ा गया और घर में आकर उसने मूर्त्ति उपासना बन्द कर दी इस समय से जबतक वह जीता रहा उसकी प्रजा सुखी रही मुनस्सी के मरने पर उसका पुत्र अमून राजा हुआ यह राजा भी अपने पिताकी नाईं मूर्त्ति उपासक था दो वर्ष के राज्य के पीछे अमून को उस के सभासदों ने मारडाला तब उसका पुत्र यूसियाह राजा हुआ यूसियाह ने अपने राज्य के आरम्भ मेंही मूर्त्तिपूजा को बन्द कर दिया और सत्य धर्मका प्रचार किया और जब राजा यह कर रहा था तो हिलकियाह नामक लेखक और धर्म शास्त्र जनने मूसाकी नीति पत्र पाये और सब लोगों को पढ़ कर सुना दिये इसके राज्यका बहुतसा काल तो शान्तिके साथ व्यतीत हुआ परन्तु तीस वर्ष के पीछे जब असीरिया के राज्य के नाश होने पर मिसर के राजा फैरोह होफाह ने अपना राज्य फरात नदी तक फैलाना चाहा तो यूसियाह ने फैरोह को रोकना चाहा (क्योंकि यह संभावित है कि मुनस्सी के बन्दी होने के पीछे यहूदा का राज्य[1] बाबिलन के आश्रय होगया था) और यद्यपि फैरोह ने यह कहा कि "मैं तेरे राज्य को छेड़ता नहीं हूं" तथापि यूसियाह ने न माना किन्तु उससे लड़ने को चला और युध में मगिद्दोकी घाटी में मारागया उसके मरने का उसकी प्रजाने बड़ा शोक किया — जरूसिलम के लोगों ने यूसियाह के बेटे यहूअख़ज़ को राज्य पर बैठा दिया परन्तु फैरोहनीको ने उससे राज्य छीन कर उसके भाई इलयकीम

राजा १५ अमून

राजा १६ यूसियाह

राजा १७ यहूअख़ज़

(१) यूसियाह के उसके रोकने का धर्म था कि बाबिलन के शत्रु को रोके

१७ राजा यहूयकीम

छोड़िया और उसका नाम यहूयकीम रखा इसके समय नबूकेदनज़र के विजयों से पेशिया के राज्यों में बड़ा परिवर्तन हुआ क्योंकि उसने मिसर वालों को कारचेमिश नगर में पराजित कर मिसर देश की सीमा तक जितने प्रदेश मिसर वालों के अधीन थे सब छीन लिये इसलिये यहूयकीम भी बाबिलन के राजा के अधीन हुआ और उसे कर देने लगा जब यहूयकीम ने मिसर वालों की सहायता की आशा पर बिगड़ना चाहा तो नबूकेदनज़र जरूसिलम पर चढ़ आया परन्तु मिसर वालों ने यहूयकीम की सहायता न की नबूकेदनज़र ने राजा को मार डाला और जरूसिलम को लूटकर बहुत सा धन लेगया (जिसमें मंदिर के कुछ बर्तन भी थे)

१८ राजा यहूयकीन

उसके पीछे उसका पुत्र यहूयकीन राज्य पर बैठा परन्तु तीन महीने के पीछे नबूकेदनज़र ने उसे कैद कर बाबिलन को भेज दिया - इसके पीछे यहूयकीम का भाई सिदक़याह

१९ राजा सिदक़याह

राजा हुआ उसने भी अपने भाई की नाईं मिसर वालों से मिल बाबिलन के राजा से बिगड़ना चाहा यरमियाह (जिसने यहूयकीम को भी रोका था) और हिज़किएल भविष्यद्वक्ताओं ने उसे इस काम से रोका परन्तु उसने न माना किन्तु यरमियाह को कारागार में डाल दिया जब नबूकेदनज़र सेना लेकर आया तो फिरोनी को एक बार पराजित हो कर मिसर

बिगड़ने का

को भागा और सिदक़याह को फल उठाने के लिये छोड़ गया नबूकेदनज़र ने थोड़े से दिनों के पीछे जरूसिलम नगर को

लेलिया अब सिदकियाह जेरीकौ नगर की ओर अपने कुल सहित भाग गया परन्तु मार्ग मे पकड़ा गया जब उसको जैबाके साह्मने लाये तौ उसके आगे उसकी सारी स्त्रीयें और बालकों को मार डाला और उसकी आंखे निकाल डालीं फिर उसे बाबिलन में कारागार में जा डाला जरुसिलम और मन्दिर ज़मीन के साथ मिला दियेगये और वहां के लोग बाबिलन को कैदी बनाकर भेजे गये इसके पीछे सत्तर वर्षतक तौ यह पवित्र नगर स्मृति मात्रही रहा (५८८ - ई. पू.) वह दिन जिसमें बाबिलन वालों ने जरूसिलम को लियाथा और वह जिसमें उसका सम्पूर्ण नाश हूया आजतक यहूदी लोगों मे माने जाते हैं क्योंकि वे लोग व्रत धारण कर उन दिनों की स्मृति करते हैं बन्दीजनों[1] की बड़ी दुर्दशा की गई थी और बड़ा क्लेश दिया गया था क्योंकि वे लोग पशुओं की नाईं बांधे जाकर बाजार में बेचे गये थे॥

(१) अर्थात् यहूदी बंदीजन जो बाबिलन को लेजाये गये थे

अध्याय ९

मिडिया और फारस (ईरान) वालों की राजधानी

प्रकरण १

भूगोल

फारस वा ईरान देश (जिसको यूरप के लोग पर्शया कहते हैं) सीमामे बहुत सा परिवर्तन होता रहा है परन्तु इसकी वृद्धिके समय में उसकी ये सीमा थीं दक्षिण मे फारस की खाडी और हिन्द महासागर उत्तर में कैस्पियन झील और काफ पर्वत पूर्वमे सिन्धु और आमू नदियें पश्चिम में यूफ्रेटिस नदी इस देशके मुख्य चिह्न पर्वत श्रेणीयें और मरुस्थल हैं जिनमें उपजाउ स्थान और चारे योग्य भूमी भाग हैं दक्षिण कनारे की भूमी जो फारस की खाडी पर है अर्बदेश के सदृश है और इस स्थान कोई बंदरगाह नही वहांसे कैस्पियन समुद्र आमू नदी तक बहुत से पहाड़ और घाटियें हैं थोडे पहाड़ बहुत ऊंचे हैं और कई ऐसे हैं जो सदा बरफ से ढके रहते हैं घाटियां बहुत विस्तृत नहीं किन्तु इनमेंसे थोड़ी सौ सौ मीलतक फइल भी चली गयी हैं बहुत से बड़े २ प्रदेशों मे लवणस्थल हैं जिनमे से सबसे प्रसिद्ध (खोरस

हू) इसीमें इकबतनी [illegible] वर्तमान हमदान के मे [illegible]
है [illegible] है फारस [illegible] है फारस [illegible] का प्रदेश
है) [illegible] की पवित्र राजधानीथी जिसको नाम (यूना
न वालोंमे जाना गया) परसिपोलिसथा इस नगरका महासि
कन्दर ने नष्ट किया था परन्तु उसके अवशेषोंमेंसे जिस
को अब चहलमिनार (अर्थात् चालीसस्तम्भ) बोलते हैं
मालूम होता है कि यह प्राचीन समय में . एक बड़ा भा
री और प्रसिद्ध नगर होगा पसरगाड से मालूम होता है जो
पारसिपोलिस के पास था राज समाधियें और खज़ाना हो-
ता था सूसियाना ने (खज़िस्तान) का सूबा फारस खास और बा
बिलोनिया के बीच मे था - इन दोनों प्रदेशों के बीच में एक
पर्वत श्रेणीथी जिस पर लड़ाके पहाड़ी लोग रहते थे - इ
नमे से यूसाई लोग बड़े मशहूर थे क्योंकि वे फारस के राजा
यों से जब कभी वे सूसा से परसिपोलिस को जाते थे कर लेते
थे - सूसियाना एक उर्वरा प्रदेश था और इसमे नदियें और
नाले बहुत थे यहांकी राजधानी सूसा नगर था जिसका चि
न्ह भी अब नही मिलता कारण यह है कि इस नगर के घर क
ची ईटों के बने हुये थे इन प्रदेशों के उत्तर मे पहाड़ी प्रदेश
मीडिया की सीमा तक विस्तृत थे मीडिया के दो भाग थे एक
तो अट्रोपाटीन अर्थात् छोटा मीडिया (अज़रबिजान) दूस
रा बड़ा मीडिया (इराक अजमी) पहले भाग में दारिस (त-
ब्रेज़) और दूसरे में निसिया जहां के घोड़े अबतक बहुत प्र

के गिने जाते हैं सत्य नगर थे मीडिया की राजधानी इकबटाना (हमादान) सूसा और पार्सि पोलिस के तुल्य थी परन्तु मीडिया के पूर्व मे आरिया[1] बड़ा भारी समतल प्रदेश था जो किरमानिया (किरमान) के मारुस्थल तक फैलता चला गया था और कैस-पाई पीलि (कैसपी यन् झील द्वार) इसको मीडिया से जुदा करते थे यहां की राजधानी आरिया वर्तमान हिरात नगर के स्थान में थी मीडिया के उत्तर मे पारथिया और हिरकेनिया (तबेरिस्तान और माजंदरान) थे हिरकेनिया की राजधानी जन्द्राकारता थी जहां कभी २ राज निवास भी होता था- इनके उत्तर पूर्व खिरवान रेता के जंगल थे जिनमे वे जंगली लोग रहते थे जो कभी तो व्यापारी कभी गड़रिये और कभी लुटेरे बनजाते थे आरिया के पूर्व मे बेक्ट्रियाना प्रदेश था जिसको आमूनदी सोगडियाना प्रदेश मे जुदा करती थी बेक्ट्रियाना की राजधानी बेक्ट्रिया वा बलख और सोगडियाना की माराकंडा वा समरकंद थी समरकंद एक बड़ा प्राचीन व्यापारक स्थान है।

फारस प्रदेश के पूर्व में किरमानिया (किरमान) और गिड्रोसिया नामक बालूमय प्रदेश थे गिड्रोसिया के लोग जंगली थे और केवल मछियों पर अपना उपजीवन करते थे फौरस[2] के मध्यदेशीय पहाड़ों पर जंगल बहुत कम होते थे और केवल माजन्दरान और जि या रजिया के पहाड़ों पर वन थे इस देश मे ऐसी नदियें जिनमें जहाज़ चल सकें बहुत नहीं थीं इनमे से यूलियस (कारून) अरक्स वा बारतस और इसीमें-

(१) यह आरिया और ईरान आर्य्य शब्द से बिगड़ कर बने हुये हैं क्यों कि लोग उस देश में भी बसे थे।
(२) फारस देश और फारस प्रदेश में भेद है- फारस देश एक राज्य का नाम है किन्तु फारस देश में का एक प्रदेश है।

डर (सीसमुद्र) बड़े प्रसिद्ध हैं – फारस की मध्यस्थ घाटियों में बहुत सी उद्भेस और वह मोती उद्भिज उत्पत्ति होती है घाटियों में (१) परिमित म. मेवला के फलादि होते हैं और जो सुन्दर पुष्प हमारे देशों में बागों मे होते हैं वे यहां स्वयं ही जंगल में उत्पन्न होते हैं – यहां के घोड़े और कुत्ते बलवान और सुन्दर होते हैं और और देशोंकी अपेक्षा यहांके मनुष्य उत्साही दृढ शरीरी और सुन्दर होते हैं

प्रकरण २

फारस के इतिहास की उत्पत्ति और परिमाण

फारस का प्राचीन इतिहासक वर्णन परस्पर विपरीत और सन्देह है अतएव हम यह निरूपण करेंगे कि फारस का इतिहास किन २ वृत्तान्तों से लिया गया है और कितना तो विचार पर और कितना प्रमाण पर नियत है तीन प्रकार के वृत्तान्त हैं (१) देशीय (२) यूनानी (३) यहूदी (१) देशीय में से प्रथम जेन्दा वस्था जिसको ज़ोरोयास्टर (ज़रदुश्त) ने बनाया था एक प्राचीनक फारस के धर्म्म और रस्म ग्रन्थोंका समूह है इसीके तुल्य एक और ग्रन्थ देविस्तान है जिसको एक मुसलमान पथिक ने दो सौ वर्ष हुए हैं लिखा था इसमें फारस के प्राचीन धर्म्माचार का वर्णन है दूसरा शाहनामा नामक एक काव्य ग्रन्थ जिसको फारस के महाकवि फिरदौसी ने दसमी सदी मे लिखा था

(१) देशीय

(१) वा समउष्ण देश

इसमें बीस हजार श्लोक हैं और इसका आशय उन (विद्याग्रन्थों के) अवशेषों में जो भिन्न २ जातियों[1] के मैसा लोगों के हाथ से बच रहे थे लिया गया है (अतएव इसके वृत्तान्तों की शुद्धता का विश्वास हो नहीं सकता) अर्थात् जो पारसी ऐतिहासिक वृत्तान्त मेसीडोनिया वालों की विजय सिकन्दर से और पार्थिया वालों के युद्धों से पीछे बच रहे थे सेसनाइड वंश के समय में एकत्र किये गये थे परन्तु मोस्लिम (अरब वाले मुसलमानों) के समय में जाते रहे इसके चारसौ वर्ष पीछे फिरदौसी ने फिर उन वृत्तान्तों के अवशेषों को एकत्र किया किन्तु यूरुप सम्बन्धी वृत्तान्त को छोड़ गया मीरखांद और उसका पुत्र खांदमीर ने भी पंद्रहवीं सदी के अन्त में फारस का इतिहास लिखा है परन्तु उन्होंने अकसर करके फिरदौसी के वर्णनानुसार ही लिखा है मीरखांद ने कहीं कहीं वेही प्रमाण दिये हैं जो कि देविस्तान में हैं किन्तु यूरुप सम्बन्धी वृत्तान्त छोड़ दिये हैं इसलिये एशिया और यूरुप वालों के इतिहास में बड़ा भारी विरुद्ध और अन्तर होता है यह बात तो निस्सन्देह है

कि ये ग्रन्थ बहुत प्रमाण योग्य नहीं जैसे कि यूरुप के इतिहास आदि होते हैं क्योंकि (यह जानना चाहिए कि) एशिया में सत्य इतिहास का होना तो असम्भव है हिरोडोटस जिनोफन और टेसियस यूनानियों ने फारस का प्राचीन इतिहास लिखा है इनमें से हिरोडोटस का वृत्तान्त विश्वास योग्य है और बहुत सी जगह फिरदौसी और मीरखांद से मिल-

(१) जैसे यूनानी पार्थिया वाले और अरब वाले मुसलमान

ता है ज़िनोफन ने साईरस का जीवन चरित्र और फारस में अपने युद्धोंका वृत्तान्त लिखा है टेसियसने फारस की राज वंशावलि यें लिखी हैं अंजील (पुराने नियम) से अस्तर की पुस्तक फारस के वर्णन से भरी हुयी है दानियाल इज़रा और नहमियाह नबियों की पुस्तकों से भी इस विषयमें कुछ २ पाया जाता है वर्तमान (समय के) इन्हीं ज़बानों के विशारदों के वर्णनों से फारस का इतिहास बहुत सा स्पष्ट हो गया है श्लेगल साहब बोपसाहब और बार्नोफ साहब नामक बड़े २ पण्डितों ने हिन्दुस्थान और ईरान (फारस) के लोगों का संस्कृत और ज़ेन्द[१] ज़बानों (भाषा) से बहुत सी समानता होने से परस्पर प्राचीन संबंध निरूपण किया है अतएव इतने विविध प्रमाणों से फारस के इतिहास का ठीक २ वर्णन करना असम्भव है परन्तु इन सब को मिलाने से हम कुछ नकुछ उस देशका इतिहास कथन करसकेंगे ॥

प्रकरण ३

फारस के राज्य सम्बन्धी और सांसारिक अवस्थाका वर्णन

प्राचीन समय से एशिया के उत्तर और पूर्व से भ्रमणकारी २ जातियें इसके मध्यस्थ प्रदेशों पर आक्रमण करती आई हैं इनमें से बहुत तो उन पहाड़ी प्रदेशों से उतर ने रहे जो आलताइ और (हिन्दुस्थान की सीमा पर) पैरोपैमिसिया पर्वतों में हैं यह मालूम होगया है कि येही पहाड़ी प्रदेश हिन्दुओं वा

(१) प्राचीन फारसी भाषा

...ना ह्यों और तजियों के प्रथम निवास स्थान थे परन्तु यह
नहीं मालूम कि वे लोग हिन्दुस्तान को कब गए - जो लोग
उन्हीं प्रदेशों से मीडिया में आकर बसे उन्होंने अपने तईं
आर्य्य जो संस्कृत शब्द आर्य्य (कुलीन) के तुल्य है कह-
लाया और नीच जातियों को म्लेच्छ (जंगली) समझा उ-
नकी प्राचीन वृद्धि का कारण यह था कि वे शस्त्र विद्यामें
बड़े निपुण थे और इन्हीं के सजाति फारसी लोगों ने पश्चिम
दक्षिण में जा बसे ज़रतोश (जिसको यूनानी लोग ज़रोआ-
स्टर बोलते हैं) ने पहिले कृषि कर्म सिखाया जिस उपकार
के लिये उन्होंने राज्य उसी के वंश में नियत कर दिया मीड लो-
ग जोकि बहुत दिनसे इनके शासित बने चले आये थे साई-
रस के समय में इनके वश होगये थे और इसी कारण उनके
धर्म्माचारों में भी परिवर्तन हो गया थे मीड या मैजाई (जोकि मीडि-
यन्स के पुरोहित[1] थे) लोगों के समय में यहां की पूजा होती थी किन्तु
सत्य परमेश्वर का ज्ञान भी उनको था जब फारसी लोगों के
अधिकार की वृद्धि हुई तो वे लोग मीड लोगों के पुरोहितों के श-
त्रु होगए क्योंकि ये पुजारी फारस वालों की वृद्धि नहीं चाहते थे
इसलिये इन दोनों में विरोध रहता था न कि जहां क-
हीं फारसी लोगों का प्रभुत्व होता था वहां वे पुरोहित वर्ग के
अधिकारों को भी बिल्कुल छीन लेते थे और उनको वश होना
देते थे साईरस ने जो धर्म्माचार में परिवर्तन किया उसका
भी अब विचार नहीं हो सकता किन्तु यह तो मालूम होता है

(१) मीड जाति आर्य्य और तजियों वर्गों की एक भिन्न जाति थी

कि यह परिवर्तन ज़ोरोआस्टर के नये मत चलाने से पड़ा और
वह मत यह था कि परमेश्वर नित्य वर्त्ती है और (समय औ
र स्थान के अभाव से) अनन्त है संसार में दो प्रकार के प्रवर्त्त
क गुण हैं एक तो धर्म्म का सत्वगुण (हारमज़द) और दू
सरा अधर्म्म तमोगुण (अहरीमान) इनमे उत्पन्न करने
की शक्ति है परन्तु इन दोनो का प्रयोजन परस्पर विरुद्ध है
और इन दोनों के मिलने से प्रत्येक जन्तु में दोनों गुण पाये
जाते हैं हारमज़द मनुष्य को बुराई से बचाता है और अहरी
मान बिगाड़ता है और उसका नाश करता है परन्तु सत्वगुण ही प्र
बल है इसलिये अन्त में उसी की विजय होती है ज्योति सत्व
गुण का और तिमिर तमोगुण का चिन्ह है अतएव परमेश्व
र ने ज़ोरोआस्टर को यह कहा कि जो कुछ चमकता है उसमें
मेरा तेज होता है इसी कारण ज़ोरोआस्टर ने लिखा है कि
मनुष्य को चाहिये तो सूर्य्य का और पवित्र अग्नी का पूजन
करना चाहिये - इसने धर्म्माचार के साथ एक जाति धर्म्म
मिला हुआ था (चार जाति भेद थे) नीति शास्त्र का पढ़ना
मेजाई लोगों का (जोकि नीच जाति से थे) धर्म्म था किन्तु ज़ोरो
आस्टर ने इस नीति में बहुतसा परिवर्तन किया और पुजारी
बनने की पदवी सबको देदी - राजसभा में प्रतिष्ठित और भ
विष्यद्वक्ता बहुत होने से और मेजाई धर्म्म के शुभ मत को सी
खना राज्याधिकारों में से गिना जाता था पुजारी लोग जज बन
कर न्याय भी करते थे परन्तु वे प्राचीन धर्म्मशास्त्र के अनुसार

(१) मीडिया का कुछ पहले मानते थे हारमज़द और अहरीमान स्वतन्त्र देवता हैं परन्तु ज़ोरोआस्टर ने यह कहा कि ये दोनो परमेश्वर के आधीन हैं

चलतेथे यहांतक कि उनका धर्मशास्त्रके अनुसार चलना एक कहावत होगई थी राजाभी अपनी प्रजाके समान धर्मशास्त्रके अनुसारही चलता था परन्तु और (१) सब विषयोंमें वह बिल्कुल स्वतन्त्र था   राजाकी बहुतसी रानियां होतीथीं और जब कोई राजा मरजाताथा तो उसकी रानियोंमें बड़ा विरोध होजाताथा क्योंकि उनमेंसे प्रत्येक अपने पुत्रको राज्यपर बैठाना चाहती थीं —   राजाकी सारी धूमधाम का व्यय प्रजाको देना पड़ता था और इससे उन लोगोंको बड़ा क्लेश होता था यहां की सेना भी एक प्रजाके दुःखका हेतुथी बहुतसी सेना तो सदा नियत रहती थी सेना लूट वा अपने मालिक के लिये लड़ती थी और अपने सेनापति की आज्ञामेंही रहना चाहतीथी (इनके सिवाई सेना और राज्यमें और कोई सम्बन्ध नहीं था) अतएव जब सेनापति लड़ाईमें माराजाताथा तो सारी सेना भाग निकलती थी सेनाका एक गोलामोंके समूहकी नाईं होना, व इन सभाका प्रजासे करका लेना और प्रजाके अधिकारोंका अनादर करना एशियाके जिनको यूरूपवालोंने कभी सुनाभी नहीं होगा राज्यमें परिवर्त्तन डालती थीं इन लोगोंमें न तो स्वदेशानुप्रीति और न स्वातन्त्र्यकी इच्छा थी इसलिये यदि एक राजा लड़ाईमें माराजाताथा तो उसकी प्रजा को कुछ चिन्ता नहीं होती थी क्योंकि वे जानते थे कि, विजयवान राजा उनपर उतनाही अनर्थ करेगा जितना पराजित राजा करता था ॥

(१) राजा कभी धर्मशास्त्रको छोड़कर स्वेच्छाचारी कर्म करतेथे क्योंकि [illegible] प्रजाको ही वश कर लेतेथे

प्रकरण ४

मीडिया और फारस वालों के कैयानी वंश का इतिहास
७१० – ५३२ ई. पू.

मीडिया और फारस प्रथम असीरिया राजधानी के बड़े सूबे थे और उनकी पुरानकथा से यह मालूम होता है कि निनवे के राजा उनपर बड़ा अनर्थ करते थे जब निनवे का राज्य टूटा तो मीडिया देश में बड़ा उपद्रव हुआ परन्तु ७१० ई. पू. में डीयोसिस (कैकुबाद) नामक राजा ने इस उपद्रव को शान्त कर एक बड़ा नगर बनाया और अपनी प्रजा को नियत बस्तियां बनाने को भी प्रयत्न किया इसी समय वह बाबिलन वालों से लड़ने को गया परन्तु लड़ाई में मारा गया उसके पीछे उसका पुत्र फ्राओर्टिस राज्य करने लगा परन्तु इस राज्य की सब से अधिक वृद्धि साई अक्सीरिस[1] (वंश के तीसरे राजा) के समय में हुई उसको अपने राज्य के प्रारम्भ में ही बड़े क्लेश सहने पड़े प्रथम तो सीथिया के लोगों से जिन्होंने इस समय राज्य पर आक्रमण किया था लड़ना पड़ा और अट्ठाईस वर्ष तक वे लोग फसाद करते रहे परन्तु अन्त में साई अक्सीरिस ने उनहीं में से कुछ लोगों के साथ सन्धि करके उन्हें मरवा डाला इनमें से जो (मरने से) बचे थे वे लीडिया के राजा के पास चले गए– इस कारण दोनों राजाओं में पांच वर्ष तक युद्ध होता रहा परन्तु अन्त में जब कुछ फैसला होने वाला था तो एक सम्पूर्ण सूर्य ग्रहण हुआ कि जिसको देखकर दोनों सेना डरकर भाग गईं

१ मीरखांद और फिरदोसी ने अपने पुस्तकों में इस राजा का नाम कैकाऊस लिखा है

फिर दोनों राजाओं में सन्धि होगई इसके पीछे साइएकसिरिसने बाबिलन के राजा सहित निनवेह नगर को घेरा और उसे लेकर उसका बिल्कुल नष्ट कर दिया ६०९ – ई. पू. फिर दोनों राजाओंने मिसर के राजा फैरोहनीको को कारचेमिश नगर में पराजित किया, उससे सीरिया के प्रदेश लेलिये ऐसा मालूम होता है कि मीडिया के लोगोंने फारसवालों पर अपना प्रभुत्व इसी राजा के राज्य में स्थापन किया था किन्तु मीडिया वाले फारस वालों पर बड़ा अनर्थ करते थे (हिज़क़िएल – ३२–२४ अंजील) इसके पीछे अस्टीएजिस (जिसका नाम दानियाल ६-१ में आहासएरस अर्थात् महावीर लिखा है) राजा हुआ उसने फारस वालों को सन्तुष्ट करने के लिये एकीमिनीडी वंश और पसरगाडी राजकुल के योधा कैम्बाइसस को अपनी पुत्री विवाह दी इस सम्बन्ध से अगोरेडेटिस वा जिसको पीछे साईरस (खोरश वा खुसरव अर्थात् सूर्य) बोलने लगे और जिसके समय में फारस का राज्य बड़ी वृद्धि को पहुँचा उत्पन्न हुआ – साइरस का कौमार चरित्र जिसको हिरोडोटसने वर्णन किया है पूर्वदेशीय इतिहासकों के वर्णनों से मिलता है और वह यह है कि कैम्बाइसिस (सियावश) ने अपने पिताकी ईर्षा से डर कर फारस के एक उत्तरीय प्रदेश (तूरान) के राजा अस्टीएजिस (अफरासियाब) के पास आ शरण ली और उसकी बेटी मनडेन (फिरंगीज़) से विवाह किया परन्तु वहां के सभासदों ने कैम्बाइसिस को (इस मीडिया के) राजासे मरवा डाला किन्तु इसके मंत्री

हारपेगस (धीरा बिसार्ड) उसकी पुत्री को जो कि उस समय गर्भ वती थी बतादिया यह पिनरी मानो महज बालिक प्रसिद्ध साईरस था बहुत से दिन तक तो वह गुप्त रहा परन्तु जब उसने बड़े होकर अपने जन्मका हत्तान्त सुना तो उसने अपने देशमें जाकर वहांसे सेना ली और अस्टीयुजिस को गद्दी परसे उतार और उसको कैदकर उसका राज्य छीन लिया परन्तु आप राजा होने के स्थान उसने अपने मामू साईयकजिरिस (केकाऊस) द्वितीया को राज्य पर बैठाया - साईयकजिरिस ने (दरवेश अर्थात् मीडिया का राजा बनकर) अपने राज्यके आरम्भ मेंही साइरस को ५६० - ई. पै. में बाबिलन पर आक्रमण करने को भेजा साइरसने उस नगर को लेलिया (इसका वर्णन पहले होचुका है) साइयकजिरिस ने बाबिलन को अपनी राजधानी स्थान बनाया और दानियाल नामक भविष्य द्वावक को उसकी कीर्ति और गुण सुनकर अपना मन्त्री बना लिया (दानियाल का हत्तान्त (दानियाल ६-१ से २८ तक अंजील में देखो) यहां यह भी कहना उचित है कि यहूदी लोग दानियाल को मीडि और फारसी राजाओं की हठ भक्तिता के लिये स्वधर्म त्यागी गिनते थे इसी राजा के समय में डारिक नामक स्वर्ण मुद्रा (सिक्का) जो कि तन्त्रवर्ण के श्रेष्ठत्व के कारण बहुत अच्छी गिनी जाती थी बनीं - इसके पीछे साइरस राजा हुआ और तबसे फारस वालों का प्रभुत्व अधिक होगया - (५३५ - ई. पै.) परन्तु व

ह अपने बाप के समय में भी राज्यकर्म्म में सहकारी रहा क्यों कि वह उस सेना का जिसने लीडिया असीरिया और बाबिलोनिया देशों को जीता अधिपति था अपने राज्य के आरम्भ में उसने यहूदी लोगोंको उनके देश को जाने की और मन्दिर बनाने की आज्ञादी वह सात वर्षतक शान्तिके साथ राज्य करतारहा और मेजाई (उरोहत) वर्ग के अधिकार वृद्धि को रोकता रहा इसकी मृत्युके वृत्तान्त भिन्न २ हैं जिनोफन यह कहता है कि वह अपने बिछौने पर मरा परन्तु हिरोडोटस जिसका व्याख्यान फारसी इतिहासों से मिलता है यह कहता है कि साइरसने सिथियादेश पर आक्रमण कियाथा और वहां वह जंगल में उन लोगों के हाथ से मारा गया - फिरदोसी और मीरखांद कहते हैं कि वह जंगल में एकान्त स्थान में अन्तर्धान होगया और उसके सभासद लोग एक बडीआपद से मारे गये - यह बात तो निसन्देह है कि वह पसारगार्डी नामक स्थान में गाडागया था क्योंकि उसकी समाधि के अवशेष वहां आजतक दिखाई देते हैं और स्ट्राबो नामक इतिहासिक के समय में उस समाधि पर यह लिखा हुआ था कि हे मनुष्य मैं साइरस हूं मैंने फारसकी राज्यधानी स्थापन की है न् इस थोडीसी भूमिसे जिसमे मेरे अवशेष पडे हैं ईर्षा मत कर - इसके पीछे केम्बाईसिस लोहोरासप राजाहुआ (५२९ - ई॰ पै॰) और उसने राजा होनेही मिसर पर आक्रमण किया पिलुजियम को लेकर और फेनिस नामक एक

यूनान देशीय सेनात्यागी योधाकी सहायतासे केम्बिसस मिसर के अन्तिम राजा को पराजित कर उससे राज्य छीन लिया सब जातियों के पुरोहित वर्गसे उसको बड़ा द्वेष था इसलिये उसने मिसर के पुरोहित वर्ग को इतना क्लेश दिया कि वे लोग तो उसे बहुतही अन्यायी लिखते हैं इसके पीछे उसने इथियोपिया को लेना और ज्यूपिटर ऐमन नामक देवता के ऐमोनिअम नामे मन्दिरको जो बालुमय जंगल में स्थित था लेना चाहा — फारस वालों को जो इथियोपिया मे क्लेश मिला उसका पहले वर्णन होचुका है परन्तु ऐमोनिअम पर आक्रमण करने से उनको और भी अधिक क्लेश हुआ उस मन्दिर को कोई सड़क नहीं थी और जो मार्ग था उसमे कोई पहाड़ वा हल नहीं था इसलिये फारस वालों को मिसरी पथ दर्शकों के आश्रय मे चलना पड़ा परन्तु इन लोगोने बदला लेनेके लिये उनको एक भारी बालुमय जंगल मे छोड़ दिया और आप भाग गये जो क्लेश वहां फारस वालोंने मार्गमे सहे उनको हारिन ओडुली कवीने खूब वर्णन किया है फिर केम्बाईसिस ने अफ्रिका के पश्चिम भाग पर आक्रमण करना चाहा परन्तु फिनिशिया के नाविकोने अपने सम्बन्धियों पर हमला करना अङ्गीकार नहीं किया (क्योंकि सेना जहाजों मे जाती थी) अपने वंशमे राज्यको दृढ़ करने के लिये उसने अपने भाई स्मरदिस को मार डाला परन्तु यह सुनकर कि एक ने पुरोहित वर्ग मे से स्मरदिस का नाम धारण कर राज्य छीन लिया अ(१)सके

(१) कहते हैं कि इसने अपनी भगिनी को जो इसके डेरे के साथ थी विवाहा था और उसी के नाम से (मीरोई) इथियोपिया मे एक जील का नाम मीरोई रखा

होता किन्तु वहां आकर वह अपने ही खड्ग से एक ज़खम[१] खाकर मर गया और यतः उसके कोई पुत्र नहीं था इसलिये कैखामीषन वंश का इसीके साथ अन्त था (५२२ - ई॰ पू॰)

प्रकरण ५

हिस्टास्पिट वंशके समय फारस वालोंका इतिहास

स्मारडस का असली वृत्तान्त यूनानी इतिहासकों ने अच्छे ठीक २ नहीं लिखा मालूम होता यह तो निःसन्देह है कि मेजाई वा पुरोहित वर्गके लोगोंने इसको साईरस का पुत्र स्मारडिस ठहराकर राजगद्दी पर बैठाया क्योंकि वे चाहते थे कि उनका और मीडिया वालो का प्रभुत्व फिर स्थापन होजावे - फारस वाले सभासदों को जब यह मालूम हुआ कि स्मारडिस साईरस के बेटे को कम्बाईसिस ने मरवा दिया था तो उन्होंने इस स्मारडिस के छल को जो अब राजा बन बैठा था प्रकट करना चाहा जब एक रानी के द्वारा यह जाना गया कि अब अधिकारी राजेके कान है नहीं (एक स्मारडिस नामे मेजाई के किसी अपराध के कारण कान काटे गये थे) तो उन्होंने उसको मार डाला - तब उन सभासदोंने मिलकर यह सोचा कि उनमेंसे एक राजा होना चाहिये और इस बातके निश्चय करने के लिये उन सबोंने सूर्य्य उदय के समय अपने २ घोड़ों पर चढ़कर सूर्य्यके सन्मुख घोड़े दुड़ाये - यह प्रतिज्ञा ठहरी हुई थी कि जिसका घोड़ा पहले हिनहिनावे वह राजा बने

(१) इसी प्रकार हीरोडोटस लिखता है कि मिसर में आकर (कैम्बिसिज़ ने) एपिस नामी मिसर के पवित्र बैल को ज़खमी किया था तो मिसर वाले कहते थे कि वह उस के पाप से ज़खम खाकर मरा।

ने दायस (दारा) हिसटासपिस अर्थात् हिसटासपिस के बेटे (यूनानी लोग गुश्तासिप बोलते हैं) का घोड़ा उसके साईस (अश्वपालक) के उपाय[1] से सबसे पहले हिनका इस लिये दायस हिसटासपिस फारस का राजा हूआ - यह राजा भी अकीमीनिड नामे फारसी राज्यवंशमे से था - और इसीने फिर दौरेश नामकी पदवी ली- इसने मैजाई लोगोंको बहुत क्लेश दिया और ज़ोरो अस्तर के मत को जो उसका समकालीन मालूम होता है बहुत फैलाया- तबीसे यह मत फारस मे दृढता से स्थापन हूआ उसने अपने राज्य अधिकार को निस्सन्देह करने के लिये साईरस की दो बेटियों से विवाह किया बाबिलन वालोंने इस समय (कदाचित मीडिया वालों की सहायता से) बहुतसे फारसी लोगोंको मारडाला था राजाने गद्दी पर बैठतेही बाबिलन पर चढाव किया और बीस मास पर्य्यन्त उस नगर को घेर रक्खा- अन्तमे एक फारसी सरदार की हिकमत से वह नगर लेलिया- इसके पीछे राजाने पश्चिमी एशिया के प्रदेशों को लेना और यूनानियों के बलवे को दूर करना चाहा पहले तो जातेही थ्रेस प्रदेश को लेलिया और फिर (कदाचित साईरस के बदला लेने को) सिथिया वालों पर आक्रमण किया डैन्यूब नदी पर नावकों का पुल डालकर उनके देशमे जा घुसा- अब ऐसे स्थान मे आगयाकि घास भी घोड़ों के लिये नहीं मिलता था अन्तको बहुतसे क्लेश उठाकर पीछे हटा और एक आपद से बचकर

[1] [illegible]

(२) राजपदवी का नाम है

फारस मे पहुंचा आपद यह थी कि थ्रेसके चर्सोनिसस (प्रायद्वीप) के अधिपति मिल्टीएडिसने एशियामाइनर के यूनानियों को कहा कि "डैन्यूब नदी परका पुल तोड़ दो ताकि फारसका राजा जंगल मे ही रुक कर मारा जावे और तुम अपनी स्वतन्त्रता एशियामाइनर मे स्थापन कर लेवो" इस युक्ति को मिलीटस के अधिपति हिस्टीयस ने रोका परन्तु फारस वालों से उसको उलटा फल मिला - हिसटीयस का भतीजा अरिस्टेगोरस ने अपने चचाकी ऐसी खातिर देखकर बड़ा क्रुद्ध किया और यूनान में जाकर वहांके लोगों से (फारस वालों से लड़ने के लिये) सहायता चाही पिलोपोनिसस के लोगों ने तो उसकी न सुनी परन्तु एथिन्स[1] और इरिट्रिया के लोगों ने उसके साथ सेना देदी इस सेना की सहायता से उसने सार्डिस नगर को जला दिया (५०० - ई. पू.) परन्तु इसके पीछे पराजित हुआ और उपद्रव शान्त होगया इसपर डारायस ने मारडोनियस नामक अपने जमाई को सेना देकर यूनान मे भेजा ताकि उनसे पिछले उपद्रव का बदला लिया जावे मारडोनियस हिलस्पोण्ट[2] के पार उतर थ्रेस में होता हुआ मसिडोनिया (जो फारस वालों के अधीन था) में पहुंचा उसका जहाज़ समूह एथस पर्वत के समीप एक तूफान से नष्ट होगया और थ्रेसके जंगली लोगोंने उस पर आक्रमण कर उसे ज़खमी किया फिर डारायस ने डेटिस और आरटेफिरनिस नामक दो सरदारों को सेना देकर यूनान मे भेजा उन्होंने इरिट्रिया को लेलिया और

(१) एथन्स वालोंने अपने राजा हिपियसको निकाल दिया था और वह भागके फारसमें चला गया था। (२) इसका वर्तमान नाम डार्डेनल्ज़ है।

एथिन्स को वेलैपाके मेलटाइडिस नामक यूनानी सेनापति ने उनको मारायन की लड़ाई में पराजित किया (४९० ई॰ पू॰) तब दारायस ने आप यूनान पर आक्रमण करना चाहा परन्तु मिसर देश के उपद्रव और उसके पुत्रों के परस्पर विरोध के हटने के लिये राजा उधर न जासका जब गद्दी सम्बन्धी झगड़े दूर हुये तो राजा बीमार होकर मर गया (१) यह राजा बड़ा वीर्य्यवान और बुद्धिवान था और इसका राज्य हिन्दुस्थान की सीमा से परे तक फैल गया था जरकसिस दारायस का पुत्र ४८५ ई॰ पू॰ में राजगद्दी पर बैठा और बैठतेही उसने मिसर का उपद्रव शान्त किया फिर इसने यूनान देशपर आक्रमण करने के लिये इतनी सेना इकट्ठी की कि तबतक किसीने नहीं की थी इसने अपने सेनाके समुद्रपर उतारने के लिये हैलस्पौंट पर एक पुल बान्धा   कहते हैं कि जहाज़ों के लंघने के लिये एथस पर्वत के उमरुमध्यमें से नहर खोदी गई थी जब फारस वाले थरमापिलि के दर्रे पर पहुंचे तो लियोनिडस स्पार्टा के राजा ने थोड़ीसी सेना (३०० आदमी) सहित उनको वहां रोका और यद्यपि एक यूनानी विश्वासघातक की सहायता से फारस के राजाने इन स्पार्टनावालों को घेर लिया फिरभी वे न भागे किन्तु बड़ी बहादरी से लड़कर वहींही मरे इसके पीछे जरकसिस यूनान में गया और उसने जो वहां युद्ध किए उनका वर्णन आगे यूनान के इतिहास में किया जावेगा यहां केवल यही कहना उचित है कि वह यूनान में बहुतसी आपद और

(१) अपने राज्यके १८ में वर्ष इसने हिन्दुस्तान पर आक्रमण किया था

दुःख सहकर और मार्डोनियस को सेनापति बना कर आप बड़े
अपयश के साथ फारस को चला आया मार्डोनियस प्लेटिके
युद्ध में सम्पूर्ण पराजित हुआ तब यूनान वालों ने मैडीनियन
(मध्य) समुद्र से फारस वालों को निकाल दिया स्वदेशीय लो-
ग जरकिसिस को इस्फन्दियार के नाम से जानते हैं और उसे
बड़ा वीर्यवान और उद्योगी बताते हैं इससे यह मालूम हो-
ता है कि यातो वे लोग उसके कौमार चरित्रों कोही जानते हैं
या यह कि जितने युद्ध उसने पश्चिम में किए वे इतिहास के
योग्य नहीं गिनते अंजील मे (आसतर की पुस्तक) जरकिसिस
का नाम अहस्यूरस लिखा है यह राजा अल्प बुद्धि और ना-
म मिजाज का था क्योंकि उसने एक समय अपने मंत्री हमन के
सन्तुष्ट करने के लिये सारे यहूदियों को मरवाने की आज्ञा दी
परन्तु यह मालूम होता है कि आसतर (यहूदिनी) रानीने
इस आज्ञाको राजासे कहकर फिरवा दिया जरकिसिस के एक
सेनापति आरटैबेनस ने उसको (४६५ - ई.पू.) मे और
उसके बड़े बेटे को मार डाला और उसके तीसरे पुत्र आरटेजर-
किसिस को राज्य गद्दी पर बैठाया - परन्तु आरटेजरकिसि-
सने अपने पिता और भाई के बदले मे आरटेबेनस को उस-
के अपराध सहायको समेत मार डाला आरटेजरकिसि-
स को जिसका दूसरा नाम मैक्रोंकीर अर्थात् लम्बी भुजावा-
ला है देशीय इतिहासकों ने उर्दशीर[1] बाहमान लिखा है यह
राजा बड़ा न्यायकारी और सुशील था इसने यहूदा और निह-

(१) [illegible] फारसी भाषामें अर्धाशिर [illegible]

नियाह् नामक यहूदियों के अधिपतियों को ज़हसिलम का मंदि-
र बनाने की आज्ञा दी फारस की राजधानी दिनो दिन निर्बल
होती जाती थी और उनमें   यूनान वालोंसे बहुत बार परा-
जित होकर आर्टेजरक्सिस ने उनसे इस नियम पर सन्धि
कर ली (१) एशिया निवासी यूनानी स्वतन्त्र रहें (२) फारस
वालों के जहाज़ इजियन समुद्र में बिल्कुल न जावें और (३)
फारसी सेना उस समुद्र तट से तीन दिन के मार्ग से आगे न
बढ़े इस राज्य में अब उपद्रव बहुत होने लगे मिसर के लोगों
ने अमीरट्रियस नामक महाधिपति से और लिबिया के राजा
इनारस की सहायता से अपने को स्वतन्त्र करने के लिये उपद्र-
व मचाया (४६३- ई॰पै॰) परन्तु सिरिया के सूबे मेगेबेजस
से बिबलस नगर मे पराजित हुये इस लड़ाई में राजा का भाई
मारा गया था इनारस ने तो मेगेबेजस के साथ सन्धि कर
ली परन्तु अमीरटियस भाग गया और युद्ध करता रहा राजा
की माता ने अपने पुत्र के मरने से क्रुद्ध होकर आर्टेजरक्सि-
सिस से जो कैदी बिबलस मे पकड़े गये थे उने लेलिया और उ
बुरी तरह मरवा डाला इसपर मेगेबेज़स राजा से बिगड़ गया
और बहुत से दिन तक लड़ता रहा (४४७ - ई॰पै॰) परन्तु
राजा ने छलसे (सुलह करके) उसे कैदमे डाल दिया जहां कि
वह मरण पर्यन्त रहा आर्टेजरक्सिस के मरने पर (४२४
ई॰पै॰) उसका पुत्र जरक्सिस राज्य पर बैठा परन्तु पैंताली-
स दिन के राज्य के पीछे उसे उसके उपपत्नी जात भाई सोगडिय-

नस ने मार डाला और सोगडियनस को ओकस नामक एक और राजपुत्र ने गद्दी से उतार कर राज्य छीन लिया - ओकस ने अपना नाम द्वितीय डरायस[१] रक्खा और इसके समय में सूबियों के बल बढ़ने और अन्याय के कारण राज्य बिगड़ने लगा इसी समय में अमीरियस ने फिर उपद्रव उठाकर मिसर में अपना राज्य स्थापन किया एक अच्छी बात थी कि यूनानी लोग पिलोपोनिसस युद्ध में लगे हुये थे और फारस की निर्बलता पर उनका ध्यान नहीं था किन्तु इसके स्थान में फारस वालों का यूनान में मान अधिक होगया था क्योंकि डरायस के पुत्र साइरस ने स्पारटा वालों को सहायता देकर एथेन्स वालों को पराजित करवाया उसके पीछे उसका पुत्र आर्टेजरक्सिस जो कि अपनी स्मृति की अशक्ति के कारण आर्टेजरक्सिस[२] (म)नि मोन कहलाता था (अर्थात् आर्टेजरक्सिस द्वितीय) राज्य पर बैठा परन्तु इसका भाई साइरस अपनी माता परिसेटिस की सहायता से इसके विरुद्ध होगया और यूनान से कुछ सहायक सेना लेकर उससे लड़ने को आया - परन्तु कूनाक्सा की लड़ाई (४०१ ई. पै.) में मारागया यूनानी सेना जेनोफन सेनापति (इतिहासिक) के आश्रय अपने देश तक पहुंची स्पार्टा के राजा अजेसिलास ने पश्चिम एशिया में बड़नसी विजय पाई थी और कदाचित वह फारस की राजधानी को भी तोड़ फोड़ देता यदि स्पार्टा के लोग उसे इतना न बुला लेते फिर आर्टेजरक्सिस ने मिसर को अपने वश करना चा-

(१) वानोषस अर्थात्
(२) यत्सूराकैत वहना है कि इस राजा ने अपनी पुत्री विवाही थी

हा परन्तु उसका उद्यम सुफल न हुआ. साईप्रसद्वीप स्वतन्त्र हो
गया और पश्चिमी प्रदेशोंमें बलवा मचा और राजा के पुत्रोंमें
परस्पर विरोध होगया दारा जो राजाका बड़ा बेटा था राजाने
उसे मार दिया (क्योंकि वह राज छीनना चाहता था) औकस
जो सबसे छोटा था उसने अपने भाईको[1] मारडाला इन आप-
दों से राजा शोकाकुल होकर मरगया ओकसने राज्यपर बैठक-
र (३५९ ई॰ पे॰) अपना नाम आर्टेजरक्सिस तृतीय रखा
और अपने राज्यको दृढ़ करने के लिये राज्यवंश में से सभी
मनुष्यों को मारडाला पशिया माइनर का सूबा आर्टेबेजस[2]
राजाका यह अन्याय देख कर बलवा करने लगा और थीबेस
और एथिन्स के लोगोंकी सहायतासे राज्यको छीनना चाहा
परन्तु राजाने उसे पराजित किया, और साईपरस और फिनिशिया वा-
लों पर विजय पाकर जेरूस नगरका नष्ट किया- परन्तु इसके
अन्याय कारण सारी प्रजा उससे दुःखी थी और अन्तमें उसके
खोजे (कुब्जासराय) बागोअसने उसे विष देकर उसके सब
से छोटे पुत्र आरकिसको राजा बनाया- परन्तु थोड़ेसे दिनों
के पीछे उस खोजेने उसे भी मारडाला और दारायस कोडोमे-
नस को जो डारायस नोथसके वंशमें से था राज्यपर बैठाया
परन्तु दारायसने बागोअस का प्रभुत्व न बढ़ने दिया और
अन्तमें जब उस विश्वासघातिक खोजेने राजाको विष देना
चाहा तो राजाने वही विष उसको खिलाया. परन्तु फारस के
राजाका अन्त तो आनही पहुंचा था क्योंकि अब मकि-

(१) अथीमस राजाका दूसरा बेटा

(२) [illegible] किनारे की नदी

न्होंने फारस पर आक्रमण कियाथा इसस और आर्बेला की ल- ड़ाईयों के पीछे दारायस भागता हुआ मार्गमें मारा गया औ- र एशिया का राज्य यूनानियों के हाथ आगया फारसी लो- गों की व्यापार उतनाही रहा जितना फिनिशिया और बाबि- लन के हाथ में था क्योंकि फारस वालोंने इसमें कुछ वृद्धि नहीं की थी अतएव इसका दुबारा वर्णन करना अति उ- पयोगी नही

८ अध्याय

अध्याय ८

अफ्रीका के उत्तर में फिनिशिया देशीय बस्तियों का वर्णन

कार्थेज

प्रकाश १

भूगोल

प्राचीनक समय मे अफ्रीका के चारों ओर जहाजी यात्रा की गयी थी किन्तु समुद्र यात्रा के दिक्कत से फिर किसीने इसके दक्षिण भाग समुद्र मे जानेका साहस न किया तोभी इसके अन्तर्गत प्रदेशोंका आजतक ठीक२ हाल मालूम नहीं इसके उत्तरीय भागमे यूनानी और फिनिशिया देशों की बस्तियें थीं जो प्राचीन समय मे यूरप के दक्षिणीय और आफ्रीका के मध्य देश निवासियों से व्यापार करने से बड़ी वृद्धि को प्राप्त हुई थीं इस (उत्तरीय आफ्रीका) के तीन भाग थे प्रथम भाग समुद्र तटस्थ देश जिसको अब बारबरी कहते हैं दूसरा पहाड़ी देश जहां ऐटलस नामक पर्वत श्रेणी है और जिसको उस समय मे [illegible] शेरोंकी भूमि कहते थे और अब खजूरों की भूमि [illegible] तीसरा बालूमय जंगल जिसको अबके वाले सहारा कहते हैं ऐटलस पर्वत से बहुतसी छोटी२ नदियां निकल कर [illegible]

(१) रोमी लोग इसको न्यूमिडिया बोलते थे

नियन समुद्र में गिरती हैं परन्तु इस पर्वत के दक्षिण और आ-फ्रीका के मध्य में कोई बड़ी नदी नहीं गईजर नदी का निकास जो उत्तरीय प्रदेशों से बहता हुआ है उस समय में मालूम नहीं था यह थोड़े काल से मालूम हुआ है मिसर की दिशा से चल कर आफ्रीका उत्तर भाग के ये प्रतिभाग थे-प्रथम मारमेरीका जहां जंगली पशु चराने वाले भ्रमणीक लोग रहते थे और यह एक बालूमय प्रदेश था दूसरा सिरिनाई का यह सिरटिस तक विस्तृत था और इसमें यूनानी बस्तियें थीं इसके प्रसिद्ध नगर सिरिनि और बारका थे तीसरा रिजियो सारिका नामक देश (जो कि अब ट्रिपोली कहलाता है) यह भी बालूमय था चौथा कार्थेज का निज राज्य प्रदेश जिसको अब ट्यूनिस कहते हैं पांचवा एक बड़ा उर्वरा प्रदेश जिसके उत्तर भाग को बाईजेसिना और दक्षिण को ज़्यूगीटाना कहते थे छठा न्यूमिडिया और मारीटेनिया जिसमें कार्थेज की प्रभुता के समय मे पशु चराने वाले भ्रमणीक लोग बसते थे कार्थेज नगर एक प्रायद्वीप पर (जो एक बड़ी खलीज के बीच में था) स्थित था इस खलीज (का नाम अब ट्यूनिस की खाड़ी है) के एक ओर पूर्वी दिशा में हरमियन अग्निनासिका (अब अन्तरीप बान) और दूसरी ओर पश्चिम की दिशा में अपालो अग्निनासिका (अब अन्तरीप ज़ेबिब) थे यह प्रायद्वीप यूटीका और ट्यूनिस नगरों के बीच में ही था (क्योंकि वे दोनों नगर कार्थेज से दिखाई देते थे) और अग्नी (आफ्रीका)

के साथ एक डमरू मध्य से जोकि तीन मील लम्बा था मिला हु-
या था समुद्र की दिशा में वहां से एक भूमीभाग जाताथा जोकि
नावों की रक्षा और जल के रोकने के लिये बड़ा उपकारक था
कारथेज के किले बंदी करने के लिये समुद्र की ओर तो केवल
एकही दीवार थी परन्तु डमरू मध्य की तरफ एक विरसा ना-
मक दुर्ग और तेहरी दीवार जोकि असी फुट लम्बी और तीस
फुट चौड़ी थी बनीहुयीथी कारथेज का राज्य पश्चिम में तो हरकू-
लिज़ के खम्भों तक और पूर्व में फिलनि की समाधियों तक वि-
स्तृत था ये समाधियें दो भाइयों के स्वादेश प्रीति सम्बन्धी
साहस के स्मरण करने के लिये बनाई गई थी - सिरिनि
और कारथेज के राज्यों की सीमा बालूमय जंगल में पड़ने से नि-
यत नहीं होसकती थी और इसकारण बहुतसी बार युद्ध होते
थे अतएव अन्त में यह ठहरी कि एकही दिन दोनों नगरों से दो
दो दूत चलें और जहां पर वे मिलें वही दोनों राज्यों की सीमा
होगी कारथेज के लोगों ने फिलनी नामक दो भाइयों को अ-
पने दूत बनाया और वे दोनों इतने चलदी चले कि वे सिरि-
नि के दूतों को विवादी भूमि के पौने भाग पर जा मिले इस पर
सिरिनि के दूत बड़े क्रुध हुए और उन्होंने यह कहा कि "यदि तुम
को यही सीमा मनजूर है तो तुम यहां जीते गाड़ेजावो नहीं
तो हम और कोई सीमा नियत करेंगे और वहां गाड़े जावेंगे"
इस पर दोनों भाइयों ने अपने आपको वहां गड़ाया और उनकी
समाधि बहुत से दिनतक कारथेज के राज्य की सीमा को संकेत-

स्तानी रही दक्षिण दिशामें कारथेज राज्य ट्रिटन झीलतक था कारथेज का बड़ा भारी उर्वरा प्रदेश (दो सौ मील लम्बा और सौ मील चौड़ा था यह) बोन नामक अन्तरीप से ट्रिटनि झील तक सीधा चला गया था इसके उत्तर भाग को ज़्यूगीता ना कहते थे और इसमें कारथेज के सिवा यहां हिप्पोज़ारीटस यूटिका, ब्रू निस और क्लाईप प्रसिद्ध नगर स्थित थे मध्य भागमें फिनिशिया जाती की सन्तान बसती थी जिसकी बड़ी प्रसिद्ध बस्तियें ये थीं वाका, बुला, सिका, ज़ामा और दक्षिण भागको बाईज़ेसियम कहते थे अड्रीमेटम, लपटिस माईनर और टकेप बड़े प्रसिद्ध बंदर थे कारथेज के अन्य देशीय आश्रय प्रदेश ये थे बेलीयारिक द्वीप कारसिका द्वीप सारडीनिया द्वीप सिसलि द्वीप और स्पेनका दक्षिणीय भाग कई एक बस्तियें अफ्रीका के पश्चिमी कनारे पर और मेडरा और किनारी (वा फारचूनेट द्वीप) नामक द्वीप (अटलेन्टिक समुद्र में) आदि

प्रकरण २

राज्यसम्बन्धी और सांसर्गिक अवस्था का वर्णन।

कारथेज में राज्यप्रबन्ध देवगति से परिवर्तन होता रहा पहले पहल यह एक राजाधीन था परन्तु पीछे प्रजा राज्य[1] स्थापन हुआ जो प्रधान जन राज्य की रीति पर था यद्यपि लोक राज्य की रीति बिल्कुल हटनहीं थी अर्थात् इसमें

(१) प्रजा राज्य प्रधानजन राज्य और लोग राज्य थे सब राज्य प्रबन्ध का प्रकार है

प्रधान जनका अधिकार बहुत था और लोगोंका अधिकार
थोड़ा था दो शासिता वा मुख्य मजिस्ट्रेट (जिनको सूफीटी
बोलते थे) होतेथे और (राज्यसभा) सिनेट उनको चुन कर
लोगोंकी सभामें मंजूरी के लिये लातीथी सिनेट की दो कमे
टियें थीं एक सिनेक्टोरियम (सभा) वा सिनकलीटस और
दूसरी जिहूसिया (जिसमे सिनेक्टोरियम के प्रधान एकसौ
सभा सद होतेथे) कहलातीथी लोगोंको सभामें राज्य व्यव
हारों का निर्णय नही होताथा परन्तु जब सूफीटी और सिने
ट में किसी बात का भेद होता था तो उसका लोगोंकी सभामे
फैसला होताथा जो प्रमाण गिनाजाता था परन्तु कारथेज
के राज्य व्यवहार में एक बड़ी अच्छी बात यह थी कि यहां जंगी
और मुल्की (अर्थात् देश प्रबन्ध सम्बन्धि और युद्ध सम्बन्धि)
अधिकार परस्पर भिन्न २ होतेथे जिहूसिया कमेटी सेनापति
यों को नियत करती थी और उनके साथ सिनेट की एक छोटी
कमेटी रहती थी जब वे सेनापति किसीयुद्ध से लौट कर आते
थे तो उनसे हिसाब लियाजाताथा इसदेशमें जिहूसिया रा-
ज्यकर्मी अपराधियों को) दण्ड देतीथी परन्तु प्रजाके व्यव-
हारोंके निर्णय के लिये एक सभा थी इसमें एक सौ चालीस
सभासद होतेथे और यह अपील सुनतीथी राजा वा प्रजाधि
कारी सेनापति नही होता था और जब कभी होताथा तो उस
का सेनापत्यत्व युद्धके अन्तमें जातारहता था अन्य देशीय
युद्धोंमे भी राजा जाया करतेथे परन्तु उनका भी सेनापत्यत्व

युद्धके समय तक रहता था वा यदि कारथेज से उसको फि-
र कुछ काल के वास्ते अधिकार मिलता था तो वह सेना-
पति बना रहता था कारथेज के लोगोंका धर्माचार (उन-
के बाप दादा) फिनिशिया के लोगों के धर्म्म के सदृश था
मिल्कार्ट वा शहर का हरक्यूलिज़ मोलोक वा बेल (जि-
सको लतीन जातिके लोग अपने सैटर्नस शनिसे मिलाते
थे) और ऐसमन वा तैनिस मुख्य देवता थे परन्तु येह लो-
ग और इतर देशोंके देवताओं को भी रखते थे (क्योंकि उ-
नको की आकाश वाणी औसिरीज़ नामक मिसलीके दे-
वता को मानते थे) यह स्पष्ट नहीं कि यहां प्रोहित लोगों
की एक जुदी जाति थी परन्तु यहांके शासिता लोग ही
जजकों का कर्म करते थे और देवताओं के मन्दिर केवल
उपासना के लिये ही काम में नहीं आते थे किन्तु राज सम-
न्धी दफतर रखने के भी उपयोगी थे कारथेज में एक विशे-
ष प्रकार का सिक्का (रुपया) चलता था धातुके टुकड़े च-
मड़ेमें सीये जाते थे और उनपर सरकारी मोहर लगाई जाती
थी जिससे उनकी कीमत जानी जाती थी परन्तु ऐसा मा-
लूम होता है कि यह सिक्का कारथेज मेंही चलता था यहां
का राज कर वा मामला आमदनी आश्रित नगरोंके कर
व्यापारी लोगोंकी वस्तुओं परके महसूल और स्पेन देशके सु-
वर्णाकरों से इकट्ठा होता था यहांके लोग समुद्र यात्रामें ब-
ड़े निपुण थे और बहुत कालतक मध्य समुद्रके पश्चिमी भा-

ना पर अपनी प्रभुता रखी रोमके लोगोंने इसही के एक टूटे हुए नाव के सदृश जो कनारे पर आलगी थी अपनी नाव बनाई समुद्र यात्रा समुद्रीय देवताकी रक्षा मे होती थी इन देवताओं की मूर्तियां नावों के अग्रभाग पर लगी हुई होती थी और नावों का नाम भी इनहीसे जाना जाता था तुच्छ योग्य नावों पर मूर्तियां पीछे होतीथीं नावों में प्रायः बन्धों की तीन पंक्तियें लगती थीं परन्तु कभी २ पांच और एकसा १ सात भी लगी थीं बन्धोंको दासी जन चलातेथे और यतः इन लोगों को अपने कर्म में अभ्यास करना पड़ता था इस लिये वे सदा नियत रहतेथे नावाधिपति सेनापति नहीं होतेथे और इनके अधीन भी नही होतेथे कारथेज में सेना बहुत थी परन्तु इसमें वेतनार्थी और दास होतेथे क्योंकि यहांके लोग तो सदा व्यापारमें प्रवृत्त रहतेथे और युद्धमें जाना नही चाहते थे यूनानः, गाल (फ्रांस) स्पेन (हिसपानिया) और इटली (इतालिया) देशीय लोग भी वेतनार्थीयों की नाई सेनामे भर्ती होतेथे परन्तु एक मुख्य सेनागण लीबिया के लोगो का था जोकि उनकी सारी सेना का शिरोमणी गिना जाताथा परन्तु सेना और राज्याधिकारियों में कुछ सम्बन्ध वा प्रीति नही थी जब कभी वे लोग बहुत सा मासिक पातेथे तबतकही (वे लोग) रहते थे नहीं तो जो कोई उन्हें बहुत सा धन देता था उसके पास चले जाते थे॥

प्रकरण २

कारथेज नगर के बनने से सिरेक्यूज़ (द्वीप) वालों के साथ युद्ध के प्रारम्भ तक ८५० ई॰ पे॰ से ४८६ ई॰ पे॰ तक, ड़ाईडो[1] अपने भाई पिगमेलियन की निर्दयता से भाग कर मेडिटरेनियन समुद्र के बहुत से द्वीपों में फिरती हुई अन्त में कारथेज नाया द्वीप पर आ बसी वह स्थान जिस पर कारथेज नगर स्थित था डाईडो ने एक बैल से[2] मोल लिया था परन्तु यह बात विश्वास योग्य नहीं पहले तो कारथेज वाले अपने पास के राजाओं को कर दिया करते थे परन्तु जब धन और बल में बढ़ गये तो उन्होंने उन से कर लेने और समीप स्थित देशीय जातियों को अपने वश कर राज्य को फैलाने लगे यूटिका और लेप्टिस वालों ने जो कि फिनिशिया लोगों की बस्तियें थीं कारथेज से मिलकर उसको अपना अधिपति बनाया परन्तु सिरिनि प्रदेश के लोग कारथेज से द्वेष रखते थे इन दोनो राज्यों के बीच एक प्रदेश था जिसमें लोटोफेगी और नासामोनी जातें रहती थीं और यह वही प्रदेश था जिसकी बाबत उन दोनों राज्यों में युद्ध होते रहते थे अन्त में फिलीनीई भाईयों के साहस से (जिसका वर्णन पहले किया है) कारथेज वालों को अधिक भाग मिला कारथेज वालों का प्रताप मेगो नामक एक वंश की सहायता से अधिक होता जाता था तो फारस वाले अपने राज्य को एशिया में नर में बढ़ा रहे थे परन्तु इसी समय कारथेज वालों का एक शत्रु म

(१) ४ अध्याय का २ प्रकरण देखो

(२) कहते हैं कि डाईडो ने अफ्रीका वालों से एक चमड़ा भर भूमि मांगी थी परन्तु उस चमड़े को काट कर उसमें कई पट्टियां करली

ध्य समुद्र के पश्चिम भागमें उत्पन्न होगया जिसके साथ उन
का समुद्रीय युद्ध (जो इतिहास मे प्रथम गिना जाता है) होप
डा इसयुद्ध का यह कारण था जबकि साइरस ने क्रीसस के
राज्यको नष्ट किया तो उसने अपने सेनापति हारपेगस को यू
नानी बस्तियों के जो एशिया माईनर मेथी लेलेने की आज्ञा
दी हारपेगस ने सबसे पहले फोसिया नगर पर जिसके लोग
समुद्र यात्रा में बड़े प्रसिद्ध थे चढ़ाई की उस नगर के लोगोंने
अपने तई लड़ने के सामर्थ्य नदेखकर फारस वालोंसे थोड़
सा अवकाश मांगा ताकि वे हलाह की शर्तों को विचारलें
परन्तु उन्होंने उस अवकाश में अपना सारा धन और स्त्री पुत्रों
को नावोंमें चढ़ाकर नगरको छोड़दिया वहांसे चल कर वे
चिओस नामक द्वीप में आए परन्तु वहांके लोगोंने उन्हें बसने
न दिया फिरजब वे उलटे फिरे (१) तो अपने नगर में आकर उन्हों
ने फारसी सेनाको मारा और समुद्र में एक जलता हुआ गोला
डालकर यह प्रतिज्ञा की कि "जबतक यह गोला समुद्रसे न
निकलेगा तबतक हम इस नगरमें फिर नहीं आवेंगे" फिर
वहांसे चलकर कारसिका द्वीप में आए परन्तु कारथेजवालों (२) जिन
के अधीन उस द्वीपका कुछ भागथा और इटरुस्कन लोगोंने
उनके निकालने की सन्धिकी और उनसे लड़नेको युद्धयोग्य
नावकां लाए परन्तु फोसिया के लोगोंने उन्हें समुद्रीय यु
द्ध में पराजित किया और उस द्वीपको त्याग गाल देश (३) में जाके
र मारसिलस नगर बसाया कै मसाईलिसने मिस्र र को जीत

(१) समुद्रीय तूफानके कारण उनकी नावें उलटी चलीगई
(२) वर्तमान ट्यूनिसी प्रदेशके लोग
(३) वर्तमान फ्रान्स का प्रान्त

कर कारथेज को लेना चाहा परन्तु फिनिशिया देशके वासियों
ने (जैसा आगे वर्णन होचुका है) अपने भाईयों से लड़ना
अङ्गीकार न किया-५०९ ई. पू. में अर्थात् उसी वर्षमें जि-
ससे टारक्वीन नामक राजवंश रोम से निकाला गया था
रोम और कारथेज में ऐसे नियमों पर सन्धि हुई जिनसे
यह मालूम होता है कि अफ्रीका का उत्तर भाग सार्डी-
निया द्वीप बेलियारिक द्वीप समूह---सिसलीद्वीप और
स्पेन का बहुतसा भाग इत्यादि कारथेज वालोंके अधी-
न मे थे कार्सिका द्वीपवाले समुद्रीय युद्ध में पराजित
होनेसे कारथेज के लोगोंको यूनानियों(१) के पौरुष और शू-
रता का बहुत भय होगया जो सार्डीनिया और सिसलीकी
बस्तियों की धन वृद्धिसे और भी बढ़ गया इसकारण जब
ज़ार्कसिस ने यूनान पर आक्रमण किया तो कारथेज के
लोगोंने उस राजासे मिलकर यूनानी बस्तियों पर जो यूरो-
क द्वीपोमें थी चढ़ाई की एक सैन्य दल भेजा जिसमें दो ह-
ज़ार नौ युद्ध पोत और तीन हज़ार भार योग्य नावका थीं
और तीन लाख सेना जो हमिलकर (जो मेगो वंशमें से था) से-
नानीके अधीन भेजा इस सेनामें बहुत तो हलके शस्त्र धारी
थे क्योंकि एंजालें (अर्थात् इटली और स्पेनके) भारी शस्त्रधारी
के रखने में बड़ा व्यय होता था - अतएव कारथेज की सेना
का बलवान भाग तो हलके शस्त्रधारी सवारोंका होताथा जो
इसके समीप प्रदेशोंके भ्रमणिक लोगोंमे से भर्ती किये जाते

(१) जौनि, आयोनिया वाले यूनानी थे और आयोनिया एक पाइओनिया के प्रदेश की बस्ती थी

थे ये सवार आज दिन तक जन्मसे सवार होते हैं छोटे घोड़ों
पर चढ़ कर लड़ते हैं काठी तो कभी रखतेही नहीं और लगाम
की जगह रस्सी वा चर्म्मके टुकड़े से काम लेते हैं शेरकी खाल के
वस्त्र पहनते थे और हाथीके चमड़े की ढाल बनाते थे परन्तु
कवैद सीखे हुये होतेही नहीथे अतएव जब कभी एक बार भी
पराजित होते थे तो फिर लड़नेके लिये इकट्ठे नहीं होसकतेथे
पलरमोसे (एकसिसलीमे नगर है) पहुंचकर हमिलकार ने
हमीरा नगर को जा घेरा वहां के सूबे थेरनने बड़ाई से जोश
को उठाकर उस नगर को कई एक दिनतक बचाया परन्तु अ-
न्तमें (अपने तईं कारथेज की सेनाको रोकने के असमर्थ दे-
खकर) सिरेकूज़ के राजासे सहायता मांगी सिरेकूज़ का राजा
जीलन कारथेज वालोंका पहुंचना सुनकर सेनाले युद्ध क-
रने को आरहा था मार्गमें उसे एक दूत मिला जोकि सिलानटा-
इन (जो यूनानी बस्तियोंमे से थे और जीलनके विरुध कारथे-
ज वालोंकी सहायता करनी चाहते थे) लोगोंके पाससे हमिल-
कार के पास एक पत्रका लिये जाता था जीलनने उस पत्रका
को पढ़, वही हमिलकारको भेज दी परन्तु आप सिलानटाइन लोगों
को हमिलकारसे नमिलने देनेमें प्रवृत्त हुआ और उस समय
पर जोकि हमिलकार के पास सिलानटाइन की सेना जानेके
लिये नियत था अपनी सेना भेजी - जब यह सेना कारथेज
वालोंके डेरेमे पहुची तो उन्होने यह समझकर कि वह सिला-
नटाइन की सेना है, उनको अपने मे आने दिया परन्तु इस सेना ने

हमिलकार और उसके मुख्य साथियों को मारा और नावका जलाई
इससे कारथेज की सेना में खलबली पड़गई और जीलन ने पद
अवकाश पाकर उनको पराजित किया कारथेज की सेनामे से
आधी लड़ाई मे मारी गयी थी यह बात जानने योग्य है कि
यह युद्ध उसी दिन हुआ था जिस दिन यूनान मे थरमापलिका
युद्ध हुआथा और जरकिसिस के युद्ध सम्बन्धी नावकों का आ
र्टमिसियम स्थान पर नष्ट हुआ था अतएव इन तीनों युद्ध से यून
न देश के स्वतन्त्रता का बड़ा बचाव हुआ (४८० - इ॰ पै॰)
कारथेज की सेना का अवशेष गिसगन नामक, हमिलकार के
पुत्र की अधीनता में इकट्ठा हुआ परन्तु उसने अपने तईं लड़ने
के असमर्थ देखकर जीलन से सन्धि की इससे कारथेज के
लोग गिसगन से बड़े क्रुध हुए और उसे निकाल दिया इस प
राजय के पीछे सत्तर वर्षतक कारथेज का वृत्तान्त मालूम नहीं
केवल इतना जानाजाता है कि इस समय में इन लोगोंने अ-
फ्रीका मे अपना प्रभुत्व बढ़ाया - इसी समय एथिन्स वालोंने
सिरेक्यूज़ पर चढ़ाई की परन्तु पराजित होगए (४१६ - इ॰ पै॰
तब सिजिसटा नगर के लोगोंने सिरेक्यूज़ वालों के क्रोध से
(क्योंकि उन्होने एथिन्स वालोंको इनके विरुध मदद दी थी)
डरकर अपने बचाव के लिये कारथेज वालोंकी सहायता चा-
ही तो उन्होंने फिर उस द्वीप (सिसेली) के राज्य सम्बन्धी झगड़ा-
रों मे हाथ डालना चाहा

प्रकरण ४

सिसलीके युद्धोंके समय मे कारथेज का वृत्तान्त ४८० ई॰ पू॰ से २६४ ई॰ पू॰ तक॥

सिजेस्टा नगर के दूत के आने से कारथेज वालों को सिसली पर आक्रमण करने का हेतु मिला और उन्होंने जिस्गन के पुत्र हनीबाल की आधीनता में एक सेना भेजी इस सेनाने सिलीनस और हमीरा नगरों को ले कर उनके वासियों को मार डाला इस पर सिसली के लोगों ने हैनीबाल से सन्धि की — इस विजयसे कारथेज वाले इतने फूले कि उन्होंने सारी सिसली को जीतने का उद्यम किया और इमूलीज़ हैनो के पुत्र और हैनीबाल को एक बड़ी सेना देकर भेजा उन्होंने सिसली में जाकर एग्रीजेन्टम नगर को घेरा और आठ मास तक घेरा रखा इस समय में घेरे हुये लोगोंने भूखसे और घेरने वालोंने मरी से बडा क्लेश उठाया परन्तु कारथेज वालोंने इस मरी का हेतु ईश्वर का क्रोध समझा इसीलिये उन्होंने एक महा वंश के लड़के की नेपच्यून देवता को बली दी — इसके पीछे एग्रीजेन्टम के लोगोंने अपने मेंसे वृद्ध और रोगातों को छोड़ कर जिला नगर में जा शरण ली — हेमिलको (जो हैमिलकार का बेटा और अपने पिता के मरने पर सेनानी बना) ने एग्रीजेन्टम नगर को लेकर उन लोगों को मार दिया और जिला नगर

की भी यही उद्देश था को इसपर सिरेक्यूज़ के राजा डाईनीसस प्रथ-
म ने जो अब सिसली वालोंका सेनानी था कारथेज वालोंसे स-
न्धि करली (४०५-ई.पे.) यह सन्धि थोड़ी देरतक रही क्योंकि
कारथेज के लोग सिसली से जाने पावही नहीं थे कि डाईनीसस
ने कारथेज के बहुत से आधीन नगरों को लेलिया ... और उस
देशके व्यापारियों को विश्वास घात से मारा कारथेज के लो-
गोंने जितनी सेना इकट्ठी होसकी हैमिलको नामक सेनाप-
ति की अधीनता में सिसली में भेजी हैमिलको ने वहां जाकर
सिरेक्यूज़ को घेरा और उसको लेलेने पाही था कि कार्थेज की
सारी सेना में बड़ी भारी मरी पड़ी इस समय डाईनीसस ने अ-
वकाश पाकर कारथेज वालोंको पराजित किया इस लड़ाई मे
कारथेज वालोंकी बहुत सेना नष्ट हुई अन्तमें हैमिलको ने अ-
पनी सेना को शत्रुओंके हाथमें देदिया और उनसे यह प्रतिज्ञा
करली कि उसके और कारथेज वालों के सिवा और जो उसके
साथ हैं उनको वे मारें वा रक्खें परन्तु अपने स्वदेशीय लोगों की
निन्दासे बचने के लिये हैमिलको ने अपने तई मार डाला
अफ्रीका के लोगों ने अपने साथियों के सिरेक्यूज़ के लोगों के
हाथमें पड़ने से क्रुध होकर कारथेज पर आक्रमण किया और
वे लोग उस नगरको लेलेते यदि उनमें परस्पर विरोध न प-
ड़ता जब यह भय निवृत्त होगया तो मेगो एक सेना लेकर
सिसली में गया परन्तु पराजित हुआ और लड़ाई मे मारागया
फिर उस (मेगो) के पुत्र लोगोंने दूसरी लड़ाई मे सिरेक्यूज़

के लोगों को पराजित किया इसपर डाईओनीसस ने उससे सु
लह करली यह युद्ध अन्त को समाप्त होनेही नहीं पाया था
कि सिसली सार्डीनिया और अफ्रीका के लोग कार्थेज से
बिगड़गये और इसी समय एक ऐसी मरी पड़ी जिससे ह-
जारों लोग मरगए (३५० ई० पू०) परन्तु कार्थेज की राज
सभा ने इन सब उपद्रवों को शान्त किया और अपना राज्य
पहली वृद्धि को पहुंचाया इस समय सिराक्यूज़ का बल डा
ईओनीसस के मरने से बहुत क्षीण होगया क्योंकि उसका
पुत्र डाईओनीसस द्वितीय दुराचारी निकला कार्थेज के
लोगोंने अवकाश पाकर मेगो की अधीनता में एक जहाज़ी
सेना भेजी मेगोने जातेही सिराक्यूज़ की बन्दरगाह को ले
लिया इस समय इसेटिस नामक लियोन्टाईन योधा
सिराक्यूज़ का हाकम था और किले मे डाईओनीसस था
परन्तु सिराक्यूज़ के लोगोंने कारिन्थो कौरिन्थ वालोंसे सहाय
ता चाही वहांसे टिमोलियन नामक एक प्रसिद्ध जनैल
इनकी सहायता को आया उसने आतेही किलेको डाईओ-
नीसस के हाथ से लेलिया लियोनाटाईनोंसे सेना लेली औ-
र कार्थेज की सेनामे जो यूनानी लोग भर्ती थे उनको बहुत
सा भिन्न किया इस पिछली बातसे मेगो इतना डरा कि वह
सिराक्यूज़ नगर को त्यागकर अफ्रीका को चलागया कार्थेज़
के लोग मेगोसे बड़े क्रुध हुए और उसने लज्जासे अपने तई
मारडाला परन्तु लोग उससे इतने क्रोधी थे कि उन्होंने उसका

यन्त कर्म्म भी न होने दिया इसके पीछे कारथेज़ वालोंने फिर दो सेनापतिों हमिलकार और हनीबाल को एक बड़ी सेना देकर सिसली पर आक्रमण करने को भेजा - इस सेना के पहुंचने से सिरेकूज़ के लोगों को बड़ा भय हुआ केवल टिमोलियन स्थिर चित्त रहा और थोड़ी सी सेना लेकर क्रिमिसस नदी पर कारथेज़ वालों पर अचानक ही जापड़ा और उन्हे पराजित किया इस लड़ाई में तीन हज़ार कारथेज के वासी और सात हज़ार उनके साथी मारे गए इसपर सिरेकूज़ वालोंने सब शत्रुओं के आश्रित नगर छीन लिये यहांतक कि कारथेज़ की सिनेट को सिरेकूज़ वालों के नियमानुसार सन्धि करनी पड़ी जब कि कारथेज़ के लोग इतर देशोंमें पराजित होरहे थे उनके घरमें एक ऐसी बात हुई कि जिससे उनकी स्वतन्त्रता बिल्कुल नष्ट होजाती वह यह बात थी हैनो नामक एक मुख्य राज्याधिकारीने अपने आपको राजा बनाने के लिये राज्य सभाके सारे मुख्य सभासदों को एक ज़ियाफत मे बुलाकर मारना चाहा था परन्तु उसका छल मालूम होगया तब उसने उपद्रव मचाया और बीस हज़ार दासीजनों को लेकर लड़ना चाहा परन्तु राजसेनाने उसे पराजित किया और उसके बन्धु और कुटुम्ब सहित उसे बुरी दुर्दशा से मारडाला इस समय सिरेकूज़ के लोगों में परस्पर विरुध होनेसे कारथेज़ वालोंको सिसली में जाने का एक हेतु मिला अगाथकलीज़ नामक एक नीच वंशका पुरुष कारथेज़ की सहायतासे सिरेकूज़ का अधिपति होगया

परन्तु इस पदवी को प्राप्त होतेही इसने कारथेज के लोगों को जिनसे उसे बड़ा उपकार हूआ था सिसली से निकालना चाहा इसपर कारथेज की राजसभाने हैमिलकार नामक सेनापति को एक बड़ी सेना देकर सिसलीमें भेजा उसने आतेही सिरेक्यूज़ को घेरा और कदाचित उस नगर को लेभी लेता परन्तु अगाथकलीज़ के एक साहस कर्म्म से उसका उद्योग निष्फल होगया अगाथकलीज़ ने सिरेक्यूज के लोगोंसे यह कहाकि "मैं तुम्हें शत्रुके हाथसे इस विधिसे बचा सकता हूं कि तुम मुझे सेना और कुछ रुपया देदो तो मैं उस सेनाको लेकर कारथेज पर जा हमला करूं" उन्होने वैसाही किया और अगाथकलीज हैमिलकार की नावांगीरी से बचकर कारथेज मे अचानक जा पहुंचा इस समय एक सूर्य्य ग्रहण से उसकी सेना डरी परन्तु उसने उनके भय को दूर किया हैनो और बोमिलकार नामक दो सेनापति अगाथकलीज से लड़ने को गये परन्तु पराजित हूये और इनमेसे हैनो मारागया इबीक पराजय से कारथेज में बड़ी खलबली पड़ी भविष्यद्वाचकों से इस आपद का कारण पूछा गया उन्हों ने उत्तर दिया कि अबतक जो देवताओं को नीच और दासीजनों के पुत्रोंकी बली होती रही है इससे वे क्रुध होगए हैं मिथ्याधर्म्मी लोगोंने उनकी बातको सही मानकर मोलोक वा शनी देवता को महावंश के लड़कों की बली दी जबकि इबीक आपद को निवारण करनेके लिये ऐसे २ झूठे उपाय होरहे थे तो

टाइर नगरसे नावकें आईं इन नावकोंमें वहांके लोगोंके स्त्री और पुत्र थे यद्यपि कारथेजमें इतनी आपद पड़रही थी किन्तु फिर भी उन्होंने इन लोगोंका बड़ा सत्कार किया अभी हैमिलकार सिरेक्यूज के लेनेमें प्रवृत्त था तब उसको यह खबर गयी कि तुम जलदी आकर कारथेजको बचाओ तब उसने अपने मुख्य सैन्योंको कारथेजमें भेजा और उनके स्थानमें नई सेना भर्ती करली परन्तु वह लड़ाई में पराजित हुआ और मारा गया - उधर सिसली मे यह हुआ और इधर कारथेजमे बोमिलकार ने छल करके आप राजा बनना चाहा परन्तु उसका छल मालूम होगया और वह दुर्दशासे मारागया सिरीनी का राजा ओफिलस अगाथकलीज के साथ मिलगया परन्तु इसने उसे विष देकर मरवा दिया फिर अगाथकलीज यह देखकर कि अब मेरा कोई पक्षपाति नहीं है सिसलीको चलागया परन्तु उसके पीछे अफ्रीकामे उसके उद्योग का फल बिल्कुल निष्फल होगया क्योंकि जो सेना वह अपने पुत्रके अधीनतामे छोड़ गया था वह बिल्कुल बिगड़गई थी यूनानी रक्षियां वाले ओफिलस के मारे जानेसे बड़े क्रुध होगये थे अफ्रीका देशके लोग फिर कारथेज के अधीन होगये थे ऐसी लड़ाइयें सुनकर अगाथकलीज इन बलवेके दूर करनेको आया परन्तु उससे कुछ भी न होसका इससे वह अपनी सारी सेना और पुत्रोंको छोड़ सिसलीको फिर चलागया वहां विष खाकर मर गया इसके मरने के पीछे कारथेज के लोगोंने सिसलीमें फिर अपना प्रभुत्व जमाया- तब

(१) इस समय महासिकंदरने टाइर पर चढ़ाई किया और वहांके लोगोंने अपनी स्त्री और बच्चोंको कारथेजमे भेजदिया

सिसली की यूनानी बस्तियों ने अपने बचाउ के लिये इपाईरस के राजा पिर्हस[1] को अपनी सहायता के लिये बुलाया पिर्हस ने सिसली मे आतेही लिलिबियम के सिवा और सब कारथेज के आश्रित नगरों को लेलिया परन्तु उसे शीघ्रही इटली मे जाना पड़ा (२७६-इ॰ पै॰) इसलिये उसके विजयों का फल सिरेक्यूज के राजा की सहायता के होते२ भी शीघ्रही नष्ट होगया।

प्रकरण ५

रोमी युद्धों के प्रारम्भ से कारथेज के नाश तक

२६४-इ॰ पै॰ से, १४६-इ॰ पै॰ तक

जब पिर्हस सिसली से चला तो उसने चलते हुए यह कहा कि "इस जगह का अच्छा लड़ाई का मैदान हम रोमी और कारथेज वालों के लिये छोड चले हैं" उसका कहना शीघ्रही चरितार्थ हुआ क्योंकि अगाथक्लीज की सेना के कुछ सिपाहियों ने मैसीना नगर पर जा हमला किया और वहां के लोगों को मार उसे लेलिया- इनको देखकर रोम की सेना के कुछ सिपाहियों ने भी रिजियम नगर पर (जो सिसली जल डमरू मध्य के दूसरे पार था) वैसाही अनर्थ किया इस उपद्रव के दूर करने के लिये रोम की (सिनेट) राजसभा ने एक सेना भेजी जिसने उन उपद्रवियों को जा कर मारडाला इसी समय सिरेक्यूज के राजे हीरोने ममरटाइन लोगों

(1) यह [illegible] का [illegible] जो इस समय नेपल्स [illegible] (इटली का दक्षिण भाग) के [illegible] विरोध [illegible] रोमनों को [illegible]

की

को (यह उन उपद्रवी सिपाहियों का नाम था जिनोने मेसीना-
को लेलिया था) पराजित किया परन्तु इन लोगों मेंसे आधों
ने तो रोमसे और आधोंने कारथेज से सहायता की प्रार्थना की क्यों
कि वे डर गये कि हीरो (राजा) ऐसाही उनके साथ नकरे जैसा
रोम वालोंने रिजियम वालों के उपद्रवियों के साथ किया रोमकी सि
नेटने बहुतसे विचारके पीछे ऐपियस क्लाडियस नामक से
नापति को सेनादेकर भेजा उसने जातेही मेसीनाके किले
को लेलिया और कारथेज वालोंको जिनके साथ हीरो भी था
पराजित किया तब हीरो रोमसे आमिला और यही लड़ाई
प्रथमप्युनिक युद्ध और इस समय से तेईस वर्षतक रहा का
कारण थी इस युद्धमें कारथेज के हाथ से सिसली द्वीप जा
ता रहा और मध्य समुद्र के पश्चिमी भागमें से इनका अधिका
र उठगया किराये दार सिपाहियों ने मासिक नमिलने से उ
पद्रव मचाना आरम्भ किया यूटिका नगर पर चढ़ाई करके
फिर ट्यूनिस नगरको जा घेरा हैनो नामक एक सेनापति
उनके पराजित करने को भेजागया परन्तु उससे कुछ भी
नहोसका इसके पीछे हैमिलकार नामक प्रसिद्ध सेनापति
ने जाकर उनको पराजित किया परन्तु इस समय तक उन्हों
ने कारथेज के बहुत से अच्छे प्रदेशों को उजाड़ कर दियाथा
सारडिनिया द्वीप को जिसमे उपद्रव शुरू हुआ था रोम वालों
ने सुलाह के नियमों के विरोध छीन लिया हैमिलकार
बारका ने अपने देशकी हानी देखकर बहुत विलाप किया,

और स्पेन देशको जीतनेसे उस हानीको पूरा करना चाहा जब वह वहां चला उसके पुत्र हैनीबालने जो उस समय केवल नौवर्षका था उसके साथ जाने की इच्छा की परन्तु हैमिलकार ने उसे वहां लेजाने से पहले एक देवता के मन्दिर मे लेजाकर उससे यह प्रतिज्ञा करवाई कि वह रोम का सदा शत्रु बना रहे फिर हैमिलकारने यह देखकर कि हाथियों और घोड़ोंको समुद्र के मार्ग से लेजाने में बड़ा क्लेश होता है जबराल्टरके डमरु मध्यतक भूमीके मार्ग से लाकर उनको स्पेनमे पहुंचाया यह मालूम होता है कि कारथेज के लोग अपने आदी युद्धोंमे रथोंको काममें लाते थे परन्तु जब कि उन्होंने पिर्हस के साथ हाथियों को देखा तो उन्होंने इनको अपनी सेनामें भी रखा नौ वर्ष में हैमिलकार ने सारे स्पेनको अपने वशकर लिया और उस धनको जो उसे वहां से मिला उसने अपने अधिकार के बढ़ाने में लगाया और कारथेजकी प्रजाको बड़ा सन्तुष्ट किया हैमिलकार के पीछे उसका जामात हैसडूबाल स्पेन के अधिपत्य को प्राप्त हुआ कहते हैं कि उसने अपने तई स्वतन्त्र करना चाहाथा और इस आशाय से नया कारथेज (नोवा कारथेगो) नगर बनाया उस नगर के पास बड़ी चांदीकी कानें थीं जहां से कारथेज मे बहुत सा धन भेजा जाता था स्पेन के लोग हैसडूबाल से बहुत खुश थे इसलिये उसने वहां के एक राजाकी पुत्रीसे विवाह किया रोम के लोग उसकी वृद्धिसे चौंके और अन्तमें यह सन्धि हुई कि है-

सड्रूबाल एब्रोनामक नदीसे आगे न बढ़े और सिगण्टम देश पर आक्रमण न करे जब हैसड्रूबाल मारागया तो हैनीबॉल अधिपति हुआ उसने स्पेन के लोगों पर बहुत से विजय पाई और अन्तमें सिगण्टम नगर को जा घेरा इस कारण रोम से द्वितीय (प्युनिक) युद्धका प्रारम्भ हुआ इस युद्धमें कारथेज के लोगोंने युद्धयोग्य नावकों पर ध्यान देना छोड़ दिया और बारका के वंशने बड़ा प्रभुत्व पाया उसके अन्तमें कारथेज के हाथसे सब प्रदेश सिवा उनके जो अफ्रीकामें थे छीने गये और सब युद्धयोग्य नावका रोम वालोंने लेलीं तबसे यह नगर रोमके अधीन हो गया अफ्रीकामें मेसिनिसा नामक न्यूमीडिया का राजा रोमसे मिलकर कारथेजका शत्रु होगया और उसने कारथेजकी बहुत बस्तियोंको अपने वश कर लिया - यद्यपि हैनीबाल इस युद्धके अन्तमें पराजित हुआ किन्तु फिरभी वह कारथेजके राज्यमें मुख्य अधिकारी रहा उसने बहुतसे उपद्रवोंको शान्त किया और ऐसे लोगोंको जो राज्यधन को लूटकर खातेथे रोका इस पर वे सब लोग उसके शत्रु होगए और रोमके साथ मिलगए तब हैनीबाल ने अपने देशका त्याग किया और बहुतसे क्लेश सहकर अन्तमें बिथिनिया देशमें विष खाकर मरगया उसकी समाधि आजतक प्रसिद्ध है - परन्तु कारथेजके लोगोंको अपने सेनापतिके मरने का शोक शीघ्रही करना पड़ा क्योंकि रोमके लोग केवल उसके निकाले जानेसेही सन्तुष्ट न हो रहेथे किन्तु उन्होंने न्यूमीडियाके राजा मेसीनिसाको का

(१) रोमके नियमोंके अनुसार दो कौंसल कभी एकत्र [illegible] [illegible] क्योंकि उनको उसपर [illegible] परन्तु बारका प्रभुत्व बहुत था इसीलिये कोई रोक न सकी गई

रथेज के नगरों पर आक्रमण करने को उकसाया - दोनों पक्षों
ने रोमकी राज्यसभा के आगे एक दूसरे को प्रथम अपराधका
री ठहराया (१९३ - ई॰ पै॰) और यद्यपि उस सभाने दोनोंकी
बातें सुनी किन्तु उसने मेसीनिसा के पक्षमें पहलेसेही नि
र्णय कर रक्खाथा इस समय कारथेज की प्रजाने यह देखक
र कि उनके देशकी हानी का कारण वे प्रधान जनहैं जो बा
रका वंश और विशेषतः हैनीबाल के शत्रु हैं एक सभाकी
जिसमे यह [illegible] हुआ कि राज्यसभा के चालीस मुख्य प्र
धानजनोंको (जो देशकी उन्नतिके विरुधथे) अभी देशसे
निकाल दिया जावे और वे फिर कभी यहां आने नपावें-
इन निकाले हुये प्रधान जनोंने मेसीनिसा के पास जा शरण
ली मेसीनिसाने अपने पुत्रोंको उनकी तरफ से सन्धि करा
ने को भेजा परन्तु कारथेज के लोगोंने उनको बड़े निरादर
के साथ अपने देशसे निकाल दिया इसपर मेसीनिसाने का-
रथेज पर चढ़ाई की और शत्रुओं को पराजित किया अन्तमें
रोमकी सिनेटने केटो[1] नामक एक मुख्य सभासद के बारबार
कहने से कारथेज का नष्ट करना चाहा परन्तु कारथेज के
लोगोंने रोमकी राज्यसभाकी सब आज्ञा[illegible]यहांतक कि
उन्होंने अपने सारे शस्त्रादि रोमके हाथमें दे दिये थे परन्तु जो
ब कि रोमकी राज्यसभाने उनसे यह [illegible] कि तुम इस नगर[2]
को त्याग करके और कहीं जा बसो तो [illegible] इस बातको
न माना इसपर दोनोंमें युद्ध हुआ और चार वर्षके (तीसरा

(१) परन्तु सिपिओ नेसिका कहता था कि यदि कारथेज का नष्ट होगया तो रोमका भी शीघ्रही नष्ट होजावेगा क्योंकि जब रोमका शत्रु न रहा तो रोम निर्बल होजावेगी
(२) कारथेज

प्युनिक युद्ध) के पीछे रोम वालोंने इस नगर को लेकर भूमी के साथ मिला दिया। (४६-इ.पै.

प्रकरण ९

कारथेज के बनज और व्यापार का वर्णन।

कारथेज की व्यापार रीति फिनिशिया के लोगों की नांई उदार नहीं थी राजधानी के ही बंदरों में व्यापारी लोगों के जहाज़ आने पाते थे किन्तु और कारथेज आश्रित नगरों के बंदरगाहों में आने के लिये बड़ी भारी रुकावटें वा कठिन नियम थे इसका कारण यह था कि कारथेज के लोग अफ्रीका के जंगली लोगों के साथ इस प्रकार से व्यापार करते थे कि उनसे बड़े मूल्य वस्त्र लेकर उनको बदले में दिखावे की अल्प मोल्य वस्तु देते थे यदि इतर देश के व्यापारी लोगों को उन जंगली लोगों से उसी तरह व्यापार करना मिलता तो कारथेज का व्यापार अवश्य नष्ट होजाता इससे अधिक यह था कि यहां अनाज का व्यापार भी खुला हुआ नहीं था और इस बंदिश का हेतु यह बतलाया जाता था कि "कारथेज को बहुतसी किरायेदार सेना का पालन करना पड़ता है परन्तु यह उनकी भ्रांति थी क्योंकि यदि अनाज का बनज बंद हो तो किसान लोग बहुत खेती नहीं करते और अनाज की उत्पत्तिकी वृद्धि नहीं होती यही कारण था जिससे हम देखते हैं कि कारथेज राज्य में अकसर बार काल पड़ा किन्तु अब रोमियों के समय या-

पार खुला तो फिर उनका काल नहीं पड़ा मैडिटेरेनियन (समु-
द्र) के पश्चिम भागमें कारथेज के लोग सिसली की यूनान देशी-
य बस्तियों और इटली देशके दक्षिण भाग से व्यापार करते थे
यहांसे वे दासीजनों और ऊनके बदले में तेल और मद्य
लाते थे कार्सिका द्वीपसे मधु और मोम सार्डिनिया से
धान्य और बिलियारिक द्वीपोंसे बहुत अच्छी खच्चरें लिपा-
री द्वीपसे गन्धक और राल मिलती थीं और स्पेन के दक्षि-
ण भाग से बहुमूल्य धातु आती थीं - हरकूलिज़ के
खम्भों (जिब्राल्टर डमरू मध्य) के परे कारथेज के लोग
बृटिन द्वीपों और बाल्टिक समुद्रके समीपस्थित लोगोंके
साथ टीन और तैल स्फटिक का व्यापार करते थे कारथेज
के नाशके पीछे यह व्यापार गालदेश निवासी फोसियन
(मारसेलिस नगर के रहने वाले) लोगों के हाथमें आ पड़ा औ-
र वे लोग गालदेश में से (रोन नदी के मार्ग से) जाकर उन
देशोंसे व्यापार करते थे कारथेज वालोंकी बस्तियें अफ्रीका
के पश्चिम भाग में मुराको और फैज़ के समुद्री कनारों पर
थीं परन्तु इनका मुख्य व्यापारिक स्थान तो सिर्नी (जिस
को अब सुमाना कहते हैं) द्वीप[1] थी जहांसे व्यापार योग्य
वस्तुयें[2] नावकों में अफ्रीका के साहमने कनारे पर बद-
ली करने को लिजाई जाती थीं इन वस्तुयों के बदले ये
लोग हस्तिदन्त और चर्म से मेंढे और एक प्रकार की मछ-
ली (जो कारथेज में बड़ी स्वादिष्ट गिनी जाती थी) पकड़ ला

(१) २५°, १०', उ० अक्ष० - १६°, ४८ प० देशा०
(२) शराब, मिट्टी के बर्तन रुई [illegible]

ते थे - प्रायः यह मालूम होता है कि ये लोग सिनीगाल
और गेम्बिया नामक नदियों से परे तक पहुंचते थे परन्तु इ
सका कुछ निर्णय नहीं - हिरोडोटस नामक इतिहासिक
इन के स्वर्ण के व्यापार का यों वर्णन करता है कि कारथेज
के लोग हारकुलिज़ के खम्भों से परे एक जन पद के साथ
व्यापार करने को आया करते थे जब वे वहां पहुंचते थे
तो वे अपनी नावों से उतर कर और अपनी वस्तुओं को वहां
कनारे पर रख कर आग जला आते थे - इस आग को दे
ख कर उस देश के जंगली लोग वहां आते थे और उन वस्तु
ओं के पास सोना रख कर उलटे चले जाते थे इस पर का
रथेज के लोग फिर जाते थे और यदि उस सोने को वस्तु-
ओं के तुल्य न देखते थे तो फिर उलटे जाते थे इस पर वे
जंगली लोग और सोना रख जाते थे परन्तु दोनों पक्षों की
यह बात थी कि एक दूसरे से छल नहीं करते थे" - क
हते हैं कि इस प्रकार का गूंगा व्यापार आज तक अफ्रीका के
जंगली लोगों में (नाईजर नदी पार के प्रदेशों में) होता है
कारथेज के व्यापारी गणों (कारवानों) के द्वारा जो व्यापार
होता था उसका कुछ वृत्तान्त मालूम नहीं - जंगल के पास के दे-
शों से खजूर और लवण आता था और उससे परे के देशों
से स्वर्ण और दासी जन बहुत आते थे।

अध्याय ८

यूनान

यूनानदेशीय राजधानियों (की उत्पत्ती) का वृत्तान्त

प्रकरण १

हैलस देश का भूगोल

यूनान देश के उत्तर में कैम्बूनियन पर्वत थे जो इसको मैसीडोनिया से भिन्न करता था पूर्व में इजियन समुद्र दक्षिण में मैडिट्रेनियन (मध्य) समुद्र और पश्चिम में आईओनियन समुद्र थे – इसकी लम्बाई उत्तर से दक्षिण तक २२५ मील और चौड़ाई पूर्व से पश्चिम तक १८० मील थी इसलिये इसका क्षेत्रफल ३५००० वर्ग मील था यूरप का कोई देश ऐसे अच्छे स्थान पर नहीं था जैसे यूनान क्योंकि इसके तीनों ओर समुद्र था और समुद्र में बहुत से द्वीप थे, एशियामाइनर (पूर्व की ओर) और इतालिया (पश्चिम की ओर) बहुत समीप थे मिसर और फनीशिया के व्यापारक स्थानों की यात्रा भी बहुत कठिन नहीं थी – इस देश के किनारों पर कई एक खाड़ियें और वन्दरगाहें थीं और यूनानी लोग इन और उन

दो बड़ी खाड़ियों के कारण जो हेलस को पिलापोनीसस से भिन्न करती हैं प्राचीन समय से समुद्र सम्बन्धी व्यवहारों पर ध्यान देने लगे - इस देश के प्रकृति से तीन भाग बने हुये हैं जैसे (१) पिलपोनीसस वा दक्षिण यूनान जिसको सैरोनी, और कारिंथ की खाड़ियें हेलस (उत्तर यूनान) से भिन्न करती हैं - फिर ईटा पर्वत है हेलस के दो भाग बनाता है (१) एक उत्तरीय और दूसरा दक्षिणीय यह पर्वत जिसको पश्चिम में ओथ्रीस और आगे बढ़कर पिण्डस कहते हैं अम्ब्रेसिया खलीज के पूर्व २० मील के समीप उत्तर की दिशा को मुड़ जाता है और कम्ब्यूनियन पर्वत से मिलकर थेसली और एपाइरस को हेलस के मध्यभाग से जुदा करता है - उत्तरीय हेलस भाग दक्षिणीय तीसरे भाग से कारिन्थ इसथमस द्वारा मिले हुये हैं - थेसली यूनान के सारे प्रदेशों में सबसे बड़ा एक समतल प्रदेश है इसके तीनों ओर ऊंचे पर्वत हैं और पूर्वी ओर इजियन समुद्र जिसके तट के निकट ओसा और ओलिम्पस ऊंचे पर्वतों की चोटियें हैं यहां की मुख्य नदी पिनियस पिण्डस पर्वत से निकल कर पूर्वी दिशा में बहती है और बहुत सी सहायक नदियों से मिलती हुई इजियन समुद्र में आ गिरती है, कहते हैं कि यह नदी प्राचीन समय में एक दलदल में आ बन्द होती थी परन्तु जब किसी भूकंप से ओलिम्पस और ओसा परस्पर भिन्न होगए तो उनके बीच में से होकर यह समुद्र में जा गिरी इस (नदी के) मार्ग को टेम्पी की घाटी कहते हैं।

यहां की भूमी के प्रभावक और नम्रसिद्धता के कारण (क्योंकि
यूनान के बड़े २ देवता यहां ही हुये हैं) इनकी कथा सत्य
मालूम होती है क्योंकि यहीं के लोगों ने सबसे पहले यूना-
न में कृषिकर्म करना प्रारम्भ किया था और इन्हीं लोगों-
में से वे लोग हुये जो यूनान के दक्षिण में जाकर वहां के अ-
धिपति और मालिक बन गये - टेम्प की घाटी बहुत संको-
च थी यहां तक कि यहां थोड़ीसी सेना से शत्रु की बहुत
सी सेना रोकी जासकती थी - और जबकि ज़रकसिस ने
यूनान पर आक्रमण किया था तो पहले यूनानियों ने उसे
इसी स्थान पर रोकना चाहा था परन्तु पीछे थरमापिली को
अच्छा समझ कर वहां पर जा रोका पिछले समय में यह स्था-
न (टेम्प) इतना प्रसिद्ध होगया कि इसकी रक्षा के लिये य-
हां एक दुर्ग डेमट्रिअस नामक बनाया गया था -
थेसली के मुख्य नगर ये थे लेरीसा (जिनिटया) और फिरी
मध्य में थाईओलकोस जहां से आर्गो नाट जहाज़ी लोग चले
थे मेगनिशिया (डिमड्र नरपर) ये इस देश की प्रकृति उप-
नि इनके कारण ही भाषा ऊसा क्योंकि यहां के लोग सुस्त-
सत होगए थे और पहले तो यह प्रदेश फ़ारस वालों और
फिर मेसीडोनिया वालों के वश होगया था इपाइरस इसके
दक्षिण का बड़ा प्रदेश था यहां खेती बहुत कम होती थी इ-
सके दो (मुख्य) भाग थे प्रथम मोलोसिस जहां का मुख्य नग-
र अम्ब्रेसिया (आरटा) था दूसरा थेसप्रोटिया जहां इफायरा

दो बड़ी खाड़ियों के कारण जो हैलस को पिलापोनीसस से भिन्न करती हैं प्राचीन समय से समुद्र सम्बन्धी व्यवहारों पर ध्यान देने लगे - इस देश के प्रकृति से तीन भाग बने हुये हैं जैसे (१) पिलापोनीसस वा दक्षिण यूनान जिसको सैरोनी और कारिंथ की खाड़ियें हैलिस (उत्तर यूनान) से भिन्न करती हैं - फिर ईटा पर्वत हैलस के दो भाग बनाता है (१) एक उत्तरीय और दूसरा दक्षिणीय यह पर्वत जिसको पश्चिम मे ओथीस और आगे बढ़कर पिण्डस कहते हैं अक्रोसिरा यलीज के पे ४० मील के समीप उत्तर की दिशा को मुड़जाता है और कम्बूनियन पर्वत से मिलकर थेसिली और एपाइरस को हैलस के मध्यभाग से जुदा करता है - उत्तरीय दो भाग दक्षिणीय तीसरे भाग से कारिन्थ डमरू मध्य द्वारा मिले हुये हैं - थेसिली यूनान के सारे प्रदेशों मे सबसे बड़ा एक समतल प्रदेश है इसके तीनों ओर ऊंचे पर्वत हैं और चौथी ओर इजियन समुद्र जिसके तट के निकट ओसा और ओलिम्पस ऊंचे पर्वत की चोटियें हैं यहां की मुख्य नदी पिनियस पिण्डस पर्वत से निकल कर पूर्वी दिशा मे बहती है और बहुत सी सहायक नदियों से मिलती हुई इजियन समुद्र में आगिरती है, कहते हैं कि यह नदी प्राचीन समय में एक दलदल में जा बन्द होती थी परन्तु अब किसी भूकंप से ओलिम्पस और ओसा परस्पर भिन्न होगए तो उनके बीच में से होकर यह समुद्र में जा मिली इस (नदी के) मार्ग को टेम्पी की घाटी कहते हैं।

यहांकी भूमीके प्रभावक और नम्रसिद्धता के कारण (क्योंकि
यूनानके बड़े २ देवता यहांही हुये हैं) इसीका कथा सत्य
मालूम होती है क्योंकि यहांके लोगोंने सबसे पहले यूना
न में कृषिकर्म करना प्रारम्भ किया था और इन्हीं लोगों
मेंसे वे लोग हुये जो यूनान के दक्षिणमें जाकर वहां के अ
धिपति और मालिक बन गये- टेम्पकी घाटी बहुत संकी
र्ण थी यहांतक कि यहां थोड़ीसी सेनासे शत्रुकी बहुत
सी सेना रोकी जासकती थी- और जबकि ज़रकसिसने
यूनान पर आक्रमण कियाथा तो पहले यूनानियों ने उसे
इसी स्थान पर रोकना चाहाथा परन्तु पीछे थरमापिली को
अच्छा समझकर वहां पर जा रोका पिछले समयमें यह स्था
न (टेम्प) इतना प्रसिद्ध होगया कि इसकी रक्षाके लिये य
हां एक दुर्ग डेमेट्रिअस नामक बनाया गया था-
थेसलीके मुख्य नगर ये थे लेरीसा (जिनिश्या) और फिरी
[illegible] आईओलकोस जहांसे आरगोनाट जहाज़ी लोग गये
थे मेगनीशिया (त्रिकुड़ नरपर) ये इसदेश की प्रकृति उत्त
मि इनके कारणही नाम हुआ क्योंकि यहांके लोग सुस्त
लक होगये थे और पहले तो यह प्रदेश फारस वालों और
फिर मेसीडोनिया वालों के वश होगयाथा इपाईरस इससे
दक्षिण का बड़ा प्रदेश था यहां खेती बहुत कम होतीथी इ-
सके दो (खंड) भाग थे प्रथम मोलोसिस जहांका मुख्य नग
र अम्ब्रेशिया (आर्टा) था दूसरा थेसप्रोटिया जहां डयोडो

म व्यापारक बंदर और डडोना (बड़ाभारी और प्राचीन देववा-
नी स्थान) प्रसिद्ध नगरथे - इसके मध्यमे भयनाक पर्वतथे
जिनमेसे सिरानियन पर्वत पश्चिमकी ओर जाता हुआ अक्रो
क्रीरोनिया नामक अन्तरीप मे अन्त होताथा यह अन्तरीप
पे इल्लिरिक समुद्र को खाई ओनियन समुद्रसे भिन्न करतीहै
इसीके अन्तरीपके भयदायक होनेके कारण नाविक लोग इसे
इनफेमस वा भयंकर बोलतेथे और इसदेश के जंगली और
भयदायक होनेके कारण यूनानी लोग एचीरान और काकी-
टसनामक नदियों को नरक की नदियां समझते थे परन्तु य-
हांके बैल कुत्ते और घोड़े तो अद्वितीय थे किन्तु यहांके कुत्ते
जो मोलोसियन कुत्ते थे अबतक सुन्दरताके लिये प्रसिद्ध हैं
हेलस अथवा मध्य यूनान के नौ प्रदेश अर्थात् खण्ड थे
१ ऐटिका २ मिगारिस ३ बियोशिया ४ फोसिस ५ पूर्वी
लोकरिस ६ पश्चिमी लोकरिस ७ डोरिस ८ इटोलिया
९ अकार्नेनिया। ऐटीका खण्ड इजियन सागरके दक्षि-
ण पूर्व भागमें ६२ मील फैला हुआथा इसका तल ११
मील चौड़ाथा जहांसे वह सरूयाकार होता हुआ चलाजाता
है और सूनियम अन्तरीप (कालोना) मे अन्त होताथा
इस अन्तरीप पर मिनरवा देवीका एक मन्दिरथा यह दे-
श कुछ बहुत उपजाऊ नहीं था - परन्तु यहां लारियम
पर्वतमे से चान्दी और पिण्टेलिकस पर्वतमे से संगमरमर
निकलताथा और और पर्वतोंके ढलौंपर बहुतसी दृरियें

उत्पन्न होतीथी जिनसे   मक्खिका बहुतसा मधु निकालतीथीं
यहां इलिसस और सेफिसस आदि नाम्नी प्रसिद्ध नदियांथीं
यहांकी आबु हवा बहुत अच्छी और सुखदायक थी और फल
शीघ्रही पकतेथे परन्तु निस्स्वादु होतेथे यहांकी राजधानी
एथिन्सथी जिसकावर्णन आगे जुदा किया जावेगा - एथि-
न्स के साथ तीनसैकड़ाआश्रयस्थान थे यह प्रदेश १० कैन-
टन वा ग्रामों में विभक्तथा इनमें से बड़े प्रसिद्धग्राम ये थे
एथिन्सके उत्तर मे माराथन जहां फारस वाले अपने पहले
आक्रमणमें पराजित हुये थे, रामनस जहांके निमिसस दे-
वता का मन्दिरथा, अचारनि, डेसिली, आरोपस आदि एथिन्सके
पूर्वी ओर ब्रारोन और सूनियम (कालोना) नामक स्थानथे
कालोना (जिसका अर्थहै स्तम्भ) वर्तमान समयका नामहै
और यहनाम चन्द्रदेश स्तम्भोसे जोकि मिनरवाके मन्दिरके
अवशेष थे पड़गयाथा, पश्चिमकी ओर इल्यूसिस था वहां
सिरीज़ देवी की गुप्त पूजा होतीथी - इनसे अधिक यहां हैमे-
टस पर्वत जो अपनी दृष्टगोचर और मधुके वास्ते प्रसिद्ध था
मेगारिस एथिका प्रदेश के पश्चिम की ओर कारिन्थ डमरूम-
ध्य के सन्निकट स्थित था यहांकी राजधानी मेगारा नगरी
निसियानामक बंदरगाह से मिली हुयी थी इस बंदरगाहको
पेरीक्लीसने मिलायाथा नि. रुसके युद्धमे लियाथा यहांका और
प्रसिद्ध स्थान कामिओन मिरोनियन चट्टानों के पासथा ये
चट्टान पहले बड़े भयानक समझे जाते थे और इनका पह

नाम यों हुआ था कि यहां थेसियस नामक योधाने सीरोन नामक एक प्रसिद्ध समुद्र चोर को मारा था - बिओशिया ल- एउ चारों दिशामें पर्वत श्रेणियोंसे परिविष्ट था यह पेटिका खण्डसे सिथीरोन नामक पर्वतसे भिन्न होता था इस पर्वत को कवियोंने बेकस देवता की गुप्त पूजा और आकटियन के रूपान्तर पेनथियसकी मौत और ईडीपसके पकड़े जा- ने के लिये प्रसिद्ध किया है इसकी पश्चिम सीमा पर पारने- सस और हैलीकन पर्वत (म्यूज़िज़) नौदेवियोंके रहने के स्थान थे उन नौदेवियोंके नाम नीचे लिखे हैं।

१	कलायो	इतिहासकी देवी
२	मेलपामिनी	नाटककी देवी (दुःखान्त)
३	थेलिया	नाटककी देवी (परिहास्य)
४	यूटरपी	रागविद्याकी देवी
५	टरपसीकोर	नाचविद्याकी देवी
६	इराटो	प्रीतरसकी देवी } कविता
७	केलियप	वीररसकी देवी } कविता
८	यूरेनिया	खगोलविद्याकी देवी
९	पालीहेमनियां	अलंकारविद्याकी देवी

उत्तरमें (क) नेमिस भूधर इसको रुबी लेकोसिसे जुदा कर- ता था और इसकी ओर (ख) कूस पर्वत यूरिपसजल डमरू मध्य (जोकि युबी आ द्वीपको भूमिसे विभिन्न करता है) तक फैल- ता चला गया था यहांकी वायु हल्की धुंदली और भ्रमी इस

टलीथी परन्तु यूनानके सब प्रदेशोंसे इसमें अधिन. बस्ती
थी और यह बड़ा प्रसिद्ध और प्रभावक प्रदेशथा- यहांके
मुख्य नदियां आसोपस इसमेनस और सैफिसस[1] (मोरे
पुटेमो) पर्वतोंसे उतरकर झीलें बनातीथीं जिनमेंसे को
पाइस जो अब एक दलदल है सबसे बड़ीथी - यहांकी
राजधानी थीवस (थीवा) थीजिसमें सात दरवाजे थे और
केडमिया नामे किला बड़ा प्रसिद्ध था परन्तु यहांके औ
और नगर भी यूनानके इतिहासमें प्रसिद्ध होने चले आ
रहे हैं जैसे पिलेटिया नगर पर यूनानकी स्वतन्त्रता चाह
वालोंको पराजितसे पुनर्प्राप्त हुई और किरोनिया नगरके
युद्धसे मैसीडोनिया वालोंकी जय होगईथी स्पार्टन लो
गोंका प्रताप ल्यूक्ट्रा के युद्धसे तो उदित हुआ परन्तु ल्यू
केट्रा के युद्धसे नष्ट होगया था, और प्रसिद्ध नगर थेस्पी आ
लिस नगर यूरीपस नदी पर था जहां ट्रायके युद्धके लिये यूना
नी सेना इकट्ठी हुईथी, लिबडिया (लिवाडिया) और ट्रोफोनिय
स देवताकी आकाशवाणीके लिये और आरकोमीनस औ
र समीप ही नमरदेवीके ऐसी डेलियन कुण्डके लिये प्रसिद्ध थे
फोकिस प्रदेश नोसिस और ईटा पर्वत से कारिन्थ खाड़ी तक
विस्तृत था यहां बहुतसे पर्वत मार्ग (दरे) थे इनमेंसे मुख्य
मार्ग वह था जो इलेटिया (फोकिसकी) राजधानीके समीप
था और जिसको फिलिप मैसीडन के राजाने अपने द्वितीय
आक्रमण के समयमें लेलियाथा - पारनेसस और हेलीकन

(१) इसीके नामकी नदी एक ऐटीका प्रदेशमें भी है

वालोंकी सेनाको रोकाथा यहनाम (थर्मोपिली) दो यूनानी श
ब्दोंसे बनाहुआ है थर्मसका अर्थ उष्ण और पिलिका अर्थ द्वा
र अर्थात् उसस्थानके पास उष्णजलके चश्मे थे बहुतसे दि
न तक लोग यह समझतेथे कि यूनानमें केवल थर्मोपिली
के दरेसेही शत्रुका प्रवेश होसक्ताथा इसलिये यह मार्ग यू
नानकी कुंजी गिनाजाताथा - पश्चिमी लोक्रिसको फोसिस
पूर्वी प्रदेशोंसे विभक्त करताथा यहांके लोगोंको ओज़ोली
कहतेथे - यहांका मुख्य नगर नपाकटस (अर्थात् जहाज़
बननेका स्थान) था यहनाम इसकारण पड़गयाथा कि हि
रेक्लिडी लोग यहींसे बेड़ा बनाकर पिलापोनीससमें गयेथे
नपाकटसको अबलिपान्टो कहते हैं और पिछले समयमें
इसी स्थानपर यूरपके (ईसाई) राजसमूह ने इस्तम्बोलके
सुलतान पर १५७१ ई-पी. समुद्री विजय पाई-डोरिस
प्रदेश पहाड़ी और बहुत छोटाथा किन्तु बहुतसे बड़े राज्यों
की वहींसे उत्पत्ति हुई थी इसको टेट्रापोलिस भी कहतेथे
क्योंकि यहां पिण्डस अरिनोपिस, इरिनियम, सिटियम, और
बोइयम चार नगरथे यह प्रदेश ईटाभूधरके दक्षिण और
पारनेससके उत्तर भागोंके बीचमें था - अकारनानिया
हेलसका पश्चिमी प्रदेशथा और अकेलोअस नदीके पश्चिम
से अम्ब्रेशिया खाड़ीतक फैलता चलागयाथा इसके प-
कड़ीके जंगल बहुतथे और यहांके लोग बहुतसे कालतक
असभ्य अवस्थामें रहे यहां अमफिलोचियन आर्गोस और

स्ट्रटस नगर थे यहीं पेक्टि यम अन्तरीप और नगर थे जहांकी विजयसे अगस्टस कैसरको रोमकी राजधानी मानहुई-इटोलिया प्रदेश ईटा नामक पर्वतसे अईयोनियन समुद्र तक विस्तृत था इसके पूर्वमें जो लोक्रिस देश और पश्चिममें अकीलोअस नदी थी यहां कालिडन और थर्मस बड़े नगर थे यहांके लोग प्राचीन समयमें जो बड़े वीर्यवान गिने जाते थे और पीछे इनका बल न्यून होगया परन्तु जब कि रोमवालोंके साथ युद्ध होने लगे तो उनका पौरुष फिर उपजीवित हुआ॥

प्रकरण २

पिलापोनीसस (देशका) भूगोल।

यूनान के दक्षिण भाग को जिसको प्राचीन समयमें पेथियन भूमि कहते थे पिलापस राजाके नामके अनुसार जिसने यहां सभ्यताका प्रचार किया था पिलापोनीसस कहने लगे अब इसभाग को (शहतूत के पत्रकी सी आकृति होनेके कारण) मोरिया बोलते हैं इसके आठ प्रदेश थे १ आरकेडिया २ लेकोनिया ३ मेसिनिया ४ इलिस ५ आर्गोलिस ६ अकाया ७ सिसियोनिया ८ कारिन्थराज्य -

१ आरकेडिया प्रदेश जोकि काव्योंमें बहुत प्रसिद्ध होता चला आया है पिलापोनीससके मध्य भागमें था यह प्रदेश स्विटजरलैण्ड देशके सदृश था और यहांके लोग उसदेशके

लोगोंकी नाईं अपनी स्वातन्त्रता और नकदी के लोभके लिये प्रसिद्ध थे यहां बहुतसी छोटी नदियें झरने और औषधि (सबजी) उत्पत्तिथी अतएव यह प्रदेश गडरियोंके पान नाम देवताके नामसे पवित्र गिना जाताथा यहांके लोगोंने पहले तो नगर नहीं बनाएथे परन्तु जब नगर बने तो उनमें परस्पर विरोध होनेसे उनको बडा क्लेश हुआ कहतेहैं कि पिलासगी जातिकी उत्पत्ति यहींसे हुईथी परन्तु यह तो निश्चय है कि उस जातिके लोग इसदेशमें बहुतकालतक बसतेरहे यहांके मुख्य पहाड़ सिलिनि मिनालस और इरीमैन्थस थे और अल्फियस और इरीमैन्थस यहां बडी नदियें थीं इस प्रदेशमे (याका) स्टिम्फालस नामक झीलथी और इस झील के बिना पिलापोलिससमें और दूसरी कोई नदीथी कहतेहैं कि इरैसिनस नदी जो आर्गालिस प्रदेशमेथी वह धरतीके नीचेसे इसी झीलसे निकलतीथी यहां मुख्य नगर मेन्टीनिया टिजिया आरकोमीनस और (१) मोफिसथे और पिछले समयमें मिगालोपोलिस एक राजधानी बनाईगईथी—

लेकोनिया प्रदेश पिलापोनिसस के दक्षिण पूर्व भागमेंथा यह देश पहाडीथा किन्तु इसमें इतनी बस्तिथी कि यहां सौ नगर और ग्राम बसेथे इस प्रदेशको टेजिटस भूधर आरकेडिया आरगालिस और मेसिनियासे विभक्त करताथा इसमे मेलिया और टीनेरम नामक मुख्य अन्तरीपथीं यहांका मुख्य नगर स्पार्टा (पेलियोकोरी) यूरोटस नदीपर जिसका अब स्-

मान भरमें सब नदियोंसे निर्मल स्थितथा बहुतसे दिनों तक इस नगरकी शहर पनाह और दरवाजे नहीं बनाये गये थे परन्तु जब यह नगर स्वतन्त्र हाकमोंके वशमें होगया तौ इसके गिर्द दीवार बनाई गईथी यद्यपि यह नगर बहुत बड़ाथा किन्तु सुन्दर नहीथा और यहांके मन्दिरादि प्रसिद्ध नहींथे यूरोटस नदीके तटस्थ टूलोंसे अधिक इस नगरकी स्थितिका और कोई चिह्न मालूम नहीं होता एक कवीने कहाहै शिल्पकर्म कीर्ति और स्वतन्त्रता हरहोजातेहैं परन्तु प्रकृति वैसीही सुन्दर रहतीहै यहांके और सिद्ध स्थान ये थे जिथियम जोकि स्पार्टाका नौका आश्रयस्थानथा और जहां पे गेमेमनन कसान्ड्रिमनैसस और कैसैण्ड्राकी समाधि थीं – थेमीकलि सिलासिया और थिरापनि (जहां कैसट् और पालक्सका मन्दिर था) नगर थे टनेरमकी (मेटापान) अन्तरीप नैपच्यून देवताके मन्दिर और एक गुफाके लिये जहांसे कि लोगोंका यह विश्वासथा नरकको मार्गहै प्रसिद्ध थी।

मैसिनिया प्रदेश बड़ा उत्पादक और समतल था यहां मेसिनी (मारोमेटी) बड़ा प्रसिद्ध नगरथा और जब स्पार्टे के लोगोंने उस नगरको अपने वशकरलिया तौ वहांके लोग सिसलीमें भागगये और जो नया नगर उन्होने वहां बसाया उसका भी यही (जिसको मैसिना कहतेहैं) नाम रक्खा इसप्रदेशकी सीमापर ईरा और इथोमि नामक किलेथे जहां स्पार्टे

के साथ युद्ध होनेथे यहांके और मुख्य स्थानोंमें पाईलास (नैवे-रीनो) थी जोकि नेस्टर राज्यकी राजधानी थी और जो प्राचीन और वर्तमान कालमें समुद्रीय युद्धोंके लिये प्रसिद्ध है- इथालिया और मैथोन नगरथे।

आरगालिस प्रदेश सैरोनिक खाडीके दक्षिण दिशामें पेरिकाके मध्यभागतकथा यह इजियन सागरमें ५४ मील तक फैलता चलागयाथा इसकी प्रधान नगरी आर्गस थी-एसिन्नस के राज्यमें माईसिनिनगर मे (जो ऐगेमैमनन राजा का नगर था) राजधानी स्थापन की गई थी परन्तु ट्राय युद्धके पीछे आरगस के लोगोंने इस नगरको नष्ट कर दियाथा यहांके और मुख्य नगर ये थे टिरिन्स जहांसे हर्क्यूलिज नामक योधा अपने साहस कर्म करने चलाथा- ईपीडारस जहां इसक्यूलेपियस देवता के मन्दिरमें रोगार्त लोग बहुत आतेथे निमिया जहां नैपच्यून देवता की उपासनाकेलिये मेले लगतेथे ट्रिजीनी और नापलिया (नैपोलीडी रोमेनिया) प्राचीन और वर्तमान समयमें यूनानके पूर्वमें प्रसिद्ध बंदरगाहें चलीआई हैं।

इलिस प्रदेश पिलापोनि ससके दक्षिणमें था यह यूनानकी पुण्य भूमि गिनीजाती थी और जबकि सारे देशमें युद्ध होताथा तो इसमें शान्ति रहतीथी और जब योधा वा सिपाही लोग इस प्रदेशमेंसे लंगते तो अपने शस्त्रोंको त्याग देतेथे इसमें अल्फियस पिनियस और कई एक नदियें थीं

इस प्रदेश के तीन भाग थे एकतो खास इलिस जोकि यहांकी प्रधान नगरीके नामसे प्रसिद्ध था(इलिस नगर पिनियस नदी पर था) दूसरा पिसाटिस जो पाइसा नगरके नामसे प्रसिद्ध था और जिसके समीप ओलिम्पिया नामे मेले प्रति पांचवे वर्ष लगते थे ओलिम्पिया (यह पाइस के पासकी भूमिका नामथा) का मुख्य मन्दिर अल्फियस नदीके तट पर जलथा है और वनारोंके वृक्षोंके उद्यानमे था इसको इलिस के लोगोंने पैरीक्लिज़ के समयमे बनायाथा परन्तु यूनान कीसारी राजधानियोंने खरचके लिये धन दियाथा क्योंकि यह मन्दिर सारी यूनान का पूज्यस्थान था जिसमे थेसियस नामक मन्दिर जितनाथा परन्तु उससे अधिक सुन्दर और बड़ाथा इसके अन्दर फिडिअस नामक बड़े प्रसिद्धशिल्पीके हाथकी खोदकर बनीहुई जूपिटर देवताकी साठ फुट ऊंची मूर्तिथी इसके सदृश खदीहुई मूर्ति पृथिवीपर कभी नही बनाई गयी इससे अधिक वहां और बहुतसे छोटे मन्दिरथे और सारे उद्यानमें मुख्ययोधाओं और देवताओं की मूर्तियां थीं अतएव यूनानके लोगोंने इस स्थानमे कईवरसोमे बहुतसा धन इकट्ठा किया हुआथा हीरन इतिहासिकने लिखाहै कि जब कोई यूनानी ओलिम्पिया मे चलताथा तो उसके दिलमे गर्व और हर्ष होताथा क्योंकि वह अपने दिलमे कहता कि "उसने पृथिवी पर सबसे बड़ा अद्भुतस्थान देखाहै और जो कुछ देखा गया है वह उसके यूनानी भाईयोंने बनायाहै" पिलापोनिसस के पश्चिम उत्तर

भाग को पहले तो इसिलिया कहते थे फिर यहां अफ्रीकासे यूनानी आईओनियन लोग आकर बसे और उन्होंने उसका नाम आईओनिया रखा परन्तु अन्तमें एकिअन लोगोंने उनको वहांसे निकाल उसका नाम अकाया रखा यह प्रदेश अपने मलयजके लिये प्रसिद्ध नहीथा यद्यपि इसमें बहुत सी अल्प नदियां भी बहतीथीं यहांके लोग खलाहकारथे स्वतन्त्र रहना चाहतेथे परन्तु अपने राज्यका प्रबन्ध अच्छे नियमोंसे करतेथे इसलिये जब सारे यूनानमें पिलापोनिसस युद्ध होरहाथा तो अकायामें शान्तिथी - बारह नगर जिनमें से डाइमी, पाट्रि और इजियम मुख्यथे - पिछले समयमें जब मेसिडोनिया और रोमवालों का प्रभुत्व बढा तो एकिअनजातिकी सन्धिने यूनान देशको उन दोनों जनपदों के आक्रमणों से बचाव रखा -

सिसिओनिया प्रदेश को अकायाका एक भाग समझते थे यह प्रदेश सिसिओन नगरके होनेसे जो ईसासे दो हजारवर्ष पहले बनाया गयाथा प्रसिद्धथा - पिलापोनिसस और हेलस के बीचमें कारिन्थ डमरूमध्यथा इसके पूर्व सैरोनिक खाड़ी और पश्चिममें कारिन्थ खाडी थीं इनदोनों खाड़ियों के, बीचमें यूनानवालोंने नहर निकालने के लिये बहुतसे उद्योग कीए परन्तु निष्फल हुये और इसलिये कोरिन्थ डमरूमध्यके बीचमें नहर निकालनी प्रत्येक असम्भव कामकरने के लिये एक कहावत होगई - इस

मार्ग (उमरूमध्य) पर नैपट्यून देवता की उपासना में उस देवता के मन्दिर के पास मेले लगा करते थे और इस स्थान पर यूनानियों ने कई बार अपने शत्रुओं को रोका क्योंकि तंग मार्ग के कारण थोड़ीसी सेना एक बड़े समूह को रोक सकती थी उमरूमध्य के दक्षिण ओर कारिन्थ नगर था - यह पहले समय में इफाईरी कहलाता था और प्रायः चार मील लम्बा था और एक पहाड़ी के नीचे बना हुआ था जिस पर ऐक्रा कोरिन्थ नामक किला था जो यूनान के सारे किलों में सबसे बड़ा मजबूत था और कदाचित पृथिवी पर इस किले का स्थान बहुत अच्छा था क्योंकि यहां से सारे पिलापोनी सस का सौन्दर्य्य दृष्टिगोचर होसकता था उसके नीचे तो कारिन्थ नगर व्यापारी गणों समेत दिखाई देता था आगे की ओर सेंचिरीइ नामक सारोनिक खाड़ी पर और लेचियम कारिन्थ खाड़ी पर नौका आश्रय स्थान थे और पार्नेसस और हैलीकन पर्वत दिखाई देते थे कारिन्थ का राज्य यूनान के सारे राज्यों से छोटा था परन्तु यहां की वृद्धि व्यापार के कारण बहुत होगई थी।

प्रकरण २

यूनान देशीय (एजियन और मेडीटेरेनियन समुद्रों में) द्वीपों का वर्णन।

थ्रेसीय द्वीप एजियन सागर के उत्तर भाग में थे - इन में थे सस, समोथ्रेस और इम्ब्रस बड़े प्रसिद्ध थे थेसस (टैसो)

थोड़ी ओर पश्चिमको है लेमनोस द्वीपथा जहांकी स्त्रीयोंने अपने भर्तोओंके मारे जाने पर शत्रुओंको पराजित कियाथा इनके दक्षिणको सिपरस्मुसे कोपिलस ओर स्काईरस द्वीपथे।
टेनीडस के दक्षिणको ओर इफेसस नगरके सामने एशिया तट समीप लेसबस (मेटीलिन) द्वीपथा जहां बहुतसे प्रसिद्ध ग्रन्थकार लोगोंने जन्मलियाथा इसके बड़े प्रसिद्ध नगरोंमे से, मिथिम्ना नगर जहांपर दाखके बनथे जिनसे लेसबीनामे शराब बनती थी और सिटीलीनी (कैसट्रो) जो इसद्वीपका वर्तमान समयका नाम है दक्षिणको चिओस (सीओ) द्वीपथा जहां दाख और संगमरमरकी खान होती थी- इजियन सागर मे सबसे बड़ाद्वीप यूबिया (एगरीपो) था उस समय इसद्वीप और बीओशिया प्रदेश तटके बीचमे एक जलडमरूमध्यथा जिसको यूरीपस कहतेथे परन्तु अब उस जलमार्गमे वहां मिट्टी भरगई है यहांके मुख्य नगर चालसिस, इरेट्रिया और ओरियस थे इस पिछले नगर (ओरियस) के समीप आरटीमिसियमकी प्रसिद्ध अंतरीप थी- सैरोनिक खाड़ीमें सैलेमिस और इजाईना नामक द्वीपथे इनमेसे सैलेमिस (इलीमी) इसलिये प्रसिद्ध था कि ऐजेक्स और टूसरके पिता टेलीमानकी राजधानी थी पिछले समयमें फारस वालोंकी जहाज़ी सेनाके इस स्थानपर पराजित होनेसे और भी प्रसिद्ध हुया इजाईना (इनजिया) द्वीप जिसको प्राचीन समयमे इनोन कह

तेथे - एकतीसे बडा मजबूत बनाहुयाथा यहांके लोग समुद्र यात्रामें बडे निपुणथे और उनका पौरुष सैलेमिसके युद्धमे स्पष्ट प्रतीत हुयाथा - यूबीया द्वीपके दक्षिण रुखे की ओर एक द्वीप समूहथा इसको साईकलेड कहतेथे और यह नाम इसलिये पडगयाथा कि वह समूह डेलस द्वीपके चारों ओर वृत्त बनाये हुये पडाथा डेलसवा आरटीजिया द्वीप प्राचीन इतिहासमें अपालो और अर्टे-मीसा देवताओंकी जन्म भूमी गिनाजाताथा (यूनानी प्राचीन) कवी कहते हैं कि प्राचीन समयमें जबकि लटोनाको जूपीटरसे गर्भ हुया तो जूनो देवीने ईर्षाकरके उसे यह शाप दिया कि "पृथ्वीपर तुझे स्थान नहीं मिलेगा" इस पर नेपचून देवताने डेलस द्वीपको समुद्रसे निकाला[1] और यहभी कहते हैं कि अपालोने उसे माईकोनि और जियारस नामक द्वीपोंके साथ बान्ध दिया। पहले इतिहास के समय मे डेलसी अपालो देवताका मन्दिर सारी यूनानमे बडा प्रसिद्धथा, इसकी पूजाकेलिये यूनानके हर २ भागोंसे यात्रीलोग आयाकरतेथे और एथिन्स नगरसे प्रतिवर्ष एकनौका जिसकानाम पैरेलसयी थी चढानेके लिये भेजी जाती थी और जबतक वह नौका वहांसे उलटी नही आतीथी तब तक एथिन्स मे कोई अपराधी मारा नहीं जाताथा - पिलोपोनिसस युद्धके समय यह द्वीप शुद्ध कियागयाथा और तबसे इसमे कोई बालकजन्मने वा कोई मनुष्य मरने नही पाताथा

(१) नाकिलदेना उसपरवसे

जब बालक वा कन्याका जन्म होने लगताथा वा जब कोई मनुष्य मरने लगताथा तौ गर्भवती स्त्रीको वा मरने वालेको एक पासके द्वीपमे लेजाया करतेथे - इनके सिवा और प्रसिद्ध द्वीप ये हैं पेरस, सीओस, पैरोस जिसमे संगमर्मर् होताथा, मेलस, नैकसस जिसमे बेकस देवताकी पूजाहोतीथी और आईओस जिसमे होमरकवी की समाधि बनातेथे - साईकलेड्के दक्षीणमे और एशिया तटसमीप एक और द्वीप समूह था इसका नाम स्पोरेडस था, - इनमेसे प्रसिद्ध ये थे - सेमोस जो जूनो देवीकी पूजाका स्थानथा और जिसमे पाईथेगोरस यूनानी मुनीका जन्म हुआथा इसमे शराब और मिट्टीके बर्तन बनतेथे इसकी राजधानीका स्थान बडा पक्का बना हुआथा जिसमे जलके पहुंचानेका यंत्र और बंदरगाहकी सहायताके लिये बन्धभी बने हुये थे - आईकेरिया जिससे आईकेरिय समुद्रका नाम पडाथा, पेटमस जहां युहन्नाने(१) प्रकाशित पत्रका लिखी, कोस जिसमे हिपोक्रेटस बडा प्रसिद्ध वैद्यका निवासस्थानथा इसद्वीपमे एक बडा भारी छतना चिनारका वृक्ष अबतक है जिसके नीचे हिप्पोक्रेटस अपने शिष्योंको पढ़ाया करताथा - स्कारपैन्थस (स्कारपेंटो) जिससे कारपेथीय समुद्रका नामपडा और ये दस द्वीपभी हैं - रोड्स एक बडा सुन्दर द्वीप है इसमे बहुतसे फल और फूल पैदा होतेथे परन्तु तुरक लोगोंके अन्यायसे इसकी सारी बाहुल्यता दूर होगई है जहां आगेसे बडे ब

(१) ईसाका चेला

व जंगल पड़ाहै और जहां बस्तीथी वहां उजाड़ इसके दा-
ला, गुलाब और निरंजियें बड़ी प्रसिद्धथीं - इसकी पहली
हद्दीके चिन्ह कहीं २ अबतकभी देखेजाते हैं परन्तु तुरक
लोगोंने इसका सारा व्यापार अपने हाथमे लिया हुयाहै
इसके बंदरगाहके दरवाज़े पर एक कलोसस नामक पीत-
लकी बड़ीभारी मूर्त्तिथी जिस मूर्त्तिके दोनों पांव उसदो
के दोनो ओर रखे हुयेथे और इतनी बड़ीथी कि बड़ाज-
हाज़भी इसके नीचेसे लंगजाताथा यह मूर्त्ति सूर्य्यके
नामपर वहां खड़ी की गईथी परन्तु एक भूकंपसे गिरपड़ी
थी तब मुसलमानोंने इसको तोड़डालाथा - और प्रसिद्ध
नगर इसद्वीपमे लिन्डस और कैमीरस थे। क्रीट (कैंडि-
या) द्वीप यूनानी द्वीपोंमेसे सबसे बड़ाहै और इजियन समु-
द्रके समीप है प्राचीन समयमे यह अपने एकशत नगरों
केलिये प्रसिद्धथा जिनमेसे मुख्यनगर ये थे (अ) नोसस
साईडोनिया, गारटीना - इसद्वीपमे यूनानके कई एक दे-
वताओंका जन्महुयाथा जैसे जूपीटर देवताका जन्म ईडा
पहाड़ पर हुयाथा। क्रीटद्वीपको मिसरके समीप होनेके कार-
ण इसके निवासी पहले समयमेही शिक्षित होगयेथे।
कहतेहैं कि लाईकारगसने अपने कानून और धर्मशास्त्र
के नियम उस शाहसे लियेथे जो माईनस (क्रीटका पहले
समयका राजा और धर्मशास्त्र बनाने वाला जो जूपीटर और
यूरोपाका पुत्रथा) ने बनायेहुयेथे - और डीडालसने

जसने शिल्पविद्यामे कई नयीं बातें उत्पन्न करीथीं शिल्पविद्याकी यूनानमे उन्नति हुई - पहले पहल तो क्रीटके लोग बली गिने जातेथे परन्तु पीछे बलमे घटगये और यूनानवालोंके (खासकर ऐथिन्स वालोंके) वेतनार्थी सिपाही बनकर पिलापेनीसस युद्धमे काम देने लगे - क्रीटके उत्तर पूर्वमे साईप्रस द्वीपहै यह द्वीप वीनसदेवीकी प्रिय भूमि थी इसका "पेफिया" उद्यान और उसकी सुन्दरता सदा कवियोंके काव्योंमे सुलेमान यहूदी राजाके समयसे रिचर्ड सिंहचित्त इङ्लैंडके राजाके समयतक प्रतिष्ठित होती चली आयी है परन्तु वर्तमान समयमे इसद्वीपकी क्रीटकी नांईं उदेशा हो गई है - लैमेका नगर जो राजधानी है प्राचीन सीटियम नगरके खंडरों पर बनाहूया है सिवा इस नगरके एक और प्रसिद्ध नगर था जिसका नाम सेले मिस (फैमेगसटा) था और जिसको टिय़ूसर ने ट्राय युद्धके पीछे बनाया था ॥

प्रकरण ५

आईओनियन द्वीपोंका वर्णन ॥

कारसाईरा द्वीपका कथन जिसको प्राचीन समयमे उरिपेनी (कारफू) कहतेथे होमर कवीने फीआसिया नामसे लिखा है इससे मालूम होताहै कि उस द्वीपकी भूमी उर्वराथी। यह द्वीप ईपाइरसके उस भागके साह्मने था जिसको थेसप्रोटिया कहते थे इसद्वीपके मुख्य नगरका वही नाम[1] था और अबभी वही नामहै जो इस का प्राचीन समयमे था और इ-

[1] अर्थात् प्राचीन समयमे कारसाईरा था और वर्तमान समयमे कारफू है

स समयमे है; इसमे कारिन्थ वालोंकी बस्तीथी जिसके कारण इसकी प्राकृत उत्पत्तिकी बड़ी उन्नति हुई। ल्यूके डिया (सैंटामारा) द्वीप पहले प्रायः द्वीपथा परन्तु वह भूमीथी जिससे यह द्वीप भूमीसे मिला हुआथा पीछे काटी गयीथी इसलिये कि नौका केलिये मार्ग बन जावे। इस मे बड़ा प्रसिद्ध स्थान लियूकस नगर (और भूमिनासिका) था जहांसे अभागी प्रीमम लोग अपने आपको समुद्रमे गिरा देतेथे - इकीनेउस (कार्योलेरी) एक छोटासा द्वीपोंका समूह था और अकीलूस नदीके मुहके समीप पड़ाथा इसमेसे प्रसिद्ध द्वीप डूलिचियम था जो यूलीसस की राजधानीमेथा, इसके समीप इथाका (थीआका) द्वीपथा इसका वर्णन होमर कवीने कियाहै इसकी राजधानीका नाम वहीथा जो इसकाथा और वह राजधानी नेरीटिस पहाड़के नीचे स्थितथी - सिफेलोनिया द्वीप को प्राचीन कालमे शीरिया कहतेथे यह द्वीप बड़ा बड़ा था परन्तु प्रसिद्ध नहीथा इसके मुख्य नगरका नाम सेम था जो नाम कभी २ सारे द्वीपको दियाजाताथा - उसके दक्षिणकी ओर यासिन्थस (ज़ेंटी) द्वीपथा। इस द्वीपकी राजधानीका वही नामथा जो इस द्वीपकाथा इसमे लकड़ीके बन चास और नाफथा बहुत होते थे नाफथा तेलतो इतना होताथा कि कभी २ समुद्रमे जागिरताथा - पिलापोनीस सके पश्चिममे स्ट्रोफेडस (स्ट्रीवोली) द्वीप हैं इनको प्राची-

(१) लियूकस नामक भूमिनासिका

न समय मे एकोही रहतेथे क्योंकि लोगोंका यह विश्वासथाकि ये द्वीप किसी समयमें तरतेथे इनके दक्षिणमें सर्पेकोट्रिया (सर्पेंमाई) द्वीपहै जो पाईलस (नैवेरीनो) के टोके समीपहै पिलापोनीससके दक्षिण सिथीरिया (सेरीगो) द्वीपहै यह वीनसदेवीके नामसे पवित्र गिना जाताथा ।

प्रकरण ५

यूनान देशकी राजसम्बन्धी और सांसर्गिक अवस्थाका वर्णन ॥

यूनान देश वालोंकी प्राचीन समयमें की सांसर्गिक अवस्था का वर्णन करना बिल्कुल असम्भवहै परन्तु जबसे यहांके इतिहास निर्णय हुआहै तबसे उस अवस्थाका वर्णन करना सम्भवहै यहांके लोगोंकी दो मुख्य जातियांथीं एक तो आइ-ओनियन और दूसरी डोरियन और ये दोनों परस्पर सभाव और आचारोंमे भिन्न थीं इनसे अधिक यहां एकियन और इयोलियन दो और जातीथीं परन्तु ये तो इन्हीं जातियों मेंसे एक न एक के साथ मिलतीथीं - आइओनियन लोग प्रजाराजके अनुरागी और पौरिक अधिकारोंके विरुध होनेके लिये प्रसिद्धथे, ये लोग मगन और चंचलसभावके थे और अपनी राजनीतिमे शीघ्रही परिवर्तन करने को मग्न होजातेथे इनको अपने देशका बड़ा गर्भथा ये शिल्पशास्त्रमें बड़े निपुण थे किन्तु युद्ध करनेमेभी बलवानथे और यद्यपि वे आपारप्रति विमुखनहीं थे तोभी इन्होंने उस पर बहुतसी रोकें लगाईहुई

थीं ये लोग अपनी इतरदेशीय व्यक्तियों प्रति बड़े निर्दयी थे-
डोरियन लोग अपने आचरणोंके सीधापन और प्राचीन निय-
मोंके अनुसार चलनेके लिये प्रसिद्ध थे ये कुलीन राज्य (अर्था-
त् अपने राज्यको कुलीन जनोंके हाथमें रखना) चाहतेथे
और वृद्ध पुरुषोंको बड़े २ राज्य अधिकार देते थे क्योंकि
ऐसे लोग नई रीतिके सदाकाल विरुध रहतेथे वे लोग
अपने राज्यके बढ़ाने पर बड़े तत्पर थे और उनका मुख्य
अभिप्राय यह था कि अपनी प्रजाको युद्धशील एवं सारे
डोरियन देशोंमे दासत्व का प्रचार बहुत था और दासीजनों
को स्वतन्त्र होनेकी आशा बिल्कुल नहीं होतीथी क्योंकि
इनके राज्यसम्बन्धी नियमोंमे परिवर्तन तो कभी होताही
नहीं था ये लोग व्यापार के तो बिल्कुल विमुख थे क्योंकि
इनका यह विश्वास था कि व्यापार वृद्धिसे प्रजाकी पद्धतियों
में जो सनातन समयसे स्थित चली आई थीं परिवर्तन हो
जाता है और शिल्पविद्याको इसलिये नहीं सीखतेथे कि
इससे लोगोंकी युद्धमें अनुरक्ति जाती रहती है और वे निर्ब-
ल होजाते हैं अतएव डोरियन लोगोंके आचार आईओनि-
यन के आचारोंसे केवल इस विषयमें अच्छे थे कि वे चिर-
स्थाई थे परन्तु इससे कुछ लाभ नहीं था क्योंकि यहां
परिवर्तन होताहीं नहीं था और कोई ऐसी रीति भी नहीं थी
जिससे वे नियम जो समय पाकर उपकारिक नहीं रहते थे
फिर बदले जावें।

इन दोनों जातियों (के आचारों) का परस्पर भेद यूनान के सा
रे इतिहासमें स्पष्टहै और एथिन्स और स्पार्टाकी शत्रुताका य
ही कारणथा इससे उतरकर यूनानके लोकाचारका बड़ाभारी
चिन्ह यहथा कि इसमें इतनोस्वतन्त्र राजसियेंथीं जितने प्रदेश
वा बड़े नगरथे जैसे एटीका मेगारिस और लिकोनिया प्रदेशोंके
भिन्न२ राज्य गिनेजातेथे और जैसे अकाया बियोशिया और
आरकेडिया प्रदेशोंके नगर परस्पर स्वतन्त्रथे परन्तु थीवस
बिओशियाके सारे और नगरों का अधिपति गिनाजाताथा
इस अधिपत्यको (यूनानीभाषामें) हिजिमोनी कहतेथे और
जो नगर (किसी नगरके) इस प्रकारसे आश्रित होतेथे उन
को अपने अधिपतिके साथ युद्धोंमें सहायक होना पड़ताथा
इतरदेशोंसे उसीके द्वारा सम्बन्ध रखने वा तोड़ने पड़तेथे और
जो जो सन्धि वह [1] नगर किसी दूसरोंसे करे उसे मानना पड़ताथा
परन्तु अपने घरके राज्य व्यवहारोंमें बिल्कुल स्वतन्त्र होतेथे
अतएव इस [2] देशके इतने छोटे २ राज्योंमें विभक्त होनेसे नीति
शास्त्रका यहां बड़ा और बहुत शीघ्र प्रचार हुआ था।

यद्यपि यूनानके लोगोंमें राज्यके विषयमें इतना भेदथा किंतु
वे लोग बहुतसी बातोंमें परस्पर सम्बन्धरखतेथे इनमेंसे धर्मा
चार और उत्सवोंका एक होना सबसे मुख्यथा और यहां जो
मेले होतेथे उनमें यूनानके लोगही केवल लिये जातेथे
और यद्यपि यहभी माना जावे कि इन लोगोंने अपना धर्मा-
चार एशियासे लिया किन्तु इन्होंने उसे अपना एक विशेष ध-

(१) अर्थात् अधिपति नगर
(२) यूनान

में बनालिया एशियाके सारे देवता असाधक शक्तियोंके स्वरूप हैं अर्थात् उनमे (प्राकृतिक उत्पत्तिके स्वरूप जैसे) सूर्य्य पृथ्वी वा कोई नदी वा प्रकृतिकी कोई शक्ति जैसे उन्मादिक और नाश करने वाली शक्तियें मानी जाती हैं परन्तु यूनानके देवता तो मनुष्याकृतियें केवल उनमें गुणोंकी उत्कृष्टताथी अतएव एशियाके देवता भयदायक थे जिनकी पूजा करनेको एक विशेष पूजारियोंकी जाति नियत होतीथी - इस एशिया भयदायक धर्म्माचारके स्थानमें यूनानके लोगोंका धर्म्म प्रीतिमयथा ये लोग अपने देवताओंको अपने मित्रोंकीनाई समझतेथे और उनकी पूजा प्रीतिमय और हर्षजनक थी पूजारी होनेकी पदवीका सबको अधिकार था यह निश्चय है कि इस धर्म्मका विशेषस्वरूप होमर और हिसियड नामक दो प्रसिद्ध कवियोंके वर्णनसे नियत हुआ क्योंकि यह धर्म्मविशेषकरके कविता सम्बन्धि है ऐसे धर्म्मका गुण सुन्दर विद्या (राग चित्रादि) पर बहुत हुआ और धर्म्माचारका ज्ञान और वेदान्तशास्त्रके भिन्न होनेसे यूनानी विद्याकी बड़ी उन्नति हुई इससे उनाकर डाडोना और डेलफीकी आकाशवाणियां और ओलिंपिया और डेलसके मन्दिर सारी यूनानसे सम्बन्ध रखतेथे परन्तु आकाशवाणियों पर डोरियन लोग आईओनियन लोगोंसे अधिक विश्वास रखतेथे इनकी पूजा इच्छाप्रदथी और इनमें जोजो बहुतसा दान दिया जाताथा वहभी इच्छाप्रद होताथा डेलफीका मन्दिर अमफिकटियन सभाकी सहा

यनामें था परन्तु यह सभा उस मन्दिरकेही कार्य्यमें नियतन-हीथी किन्तु बहुतवार यूनानके सारे राज्य और उनके धर्म्मा-चारमें भी (युद्ध वा शान्तिके समय) बड़ा प्रभुत्व रखतेथे य-हांके मुख्य मेले चार होतेथे ओलिंपियन, पिथियन, इस्थि-मियन और निमियन इतर देशके लोगोंको इनमें देखनातो मिलसकताथा परन्तु यूनान और यूनानी इतर देशीय बस्ती वालोंके सिवा औरको अंशभागी होना नहीं मिलताथा अत एव इस अधिकारसे यूनानके सब जातियोंमें परस्पर सम्बन्ध रहताथा इन मेलोंमें अंशभागी होना बड़ा प्रतिष्ठित गिनाजा-ताथा - यूनानके सब राज्य प्रबन्ध प्रजाराज्यके नाईं था पर-न्तु इनमें इतना भेद था कि दो राज्योंके प्रबन्ध एकसे नहीथे सामान्यतः यहां कृषिकर्म्म दासों (गुलामों) को करना पड़ता था और इससे शिल्पविद्या जन और व्यापारियोंकी बड़ी हानी होतीथी - अन्यदेशीय व्यापारियोंका बहुत निरादर होताथा और उनको नगरस्थ लोगोंके अधिकार कभी भी नही मिलस-कतेथे - रुपैये पैसेका बनाना (सिक्का ज़रब का अधिकार) रा-ज्याधिकारोंमें सेथा परन्तु मालगुज़ारीका प्रबन्ध यूनानमें बहु-त कालके पीछे प्रचलित हुआ जबतक यहांके लोग स्वयंही सिपाहियोंका काम देतेरहे तबतक तो उनपर टिकस नही लगा था परन्तु जब वेतनार्थी सैन्य नियत होने लगी जब दूर२ के देशोंमें हत जाने लगे और जब जहाज़ी सेनाके उपकारिक होनेसे नाविक लोगोंको बहुतसा माषिक मिलने लगा तो

इनसे बज़त नगरोंको बड़े क्लेश सहने पड़े दूसरा कारण व्यय का यह था कि यहां बड़े २ उत्सव और नाटिक लीलाके होनेके लिये राज्यधन का व्यय होताथा और एथिन्समें डाइकास्ट अथवा पंचोंको न्याय करनेके लिये रुपया दियाजाताथा- परन्तु इसरीतिसे द्विगुण हानी होतीथी एकतो राज्यपर व्ययका बोझ पड़ताथा दूसरा पंचोंके बज़त होनेसे उनको थोड़ा मिलताथा इसलिये वेलोग न्याय अच्छा नहीं करतेथे धर्म्मके कविता सम्बन्धि और राज्यप्रबन्धके स्वातन्त्र होनेके कारण इस देशमें सर्वप्रकारकी विद्याकी वृद्धि बज़त ऊई और इनका राजनीतिपर बड़ागुण ज़्या दुःखान्त नाटक और रेखता की कविता लिखने वाले देवताओं की उपासनामे लिखतेथे और परिहास्य नाटकके लिखने वाले राज्य व्यवहारोंकी इतनी स्वातन्त्रता से परीक्षा करतेथे कि इस समयमे यूरपवाले यन्त्रालय सम्बन्धि स्वातन्त्रता उतनी नहीं रखते और वक्ता लोगोंकी प्रभुता एथिन्समे बज़त होतीथी परन्तु इसीके नीति दोष हीन नहीथी डोरियन और आइओनियन लोगोंकी परस्पर शत्रुता और छोटे २ राज्योंमें उपद्रव का मचना और धर्म्मकी हानि ये सब इस नीतिके अचिर स्थायी करने के कारण थे और यद्यपि यहांका धर्म्माचार बड़ा मनोहर था किन्तु यह चिरस्थायी नहीं होसकता था क्योंकि उसकी शक्ति केवल प्रकृतिके अनुसार होतीथी धर्म्म(१) पर नहीं थी और इस धर्म्मके करने कराने के लिये कोई नियम नियत नहीथा।

(१) अरबी भाषामे ईमान कहतेहैं

प्रकरण ६

यूनानका संप्रदाय इतिहास अतिप्राचीन समय से ट्राय युद्ध तक ॥

पवित्र इतिहास (अंजील) से मालूम होताहै कि ग्रेस मेसीडन और यूनानी प्रदेशोंमें इतर पश्चिमी देशोंसे पहले लोग आकर बसेथे ये लोग गडरिये और जंगलीथे उस समय उनमें शिष्टाचारीका यही चिह्न पायाजाता था कि वे लूटमार और समुद्रीय चोरजातियों से बचनेके लिये आपसे सन्धिकर लिया करतेथे पिलासगी जातीने सबसे पहले यूनानमें प्रथम पायाथा ये लोग एशियासे आकर पहले पिलापोनिसस में बसे जहां इन्होंने सिसियोन (२०००इ.पै.) और आरगस (१८०० इ.पै.) नगर बनाएथे इनलोगोंका अधिपति इनाकसथा जिसको इब्राहीम का समकालीन गिनतेहैं परन्तु इसका कुछ निश्चय वृत्तान्त मालूम नहीं - कहतेहैं कि पिलासगी लोगोंने यूनानमें साईक्लोपि नामक स्मरणार्थक स्थान (जो आजतक हैं) बनायेथे ये स्थान बड़े २ पत्थरोंको एक दूसरेके ऊपर रखकर बनाये गयेथे और साईक्लोपी दुर्ग ऐसी रीतिसे बनाये गये थे कि युद्धके समय जब शत्रु किसी दुर्गको आघेरे तो शीघ्रही उस दुर्गके अन्दरतकना (अर्थात् कईएक दीवारोंको लंघकर) जासके हिन्दुस्थानके पहाड़ों और और स्थानों (जैसे कि दक्षिणीय समुद्रद्वीपों) मे भी इनके सदृश दुर्ग बनेहुए पाये

जातेहैं पिलासोनिससके पिलासगीलोग अकीयस आपिय स और पिलासगस नामक योद्दाओंकी सहायतासे पेरहि बिओशिया और थैसली प्रदेशोंमे गए परन्तु यह मालूमहो ताहै कि पूर्वोक्त योद्दाओंके नाम तीन भिन्न२जातियों को सूचन करतेहैं - इन प्रदेशोंमें उन्होंने कृषि कर्म करना आ रम्भ किया और वहां उनका प्रभुत्व होसो वर्षतक रहा - (१७०० से १५०० इ.पे. तक) हेलिनिस (जो एक कोमल स्वभाव और दयावान जातिथी) लोगोंका प्रकाश सबसे पहले फोसिस प्रदेशमे पारनैसस पर्वत पर डूकेलियन नामक सेनापतिकी सहायतामें हुया (४३३ इ.पे.) व हांसे वे थैसलीमें आये और पिलासगी लोगोंको निका लकर उन्होंने अपना प्रभुत्व स्थापन किया - इस समयसे पीछे हेलिनिसजातिके लोग बहुत बढ़गयेथे और यूनानके कई प्रदेशोंमे जाबसे जहां२ वे बसने गये वहां२से उन्होंने पिलासगी जातिके लोगोंको निकाल दिया इस पिछली जातिके लोग आरकेडिया और डाडोना पहाड़ी प्रदेशों में जा छिपे परन्तु बहुतसे इनमेंसे इतालिया क्रीट और२ द्वी पोंमे चलेगये इससे बारह सो वर्षके अनन्तर आरकेडिया इ टली आदि देशोंमे इन लोगोंका पता मिलताथा - हेलिनिस जातिके लोगोंके चार भागथे इओलियन, आईओनियन डोरियन और एकीयन इनजातियोंके लोगोंकी बोलियें लोकाचार और राज्यव्यवहार परस्पर भिन्नथे इनसे अधिक

इस देशमें और भी अन्य जातियें थीं परन्तु वे इनमें से एक न एक के साथ सम्बन्ध रखती थीं हेलिनिस जातीका नाम डचूकेलियनके पुत्र हेलिन नामसे पड़ाथा हेलिन के तीन पुत्र थे डोरस इओलस और एथस- इनमें इओलस थेसलीके एक भाग फथिओटिस में जा बसा और इओलियन जाति उसीके नामसे कहलातीथी- डोरस इसटिओटिस प्रदेशमें वसा और डोरियन जाती उसीके नामसे कहलातीथी एथस को उसके भाईयोंने निकाल दियाथा तो उसने ऐथिन्स में जाकर वहांके राजा ईरेकथियसकी पुत्री क्रूसासे विवाह किया उसके दो पुत्र हुए एकका नाम तो आईओन और दूसरे का एकियस था- ईरेकथियसके मरनेके पीछे एथस ईगी ऐलिया प्रदेशमें जिसको पिछले समयमें अकाया कहतेथे चलागया और वहां जाकर मरगया- आईओन जो ऐथिन्स वालोंकी सेनाका अधिपति हूया था ईगी ऐलिया[१] प्रदेशका नाम आईओनिया रखा- एकियस एकियन जाति का अधिपति होगया और उसने लकोनिया और आरगोलिस प्रदेशोंको अपने वशकरलिया- इओलियन जाति अकार्नेनिया इटोलिया फोसिस लोक्रिस और इलिस प्रदेशोंमे जाबसीडोरियन लोग इसटीओटिस से निकाले जाकर मेसीडोनिया प्रदेश और क्रीटद्वीपमे चलेगये इस जाती का एक भाग डोरिस प्रदेशमे जाबसा परन्तु पीछे इसको हिरेक्लेडिकी सहायतामें वहांसे उठकर पिलापोनिसस में

(१) आईओनने ईगी ऐलिया प्रदेशको अपने वश करके उसका नाम बदलाथा।

जाकर बसना पड़ा आईओनियन लोग ऐटिका और इथिओपि-या प्रदेशोंमें बसे थे परन्तु जिस समय कि डोरियन जाति की यात्रा हुईथी उसी समय एकियन जातिके लोगोंने उन्हें इथि-ओलिया प्रदेश से निकालकर उसदेशका नाम अकायाला एकियन जातिके लोगोंके पास लेकोनिया और आरगोलिस प्रदेशथे परन्तु जबकि डोरियनजातिने उनको वहांसे निकालदिया तो वे इथिओलियामें जा बसे - सोलवींसदी ई. पै. के मध्यसे बारहवीं सदी ई. पै. के मध्यतक मिसर फि-निशिया और फरीजिया देशोंसे बहुतसे लोग आकर यूनान मे बसे गये ये लोग अपने साथ उस सभ्यता और उन्नति को लाये जो उनके देशोंमे प्रचलित थीं आजकल कईएक इति-हासिक इनलोगोंके आकर बसनेको नहीं मानते यद्यपि प्राचीन इतिहासिक इस विषयमें एकहैं परन्तु उनको जो नहीं मानते यह उत्तर दिया जासक्ता है कि इन इतर देशीय लोगोंकी यूनान देशमें कोई विशेष जाति नहीं हुई इसलिये जितने लोग बाहरसे आये वे यूनान वालोंमे मिलगये दूसरा उत्तर यहहै कि यूनानवालोंने जोकुछ सभ्यता और विद्याके विषयमें और देशोंसे लिया उसे अपनाही बनालिया इन बस्तियोंमेसे मुख्य ये थीं।

१ सीक्रापसने १५०० ई. पै. मे मिसरके साइस नगरसे (जो डेलटामेथा) आकर ऐटिकामें बस्ती डाली और (कहते हैं कि) विवाहादि नियम स्थापन किये।

(१) जानते हैं

२ उसी वर्षमें डैनास नामक एक योद्धा अपनी पचास बेटि-[1]
यों समेत मिसरके उत्तर (लोअर) भागसे आया और आर्गसमें
बसा।

३ केडमस नामक एक फिनीशियादेशका योद्धा बिओशि-
यामें आकर बसा इसी योद्धाने थीब्स नगरको बनाया और
यूनानमें अक्षरमाला (लिखनेपढ़ने)का प्रचार किया बहु-
तसे लोग केडमसके आगमनको झूठा समझते हैं और य-
ह कहते हैं कि एक अन्यदेशीय योद्धा किसी दूसरे देशमें जा-
कर उसके मध्यभागको तो अपने वश नहीं करसक्ता परन्तु
यह नहीं समझते कि तटस्थ प्रदेशोंमें तो उसका बसना स-
म्भव होनहीं क्योंकि वहां उसके स्वदेशीय उसको क्लेश देते
और यहभी नहीं जानते कि उस समय फिनीशियावाले इजि-
प्त समुद्रपर पूरा २ प्रभुत्व रखतेथे - डैनास उसी समय
यूनानमें गया मालूम होताहै जब सीक्रापस गयाथा।

४, १५०० - ई.पू. में पिलापस नामक योद्धा फ्रीजिया
प्रदेशसे आकर यूनानमें बसा और यद्यपि उसका अधिका-
र पहले २ तो बहुत नहींथा किन्तु और २ राजवंशोंके सा-
थ (जैसे आरगस और लैसेडीमन) सम्बन्ध करनेसे उस-
की सन्तानने सारे देशको अपने वशकरलिया और वह दे-
श पिलापनीसस (उसीके) नामसे कहलानेलगा - कई एक
हेतु हैं जिनके कारण शिष्टाचारके प्रचारकी उन्नति पहलेप-
हल बहुत नहीं हुयीथी - फिनीशियन, केरियन आदि

(१) डैनासके पचास भतीजे यूनानमें आये और उन्होंने उसकी पुत्रियोंसे विवाह करना चाहा डैनास मानगया परन्तु जब एक आकाशवाणीसे उसे मालूम हुआ था कि एक उसके जवाईयोंमेंसे उसे मारडालेगा तो उसने पुत्रियोंको कहा कि अपने पतियोंको मारडालो - सबने आज्ञामानी केवल एकने अपने पतिको बचाया

लोग समुद्र मार्गसे और पेलेस्जिन[1] आदि लोग भूमी मार्गसे इस देशको बड़ा क्लेश देतेथे जिसके निवारण करनेके लिये ड्यूकेलियनके पुत्र एम्फि कटियन ने एम्फिकटियनि सभा नियत की — इस सभामें पहलेतो थोड़े सेही लोगथे परन्तु पीछेतो यूनानके सब राजधानियों से मन्त्री आनेलगे और यह सभा डेल्फी और थरमापिली स्थानोंमे बारी २ से इकट्ठी होतीथी — जैसेकि यूरुप के देशोंमे मध्य[2] समयमे चोरगण पथिकोंको बड़े क्लेश देतेथे इसी प्रकारसे यूनानमेंभी प्राचीन समयमें ऐसे लोग बड़ा उपद्रव करतेथे और यतः इनके शासन करनेको कोई राज्य सेना नहींथी — इसलिये उस देशमें मुख्य और प्रसिद्ध रमते योद्धा और मल्ल हुये जो इनको दंड देना अपने उपर अङ्गीकार करलेतेथे — इनमेंसे पर्सियस हरक्यूलिस बेलेरोफन थेसीयस और कास्टर और पालक्स योद्धा बड़े प्रसिद्ध हुए हैं जिनके कर्म्मोंका वर्णन यूनान की कथाप्रनका मुख्यभाग समझना चाहिए। इस समयकी बड़ी प्रसिद्ध बातें ये थीं १ आरगोनाटिकी चढाई २ थीबसके युद्ध ३, ट्राय का घेरा ४ हिरेक्लीडिका पुनरागमन ५ आईओनियन और इओलियन बस्तियोंका एशियामैनर में स्थापितहोना — १ आरगोनाटिके चढावका कारण तो मालूम नहीं — कहते हैं कि तेरवीं सदी ई॰ पे॰ में थेसलीका जासन नामक यूनानके मुख्य योद्धाओंको अपने साथलेके

(१) यह नाम एक कौमका था जो सब राजकाज और इत्यादि आप करतीथी और मजुहबों से यह सम्बन्धि काम करतीथी।

(२) वह समय जो पांचवीं सदी ई॰ से पंद्रवी ई॰ पे सदी तक था। ... और चोरोंको दुःख दिया करतेथे।

२ आरगो नामक नौकामें यूजियन समुद्रकी पूर्वी दिशामें गया इन लोगोंने कोलचिस[1] प्रदेशमें एक अपनी बस्ती डाली और इनका सेनानी वहांके राजाकी पुत्री लाया - परन्तु यद्यपि इस चढ़ावका वृत्तान्त सम्पूर्ण स्पष्ट नहीं किन्तु इसका फल तो प्र का हुआ क्योंकि उस समय से यूनान में शिष्टाचार व्यापार इत र देशीय सम्बन्ध और सभ्यता की उन्नति हुयी २ इसके पी छे बहुतसे योद्धा एक ईओलियन युद्धमें जिसको "काली डोनियन वाराह का शिकार कहते हैं" प्रयुक्त हुए और यूनानके उत्तर भागमें वेकस वा डायओनीशस नामक देवताकी पूजाके का रण बहुतसा द्वेष पड़ा इस पूजाका यूनानमें (अर्थात् थीब समें) प्रचार कैडमसने किया था - इडीपस नामक इस (कै डमस) वंशके बड़े प्रसिद्ध राजाको उसके पापोंके कारण राज्यसे उतारकर उसके पुत्रों इटियोक्लिस और पोलिनाईसि सने क्रमशः राज्य करनेकी प्रतिज्ञा की परन्तु इटियोक्लि सने इस बातको न माना और अपने भाईको राज्य न दिया इसपर पोलिनाईसिसने यूनानके मुख्य योद्धाओंसे मिल कर उस युद्धका जिसको "थीबसके प्रतिपत्त सातका युद्ध कहते हैं" प्रारम्भ किया (१२२५ ई॰ पू॰) इस युद्धमें इटि योक्लिस और पोलिनाईसिस दोनों मारेगए और क्रीओन नामक योद्धाने राज्य छीनकर अपने साथियों को पराजित कि या पांच सेनानी युद्धमें मारेगये इसके दश वर्ष पीछे उन सेनापतियोंके पुत्रोंने जिनको इपिगोनाई कहते थे अपने

(१) कहते हैं कि ये लोग [illegible]

पिताओं के मारजाने का बदला लेने के लिये थीबस पर चढ़ आए और उन्होंने थीबसको लेलिया और वहांके अधिपतिको मार ऐसे युद्धोंके कारण यूनानके और लोग थीबस वालोंसे द्वेष रखतेथे और इस द्वेषका प्रत्युपकार थीबसके लोगोंने फारस युद्धके समयमें यूनानको न साहित्य देनेसे किया जब पिलापस राजाका बंश पिलापोनिससमें बलवान होगया तो उन्होंने अपने पित्रों पर जो आपदें पड़ीथीं उनका प्रत्युपकार लेना चाहा और फ्रिजिया प्रदेशपर आक्रमण करके वहां के राजपुत्र पोडार्कसको बन्दी कर लिया और जबतक उसके बदलेमें बहुतसा धन न लिया तबतक उसे न छोड़ा इससे उस राज पुत्रको प्रायम (अर्थात् खरीदा हुआ) कहने लगे जब प्रायम ट्रायका राजा हुआ उसने अपने पुत्र पेरिसको सन्धि करनेको यूनानमें भेजा यहांसे पेरिस स्पार्टाके राजा मैनीलेयसकी हैलीनानामक स्त्रीको ले भागा इसपर मैनीलेयसने अपने स्वदेशीय लोगोंसे पेरिससे प्रत्युपकार लेनेके लिये सहायता चाही और यूनानके लोगोंने मैनीलेयसके भाई ऐगेमेमननके साथ बड़ी सेना करदी - इस समय ट्रायका राज्य बड़ी वृद्धिपर था यहां होमर कविके वर्णनके अनुसार पचास हजार सेनाथी और यहांका किला अजीत[1]था यूनान वालोंकी सेना एक लाखथी और ग्यारहसौ छियासी नौकामें भेजीगईथी यह युद्ध दश वर्षतक रहा ये लोग युद्ध योग्य रथोंमें चढ़कर लड़तेथे और इनके शस्त्रादि मिस्रवालों

(१) अर्थात् अजीत जिता नजासकताथा।

के शस्त्रोंके सहायसे सवारी सेनातो तब होतीही नहीथी से-
नापतियोंके लड़ने[१] से युद्धोंमे जय वा पराजय निर्णय होता
था - बहुत कालव्यतीत होजानेके कारण यूनानी लोग
ट्रायके समीप देशोंमे आक्रमण कर २ और हेलस्पोण्ट के
दूसरे पारकी भूमीपर कब्जाकरकर अपना निर्वाह कर-
ते रहे अन्तमें उन्होंने छल[२] से ट्रायको लेलिया ११८३ ई॰ पू॰
और उस नगरका नष्ट करदिया परन्तु यूनानके लोगोंपर भी
इस युद्धके कारण बहुतसी आपदें पड़ी क्योंकि बहुतसे वर्षे
व्यतीत होनेसे कई एक मुख्य योद्धाओंकी स्त्रियोंकी दुराचारी
और युवाओंके लोभसे बहुतसे उपहारकोंने उनके राज्य छीन
लिये और उन्हें बड़ी २ आपदें सहनी पड़ी।

प्रकरण ८

ट्रायके युद्धके अन्तसे यूनान देशीय वस्तियों के एशियामैनरमें वसने तक ११८३ ई॰ पू॰ ६६४ ई॰ पू॰ तक।

पहले वर्णन कियागया है कि पिलापसका वंश पिलापो-
नीसस देशमें बड़ा बलवान हुआ और इस वंशने और सब
प्राचीन राज्यवंशोंको निकाल दियाथा इन निकाले गयोंमे
से परसेईडी वंश जोकि पर्सियससे चलाथा पिलापस वंश
का बड़ाभारी शत्रु था क्योंकि पर्सियस विलीरोफन और ह-
र्क्यूलिस नामक मुख्ययोद्धा इसी वंशमे हुएथे एक इसवं-
शकी शाखा जो हर्क्यूलिससे चलीथी हिरैक्लिडी नामसे प्रसि-

(१) यदि सेनापति मारा जाता था तो सेना भाग जाती थी और पराजय होजाती थी।
(२) यूनानवालोंने एक लकड़ीका घोड़ा बनाया इतना बड़ा कि उसमे बहुतसे योद्धा श-
स्त्र सहित छिपगये और इसको छोड़कर आप पीछे भागे ट्रायवाले इस घोड़ेको अपने न-
गरमे लाये इसप्रकार जो लोग घोड़मे छिपे हुएथे उन्होंने निकलकर नगरके दरवाजे खोलदिये

हथी इसगणवाने अपने देशसे निकालीजाकर अपने शत्रु पिला
पस वालोंसे बचनेके लिये पहले तो पेथिन्समें शरण ली और
फिर वह डोरिस प्रदेशमें गई - इस के अधिपति हाईलस को
इपेलियस नामक डोरिसके राजाने अपना पुत्र बनालिया औ
र इपेलियस के मरनेके पीछे हाइलस डोरिस का राजा हुया
परन्तु हिरेक्लिडी लोग इसदेशमे रहकर सन्तुष्ट न हुये वे स
दाकाल यही चाहतेथे कि अपने छीने हुये राज्य और देश
को फिर लेलें इसलिये उन्होंने पिलापोनिसस पर आक्रमण
करना चाहा जबतक मेनीलेयस और पेगेमेमनन के राज्य
की वृद्धि होती रही तबतक वे कुछभी न करसके परन्तु जब
ट्रायके साथ युद्ध होने लगा तो उन्होंने अवकाश पाकर कारि
न्थ उमरुमध्यके भागसे पिलापोनिसस पर आक्रमणकिया
परन्तु इनका उद्योग निष्फल हुया और एक आक्रमणमें उन
का अधिपति हाइलसमारागया इसपर उन लोगोंने कारिन्थ
खाडीके मार्गसे आक्रमण करना चाहा और इस आशयसे
उन्होंने निपाकटस नामक स्थान पर अपनी नौका इकट्ठी
की - इनके साथ बहुतसे डोरिस देशके लोग और इथो
लियन लोग आमिले और उन्होंने अपनी सेनाके एक भाग
को कारिन्थ उमरुमध्यकी दिशामें भेजकर अपने शत्रुको
उधर फेरा शत्रुकी सेनाको इस प्रकार भुलावट देकर वे आप
पिलापोनिससमें आउसे और आतेही लेकोनिया आरगालि
स मिसिनिया इलिस और कारिन्थ आदिको लेलिया केवल

आर्केडिया और इगिपेलिया प्रदेश उनके हाथ न आए इस रा-
ज्य परिवर्तनमें बहुतसे लोगतो नहीं मारे गए थे परन्तु पहले
निवासियोंको बड़ा क्लेश मिला उनमेंसे बहुतसे लोग तो दासी
बनाए गये थे और बहुतसे देशत्याग चले गये थे डोरिओंने न
दक्षिण प्रदेशोंको परस्पर विभागकर लेलिया आरिस्टोडिम-
सके हाथ लेकोनिया प्रदेश आया परन्तु उसके मरने पर
उसके पुत्र युरिस्थिनिस और प्राक्लिस दोनो राज्यपर बैठे
इसी समयसे स्पार्टाके दो राजा होने चले आये - पिलाप-
स वंशके सेनापतिने जो अड्डमहमथकी ओर खुल्लावटसे लड़-
ने गया था जब उसने देखा कि सारा देश शत्रुओंके हाथ आग-
या है तो उसने (देशको उनके हाथसे छुड़ानेके स्थानमें) इगिपेलि-
या प्रदेश पर जा आक्रमण किया और उसे लेकर आईओनिय-
न लोगोंको निकाल दिया और उसका नाम अकाया रक्खा (११०४
ई. पू.) पिलापोनिससके बहुतसे लोग एटिकामें भागगए
और वहां एथिन्सके लोगोंने उनका बड़ा सत्कार किया और
इन भगे हुओंके सबसे अधिक भागने एशियामैनर्में जाकर
आईओनिया इओलिया और डोरिया नामक बस्तियां डालीं
इसके पीछे एथिन्स और डोरियन लोगोंमें शत्रुता पड़ गई
कोडरस नामक एथिन्सके राजाके समयमें डोरियन लोगोंने
एटिका पर आक्रमण किया और मेगारा प्रदेशको लेलिया -
इसपर कोडरसने उनको वहांसे निकालनेमें बहुतसे यत्न कि-
ये परन्तु उनमेंसे एक भी सफल न हुआ - इसपर उसने एक

सुनकर कि जबतक वे पेथिन्सके राजाको नमारेंगे तबतक
वे विजयपाते रहेंगे उसने अपना वेश बदला और डोरियन
की सेनामें जाकर एक दो सिपाहियोंसे लड़कर मर गया
जब डोरियन लोगोंने उसकी देहको पहचाना तो उन्होंने ए-
टिका प्रदेशका त्याग किया पेथिन्सके लोगोंने उसके साह-
सके कारण यह प्रतिज्ञा की कि अबसे कोई मनुष्य राजा ब-
ननेके योग्य नहीं और राजपदवी को दूर किया (१०६८ ई.पै.)
पिलापसके वंशके दो योद्धा यूनानी उत्तरीय भागमें बहुतसे
दिनोंतक बसनेका निष्फल उद्योग करके एशियामें गए (१०६४
ई.पै.) और वहां मायस के प्राचीन राज्यकी सीमापर जा बसे
इनकी बस्तियां साईज़ीकस द्वीप (अब प्रायद्वीप है) से जो प्रोपे-
ण्टस (मारमोरा समुद्र) में था हर्मस नदीतक फैलती चली
गईथीं तब इससारे देशको ईओलिया कहते थे - कोरस
राजाके पुत्रोंने राजाकी पदवीके नष्ट होनेसे असन्तुष्ट होकर
बहुतसे साथियोंके साथ एशियामैनर में जाकर हर्मस नदी-
से पोसिडिओन भूमिनासिका तक) बस्ती डाली और चिओस
और समोस नामक द्वीपोंको अपने वशकर लिया तब इन स-
बदेशोंका नाम जो उनके वशमें थे आईओनिया वा पैन आई-
ओनिया था - फिर जब पेथिन्स और डोरियन लोगोंमें युद्ध हु-
या और डोरियन लोग मेगाराकलासे निकाले गये तो निले-
कलाके डरसे पिलापोनिससको उलटे न गए कुछ उनमेंसे
रोड्स और क्रीटद्वीपमें जाबसे(1) और शेष जो रहे वे केरियामें

(1) यह यूनानियोंका नौकरी ले दूसरे देशोंमें बसना वा बस्ती डालना है।

बसेगए और उसका नाम कोरियांआराहोपासे बदलकर औरि-
सरला (६९४ ई. पै.) पिछले समयमे यूनानी लोग
पश्चिम दिशाके इनदेशोंमे जाकर बसने लगे जैसाकि वे इट-
ली और सिसिलीमें बसे इनकी बस्तियें सदा समुद्र तटपर हो
तीथीं क्योंकि ये लोग व्यापार वृद्धिकी (न विजयकी) आकांक्षासे
इन देशोंमें जाकर बसतेथे बहुतसी बस्तियां बिल्कुल स्वा
न्त्रथीं और कईएक तो अपने मूलदेशोंसे भी धन और बल
मे बढ़ गई थीं ।

अध्याय ९।

यूनानका इतिहास फारस युद्धके आरम्भतक

प्रकरण १।

स्पार्टा नगर का वर्णन ॥

पहले कहागया है कि स्पार्टा नगर लेकोनिया की राज
धानी थी इस नगरको लेसिडेमन भी कहतेथे यद्यपि य
ह नाम उसकी नगर सम्बन्धी बस्तियों का था यह नगर
यूरोटस नदीपर टेजिटस पहाड़के साम्हने स्थितथा पह
ले पहल शहर पनाह नहीं थी और जो स्थान पहाड़ी पर
था वह किलेका काम देताथा इस पहाड़के चारोंओर पां
च नगर स्थितथे ये नगर एक दूसरेसे दूरथे और इनमें स्पार्टा
की पांच जातियां बसीथीं इन नगरों की बड़ी सड़कों का

बन्न एक बड़े चौक में होताथा जिसमें स्पार्टाके शासिना और धर्माधिकारियों के लिये स्थान और बड़े २ मन्दिर बने हुये थे इससे अधिक यहां एक मंडप बना हुआथा जिसको स्पार्टा के लोगोंने पलेटीई के युद्धकी लूटसे बनायाथा इस मण्डपमें खम्भोंके स्थानमें फारस लोगोंकी पत्थरकी मूर्तियां थीं सबसे ऊंचेशिखर पर एक स्थान था जिसमें मिनर्वादेवी का मन्दिर बनाहुआथा यह मन्दिर प्रायः शरणार्थ काममें आताथा और पीतलका बना हुआथा और इसमें हर्क्युलिसादि बड़े योद्धाओंकी मूर्तियें थीं इसकी और जूपीटर देवताकी मूर्तिथी और इसको यूनान भरमें सबसे पुरानी मूर्ति गिनते थे यह पीतलके टुकड़ोंकी बनी हुईथी कई एक शरणार्थक स्थान कल्पित योद्धाओं और ओलिंपिया मेलोंके जीतनेवालों और लाइकरगस नामक नीति वायक आदिके लिये बने हुये थे परन्तु यहांके लोग बहुतही कम योद्धाओं का सन्मान ऐसा के साथ करतेथे और स्पार्टाके सारे इतिहासमें केवल पांच छै योद्धाओंका सन्मान श्रद्धाके साथ हुआ हुआ मालूम होताहै जैसे लियोनिडस नामक योद्धा और उसके साथियोंकी अस्थियां जिन्होंने फारसकी सेनाको थरमापेली पर रोकाथा उस स्थानसे चालीस वर्ष पीछे स्पार्टामें लाई जाकर गाड़ी गईथीं इन मन्दिरोंमें से सुन्दर तो बहुतही थोड़े थे इसलिये इनकी बनावटसे बनाने वालोंकी निपुणता प्रकाशित नहीं होतीथी - यहां प्रजाके घर तो और भी बुरे

थे इसका कारण यह था कि स्पार्टा के लोग अपना बहुतसा का-
ल तो बाहर सभास्थानों में व्यतीत करते थे इस नगर के द-
क्षिण को हिप्पोड्रोमस नामक स्थान था और यहां घोड़ दौड़
होती और पैदल दौड़ा करते थे इससे थोड़ीसी दूर पर प्ले
टेनिस्टी स्थान था जहां कि युवजन अपने बल बढ़ाने के
लिये ऊड़पेल किया करते थे इस स्थान की एक दिशा में तो
यूरोटस नदी थी दूसरी दिशा में एक और छोटीसी नदी थी जो यू-
रोटस में गिरती थी और तीसरी एक नहर थी उसमें जाने के
लिये दो पुल थे एक पर हर्क्युलिस नामक बड़े प्रसिद्ध यो-
द्धा की मूर्ति और दूसरे पर लाईकरगस नामक मुख्य नीतिद-
र्शक की मूर्ति थी। थूसिडाईडिस नामक इतिहासिक ने स-
च कहा था कि यदि स्पार्टा नगर नष्ट होजाय और शेष मन्दि-
रों के सिवा और कुछ न बचे तो भविष्यत्काल के लोगों को यह
विश्वास नहीं होगा कि इस नगर के लोग पिलापोनिस के दो
बड़े प्रदेशों के अधिपति थे और सारे यूनान और मद्दकियों में
माने जाते थे क्योंकि स्पार्टा अपने निवासियों की प्रतिष्ठा की
अपेक्षा बहुत कम सुन्दर था और छिड़ फुटकर बसा हुआ था
परन्तु यदि एथिन्स नगर नष्ट होजाय तो उसके चोंघों से उस
नगर की पूर्व वृद्धि का द्विगुण ज्ञान होगा- स्पार्टा की पांचों
बस्तियों के स्थान ये थे। १ पिटानिटी लोग आगोरा नामक रा-
ज्य का सभास्थान के समीप में जो कि सारे नगर में बहुत सुन्द-
र था रहते थे। २ लिमनाई लोग नगर के उत्तर भाग में

यूरोटस नदीके पास रहतेथे। ३ मिसोपथीलोग नगरके दक्षिण इसे भागमें घोड़दौड़ स्थानके समीप बसतेथे। ४ कुनोडिलोग उत्तर पश्चिम भागमें रहतेथे। ५ सार्ट मोकीसस लोग टेजिटस पर्वत के एक शिखरके पास रहतेथे।

प्रकरण २

लाई कर्गसकी नीतिक और मेसीनियन युद्धों का वर्णन ८८० ई.पै. से ५०० ई.पै. तक

डोरियन लोगोंने लेकोनिया देशको अपने वश करके वहांके प्राचीन निवासीयों को दासी (गुलाम) बनालिया इससे दोसोवर्ष पीछेतक वे स्पार्टाके लोगोंसे उरते रहे परन्तु उनका आपसमें भी परस्पर विरोध होतारहा जिसकारण प्रजाको बड़ा क्लेश पहुंचा और राजाओंके अधिकार घटगये थे इनमें लाई करगस नामक एक योद्धाने अपने भतीजे चैरिलस राजाके नामपर सरे राज्य अधिकार को लेकर एक नीति शास्त्र बनाना चाहा ताकि स्पार्टाके लोगों को फिर स्वेच्छ क्लेश नामिले इसकी नीति और नीतिशास्त्रों के नाई क्रमशः लिखी हुई नहीं थी किन्तु छोटी २ कहावतें थीं जिनसे लोकाचार का उपदेश होताथा इसनीतिको डेल्फी की आकाशवाणी ने स्वीकार कियाथा और इस उद्योगका मुख्याशय यह था कि स्पार्टाके लोग बलवान और उद्योगी रहें अतएव यह शास्त्र उन लोगोंके बल बढ़ाने के विष-

इसमें राजनीति के विषयमे अधिक उपकारक था लाइकार-
गसने डोरियन और लेकोनियन लोगोंके परस्पर सम्बन्ध
और जातीभेद और दो राजाओंके होनेको नहीं बदला था परन्तु
उसने जेरूशिया नामक एक राज्य सभा जिसमें साठ वर्षकी
अवस्थाके नीचेके मनुष्यको अधिकार नहीथा नियत की
यह निश्चित नहीं कि उसने पांच इफोरी नामक धर्माधिका
रियोंकी सभाको नियत किया परन्तु यह तो निश्चितहै कि
उसकी नीतिमें उन पांचोंको उतना प्रभुत्व जितना कि उन्हों
ने पिछले समयमें ग्रहण किया नहीं मिलाथा यह लोग
प्रतिवर्ष नियत होतेथे और इनका प्रभुत्व रोमके ट्रिब्यून
नामक अधिकारियोंके सदृश होगयाथा यहां एक प्रजा स-
भा भी थी परन्तु उसको तो किसी बातके बदलने का अधि
कार नहीं था वह तो केवल राजनीति को अङ्गीकार वा अन-
ङ्गीकार करनेके समर्थ थे - स्पार्टाके प्रजासम्बन्धी नियम
जिनको लाइकरगसने नियत कियाथा ये थे -

सारी भूमीका लोगोंमें सम विभाग किया गया था -

विलासकी सारी सामग्री बिल्कुल दूरकरदी गई थी -

स्पार्टाके लोग योद्धा जाती बनाये गये थे -

दासीजनोंके (जिनको हैलट कहतेथे) हाथमें सारा कृषि
और गृहकर्म डाल दिया गया था -

इससे स्पार्टाके लोगोंकी शांती तो बिल्कुल जातीरही और लड़-
नेसे अधिक और कुछ काम न रहा यहांकी सेना का मुख्य

गण शस्त्रास्त्रधारी योद्धाथे कदम मापकर श्रेणीमे चलतेथे
और लड़ते वा शत्रुका पीछा करनेके समय अपनी श्रेणी को
कभी नहीं त्यागतेथे युद्धके अन्तमें प्रत्येक स्पार्टीको अपनी
ढाल इस बातके दिखाने के लिये कि उसने युद्धमें अपना
पौरुष निरूपण कियाथा दिखानी पड़ती थी - स्पार्टोके
लोग सबसे पहले मेसीनियन लोगोंसे युद्धमें प्रवृत्त हुए
और इसका कारण यहथा कि स्पार्टोके लोग मेसीनियाकी
उर्वरा भूमीका बड़ा लोभ करतेथे दोनों पक्षोंने एक दूसरेको
सताना आरम्भ किया परन्तु स्पार्टोके लोगोंने एक रातको अ
मफिया नगर पर आक्रमण करके वहांके लोगोंको सोते हुए
मार डाला (७४३ ई० पू०) फिर दोनों जनपदोंमे बहुतसे भ
यानक युद्ध हुए परन्तु अन्तमें स्पार्टोके लोगोंका विजय हु
आ और मेसीनियाके लोगोंने अपनी आधी भूमीका कर
स्पार्टोके लोगोंको देना अंगीकार किया (७२४ ई० पू०) मे
सीना युद्धके समयमें स्पार्टोके (युद्धयोग्य पूर्ण अवस्थाके) निवा
सियोंने जो सेनामें भरतीथे लड़नेको जाते हुए यह प्रतिज्ञा
की थी कि जबतक हम शत्रुको न जीत लेंगे तबतक उलटे
घर न आवेंगे जब युद्धका समय बहुत बढ़गया तो स्पार्टोकी
राज्य सभाने इस बातसे डरकरके स्पार्टोकी योद्धाजाति नष्ट
न होजावे उन युवजनोंको जिन्होंने यह प्रतिज्ञा नहीं की थी
उलटा बुलाया और उनको स्पार्टोकी स्त्रीयोंसे विषया सक्त हो
ने दिया - इस सम्बन्धकी सन्ततिको पार्थेनीई कहतेथे - इन

लोगोंका कोई चिन्ह तो था नहीं और यद्यपि वे स्पार्टाके निवासी थे किन्तु उन्हें स्पार्टाके लोगोंके अधिकार नहीं मिलसके थे अतएव उन लोगोंने अपने तई सबसे निन्दित देखकर दासी जनों (हैलट) के साथ स्पार्टामें उपद्रव करनेकी सन्धिकी परन्तु यह सन्धि मालूम होगई इसपर स्पार्टाकी राजसभाने इतने बड़े गण को दण्डदेना उचित न देखकर उन्हें देशसे निकाल दिया वे फैलेनटस योद्धाकी सहायतासे इटलीमेंगये और वहां उन्होंने टैरण्टम नगर बनाया स्पार्टाके लोगोंके अन्यायसे मेसीना के लोग फिर लड़नेको उद्यत हुए और इस समय एरिस्टोमिनिस नामक सेनानीने जोकि मेसिनाके राजवंशमें था स्पार्टाके लोगोंको इतने बार पराजित किया कि उन्होंने डेल्फीकी आकाशवाणी की सहायता अवलम्बन की वहांसे उन्हें यह उत्तर मिला कि तुम एथिन्स वालोंसे सेनापति मांगो इसपर एथिन्स के लोगोंने टरटियस नामक एक लंगड़े कविको जोकि युद्धमें कभीभी प्रतिष्ठित नहीं हुआ था स्पार्टामें भेजा वहां उसने स्पार्टाके लोगोंको अपनी वशीकरन कवितासे ऐसा उकसाया कि वे पहलेसे अधिक बल और तपकसे लड़ने लगे परन्तु फिरभी एरिस्टोमिनीस ११ वर्षतक लड़ता रहा अन्तमें मेसिनी नगर स्पार्टाके लोगोंके हाथमें चालसे आगया और वहांके योद्धाओंने आरकेडियामें शरण ली (६८१ इ.पू.) फिर इस समय रीगीयमके राजाने उन्हें[1] मेसिनी लोगोंको जैनक्लीयन लोगोंसे लड़ने

(१) जो अपने नगर मेसिनीसे भाग निकले थे।

को बुलाया तब उन्होंने वहां जाकर जेनकली नगर को ले लिया और वहां के लोगों को न मारा किन्तु उनके साथ मिलकर रहने लगे और उस नगर का नाम मेसिनी रखा - यही नाम उस नगर का आजतक है मेसिनी से मेसीना होगया है ऐरिस्टोमिनिस अपने साथियों के साथ उजागया किन्तु रोड्स में होताहुआ लिडिया में गया और वहां रोगार्त्त होकर मरगया - स्पार्टा का विजय तो हुआ परन्तु उसके लोगों का बल क्षीण होगया और टिजियन और आरगस के लोगों से लड़ने के समय इनकी प्राचीन वीर्यता बहुत घटी हुई मालूम होई परन्तु स्पार्टा वालोंने थियरा नामक द्वीप को आरगस वालोंसे छीन लिया (५५० ई. पू.)

प्रकरण ३।

ऐथिन्स नगर का वर्णन

ऐथिन्स नगर एक समतल भूमी पर स्थित था जो दक्षिण पूर्व की दिशा चार मील के समीप समुद्र की ओर विस्तृत था परन्तु और सब ओर से पर्वत श्रेणियों से घेरा हुआ था इस समतल प्रदेश में भी कुछ पहाड़ियें थीं जिनमें से सबसे ऊंची पर सीक्रापस ने ऐक्रापोलिस नामक दुर्ग बनाया था इसलिये उस दुर्ग को सीक्रापिया भी कहते थे इस पहाड़ी के आस पास ऐथिन्स नगर बना हुआ था जिसके बहुत से मन्दिर समुद्र तक फहलते चलेगये थे - जिस पहाड़ी पर ऐक्रापोलिस था उस का समतल आठ सौ फुट लम्बाई और चार सौ फुट चौड़ाई में था

मानोकि प्रकृतिसेही वह स्थान वहांके मन्दिरोंके लिये पहले
सेही नियत किया गयाथा इस दुर्गमे जानेकेलिये एक मार्ग[1]
था जिसके दोनों ओर बड़े सुन्दर मन्दिर बने हुए थे इन म-
न्दिरोंको पेरिक्लीस नामक एथिन्सके अधिपतिने बड़े उत्कृ-
ष्ट सौन्दर्यके साथ बनवाया था इसीके पहाड़ीपर ए-
थिन्सके मुख्य देवताओंके मन्दिर शोभायमान थे वामी ओ-
र पैलस एथिनी[2] देवीका मन्दिर था जिसमे एक वृक्ष जोकि
उस देवीकी आज्ञासे उत्पन्न हुआ था और एक स्तम्भ जोकि
आकाशसे गिराथा स्थित थे इससे परे नैपच्यून देवताका
मन्दिर था दहनी ओर पार्थेनन नामक सब मन्दिरोंका शि-
रोमणी मन्दिरथा और इतना ऊंचाथा कि दूर २ से दृष्टिगोचर
होताथा इसके अवशेष आजतक एथिन्सके मन्दिरोंके सौ-
न्दर्यके प्रमाण हैं यह मन्दिर संग मरमरका बना हुआथा इस
मन्दिरके अन्दर मिनरवादेवी की मूर्तिथी यह मूर्ति बड़ी सु-
न्दर हस्तिदन्त और सुवर्णकी बनी हुईथी देवीके एक हाथ
मे तो गदा और दूसरे मे विजयकी मूर्तिथी - मन्दिरके पा-
स एक जातीयबंक था (कोष)[3] जिसमे एथिन्सके लोग अपना
उतना धन जितनेको वे अपने पास रखना उचित नही स-
मझते थे रखा करते थे इसी जगह जो धन इस देवीके म-
न्दिरमें चढावे की रीतिसे आताथा रखा जाताथा इस सब
धनकी रक्षाके लिये रक्षक नियत होतेथे जोकि प्रति वर्ष अ-
पने अनुयायियोंको उसका सारा हिसाब समझा देते थे -

(१) संगमरमरकी पौड़ियें बनी हुईथीं।
(२) इसका नाम मिनरवा भी था।
(३) धनशाला

ऐक्रापोलिस और पार थेननसे देखनेसे दाहनीओर हिमिटस पर्वतकी दो श्रेणियां थीं - उत्तरकी ओर पैण्टेलिकस पर्वत उत्तर पश्चिमकी ओर सिथौरनके शिखर और दक्षिण पूर्वकी-ओर लारियम पर्वत दृष्टिगोचर होतेथे - परन्तु सबसे दृश्य स्थान तो सेरोनिक खाड़ी और वहांके तीनों नौका आश्रय-स्थान और सेलेमिस और इजाईना नामक द्वीप थे - यहीं से ऐथिन्सके सारे ग्राम जिनमेंसे एकन एकमें दृश्यवस्तुयें थीं दृष्टिगोचर होतेथे - ऐक्रापोलिसके नीचे समतलभू-मीपर एक दिशामें तो ओडियम नामक सङ्गीत शालाथी दूसरी ओर वेकस देवताका नाटकस्थान था और तीसरीओ-र प्रीटेनियम नामक स्थानथा जहांकि ऐथिन्सके शासिता और मुख्याधिकारी राज्यव्ययसे भोजन किया करतेथे - किली नामक समतल घाटी (दून) उन पहाड़ियोंमेथी जिन-मेसे एकपर ऐक्रापोलिस दूसरीपर ऐरिओपेगस जहां राज धर्म्म सभा और तीसरीपर प्रजाकी धर्म्म सभा होतीथी - इस तीसरी पहाड़ीका नाम(१)नीक्सथा और इसी पहाड़ीके एक स्थान पर बीमा अर्थात् वक्काजन,स्थान बना हुआ था जहांपरसे वक्काजन लोगोंको उपदेश किया करतेथे यहस्था-न आजतक स्थित है - वक्काजन समवाद करते हुए पीरी-यस नामक नौका आश्रयस्थानकीओर समुद्रके अभिमुख होकर खड़े हुआ करतेथे और लोगोंको यह समझाया करते थे कि उनकी वृद्धि,व्यापार और जहाजी सेनापर नियत है

इस बातसे जब एथिन्समे तीस अन्यायी अधिकारी हुए थे तो उन्होंने सबसे पहले बीमाका स्थान बदल दिया और वक्ताओं को समुद्रके अभिमुख न होने दिया - (५) तीकस से परे सिरैमीकस (वर्तन) भूमी थी इसमे एक बड़ा बाज़ारथा जिसके चारों ओर मन्दिर और मूर्त्तियें थीं इसके दक्षिणको सिनेट सभाका स्थानथा और पूर्वको दो बरांमदेथे (१) प्रथम हर्मी वा मरकुरी नामक देवताके नामपर था जिसपर उन लोगों के नाम जो फारसके युद्धमें प्रतिष्ठित हुए थे खुदे हुएथे और दूसरा पिसीली नामक बरामदा था जिसमें और मूर्त्तियोंमे सबसे प्रसिद्ध मिलटीएड्स नामक सारायन के विजयकी मूर्त्ति थी - इसी पिछले स्थानमे ज़ीनो नामक प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक अपने शिष्योंको पढ़ाया करता था यूनानी भाषामे दालन को स्टोया कहते थे इसकारण ज़ीनोके शिष्योंको स्टोइक कहते हैं इस नगरके पास तीन पाठशाला स्थानथे जहां विद्वान लोग शिक्षा दिया करतेथे इनमेसे मुख्य अकैडेमियाथी जिस को अकैडेमस नामक एक धनवान ने बनाया था यहां पलेटो (अफलातून) नामक दार्शनिक अपने शिष्योंको पढ़ाया करता था इससे वे अकेडेमिक शास्त्री कहलातेथे - दूसरा लिसियम नामक स्थान था जहांकि पेरिस्टाटिल (अरस्तू) नामक दार्शनिक अपने शिष्योंको शिक्षा दिया करता था अरस्तू पढ़ानेके समय फिराकरता था इसलिये उसके शिष्य पेरीपेटेटिकस कहलातेथे - तीसरा साइनोसारजिस जहांकि प-

(१) वा दालान

नरिस्थीनिस नामक दार्शनिक अपने शिष्योंको पढ़ायाकरताथा इसने साईनिक[1] मत उत्पन्न कियाथा - पेथिन्स के चारों ओर बहिर्गत भमीमें और विशेषतः उस मार्गमें जोकि पिरियस को जाताथा बहुतसी बड़ी२ कवियों और राजाधिकारियोंकी समाधियां बनी हुईथीं इस मार्गके दोनों ओर दो दीवारेंथीं पिरियस और फेली रियसनामक नौका श्राश्रय स्थान इन दीवारोंके बीचमे लियेगये थे ये दीवारें ८० फुट ऊंची और पांचमील लम्बी थीं और इतनी चौड़ीथीकि दो गाड़ियां उनपरसे निकल सक्तीथीं - पिरियस और फेलीरिस नौका आश्रयस्थानोंको छोटे नगर समझना चाहिए और व्यापार वृद्धिके कारण यहां पेथिन्स नगरसे भी अधिक प्रकारके लोग बसेथे - मूनीचियन नामक नौका आश्रयस्थान भी बड़ा प्रसिद्धथा और बड़ा मजबूत गिना जाताथा - अतएव स्पार्टाके लोगोंने पेथिन्स नगरको अपने वश करनेके इस स्थानमें अपनी रक्षक सेना रखीथी - अब श्रेथेन्स वृत्तान्त के अन्तमें हम सीसिपस नामक कविके काव्योंसे एक वाक्य उद्धृत करतेहैं "जो कोई मनुष्य पेथिन्स को देखने की अभिलाषा नहीं रखता वह मूढ है जो कोई उसे देख२ आनन्दको नहीं प्राप्त होता वह बड़ा मूढ है किन्तु जो कोई उसे देखकर और आनन्दपाकर उसका त्याग करता है वह तो सबसे अधिक मूढ और मूर्ख है"।

(१) अर्थात् श्वानमत।

प्रकरण ४

पेथिन्स का इतिहास फारस युद्धके प्रारम्भ तक
१३०० ई. पू. से ५०० ई. पू. तक

पेथिन्सका इतिहास थेसियस राजाके राज्यसे (जो अपने पिता इजियस के पीछे १३०० ई. पू. में राजा हुआ था) प्रारम्भ होता है - क्योंकि उसीने पहले इसका राजप्रबन्ध किया और इसको पटीकाके सब प्रदेशोंकी राजधानी बनाया परन्तु ऐसे २ नियम जैसेकि पेरियोपेगस सभा का नियत करना और लोगोंका तीन वर्गोंमे अर्थात् कुलीनजनों कृषिकर्म्मजनों और शिल्पकर्म्मोपजीवीजनोंमे विभक्त करनाइत्यादि) मिसर वालोंके नियमोंसे इतना सादृश्य(रखते)थे कि वे सेक्रोपस राजाके समयमें नियत हुये मालूम होते हैं थेसियसके उत्तराधिकारियोंमेसे (म) नेसथियस जो ट्रायके युद्धमे मारा गया और कोडरस जिसके पौरुष का पहले वर्णन किया गया है बड़े प्रसिद्ध हुए कोडरस के पीछे (१०६८ ई. पू. मे) उसके वंशके लोग क्रमसे मुख्य राज्य अधिकारी होते रहे इन अधिकारियों को आरकन कहते थे और इनमें और राजाओंमे यह भेद था कि इनको अपने आचरण की परीक्षा देनी पड़ती थी इनमेंसे पहला मीडोन और पिछला अलकमीयन था अलकमीयन के पीछे (७५२ ई. पू.) प्रति दशवें वर्ष नये आरकन बनाये जाते थे परन्तु ये भी उसी कोडरस राज्यवंश से लिये जाते थे - इस प्रकारके सात आरकन हुए और उन

मेंसे सबसे पिछला ६८२ ई. पै. तक रहा इससे पीछे आर
कन लोग प्रत्येक कुलीन जनके वंशमेंसे बनने लगे और
एक आरकनके स्थानमें नौ आरकन प्रतिवर्ष होने लगे
इन लोगोंका अधिकार परस्पर तुल्य नहीं होताथा परन्तु
सारा राज्याधिकार नौमेंसे तीन आरकनों के हाथमें होताथा
परन्तु इसनीतिसे प्रजाको कुछ भी लाभ नाहुआ क्योंकि
कुलीनजन उनपर बड़ा अनर्थ करते थे और जो बहुत से
पुराने राज्य नियम कहलाते थे वे इस समयमे उपकारिक
नहीं थे बहादर सवारोंकी एकजाती बनगयीथी जिनकी सब बातमे
प्रभुत्व बहुत बढ़ाथा और ये जो चाहतेथे सो करते थे अ-
तएव इस अनर्थको रोकनेके लिये ६२२ ई. पै. मे ड्रेको
नामक नीतिशास्त्र विशारद नीति बनाने को नियत हुआ
यह पुरुष बड़ा सदाचारी और पण्डित था परन्तु अपनी
नीतिकी क्रूरता और कठोरताके लिये भी प्रसिद्ध था क्योंकि
उसने अल्पापराधोंके लिये भी मृत्युदण्ड रखा- अतएव
उसकी नीति चलनहीं सकी और उसको यह फल मिला
कि जब प्रजा दुःखित हुई तो उसको भागना पड़ा वह इजा-
ईना दीपमें जाकर मरगया- ड्रेकोके उद्योग निष्फल होने
से एथिन्समें अनर्थ औरभी बढ़गया यहांतक कि साईलोन
नामक एक एथिन्सके प्रधाट(?) (कुलीन) निवासीने कईएक
लोगोंकी सहायतासे एथिन्सका राज छीनना चाहा (५९८ ई.पै.)
परन्तु उसकोभी कुछकालतक अपने बचावके लिये ड्रोमे छ-

न्द रहकर (क्योंकि राज्याधिकारियोंने उसे डगेमें घेर लियाथा) ऐथिन्स से भागना पड़ा और उसके साथियों को मिनिरवा देवी के मन्दिरमें जाकर शरण लेनी पड़ी यहांसे वेलोग इस प्रतिज्ञा पर निकाले गयेथे कि वे मारे नहीं जावेंगे परन्तु वहांसे निकालतेही प्रतिज्ञा करने वालोंने उन्हें मारडाला इस अधर्मके काममें अलकेमिइनीडी वंशके लोग मुख्यथे किन्तु यह बात उस वंशके लिये बहुत बुरी हुई क्योंकि इससे कुलीन जनोंके अधिकारोंको एक बड़ी भारी रोक लगाई गईथी इसके अपराधसे ऐथिन्स निवासी बड़े क्रुद्ध हुए यहांतक कि देवताओंके मन्दिरोंमें भी उन्हें शरण नहीं मिलतीथी (यूमीनाईडसके मन्दिरमें कई एक लोग मारेगयेथे) इसी समय यह संदेशा आया कि डोरियन लोगोंने सेलेमिस द्वीप और निसीआ नगरको छीन लियाहै - इस संदेशके पहुंचनेके पीछे प्रजामें मरी पड़गयी तब ऐथिन्सके लोगोंको यह विश्वास हुआ कि ये सबें देवताओंके क्रोधसे अवश्य हुई हैं इन आपदोंके निवारण करनेके लिये उन्होंने क्रीटद्वीपके रहने वाले इपीमिनाईडस नामक भविष्यद्वक्ताको जो अपनी सिद्धि और बुद्धिमत्ताके महत्वसे देवताओंका विशेष प्रिय गिना जाताथा बुलाया उसने आकर पहलेतो लोगोंके मनोंको अपने उपदेशोंसे शान्तकिया फिर देवताओंको बलिदेनेके लिये नये मन्दिर बनवाए (५९४-ई. पै.) जबकि लोगोंको यह विश्वास होगया कि उनकी सम्पूर्ण आपदें निवारण होगई तो वह अपने नगरको

उलटाया लागया इसकार्यके बदलेमें उसने ऐथिन्सके लोगों
से अपने जन्मनगर (ग) सेलसके साथ मित्रता रखने और
अपनेलिये मिनरवादेवी के हस्त्यहत्तकी एक शाखा लेनेकी
कांक्षाकी परन्तु थोड़ेसे दिनोंके पीछे ऐथिन्समें फिर उपद्र-
व मचना प्रारम्भ हुआ और राज्यप्रबन्ध बिगड़ने लगा इसप
र ऐथिन्सके लोगोंने सोलन नामक एक बड़े प्रसिद्ध नीतिशा
स्त्र विशारद पण्डितको मुख्यराज्याधिकारी नियत किया
(५९४ - ई. पै.) सोलन ऐथिन्सके राज्यवंशमें सेथा और
उसने व्यापारसे अपनी उपजीविका लब्धकरके इतरदेशोंमे
ज्ञानवृद्धिकेलिये फिरना प्रारम्भ कियाथा इसका पाण्डित्य
इतना बढ़ाथा कि वह यूनानके सात प्रसिद्ध पण्डितोंमें से
जिन्होंने यूनानी दर्शन शास्त्रका प्रथम प्रचार कियाथा मुख्य
गिना जाताथा और छः बुद्धिमान पुरुषोंके ये नाम हैं १ मिलि-
टस निवासीथेल्स २ मिटीलीनी निवासीपिटाकस ३ प्रि-
नी निवासीबीयस ४ लिण्डसनिवासी क्लियोबूलस ५
चीना निवासी माईसोन और ६ लेसेडिमन निवासी चिलो
इनके साथ अनाकार्सिस नामक पण्डितभी मिलादियाजाता
है जोकि सिथियासे पूर्वोक्त पण्डितोंकी प्रसिद्धि सुनकर उपदेश
सुनने सुनानेकेलिये यूनानमें आयाथा - सोलनकी नीति
का मुख्य प्रयोजन यहथा कि कुलीनजनोंकी अधिकार वृद्धि
भी घटजावे परन्तु प्रजाका बलभी अधिक ना होजावे इस उद्दे-
श्यसे उसने ड्राकोकी सारी नीतिको एक नियमके विना जिस-

मे मनुष्यहत्याके लिये छोड़ नियमथा पलटदिया और ऋण
दायकों और ग्राहकोंके परस्पर अनर्थको शान्तकरनेके लिये
सहनीति बनाई और जो रीति ऋणके लिये ऋणग्राहकोंको
बन्दीकरलेनेकीथी हटकरदी इसके नीतिशास्त्रसे उसका
पाण्डित्य लोकाचार और ज्ञान सम्पूर्ण स्पष्ट होता है क्योंकि
उसने राजनीतिको लोकाचार पर प्रभुत्व देनेके स्थानमें जै-
सेकि लाईकरगसने (वर्षीमलसे) स्पार्टामें कियाथा लोका-
चारको प्रभुता रक्खी और अपने नीतिशास्त्रको कालानुसार
परिवर्तन की प्राप्तिके योग्य बनाया सोलनने राज्यके पद
से भागोंको भी नहीं बदला (जैसाकि राज्यके चारखंडथे जि-
नको फिलीकहतेथे और ९० से अधिक ज़िलेथे) परन्तु
प्रजाके चार भेद किए प्रथम वे जिनकी वार्षिक आमदनी
चारसौ मन अन्नथा इनको पिण्टेकोसोमिडिम्नी कहतेथे
दूसरे वे जिनकी आमदनी ४०० मनथी इनको हिप्पेस (रा-
य वा बहादुर) कहतेथे तीसरे वे जिनकी आमदनी २००
मन होतीथी इनको ज़ूगिटी कहतेथे और चौथे वे जिन-
की आमदनी इस प्रमाणसे घट होतीथी चारों जातियोंको
प्रजाकी सभामे सम्मति देनेका अधिकार था परन्तु (मैजिस्-
ट्र) राज्याधिकारी केवल पहली तीन जातियोंमेंसेही होसक-
तेथे सोलनने आरकन पदवीमें परिवर्तन नहीं किया था पर-
न्तु यह नियम रक्खा कि कोई आरकन अपने अधिकारके स-
मयमें सेनापति न होने पावे इससे अधिक सोलनने एक रा-

ज्यसभा नियत की इस सभामें चारसौ सभासद थे और प्रत्येक जातिमें से सौ २ सभासद लिये जाते थे परन्तु इन लोगों के नियत होनेसे पहले उन्हें अपने आचरणोंकी परीक्षा देनी पड़ती थी - आरकन लोगोंको इस सभाकी सम्मति सारे राज्यव्यवहारोंमें लेनी पड़ती थी और जो कोई बात प्रजाकी सभामें निर्णय होती थी वह पहले इस (चारसौकी) राज्यसभामें विचार ली जाती थी प्रजाकी सभा (१) निक्स नामक पहाड़ीपर जिसका पीछे वर्णन होचुका है इकठी हुआ करती थी इस सभाको नए नियमोंको स्वीकार अथवा अस्वीकार करनेका और मजिस्ट्रेटों (राज्याधिकारियों) को नियत करनेका और राज्यप्रति अपराधियोंको दण्ड देनेका अधिकार था - सोलनकी नीतिसे ऐरियोपेगसकी राज्यसभाका ऐथिन्सके राज्याधिकारमें बड़ा प्रभुत्व होगया था पहले तो यह सभा कुलीन जनोंके लिये प्रजाको दबादेनेका एक यन्त्र था परन्तु सोलनने उस सभाके नियमोंको फिर बनाया उसका बल बढ़ाया और उसमें ऐसे लोगोंको बैठनेका अधिकार मिला जो आरकन बन चुके थे तबसे यह नई सभा लोगोंके धर्माचारों और आरकन लोगोंके राज्याधिकार समयके अन्तमें उनकी परीक्षा करनेको नियत हुई इसके सिवा इस सभाको हत्याके दण्ड देनेका और उन राज्यकार्यों को जोकि प्रजाकी सभामें निर्णय होचुके हों हटानेका, बढ़ानेका अधिकार था इसके पीछे सोलनने तैलस्थीज ऐम्फिकटियन राज्यसभामें एक सभासद बनके

गया और वहां उसने उस सभाको पवित्र युद्धमें प्रवृत्त किया इस युद्धका यहां वर्णन करना उचित है क्योंकि इसके तीनसौवर्ष के पीछे ऐसेही युद्धसे यूनानकी स्वतन्त्रता नष्ट होगई थी क्रिसी यवनलोगोंके पास कारिन्थ खाड़ी पर एक नौका आश्रयस्थान था जहांसे डेल्फीको एक सुलभ मार्ग जाता था और वे लोग यात्रियोंसे जो उस मार्गसे जातेथे बहुतसा कर लेतेथे इससे डेल्फीके मन्दिरका चढ़ावा बहुत घट गयाथा क्योंकि चढ़ावेका बहुतसा भाग तो करमें दिया जाताथा इस बातपर दोनों पक्षोंने एक दूसरेको निन्दित किया - परन्तु क्रिसी यवनलोगोंने डेल्फीपर आक्रमण करके अपालोके मन्दिरको लूटा ऐमफिक्टियन सभा यद्यपि इसबातसे क्रोध तो बड़ी हुई किन्तु (उनलोगोंको) दण्ड देनेमें बड़ी असमर्थ थी परन्तु सोलनने उन्हें उकसाया तबवे उनको दण्ड देनेको प्रवृत्त हुए यह युद्ध दस वर्षतक रहा और अन्तमें क्रिसीयनलोगोंका सम्पूर्ण नाश हुआ और उनका राज्य डेल्फीके मन्दिरके अर्पण कियागया ५९० - ई. पू. इस युद्धके अन्तमें पीथियन मेले जो युद्धके कारण बंद रहेथे फिर लगनेलगे - ऐथिन्सके लोगोंकी स्वतन्त्रता (जो सोलनने फिर स्थापन की थी) को बहुत काल नहीं हुआ था कि पिसिस्ट्रेटस नामक राज्याधिकारीके राज हरण करनेसे उसका नष्ट होगया पिसिस्ट्रेटस सोलनकी नाईं ऐथिन्सके राज्यवंशमेंसे था इसके पास धन बहुत था और इसध-

नको लोगोंमे बांटनेसे और नीच जातियोंका बड़ा सत्कार करने
से उसने कुलीन जनोंको अपने प्रति इतना क्रुध किया कि उसे
अपने जीवकी रक्षा[1]केलिये शस्त्रधारी अपने पास रखने पड़े
जब उसे एक गारद मिली तो उसने ऐक्रापोलिसको लेकर अ
पने तईं ऐथिन्सका अधिपति बनाया (५६१ ई. पै.) और
यद्यपि उसने सोलनका बड़ा आदर किया किन्तु सोलनने
उसके आदरको अङ्गीकार न किया और देशको त्यागकर सै
प्रसमें जाकर मरगया मिगेकलिस नामक अल्कमीओ
नीडि वंशका एक राज्याधिकारी भी अपने वंश और दासोंके
सहित ऐटीकाके बाहर जाबसा परन्तु वहांसे उसने लाइक
रगस नामक एक और राज्याधिकारीसे सन्धि करके ऐक्रापो
लिस पर आक्रमण किया और पिसिसट्रेटसको निकालदिया
परन्तु थोड़ेसेही दिनोंमें मिगेकलिस और लाइकरगसमें
विरोध होपड़ा तब मिगेकलिसने पिसिसट्रेटससे इस
नियम पर सन्धिकरली कि पिसिसट्रेटस उसकी पुत्री
विवाहले पिसिट्रेटसने यह बात मानली और फिर ऐथि
न्सकी राज्यपदवी अंगीकार की परन्तु थोड़ेसे दिनोंके पी
छे पिसिसट्रेटस फिर निकालागया और फिर तीसरी बार उ
सने सेना इकट्ठी करके ऐथिन्स पर आक्रमण[2] किया और
अपने मरनपर्यन्त वह वहांका राजा बना रहा इस समयमें
उसने अपने तईं ऐथिन्सकी हद्दिमें प्रयुक्त किया उसकी
राज्यसभामें उस समयके सारे पण्डित रहतेथे - उसीने

(१) कहतेहैं कि इसने अपनी देहपर घावलगाकर लोगोंको कहाकि मेरे शत्रुओंने मेरे मार-
नेको आक्रमण किया है तब उसको गारद मिली।
(२) इस समय कहतेहैं कि उसके रथ पर एक स्त्रीकी मूर्ति थी जिससे यह जताया गया
कि वह स्त्री मिनर्वादेवी है जो उसको आप राजगद्दी देनेको लाई है।

सबसे पहले होमर नामक कवीके काव्योंको इकट्ठाकरके प्र-
सिद्ध किया उसके शत्रु (अलकमीओनीडिवंशी) उसके राज्यके
उपकारोंको खूब जानतेथे और इसकारण उन्होंने उससे रा-
ज्य छीननेका उद्योग न किया - पिसिसट्रेटसके मरनेके
पीछे (५२८ - ई. पू.) उसके पुत्र हिप्पियस और हिप्पा-
रकस राज्यपर बैठे चौदह वर्षतक तो वे शान्तिके साथ
राज्यकरतेरहे - परन्तु (५१४ - ई. पू. में) जब हिप्पार-
कसने हारमोडियसकी बहनको धोखा दियाथा तो हारमो-
डियस और उसके मित्र अरिस्टोजिटनने हिप्पारकसको
मारा उसके मरनेसे हिप्पियसने अपने भाईके बदला लेनेमे
लोगोंपर अनर्थ करना आरम्भ किया यहांतक कि सारी प्र-
जा उससे बिगड़गई इसपर अलकमीओनीडि लोगोंने उस
के निकालनेका ऐसे यत्नकिया कि उन्होंने डेल्फीके मन्दिरमें
बहुतसा धन देकर वहांसे स्पार्टेके लोगोंके प्रति हिप्पियस
को निकालनेकी आकाशवाणी करवाई स्पार्टा वालोंने चढ़ा-
ईकर हिप्पियसको निकाल दिया हिप्पियस निकलने पा-
याही नहीथा कि एथेन्समें फिर लड़ाई फसाद होनेलगा
प्रजाके दो भाग होगयेथे एकका अधिपति तो क्लिसथिनीस
नामक मिगक्लिसका पुत्रथा   दूसरेका इसेगोरस था
क्लिसथिनीस प्रजाके पक्षमेंथा और उनके अधिकारके बढ़ाने
के लिये उसने चारजातियोंके स्थानमें दसजातियां नियतकीं
और प्रजाकी सभामें एकसौ सभासद और बढ़ाये कहते हैं

कि ओसट्रेसिसम नामक नियम (जिससे ऐथिन्सके लोग
जिसकिसी कुलीनजनकी हृद्दिसे राज्यको भय होना समझ-
तेथे निकालसकतेथे) इसी समयमें नियत हुआ - इसेगो-
रसने कारिन्थ थिब्रोशिया आदि राज्योंकी सहायता चाही
और उन सबके अधिपति ऐथिन्स पर चढ़आनेको उद्यत
हुए परन्तु इसी समय उन सबमें विरोध पड़गया क्योंकि
स्पार्टाका एक राजा डीमेरारस जो ऐथिन्सवालोंके पक्षमें
होगया था परन्तु स्पार्टाका दूसरा राजा क्लीमीनीस इसेगो-
रसके पक्षमेंथा इससे उन सब राज्याधिपतियोंका जो इसेगो-
रसकी सहायता को आयेथे सम्बन्ध टूटगया - फिर जब
स्पार्टाके लोगोंने यह देखाकि डेल्फीकी आकाशवाणी अन्य-
र छलसे करवाई गईथी तो उन्होंने हिप्पियस को राज्यपर
फिर बैठानेका उद्योग करना चाहा परन्तु अपने साथियोंको
इस विषयमें विरुद्ध देखकर इस उद्योगका त्याग किया
तब हिप्पियस फारसको चलागया और वहां जाकर उस-
स राजाको ऐथिन्स पर चढ़ाई करनेको उकसाने लगा

प्रकरण ५

फारस युद्धके पहले यूनानके अन्य राज्योंका व-
र्णन ११०० - ई. पै. से ५०० ई. पै. तक

जब इथिनाई लोगोंने थीवस नगरको अपने वश
कर लिया तो थ्रेसके राजाओंने थिब्रोशिया वालोंको उनके स्था-
नोंसे निकालदिया वे वहांसे निकाले जाकर थैसेलीमें जा

रहो परन्तु डोरियन जातिके पिलोपोनिससमें आगमनके समय फिर बिओशियामें आए और इओलियन जातिसे मिलकर बसने लगे - ११२६ - ई. पै. में ज़ेथस राजा के मरनेके पीछे राज पदवी उठाई गईथी और इनने राज्योंकी संयुक्त राज्यसभा बनी जिनने उस प्रदेशमें नगरथे परन्तु इसके नियम नियत नहीं रहतेथे कभीतो यहां कुलीन जनोंका अधिकार बहुत बढ जाताथा और कभी प्रजाका बड़ा प्रभुत्व होजाताथा - इसकारण बीओशके लोग यूनानमें बहुत प्रसिद्ध नहीं हुए राज्य कर्मोंका निर्णय चार सभाओंमे होताथा ये सभा बिओशियाके चार भागोंमे होतीथी और इनही चार सभाओंके मिलबैठनेसे बिओटार्के नामक सातराजा अधिकारीयोंको जोकि युद्धके समयमें सेनापति और शान्तिके समयमें मुख्य मैजिस्ट्रेट (अधिपति) होनेथे नियत किये जातेथे - अकार्नेनिया इटोलिया और लोक्रिस प्रदेशोंके इतिहासमें कोई प्रसिद्ध बात नहीं देखीजाती - फोसिसमें क्रिसीयन युद्ध हुआथा जिसका वर्णन अभी किया गयाहै - थैसे लीके राज्योंमे लेरिसा नगरके शासिता जो अलियूऐडी वंशमेसेथे और अपनेताई हर्क्यूलिसकी संतान गिनतेथे राजकरतेथे और इपाइरस प्रदेशमें मोलोसीजाति बड़ी प्रसिद्धथी इस प्रदेशमें ईएसीडी नामक राजवंशथा जो अपने ताईं अचिलीज़ नामक योद्धाके पुत्र पिरहस वा निओपटोलीमसकी सन्तान गिनताथा -

पिलापोनिससमें कारिन्थ सबसे प्रसिद्ध नगर था पहले डोरि-
यन जातिके विजयके समयमें एलीट स राजाने इसका राज
छीन लिया और उसका वंश पांचपीढीतक राज्यकरतारहा
इसके पीछे (७४७ - ई.पै. मे) बेकस नामक राजाने राज्य
को छीनलिया और इसके वंशनेभी पांचपीढीतक राज्यकि-
या टिलेसटस बेकस वंशके अन्तिम राजाके मारेजानेके पी-
छे राजपदवी जातीरही और उसके स्थानपर बेकसके वंश-
मेंसे प्रतिवर्ष राज्याधिकारी (मजिस्ट्रेट जिनको प्रीटेनस क-
हतेथे) नियत होने लगे इन लोगोंने प्रजाको बड़ा क्लेशदेना
प्रारम्भ किया जिसका फल यह हुया कि सिपसेलस नामक
एक धनाढ्य पुरुषने राज्यको छीनलिया (६५७ - ई.पै.)
इसने तीस वर्षतक राज्य किया जिसके पीछे इसके पुत्र पै-
रीएण्डरने जोकि यूनानके सात पण्डितोंमेंभी गिनाजाता
था चालीस वर्षतक राज्यकिया इसके पीछे इसका भतीजा
सेमिटिकस राज्यपर बैठा परन्तु उसकी प्रजाने स्पार्टाकी सहा-
यतासे उसे राज्यसे निकाल दिया (५८४ - ई.पै.) इसी
समय सिपसेलाइड वंशकी एक शाखाका राज अम्ब्रेसिया
मेंसे जातारहा - इसके पीछे कारिन्थमे व्यापारी महा-
जनोंकी राजसभा नियतहुई और ये लोग स्पार्टाके साथ ब-
हुत दिनतक मिलेरहे कारिन्थकी इतरदेशोंमे मुख्य बस्ति-
यां ये थीं पश्चिममें कारसाईरा अम्ब्रेशिया इपीडेमनस ल्यु-
कस और सिरैक्यूज़ और पूर्वमें पोटिडीया कारिन्थकी प्रसि-

सिपसेलाईडि वंशके नाश होनेसे हुए होगई पैरिएण्डरके मरनेके पीछे कारसाईरा नगर कारिन्थके हाथसे जातारहा और इसपर कारिन्थ और कारसाईरा वालों में (६५० - ई॰ पै॰ में) समुद्रीय युद्ध हुयाथा यह सबसे प्रथम समुद्रीय युद्ध गिनाजाताहै सिसियोन और और एकीयन राज्योंमें कारिन्थके राज्यके नाई परिवर्तन हुए परन्तु अन्तमें यहां प्रजा राज्यसभा नियतहुई आरकेडिया देशमें प्रजाराज्यसभा उस समय नियत हुई जिस समय पैरिसटोक्रिमस नामक वहांके अन्तिम राजाको वहांके लोगोंने पैरिस्टोमिनस और मैसिनिया वालोंको पकड़वा देनेकेलिये पत्थरोंसे माराथा यहां टिजिया और मेएट निया नामक बड़े प्रसिद्ध राज्यथे - आरगस में (६६४ - ई॰ पै॰ में) राज्यपदवी हटाकी गईथी आरगसके लोगोंने माईसिनी और टीरिन्स लोगोंको अपने वश करलियाथा परन्तु इपिडारस और ट्रोईज़िनी तो बिल्कुल स्वतन्त्र रहे - ईलिस प्रदेशके इफिटस नामक नीतिदायककी नीतिसे और उस प्रदेशके पवित्र गिने जानेसे इसमें बहुत कालतक शान्तिरही राज्यपदवीके हटा होनेके पीछे यहां प्रतिवर्ष दो मजिस्ट्रेट (राज्याधिकारी) जिनको हैलिनोडीसी कहतेथे नियत होतेरहे ओलिम्पियाके मेलोंका प्रबन्ध भी इन्हीके हाथसे होताथा कुछ दिनोंके पीछे इन दोके स्थान दस मजिस्ट्रेट नियत होने लगे । -

प्रकरण ६

यूनानके मुख्य द्वीपोंका इतिहास ॥५॥

इन द्वीपोंमें यूनानके नाईं रूपपरिवर्तन होतारहा अर्थात् इन द्वीपोंमें राजालोग राज्यकरतेथे परन्तु फिर प्रजा राज्यस्था नियत हुई जब पेथिन्सके लोगोंने समुद्रपर अपना प्रभुत्व जमाया तौ ये द्वीप यद्यपि नाममात्र स्वातन्त्र गिने जातेथे किन्तु तत्वतः तौ इसके वशथे यहां हम इनमेंसे मुख्य द्वीपोंका वर्णन करेंगे - कारसाईरामें चारसिक्रेटस नामक कारिन्थ निवासीने ७५३ ई॰ पै॰ मे अपने साथियोंको साथले जिनके सहित वह अपने देशसे निकाला गयाथा एक बस्ती जाबसाई इन्होंने उसद्वीपके प्राचीन निवासियोंको अपने वशकर लिया परन्तु यह कारिन्थसे निकलकर आयेथे इसलिये इन्होंने अपने जन्मदेशसे सम्बन्ध नरखा जब कारसाईराने व्यापारमे वृद्धि पाई तौ कारिन्थके लोग उनसे ईर्षा करने लगे इसी समय एक ऐसीबात हुई जिससे दोनों राज्योंमें युद्ध होपड़ा इपिडैमनस नामक कारसाईराकी एक बस्तिने जो मैसीडोनियाके पश्चिममेंथी कारसाईराके साथ युद्ध करनेके लिये कारिन्थसे सहायता चाही इस समय कारसाईराके पास १२० नावके थीं और इसका बलभी अधिकथा यहांका राज्य कुलीन जनाधिपत्यथा परन्तु फारसके युद्धके पीछे यहां प्रजाधिपत्य होगया और इससे कारसाईराका नाश हुआ - इजाईना द्वीपमें निस-

को प्राचीनकालमें इनानीओ कहतेथे (१२५८ - ई.पू. में) थे-
सलीके ईओलियन मिरमीडन लोग जाकर बसेथे फिर डो-
रियन जातिमेसे इपीडारसके लोगोंने वहां बस्ति जाडाली
और अपने जन्मदेशसे सम्बन्ध तोड दिया इस बस्तिको व्या-
पार कारण बड़ी वृद्धि हुई और यह फारसके दूसरे युद्धके
प्रारम्भतक जब पेरिक्लीसने इसे वश कर लियाथा
एथेन्सके पक्षपाति बनारहा - एविआ द्वीपमें बहुतसी वि-
विध बस्तियांथीं जिनके नगर परस्पर सम्बन्धित नहींथे य-
हांके मुख्यनगर चालसिस और इरेट्रियामें एक विशेष
कुलीनजनकी सभा जिनको हिपोबेटी कहतेथे राजकर-
तेथे फारस युद्धोंके पीछे एथिन्सवालोंने इनको अपने वश
कर लिया परन्तु इन्होंने अपनी स्वातन्त्र्यताको पुनर्ग्रहण कर-
नेके लिये बड़ा प्रयत्न किया - साईक्लेडस द्वीपोंमे केरिया
जातिके लोग बसेथे परन्तु आईओनियन और डोरियन
जातियोंने उनको वहांसे निकालदिया ये सब द्वीप डेलसके
बिना एथेन्सकी वृद्धिके समयमें उसके आश्रय होगयेथे -
क्रीटद्वीप प्राचीन समयमें माईनस (१३०० - ई.पू.) के
नीतिशास्त्रके लिये जिससे (कहतेहैं कि लाईकरगसने अप-
नी नीति बनानेके लिये बहुत कुछ सीखाथा प्रसिद्धथा क्लि-
अनयस नामक राजाके मरने पर (८०० - ई.पू.) क्रीटके
बहुत नगरोंमें प्रजाधिपत्य नियत हुआ जिससे वे स्वातन्त्र्य हो
गये परन्तु इन नगरोंमें से दो प्रधान गार्टीना और (१) नोससमे

(१) अर्थात् बहादर

द्वेष बहुत रहता था और (१) नोसस और गार्टीना नामक नगरों के द्वेषसे सारे क्रीटमे प्रजाको क्लेश मिला क्रीटद्वीपमें राजपदवीके हटाये जानेके पीछे एकसीही राज्यरीति नियत हुई और वह यहथी कि एक सभा (सिनेट) जिसको जीरूसिया कहतेथे और दस मैजिस्ट्रेट (शासिता) राज्याधिकारी नियतहूये क्रीटके लोग और देशोंके साथ नही लडतेथे परन्तु इनमें परस्पर युद्ध होनेसे इनकी बड़ी हानी हुई - साईप्रसमें यूनानके लोगोंकी थोड़ीसीही वस्तियांथी यहां ट्रोजन युद्धके थोड़े काल पीछे ट्यूसर नामक राजाने सैलेमिस नामक वस्ति डालीथी (१२०० - ई. पै.) यह द्वीप क्रमः२ से फीनिशिया मिसर और फारस वालोंके वश होतारहा किन्तु सैलेमिसके राजा अपनी स्वतन्त्रताको बचा रखनेके लिये फारसवालोंसे सर्वदा बिगड़तेरहे परन्तु जब महासिकंदरने टायरपर आक्रमण किया (३३२ - ई. पै.) तो साईप्रसके नौ राजा उससे आपही जामिले तबसे यह द्वीप मेसीडोनियाके आश्रय होगया - रोड्स द्वीपका वर्णन महासिकन्दरके उत्तराधिकारियोंके इतिहासमे किया जायेगा।

प्रकरण ७।

एशिया माईनरमे यूनानी वस्तियोंका इतिहास।

१२०० - ई. पै. ५०० - ई. पै.

यूनानी वस्तियें और जातिकी वस्तियोंकी अपेक्षा अधिक और प्रसिद्धथीं इन वस्तियोंसे शिष्टाचार और व्यापारकी बड़ी वृद्धिहुई और इनोंसे बहुतसी वस्तियां इतनी प्रसिद्ध हुई कि उनका वर्णन कर-

ना उचित है - परन्तु यह जानना चाहिये कि पूर्वोक्त कथन केवल उन बस्तियोंको है जिनको एनानियोंने डोरियन जातीके देश[1] त्याग और मसीडोनिया राज्यकी वृद्धिके अन्तरमें नियत कियाथा पूर्वोक्त समयसे पहले पिलासजी जातीने इटलीमें बस्तियें डाली परन्तु इनका वर्णन यूरुपके इतिहाससे सम्बन्ध रखता है सबसे पहले हम उन बस्तियोंका जोकि हेलिस्पाण्टसे सिलीसिया तक एशिया माईनरके पश्चिम भागमें डोरियन यात्राके समयमें नियत हुई थीं वर्णन करेंगे इन बस्तियोंको डोरियन आईओनियन और इओलियन लोगोंने डालाथा परन्तु थोड़ेसेही दिनोंमें ये बस्तियां अपने पिछले[2] प्रदेशोंसे वृद्धिमें अधिक हुईं इन्हीं बस्तियोंमें मुख्य कवि होमर और अलकियस और मुख्य दार्शनिक थेलिस और पिथेगोरस उत्पन्न हुएथे - जब डोरियन लोगोंने पिलापोनिससको अपने वश करलिया तो इओलियन लोग उस देशसे निकलकर पिलापस वंशके सरदारों सहित नए निवासको अन्वेषण करने चले मार्गमें थोड़ेसे तो बेटीकामें रह गए परन्तु उनके स्थानमें बिओशिया और फोसिस प्रदेशोंसे और लोग आमिले फिर वे लोग थ्रेसमें जारहे और वहांसे एशियामें जाकर (११२४ - ई.पै.) मीसियाके किनारों पर जा बसे और उस स्थानका नाम ईओलिस रखा इन्होंने लैसबोस और टेनीडास द्वीपोंको अपने वश करलिया इन्होंने (एशियामाईनरमें) बारह नगर बनाएथे जिनमेंसे समरना और साईमी बड़े प्रसिद्ध थे समरना नगरको लिडियन प्रदेशके लोगोंने (६०० - ई. पै.

(१) अर्थात् हैलिनी जातिने। (२) मूल वा जन्म भूमि

में नष्ट कर दिया था परन्तु इस समयसे चारसौ वर्षके पीछे इस
नगरको फिर मेसीडन वालोंने अपनी शक्तिवाली ईओलियन नग-
र साईमसके राज्यतक स्वतन्त्र रहे परन्तु पीछे फारस राज्यके आ-
श्रित होगए जब ऐथिन्सका प्रताप बढ़ा तो सारे द्वीपोंकी बस्ति-
यां उस नगरके आश्रय होगईं यद्यपि ईओलियन नगर परस्पर
सम्बन्धित नहींथे किन्तु मिटीलिनी नगर (जो लैसबस द्वीपमें था)
इनकी राजधानी गिना जाताथा जिसमें इसिमनीटि नामक (म-
जिस्ट्रेट) शासिता नियत होतेथे ये शासिता राज्यमें प्रजाके विरो-
धों और उपद्रवोंके शान्त करनेके योग्य होतेथे इनमेंसे पिटेक-
स नामक शासिता जोकि एलकियस और सैफो नामक कवि-
यों के समयमें हुआथा बड़ा प्रसिद्ध था (६०० - ई. पे.) आईओ-
नियन लोगोंने (१०४४ - ई. पे. में) बस्तियां नियत करनी आ-
रम्भ की जिनका वृत्तान्त योंहै जबकि कौडरसके पुत्रोंको अप-
ने पिताका राज्य न मिला तो उन्होंने अपने देशको त्याग करने
का आशय सूचन किया इस पर उनके साथ बहुतसे देशत्यागी
आईओनियन लोग आमिले और वे सब एटिकियममें इकट्ठे
होकर एशियाको चले मार्गमें वे साईक्लेडस द्वीपोंमें ठहरे और व-
हां आश्रम लेकर और अपनेमेंसे कुछ लोगोंको छोड़कर वे एशिया
में गए और ईओलिसमें पहुंचकर उन्होंने वहांके लोगोंको कई एक युद्धों
के पीछे अपने वश करलिया इनका प्रभुत्व सिपीलस पर्वतसे मि-
लीटसतक फैल गया फिर इन्होंने नगर बसाने प्रारम्भ किए इ-
नमेंसे जो बारह नगर बनाकर एक राज्य सभा पेनफिकरियनस

भाकी नाई सबके शासन करनेको नियत की वे ऐसे इफी-सस, इरीथ्री, क्लैज़ोमीनी, कालोफन, माईअस, मिलीटस, प्रिन्नी, फोसिया, लेबेडस, ऐमोस, टियस, और चियस - इनमें से पिछले तीन नगर द्वीपोंपर थे - मिलीटस नगर आई-ओनियन वालोंकी सबसे प्रसिद्ध बस्तिथी - यह लेलीजि, केरिया और क्रीटवालोंके वशमें क्रमसे चलीआई परन्तु सबसे पीछे आईओनियन लोगोंने उसे अपने वश कर लिया - इफीसस नगर भी आईओनियन लोगोंकी सबसे प्रसिद्ध बस्तिथी कहतेहैं कि इस नगरको ऐमेज़न एक स्त्रियोंके योद्धागण ने बनायाथा इसमें डाईआना देवीका मन्दिर यूरुप और एशिया में बड़ा विख्यात था कई तो यह कहतेहैं कि क्रीटकी बस्तिवालोंने और कई यह कहतेहैं कि फिनिशियावालोंने इस देवीकी पूजाका प्रचार कियाथा जब यह नगर आईओनियन लोगों के हाथ आया तो उन्होंने वहांके निवासियोंको मारनेसे छोड़ दिया - फोसिया आईओनियन लोगोंकी बहुतही नवीन बस्तीथी फोसिया प्रदेशके लोगोंने अपने यूनानी स्वजातीय बस्तिवालोंकी वृद्धिको सुनकर एशियामें यह फोसियाकी बस्ति आबादकीथी यहांके लोग यूरुपके पश्चिमी प्रदेशों के साथ बहुत व्यापार करतेथे मिलीटस और इसकी अपनी नहूद्धिके समयमें कार्थेज और टायर नगरोंसे कुछकम नहीथे जब फोसिया के लोगोंपर फारस वालोंने आक्रमण किया तो उन्होंने गाल (फ्रांसी) देशमें मार्सेल्स[1] नगर बसाया -

(१) इसका प्राचीन नाम मेसीलीया था

केवल कालोफन के प्रथम निवासियोंने आइओनियन लोगों
को युद्ध करने बिना अपनेमें बसने दिया यहांकी अश्वसेना इत-
नी प्रसिद्ध थी कि उसका एक आक्रमण युद्धके निर्णय करने के
योग्य था अतएव "कालोफन को साथ लेना" किसी कठिन काम
करनेकी कहावत होगई थी - सेमोस द्वीपकी बस्ति आइ-
ओनियन लोगोंकी सारी बस्तियोंमें व्यापारके लिये बड़ी प्रसिद्ध
थी यहां पहले आइओनियन जातिकी एक शाखा बसी थी
परन्तु पीछे दूसरी शाखाने उनसे वह स्थान छीन लिया - इस
की वृद्धि यहांके पालीक्रेटस नामी अधिपतिके समयमें बहुत
हुई (५४० ई॰पू॰) परन्तु जितनाकि इस अधिपतिकी वृद्धिका
प्रारम्भ अच्छा हुआ उतनाही उसका अन्त बुरा हुआ क्योंकि जब यह द्वीप
थोड़े कालके लिये फारसके वश होगया तो इसको अपने आपको
फिर स्वतन्त्र करनेमे बहुत हानी हुई - फिलापोनिस सयु-
द्धके समयमें यह एथिन्स वालोंका मुख्य सेवकीन स्थान था -
किओस द्वीप वाले आइओनियन लोगोंसे अपनी इच्छानुसार
मिलगये क्योंकि वे लोग आइओनियन जाति या हेलिनजाति
के सजातियथे यह नगर ऐश्वर्य और बलमे सेमोसके तुल्य था
यद्यपि फारसके वश होगयाथा तथापि जब अवकाश मिला तो
सबसे प्रथम इस बस्ती वालोंने स्वतन्त्रताके लिये उद्योग किया
फारस युद्धके पीछे एथिन्सके नाममात्रही आश्रय होगया था और
यहांके लोग और लोगोंके मारे अपने ऐश्वर्यको वृथा उद्योगमें
व्यय नहीं करतेथे - इरीक्र सभी बस्तियां एक एशफिक

टियन सभाके द्वारा परस्पर सन्धितथी यह सभा नैपच्यून देवता के मन्दिरमें जो माईकेली नामक अन्तरीप[1] पर स्थित था मिलती थी इस सभामें उनसब बातोंका जोकि इन लोगोंकी सन्धिसे[2] सम्बन्ध रखतीथी निर्णय हुआ करता था - परन्तु भिन्न २ बस्तियोंके राज्य व्यवहारका निर्णय नहीं कियाजाताथा इसी सभाके द्वारा यहां मेले वा क्रीडाके उत्सव हुआ करतेथे परन्तु अपनी वृद्धिके समयमें ये सब बस्तियां लीडियाके राजाओंसे लड़नेमें प्रवृत्त रहे और अन्तमें दोनों फारस वालोंके बश होगये - डोरियन जातिकी बस्तियां पूर्वोक्त बस्तियोंसे बहुत न्यूनथीं क्योंकि ये सब केवल एकके-टेसे प्रदेशमें स्थितथीं और इसीकारण इनमेसे रोड्स[3] और हैलिकारनेसस नामक बस्तियें बडी प्रसिद्ध हुईं जब डोरियन लोगोंने पिलापोनिससको अपने वश कर लिया तो उन्होंने और प्रदेशोंको भी लेना चाहा परन्तु जब उनको एथिन्सके लोगोंने मेगरा नगर पर रोक दिया तो उन्होंने एशियामाईनर तटपर केरिया कोस और रोड्स द्वीपमें आबस्तियें डालीं यह मालूम नहीं कि वे कब यहां आयथे परन्तु यह तो स्पष्ट है कि वे इओलियन और आईओनियन लोगोंसे पीछे आकर बसेथे इनकी सन्धितसभा को हैक्सा पोलिस (छे नगर) कहतेथे उन नगरोंके नाम ये थे हैलिकारनेसस, नाईडस केरिया द्वीप परथा, कोस इसी नामके द्वीप परथा, हैलीसस, केमीरस और लिण्डस ये तीनों रोड्स द्वीप परथे हैलिकारनेसस को पिछले समय सन्धिसे निकाल दिया

(१) इसको हैलीकोनियन अन्तरीप भी कहतेथे
(२) पैन आईओनियन सन्धि
(३) रोड्स द्वीप - [illegible]

था तब यह नगर कैरिया राज्यकी राजधानी होगई - नाईउस नगरको पहलेपहल पिलासजि लोगोंने बनाया था और यह ऐरियन लोगोंकी सबसे पहली बस्ती थी अपा(१)लोके मन्दिरमें सारे सम्मिलित सभासद मिलकर कार्य निर्णय करतेथे यहांके राज्यमें बड़ा परिवर्तन हुआ और अन्तमें कुलीन जनाधिपत्यके स्थानमें लोक राज्य स्थापित हुआ - ऐरियन बस्तियां वाले युद्धके बिना फारसवालोंके आश्रय होगये और उन्होंने अपने स्वातन्त्र्यको पुनर्ग्रहण करनेका प्रयत्न फिर न किया

प्रकरण ८॥

यूकसाईन समुद्र तट प्रदेशों, थ्रेस और मैसीडन आदि देशोंमे यूनानी बस्तियोंका वर्णन

मोपाएरस, यूकसाईन समुद्र और प्रोपान्टिसके तटों पर मिलीटसके लोगोंने बहुतसी बस्तियां डाली थीं - इस नगरकी वृद्धि उनके देशोंके व्यापार कारण बहुत होगई थी और इसी आशयसे उसके निवासियोंने इन देशोंमें कई एक बस्तियां बसाई थी परन्तु उनका व्यापार केवल इन्हीं समुद्र तटस्थ प्रदेशों पर नियत नहीं था क्योंकि वे इस देशके मध्यभाग और इसके उत्तरा देशोंमेंभी जाकर व्यापार किया करतेथे फोसियन लोगभी इनके साथ इस व्यापारमें अंश लेने वाले हुए थे परन्तु उन लोगोंने अपने पश्चिमी व्यापारके बढ़नेसे इस व्यापार पर बहुतसा ध्यान नदिया - मोपाएरसके

(१) अपालो दिडीमियस - इसका मन्दिर नाईउसके समीप था

तटपर हैलसपोण्टसके पास लैम्पसेकस नगरथा इस नग-
रको फोसियन लोगोंने उस देशके किसी एक राजासे जिसकी
उन्होंने किसी युद्धमें सहायता करी थी भूमी लेकर बसायाथा
फिर यह मिली टस वालोंके हाथ आया जिनके समयमें एकब-
डे व्यापारका स्थान बनगया साईज़ीकस नगर एक द्वीपमें जो
एशियामाईनरसे एक पुलके द्वारा मिला हुआथा स्थितथा यह
नगर बहुतही प्राचीन गिनाजाताथा क्योंकि लोगोंका यह विश्वा-
सथा कि पहले इस कोरिंथनियन पिलासजी और फिर आयो-
नाटयात्रा वालोंने बसायाथा (७५२ ई.पै. में) मिलिटिसके लो-
गोंने इस नगरको और उसके पासके पोकानीसस (मारमारा) ना-
मी द्वीपको अपने वश करलिया फिर जब यह नगर रोमियोंके
वश हुआ तौ यह नगर बड़ी वृद्धिको प्राप्त हुआ - साईज़ीकसके
साम्हने थ्रेसके तटपर पेरिन्थस नगर जिसको सेमोसके लोगोंने
बनाया था स्थितथा - गुरुपमें थ्रेसियन वासफोरस पर बाईज़े-
नशियम (कुसतुन्तुनिया) और इसके साम्हने एशियामें चाल्सीडो-
न (सकाटरी) नगरथे व लेक (काले) समुद्र पर हिरेक्लिया नामक
यूनान देशकी सबसे प्राचीन बस्तीथी - यह नगर बहुत वृद्धिको
प्राप्त हुआ परन्तु जबकि यहांके लोग बाईज़ेनशियम के लो-
गोंसे युद्धमें पराजित हुए तौ उनका व्यापार नष्ट होगया फिर
(३६० - ई. पै.) क्लियार्कस इस नगरका राजा बनबैठा और
यद्यपि प्लेटो (फलातून) के दो शिष्योंने उसे मारडाला तथापि
राज तौ उसीके वंशमें रहा सिनोपी नामक बस्ती जो पै-

फ्लेगोनिया प्रदेशमें थी युक्साइन समुद्र परकी सारी बस्तियोंमे
बलवान गिनीजाती थी इसको आर्गोनाट लोगोंने नियत किया
था और यहां मिलीटसके लोग दोबार आकर बसेथे यहां मछि-
योंका बड़ा भारी व्यापार होताथा पिछले समयमें यह नगर
पोन्टसके राजाओंके आधीन रहा और अन्तमें रोमके आश्र-
य होगया - ऐमिसस नामक बस्ति साईनोपीसे उत्तर का सब-
से प्रसिद्ध नगर था पहले यह मिलीटसके लोगोंके पास थी
फिर ऐथेन्सके लोगोंने इसे पेरीक्लिसके समय अपने वशक-
रलिया और इसका नाम पीरिइस रखा इस नगरको ईपीजस
नामी एक अपनी बस्ति जिसको ईबीसाएट कहतेहैं थोड़ेसेही
दिनोंमें इस नगरसे वृद्धिमें अधिक होगई और उस बस्तिके लो-
ग इसी रोमी राज्यके बिगड़ने तकभी यूनान देशीय आचारोंके
अनुसार रहे युक्साईन समुद्रके पूर्वी भाग पर फेसिस जो अब
कूरियस और फेनेगोरिया नामक बस्तियांथी मेसीडन वालोंके
समय फेनेगोरिया बासफोरस के एशिया तट परकी यूनानी ब-
स्तियोंकी राजधानी होगया था इसकी वृद्धि दासीजनों और एशि-
याके मध्य और दक्षिण भाग के व्यापारसे बहुत होगई थी -
मिलीटसके लोगोंने टारिकचासोनीसी (क्रिमिया)[1] प्रायद्वीप में
भी बहुतसी बस्तियां डालीथीं यहां पैन्टिके पियस नगर बड़ा
प्रसिद्ध था इसनगरमें पहले तो मिलीटसके लोगोंका प्रभुत्व रहा
परन्तु फिर मिथ्रोडेटिस नामक राजाने इसे लेलिया - थैनेर
स और थीलबी नामक नगरभी व्यापारके बड़े स्थान थे - थेस

(१) इस भागको क्रम भी कहते हैं

और मेसीडनमें भी येथिन्स और कारिन्थ वालोंकी बहुतसी प्रसि-
द्ध बस्तियां थीं इनमेंसे थ्रेसमें ये थीं मेसम्ब्रस इगासपोटेमस
मरोनिया और अबडेरा मेसीडनकी बस्तियां इनसे अधिक प्र-
सिद्धथीं इनमेंसे अमिफिपोलिस स्ट्रीमन नदी पर जिसको ये-
थिन्स वालोंने बसायाथा - चालसिस जिसको यूबिया द्वीपप
रके उसी नामके नगरके लोगोंने बसायाथा, ओलिन्थस जो प्रथ
म ऐरियन लोगोंकी बस्तीथी परन्तु पिछले समय येथिन्स वा-
लोंके हाथ आगई और पोटीडिया जोकि कारिन्थकी बस्तीथी
बड़ी प्रसिद्ध थीं इनका इतिहास आगे लिखा जावेगा अफ्रीका
के तटपर सिरीनी नामक बस्ति जिसको थीरा द्वीप निवासि डो
रियन लोगोंने (६३१ - ई.पे. में)बसाया था बड़ी प्रसिद्धथी
यहां पहले बेटस राजाके वंशमें राज्य रहा फिर (४५० - ई.पे
में)एकाधिपत्यके स्थानमें प्रजाधिपत्य नियत हुआ परन्तु
यहांके राज्य प्रबन्धमें बहुत परिवर्तन होतारहे और अन्तमें यह
मिसरके वश होगया - यूनान देशीय बस्तियें जो इटली औ
र सिसीलीमें थीं उनका वर्णन आगे किया जावेगा ॥

अध्याय १०

यूनानका इतिहास फारस युद्धोंके प्रारम्भसे महासिकन्दरके राज्यके प्रारम्भ तक

५०० ई॰पै॰ से ३३६ ई॰पै॰ तक

प्रकरण १।

प्रथम फारसके युद्धका वर्णन।

५०० ई॰पै॰ से ४९० ई॰पै॰ तक

जबकि डारायस हिस्टास्पसने सिथिया पर आक्रमण किया था तो उसने उस पुलको जो उसने डैन्यूब नदी पर बनाया था येशिया और थ्रेसके यूनानियोंकी रक्षामें छोड़ा था कईएक यूनानी लोग अपनी स्वातन्त्र्यताको पुनर्लब्ध करनेके लिये उस पुलका तोड़ना चाहते थे इनमेंसे मिल्टाईडिस नामक थ्रेसयन चरसोनिससका अधिपति तो इस बात पर बहुतही उद्युत था- परन्तु हिसटीईअस नामक मिलीटसके अधिपतिने इसबातको न माना इसपर मिलटाईडिस तो येथिन्सको चलाआया और हिसटीईअस डारायसके साथ फारसको गया परन्तु राजाओंकी प्रीति चिरस्थाई नहीं होती और हिसटीईअसको शीघ्र अपने भले कर्मोंके लिये पश्चात्ताप करना पड़ा फिर उसने अरिस्टेगोरस नामक अपने भतीजेको और आईओनियाकी यूनानी बस्तियोंको फारससे बिगड़नेका उपदेश किया ॥ इस बातको सोचकर कि उनका बिगड़ना नि-

प्ता नहीं अरिस्टेगोरस स्पार्टाको गया वहांका राजा क्लियोमिनि-
स बड़ा उद्योगी और शुद्ध शीलथा परन्तु यद्यपि अरिस्टेगोरस ने
फारसवालोंके धन और राज्यकी बड़ी प्रशंसाकी और फारसके रा-
ज्यका नकशा एक पीतलके पत्रपर खोदकर दिखाया किन्तु उस-
ने उससे यह पूछा कि यूनानसे फारसकी राजधानी तक कितने
दिनोंका मार्ग है अरिस्टेगोरसने उत्तर दिया कि तीन महीनोंका
मार्ग है - जब क्लियोमिनिसने यह बात सुनी तो कहा कि स्पा-
र्टावाले इतनी दूर जाकर लड़ना नहीं चाहते फिर अरिस्टेगोर-
स एथिन्समें आया तो यहांके लोगोंने उसका बड़ा सत्कार कि-
या (५०० - ई. पू.) और उसीकाल बीस युद्धपोत नावकां उस
के साथ कर दीं इनके साथ इरिट्रिया नगरके लोगोंने पांच ना-
वका और कर दीं और इस सारी सेनाने जातेही युद्ध आरम्भ करा
दिया सारडिस नगरको लूटा और जला दिया परन्तु अरिस्टेगो-
रस सेनापतिकी बुद्धि नहीं रखताथा इसलिये जितनी विजय
पाई सो शीघ्रही जाती रही उसकी सेनामें विरोध पड़गया परा-
जय होने लगी और इस उद्योगका यह फल हुआ कि एशिया की
यूनानी बस्तियोंको फारसवालोंका सारा क्रोध सहना पड़ा जि-
न्होंने मिलीटस नगर पर आक्रमण करके उसे नष्ट कर दिया
अरिस्टेगोरस थ्रेसको भाग गया जहां वह जातेही मारा गया
और हिस्टेईअसको सारडिसके सूबेने शूली दिलादिया फिर
डारायसने उन यूनानी राज्योंसे बदला लेना चाहा जिन्होंने पि-
छले उपद्रवमें सहायता की थी इसलिये उसने यूनानके सारे

राज्योंको अपनी अधीनता अङ्गीकार करनेको सन्देश भेजे और एथिन्स वालोंको यह कहला भेजा कि वे हिप्पियसको फिर बुलालें यूनानके और सारे राज्योंने तो फारसकी अधीनता अङ्गीकार करली परन्तु एथिन्स और स्पार्टाके लोगोंने अधीनता के स्थान युद्ध करना चाहा इसपर डारायसने मारडोनिअस नामक अपने जामात्र को यूनान पर आक्रमण करनेको भेजा - (४९२ - ई. पू.) उसने थ्रेस द्वीप और मैसीडन प्रदेशको अपने वश करलिया परन्तु जबकि उसका नावका समूह ऐथस पर्वतके पास पहुंचा तो वहां तूफानसे टूटगया और तीन सौ नावकें, और बीस हज़ार मनुष्योंका समुद्रमें नाश हुआ तब मारडोनिअस फारसको उलटा चलागया - इसके पीछे दूसरीबार डारायसने डेटिस और आरटेफरनिस नामक सेनापतियोंकी सहायतामें एक नावका समूह जिसमें बडी सेनाथी भेजा (४९० - ई. पू.) यह समूह पहले साईक्लेडिस नामक द्वीप समूहमें पहुंचा और वहांसे यूबिया द्वीपमें आया यहां उन्होंने इरिट्रिया नगर को लेकर इसके निवासियोंको बन्दी करके डारायस के पास भेजा और डारायसने उन्हें बाबिलनके समीप रहनेके लिये एक भूमि भाग दिया फिर फारस वालोंकी सेना हिप्पियस एथिन्सके निकाले हुये राजाके कहनेसे माराथनके मैदान पर जा उतरी - फारसवालोंकी सेनामें पांच लाख सैन्यथे और इस दलसे लड़नेके योग्य एथिन्समें केवल दश हज़ार सिपाही और बीस हज़ार दासीजन थे ऐ-

रिया नगरसे भी एक हज़ार सैन्य आमिलेथे परन्तु स्पार्टाके लोगों
ने अथवा भ्रमसे वा ईर्षासे अपनी सेना नभेजी क्योंकि उन्होंने कह
था कि पूर्णमासी से पहले हमारा घरसे चलनेका मुहूर्त नहीं ब-
नता एथिन्सके लोगोंने अपनी सेनामें दस सेनापति नियतकि-
येथे - परन्तु एरिसटाईडिसके कहनेसे उन सबने मिलटाईडिस
को अपनेमें मुख्यसेनापति ठहराया - फिर मिलटाईडिसने अप-
ने साथियोंको यह उपदेश किया कि फारसकी सेनाको एथिन्स
को घेरने न देना चाहिये किन्तु हमे उन्से जाकर लड़ना उचितहै
पहले तो और सेनापति न माने किन्तु फिर उन्होंने इसवात को
अच्छा समझकर अङ्गीकार किया इसके पीछे सारी यूनानी सेना
माराथनमें आई परन्तु जब वहां आकर यूनानी सेनानियोंको फा
रसके सेना दलका महत्व मालूम हुआ तो उनमेसे पांच लड़नेसे
डरे और इनमेसे भी कैलीमेकस बहुतही डरताथा परन्तु अन्तमें
सब सेनानियोंने लड़ना अङ्गीकार किया (४९० - ई.पू.) मि-
लटाईडिस ने यूनानी सेनाको एक पहाड़ीके नीचे जा जमाया
इनके पीछे और पूर्वमे पूर्वोक्त पहाड़ीथी पश्चिममें एक दलदल-
था और आगेकी ओर इन्होंने वृक्ष काटकर फारसवालोंकी असवारी
सेनाके रोकनेके लिये डालरखेथे सेना समूहके दहने पक्ष पर एथिन्स
की सेना और वाम पक्ष पर प्लेटियाकी सेनाथी और बीचमें दा-
सी गणथा - डेटिसने यूनानी सेनाके स्थानको जो युद्धमे उनके
लिये बड़ा गुणकारथा देखातो सही किन्तु अपनी सेनाकी अधि
कता पर विश्वास रखकर युद्ध करनेकी आज्ञा दी यूनानी सेनाका

मध्यभाग तो फारसवालोंके आक्रमणसे भाग निकला परन्तु दोनों पक्षोंने अपने परके आक्रमण रोक कर अर्थात् अपने पर आक्रमण करने वालोंको पीछे भगाकर मिलटाईसके बतलानेसे फारसवालोंकी सेनापर जो उनके मध्यभागके पीछे पड़ रही थी अचानकसे जा पड़े और उसको तितर बितर कर दिया तब फारसकी सेना भाग निकली परन्तु यूनानियोंने उनके नावोंतक उनका पीछा किया इसी समय जब फारसवालोंकी भूमी परकी सेना पराजित हुई तो उनकी जहाज़ी सेनापतिने एथिन्स पर आक्रमण करना चाहा परन्तु उनका यह उद्योग भी मिलटाइडिसके वहांपर पहले पहुंचजानेसे निष्फल हुआ - इस प्रकार पराजित होकर फारसवाले एशियाको लौट आये - फिर मिलटाईडिसने अपनी कीर्तिको फेरस नामक द्वीप पर आक्रमण करनेसे क्षीण किया क्योंकि जब वह वहांसे एथिन्समे आया तो लोगोंने उसे उस द्वीपमे रिशवत लेनेका अपवाद किया - इस अपराधके लिये उसपर जरमाना हुआ परन्तु वह इतना रुपैया न दे सका और कारागृहमें (१) मर गया उसके पीछे थेमिसटोक्लिस और एरिस्टाईडिस नामक दो पुरुष एथिन्समें बड़े राज्याधिकारी हुये थेमिसटोक्लिस तो एथिन्सकी वृद्धिपर उद्युक्त था और इस अभिप्रायसे उसने उन सब यूनानी द्वीपोंको छीनकर और फारसके अधीनसे एथिन्सके वश कर दिये एरिस्टाईडिस अपने राजनीतिके पाण्डित्य और बुद्धिमत्तासे बड़ा प्रसिद्ध था अन्तमें इन दोनोंमें पक्षपात होनेका यह फल हुआ कि एरिस्टा-

(१) जेलखानेमे

ई इसको एथिन्सका त्याग करना पड़ा परन्तु जब भीड़के समय उसका उपदेश लेना उचित समझा गया तो थेमिस्टोक्लिसके कहनेसे वह फिर बुलायागया (१) तब थेमिस्टोक्लिसने यूनान सागरमें एथिन्सका प्रभुत्व जमाया और अपना जहाज़ी सेना बल बहुत बढ़ाया इसके पीछे स्पार्टामें डिमेराटस नामक राजाको उसके साथीराजा क्लियोमिनसने स्पार्टासे निकलवा दिया डिमेराटसने फारसमें जा शरण ली परन्तु क्लियोमिनस भी उसके पीछे पश्चात्तापसे मरगया डिमेराटसके पीछे लीओटीचाईडस और क्लियोमिनसके पीछे लियोनीडस मिलकर राज करने लगे।

प्रकरण २

फारसके दूसरे युद्ध का वर्णन

४८० - ई. पू. से ४७९ - ई. पू. तक

माराथनके युद्धके नौ वर्ष पीछे ज़रकसिस नामक दारायसके पुत्र और उत्तराधिकारीने यूनानको वश करनेका फिर उद्योग किया और यद्यपि इतिहासिकोंने उसकी सेनाके महत्त्वके विषयमें अत्युक्ति बहुत की है किन्तु यह तो निश्चय है कि उससेनासे बड़ा दल इस समयसे पहले तो कभी भी इकट्ठा नहीं हुआ होगा ज़रकसिस हेलिसपोण्ट पर नावोंके पुलपरसे उतरा थ्रेस और मसीडोनियां प्रदेशोंकी दिशाको चला मार्गमें कईएक प्रदेश जैसे थीब्स और थेसेलोनिया उसके अधीन होगये जिससे उसे यह आशा होगई कि यूनान देशका

(१) आगे वर्णन होगा

विजय सुलभ होगा परन्तु जबकि वह थरमापिली नामक दरे
पर जहांसे यूनानको मार्ग था पहुंचा तो उसने वहांपर स्पा
र्टा की एक सेनाको लियोनिडस राजाकी सहायतामें उसके
रोकनेकेलिये खड़ीदेखा जब ज़रकसिसने[1] उनके पास एक
दूतभेजा और यह कहाकि "तुम अपने शस्त्र देदो" तो लि
ओनिडसने उत्तरदिया कि "आओ और लेलो" ज़रकसिस
के सारे प्रयत्न स्पार्टाकी सेनाको वहांसे हटानेमें निष्फल
हुए और वह निराश होकर उलटा जानेको था कि इफीय-
लटिस नामक एक ट्रेचिन निवासी यूनानी सेना त्यागी[2] ने
ज़रकसिसको एक गुप्त मार्ग जो पर्वतके ऊपरसे होकर
जाताथा बताया- जब लियोनिडसने इस बातको सुना
तो उसने अपने साथियोंको जानेकी आज्ञा दी और कहा
कि "स्पार्टाके नियमोंके अनुसार हमलोगोंका इस स्थानसे ह-
टना नहीं बनता" इसपर उसके साथ एक हज़ार[3] योद्धा रहे -
फिर उसने फ़ारस वालोंपर रातको आक्रमण करके ज़रकसि-
सको मारनेका उद्योग किया परन्तु शत्रुओंको मारते २ भोर
होगई और वह राजाके तम्बू तक न पहुंच सका तब वह अ-
पनी सेना समेत दरेके उपरकी ओर चलागया परन्तु वहां फा-
रसकी सारी सेनाने उसे घेरलिया और वह बड़े पौरुषके साथ
लड़कर अपनी सेना समेत मारागया तो स्पार्टाके योद्धा इस युद्ध
में मारेगयेथे उनकी कबरपर यह लिखा हुआ था "लैसडीमन
के लोगोंको कहो जाय्यो- तो नियमोंके बांधे यहां आई हमारे"

(१) इस समय स्पार्टाके लोग अपने लसेडेमन कहाते थे। (२) जो अपने स्वामी को त्याग का शत्रुको जामिलता है।

(३) इनमेंसे ३०० सौ स्पार्टावाले थे।

इसी समय यूनानके लोगोंने ज़रकसिसकी जहाज़ी सेना पर आर
टीमीसियम नामक अन्तरीप पर जोकि यूबियामें है, विजय पा
ई परन्तु इस विजयका फल थरमापिलीके पराजयसे नष्ट
होगया था - थेमिसटोक्लिसने अपने साथियोंको सेरो-
निक खाडीमें जहाज़ी सेना लेजानेको समझाया जिसपर व
ह जहाज़ी सेना सैलेमिस द्वीपके पास आठहरी और थेमिस-
टोक्लिसने जहाज़ी सेनाके यूबियासे चलनेके पहले वहां (यू-
बिया) के पहाड़ोंपर एशिया निवासी यूनानियोंके नाम जो फा-
रसकी सेनामें थे एक उपदेश खोदकर लिखदिया कि "तुमे यूना-
नी भाईयोंके साथ न लड़ना चाहिये" यद्यपि इस उपदेशसे ए-
शिया निवासी यूनानियोंने फारस वालोंकी सेनाका त्याग न
हीं कियाथा परन्तु ज़रकसिसको तो इस बातसे उनके
प्रति बहुत शङ्का होगईथी और उसने उन लोगोंको युद्धमें
इतना बड़ा काम न सौंपा जितनी उसकी इच्छा थी -
फिर ज़रकसिसने फोसिस प्रदेशमें प्रवेश करतेही एक से
ना डैलफी का मन्दिर लूटनेको भेजी परन्तु वहां दैवशक्ति
से एक ऐसी भयानक प्रचण्ड वायु (तूफान) चली कि फा-
रसकी सेनाको बहुतही क्लेश मिला ऐसी दशामें फोसिस
के लोगोंने उन्होंपर आक्रमण करके उनका नष्ट किया
केवल थोड़ेसेही बचकर ज़रकसिसके पास अपनी पराज
यकी खबर लेगये इस समय ज़रकसिस थेसपिई और प-
लेटाई नगरोंको ले और उनका नष्टकर एथिन्स पर आक्र-

मण करनेको जाताथा परन्तु इन एथिन्सके लोगोंने थैमिस-
टाक्लिसके कहनेसे अपने नगरका त्याग किया और अपनेमें-
से वृद्धपुरुषों और अपनी स्त्रीयों बालकोंको ट्रीज़ानी नगरमें भे-
जा और आप सैलेमिस द्वीपमें जारहे. ज़रकसिसने एथिन्सका
नष्टकिया और बड़े गर्वमें आकर यूनानी लोगोंका एक और समु-
द्री युद्धसे पराजय करने और उनकी स्वतन्त्रताकोभीलेनेकी आ-
शा रखी स्पार्टाका यूरीबीयडस जो यूनानी जहाज़ी सेनापति
था पिलोपोनीससवालोंके उपदेशसे कारिन्थ इसथमसकी
रक्षा करने पर उद्युक्त था परन्तु थैमिसटोक्लिसने उनको ल-
ड़नेकेलिये सम्मतिदी और यह शङ्काकर कि कदाचित वे लोग
उसका कहना नमाने उसने एक (बनावटी) सेना त्यागी फारस
के राजापास यह कहलाकर भेजा कि "यूनानकी सेनामें द्वेष हो-
गयाहै इसलिये अब तुम्हें विजय करनेका बड़ा अवकाश मि-
लाहै तुम लड़ो"- इसपर सारी फारसकी जहाज़ी सेनाने सैले-
मिसके नावका आश्रयस्थानको घेरना प्रारम्भ किया इसका
सन्देशा थैमिसटोक्लिसको अरिस्टाइडसने आकर दिया और
तबसे उन दोनोंमें फिर मैत्रता होगई जब यूनानी सेनाने
अपने आपको चारोंओर सेंघिरा देखा तौ वहभी लड़नेपर उ-
द्युक्त हुई क्योंकि वहांसे भागना तौ असम्भव था- ज़रकसिस
ने इस युद्धको इगेलिओस[1] पर्वतसे देखा इस युद्धमें हैलीकार
नेससकी रानी आरटिमीसियाने सबसे बड़ा पौरुष दिखाया
फारसकी सेनाके महत्वसेही इसकी पराजय हुई क्योंकि तब

(१) पारेनैकमस

फिनिशियाके नावोंकी प्रथम श्रेणीको यूनानियोंने पराजित कि-
या तो वह पीछेको हटी और दूसरी श्रेणियों पर जागिरी इससे
फारसकी नावके परस्पर टक्कर खाकर नष्ट होगई(१) इसकाइल-
सने लिखाहै कि फारसकी जहाजी सेना इसप्रकार घेरेमें आक-
र नष्ट हुई जैसे मछली जालमें आकर पकड़ी जाती है. इस स-
मय जरकसिसको फारसको उलटा जाना हुआ और वह मार-
डोनियसको तीन लाख सेना देकर फारसको चलागया
जब हेलस्पोण्टपर पहुंचा तो उसने अपने पुलको टूटाहुआ
देखा और एक नावकामें दूसरे तटपर पहुंचा- मारडोनि-
यसने शीतकालको थेसलीमें व्यतीत करके फिर युद्धका
प्रारम्भ करना चाहा परन्तु इससे पहले उसने मेसीडोनके
राजा सिकन्दरको एथिन्सके लोगोंके पास भेजा कि वे यू-
नानवालोंकी सन्धिको त्याग फारसवालोंके साथ मिलजा-
वें परन्तु एथिन्स वालोंने इसबातको नमाना इसपर फार-
स वालोंने एटिका पर आक्रमण किया और उस प्रदेशको
लूटा और फूका- इस समय स्पार्टाके लोगोंने एथिन्सकी
सहायता करनेमें जान बूझकर बड़ा विलम्ब किया परन्तु
अन्तमें उन्होंने पासेनियस नामक एक अपने राजाको
सहायतामें एक सेना भेजी यह सेना सिथीरोन पर्वतके
नीचे जाठहरी परन्तु जलके न मिलनेसे वहांसे चलकर
वह एक और स्थानको चलीगई इसपर मारडोनियस
को यह विश्वास हुआकि यूनानी लोग भाग गये हैं तब

(१) क्योंकि घटनाके कारण भागना कठिन था

उसने उनपर आक्रमण किया परन्तु बिल्कुल पराजित हुआ इसयुद्धमें जो पलेटीए नगरके समीप हुआ था दो लाख जंगली[1] (फारस वालोंकी) सेना और मारडोनियस मारे गए और यूनानी लोगोंके हाथ बहुत लूट आई उसी दिन (सपटम्बर - २२-४७९ ई. पू.) माईकेलि नामक स्थान पर एथिन्सके सेनापति जैनथीयस और स्पार्टाके सेनापति लिओटीचाईडिसने समुद्रीय लड़ाईमें फारसवालोंपर (एशियामाईनरके तटसमीप) बड़ी विजय पाई इस युद्धमें भी बहुतसा धन हाथ आया परन्तु इसका मुख्य फल जो यह हुआ कि इससे फारसवालोंको प्रतापवृद्धि पश्चिम समुद्रमें रोकीगई और आईओनियनकी बस्तियां स्वतन्त्र होगई पिलेटीईके युद्धके पचास वर्षके अन्तरमें एथिन्स का राज्य सब देश देशान्तरमें विख्यात हुआ - स्पार्टाके लोग इसबातकी ईर्षा करतेथे इसलिये उन्होंने इस नगरको शहरपनाहके बननेको रोकना चाहा परन्तु थेमिसटोक्लिसने अपनी बुद्धिमत्तासे इनके प्रयत्नको निष्फल करदिया यह बात यों हुई थेमिसटोक्लिस आप दूत बनकर स्पार्टाको गया परन्तु वहां वह जानकर राज्यसभामें थोड़े दिन उपस्थित न हुआ क्योंकि इस समय में एथिन्सके लोग बड़े प्रयत्नसे शहरपनाह बनारहेथे और वह चाहताथा कि जब शहरपनाह बनजावे तो मैं स्पार्टाकी राज्यसभामें उपस्थित होऊं परन्तु स्पार्टामें भी इ-

(१) यूनानी लोग और इतर देशके लोगोंको गंवार और असभ्य गिनतेथे जैसे हिन्दू औरोंको म्लेच्छ समझते हैं।

स बातका सन्देशा पहुंचा कि ऐथिन्सको शहरपनाह बड़े प्रय-
त्नसे बन रही है इसपर वे लोग थेमिसटोक्लिससे बड़े क्रुध
हुए परन्तु उसने उन्हें अपने दूतोंको भेजकर शुद्ध समाचार
मङ्गवानेको उपदेश किया जब स्पार्टाके दूत ऐथिन्समें गए
तो थेमिसटोक्लिसकी आज्ञानुसार वहां रोके गये और ज-
ब शहरपनाह बनचुकी तो थेमिसटोक्लिसने कहाकि अ-
ब ऐथिन्स नद शत्रुके आक्रमण और ईर्षाके सहनेके यो-
ग्य होगई है और स्पार्टाके दूत मेरे और मेरे साथियोंके ब-
दले वहां रखे गए हैं इसपर स्पार्टाके लोगोंको थेमिसटो-
क्लिसको छोड़नाही बनपड़ा परन्तु तबसे वे उसके बड़े भा-
री शत्रु बनगए थेमिसटोक्लिसने ऐथिन्समें आकर पिरि-
अस नामक नावका आश्रयस्थान को ऐथिन्सके साथ दो
दीवारोंके द्वारा जिनको "दीर्घभित्ति" कहतेथे मिलादिया -
इस समय स्पार्टाका राजा पासेनिअस फारस आश्रित
इजियन सागरके द्वीपों और थ्रेसके तटस्थ नगरोंको अप-
ने वश करतारहा इन नगरोंमें से सबसे प्रसिद्ध बाईज़ेण्टि
अम था- यहां यूनानियोंको बड़ी लूट मिलीथी और फा-
रसके(बड़े २ महाशय और) राजाके सम्बन्धि कैदकिये गये
थे इन कैदियोंने अपने छुड़ानेके लिये बहुतसा धन दिया
था इस धन वृद्धिसे पासेनिअसको बड़ा गर्व हुआ और उ-
सने फारसके राजाकी सहायतासे सारे यूनानका राजाहो-
ना चाहा और अपने सेनापति साथियों पर बड़ा अनर्थ कर

ना प्रारम्भ किया इसबातसे स्पार्टाके बहुतसे सन्धित राज्यों
ने स्पार्टासे सन्धि तोड़ (जैसे आइओनियन वालोंने[१]) अपने
आपको ऐथिन्सकी सहायतासे करादिया स्पार्टाके लोगोंके
पासभी पासेनियसके उपद्रवका समाचार पहुंच गयाथा
परन्तु पहले तो वह दंड उठानेसे बचरहा किन्तु फिर जब
स्पार्टावाले उसको दंड देनेलगे तो उसने मिनरवा देवी के
मन्दिरमे शरण ली- और यतः वहांसे उसे खैंचकर नि-
कालना उचित नहींथा इसलिये उनलोगोंने उस मन्दिर
के सारे द्वारोंको पत्थरोंसे बन्दकर दिया इस दशामें वह
भूख और शीतसे मरगया - पासेनियसके अनर्थके का-
रण स्पार्टाका प्रभुत्व सारे समुद्रके राज्योंपरसे जाता रहा
और ऐथिन्सका प्रताप बढ़ा, ऐरिस्टाइडिस सारे यूनानी
सन्धित राज्योंका खज़ानची नियत हुआ और उसने डेलस
द्वीपमें अपालो देवताके आश्रयमे सब सन्धित राज्योंकी
धनशाला नियतकी थेमिसटोक्लिसकी भी पासेनियस
की सी अवस्था हुई पहले वह ऐथिन्ससे दश वर्षके लिये
निकालदियागया परन्तु उसके शत्रुओंने उसे इतना
सताया कि वह फारसके राजा पास भाग गया आर्टे-
ज़ारक्सिसने उसका बड़ा सत्कार किया और उसके उपजी-
वनके लिये तीन[२] नगरकी आमदनी नियत की परन्तु
थेमिसटोक्लिसने शीघ्रही अपनेतईं विष खाकर मारडाला
इसी समय उसका साथी ऐरिस्टाइडिस भी मरगया

(२) एकरोटीकेलिये दूसरा शराबकेलिये और तीसरा मांसाहारकेलिये
(१) संधि तोडी

और उसने राज्यधनको इतनी अद्दिसे बरता था कि उसके मरने के पीछे उसका अन्तकर्मके योग्य धन भी न निकला परन्तु ऐथिन्सकी राज्यसभाने उसके अन्तकर्मके लिये सर्व सम्बन्धि खज़ानेमेंसे धन दिया और उसके पुत्रोंके पढ़ने और उनियोंके लिये मासिक नियत किया ऐरिस्टाईडिसके मरनेके पीछे मिलटाईडिसका पुत्र साईमन ऐथिन्सके राज्यका मुख्याधिकारी हुआ इसने फारसवालों पर बहुतसी विजय पाई और यूरुप और एशिया तटस्थ बहुतसे किलियों और नगरोंको जीता और अन्तमें उसने साईपरस द्वीप तट समीप फारसकी जहाज़ी सेनाका (४६०-इ.पे.) नष्ट किया और इसके पीछे शत्रुकी सेना पर जो यूरीमीडोन नदी पर थी आक्रमण करके उसका भी नष्ट किया यह युद्ध पच्चीस वर्षतक रहा और इस समयमें ऐथिन्सकी वृद्धि अधिक हुई अन्तमें दोनों दलोंने सन्धिकी अपेक्षा की क्योंकि इसी समय ऐथिन्सकी एक सेना जोकि मिसरके लोगोंकी सहायताको भेजी गईथी पराजित हुई और साईमन सिटियम नगरको घेरता हुआ मारागयाथा - आरटेज़रकसिसने जब यह देखा कि इस युद्धसे फारस वाणिज्यकी हानी हुई और साईपरस द्वीप छीनागया तो सन्धिकरनी चाही इसकारण ४४९-इ.पे. मे सन्धिके नियम नियत हुए जो ये थे

(१) एशियामाईनरकी सारी यूनानी बस्तियें स्वतन्त्र रहें

(२) फारसका कोई जहाज़ सीएनियन पर्वत और फिलीडो

निश्चन लोगों के बीचमें न आने पावें -
(३) फारसकी सेना समुद्रतटसे तीनदिनके मार्गसे आगे न बढ़े - (४) ऐथिन्स वाले साईपरस द्वीप और और फारसके राज्यको छोड़ दें - इस प्रकारसे फारस युद्धोंका जोकि ५१ वर्षतक रहे अन्त हूआ।

प्रकरण ३

प्रथम पिलापोनीसस युद्धका वर्णन ४३१ - ई. पै. से ४२१ - ई. पै. तक।

जबकि ऐथिन्सका प्रताप सारी यूनानमें बढ़रहा था तै स्पार्टाके लोगोंने इस वृद्धिको रोकनेके लिये इनके द्वारा एक युद्ध का अकस्मात विधान किया परन्तु इस युद्धके होनेके पहले स्पार्टापर भी एक बड़ी आपदा आई-जो यह थी-लेकोनीया प्रदेशमें ४६५ - ई. पै. में एक ऐसा भूकम्प आया कि वहां के एक लाख बीस हजार प्राणियोंका नष्ट होगया इसी समय हैलट नामक दासीवर्ग और मैसिनि[१] शेष लोगोंने अवकाश पाकर अपनी स्वतन्त्रताको पुनर्लब्ध करनेका प्रयत्न किया और यद्यपि ये लोग स्पार्टाको अपने वश न करसके, किन्तु इन्होंने ईथोमी नामक किलेको लेलिया यद्यपि स्पार्टावालोंने ऐथिन्स वालोंसे सहायताभी ली किन्तु वे फिरभी इन राज्यशत्रुओं[२]को अपने वश न करसके और अन्तमें इन्होंने युद्धे पिलापोनीससमे निकाल दिया ये लोग वहांसे निकाले जाकर नपाकटस नामक ऐथिन्सकी बस्तिमें जा बसे

(१) मैसिनियाके शेष लोगोंने
(२) राज्यशत्रु

यहांके लोगोंने उनका बड़ा सत्कार किया और इसके पीछे वे नवी-
नवासी सदा एथिन्सके पक्षमें रहे आरगसके लोगोंने फारस यु-
द्धमें यूनानकी सहायता नहीं की थी और इसकारण उनके
सारे आश्रित राज्य उनसे बिगड़ गये इनमेंसे केवल माईसि-
नि नगरही पर वे अपना क्रोध निरूपण करसके और सब
शेष नगर जो स्पार्टाकी सहायता से आरगससे स्वतन्त्र होगये
बिओशियाके और राज्योंकी थीबसके प्रति यही दशा हुई अ-
र्थात् ये सब अल्प राज्य एथिन्ससे आमिलेथे और स्पार्टा थी-
बसके पक्षमें होगयाथा इस समय एथिन्स नगरने पेरीक्ली-
स नामक मुख्य राज्याधिकारी की अधीनतामें बड़ी वृद्धि पा-
ईथी पेरीक्लीस यद्यपि एक कुलीन वंशमेंसे उत्पन्न हुआ
था किन्तु इसने प्रजाके पक्षमें होनेसे अपना अधिकार ब-
ढ़ायाथा और अपने पक्षपाति साईमनको स्पार्टाके पक्षमें
होनेके कारण देश से निकलवा दिया अपने अधिकारके
बढ़ानेके लिये उसने एरिओपेगस सभाका अधिकार कम
करके प्रजाकी सभाका अधिकार बढ़ाया और एथिन्स
नगर को बड़े सुन्दर स्थानों, पत्थरकी मूर्तियों और चित्रोंसे
आभूषित किया और इस सबके व्ययके लिये एथिन्सके
सम्मित राज्योंका अंश (कर) दान बढ़ादिया और साधे
नको डेलससे एथिन्समें लारखा फिर जब उसने यह देखा
कि स्पार्टाके लोग थीबस वालोंके पक्षपाति होगये हैं तो उसने
एक सेना उनसे(१) लड़नेको भेजी और यद्यपि पहली बार

(१) थीबसवालों से

वह सेना पराजित होगई किन्तु दूसरे वर्ष इसने टनाग्रा नामक स्थान पर विजय पाई (४५६ - ई. पै.) साईमन के फिर बुलायेजानेसे और सीचसपर एक आक्रमणमें एथिन्स वालोंके पराजित होनेसे दोनों राज्योंमें पांचवर्षकेलिये सन्धि होगई (४५० - ई. पै.) और यह सन्धि बहुतकाल रहती यदि साईमन शीघ्रही सीटीअमसे न मरजाता इस सन्धिके अन्तमें थोड़ासा युद्धका प्रारम्भहुआ परन्तु फिर पचास वर्षकेलिये सन्धि होगई और इस समयमें पैरीक्लीसने एथिन्सके प्रतापको बढ़ानेमें अपने नई यत्नकिया और जो २ द्वीप एथिन्सेसे बिगड़गयेथे उनको अपने वश करलिया और सेमास द्वीपकी राजधानीको जीतनेसे उसकी और भी प्रतिष्ठा बढ़ी और इसी समय उसने थूसिडाईडिस नामक कुलीनजन (और इतिहासक) को एथिन्ससे निकलवा दिया और प्रजाको बड़े उत्सवादियोंसे सन्तुष्ट किया परन्तु ऐसे कामोंसे एथिन्सके बहुतसे शत्रु होगयेथे और वे सब अवकाश पाकर एथिन्सके बलको तोड़ना चाहतेथे - इस समय एथिन्स एक बड़े राज्यकी राजधानी होगईथी और माईकेलकी लड़ाई और पिलापोनीससके युद्धोंके अन्तरमें एथिन्सका प्रभुत्व एक हज़ार मीलसे अधिक फैलावमें अर्थात् साईपरस द्वीपसे थरेसियनबासफोरसतक (जिनके बीच बालीसद्वीप थे) फैलाहुआथा इसके सिवा यूकसाइन और इटि-

यन सागरोंमें ना-गल इसके मध्य भी पेथिन्सवालोंके पासथा और इन्होंने थेरेस और मेसीडनके समुद्रीय तटोंपर बस्तियें डाली थीं पोण्टससे टारकवरसोनीससतक अपना प्रभुत्व जमाया और अपनी जहाज़ी सेनाके बलसे जंगली लोगोंको भयमें रक्खा और उन बस्तियोंको जिनको मिलीटस और और यूनानियोंने उन हरस्य प्रदेशोंमें डालाथा अपने अधीन कर रक्खा था इस प्रकार पेथिन्सकी जहाज़ी सेना भूमध्य समुद्रके पूर्वी भाग पर अपना प्रभुत्व रखतीथी पेथिन्सके व्यापारी लोग समीप देशोंसे व्यापार करतेथे और इसकी व्यापार शालायें सब प्रकारकी वस्तुयें इनदेशों (इटली सिसीली साइप्रस लीडिया पोण्टस और पिलापोनीसस) से आतीथीं ।

पिलापोनीसस युद्धका हेतु यूनानी बस्तियों और मूलनगरों (जिनसे वे बस्तियें बनीथीं) में अस्थिर सम्बन्ध अथवा इनमें विरोध पड़जानेसे उत्पन्न हुआथा कारसाइरा द्वीप जो कारिन्थ वालोंकी पुरानी बस्तीथी थोड़ेही कालमें उससे वृद्धि और धनमें अधिक होगया यहांतक कि इसकी अपनी कईएक नवीन बस्तियें डालीगईथीं इन बस्तियोंमेंसे एक एपीडेमनस नामक जिसको रोमीलोग डीरेचियम (डराज़ो) कहतेथे मैसीडोनियाके कनारे पर सबसे प्रसिद्ध गिनी जातीथी जब एपीडेमनसके लोगोंको समीप प्रदेशोंके जंगली जातियोंने बहुत क्लेश दिया तो उन्होंने कारसाइरा वालोंसे सहायता मांगी परन्तु जब उन्होंने देखाकि कारसाइरा वालोंने उनकी प्रार्थनाको

नहीं सुना तो उन्होंने कारिन्थ वालोंसे (जो दादा नगर गिना जाता था) सहायता मांगी - कारिन्थवालोंने शीघ्रही एक जहाज़ी सेना उनकी सहायतामे भेजी दी (५३९ - ई.पै.) जब यह खबर कारसाइराम पहुंची तो वहां वालोंने अति क्रुद्ध होकर और एक जहाज़ी सेना भेजकर एपीडेमनस वालोंको यह आज्ञादी कि तुम कारिन्थवालोंकी सेनाको हटाकर हमारी सेनाको अंगीकार करो परन्तु जब एपीडेमनस वालोंने इसबातको न माना तो कारसाइराकी सेनाने उनको घेरेमे लेलिया - इसपर कारिन्थवालोंने उस घेरेके हटानेकेलिये एक और सेनाभेजी परन्तु यह सेना कारसाइराकी सेनाको अम्ब्रेशियाकी खाड़ीमे मिली और वहां युद्धमें पराजित हुई तब एपीडेमनस कारसाइरा वालोंके हाथ आगया और इसके निवासियोंको जैसा कि उनको भयथा कुछ क्लेश न पहुंचा परन्तु कारसाइरा वालोंने उन राज्योंको जिन्होंने कारिन्थवालोंको सहायता दी थी लूटा और उजाड़ा और साईलीनी जो ईलसकी पवित्र भूमीमे नगर था जलाया इस पिछली बातके करनेसे सारे यूनानको अपने पर क्रुद्ध किया - दोनों (कारसाइरा और कारिन्थ) वालोंने एथिन्स से अपने विरोधको निर्णय करने और शान्तिकेलिये प्रार्थनाकी - पेरीक्लीसके कहनेसे एथिन्स वालोंने कारसाइराकी सहायता करनी चाही और इस आशायसे एक जहाज़ी सेना भेजी यह सेना उस समय वहां पहुंची जब कारिन्थ वाले एक युद्धमे विजयमान होकर और कारसाइरा टापूको घेरकर घमण्ड

के मारने वालोंके वंशमें से था ऐथिन्स से निकालदें स्पार्टाके ह-
लोंने इतने अहङ्कारसे इसे कि उ:खदाई अधिकारोंको ऐथिन्स
वालोंसे मांगा कि वे अति क्रुद्ध हुये परन्तु पेरीक्लीसने फिर भी
उनको समझाया कि शान्तिसे उत्तर देना योग्य है जब इधर ऐ-
थिन्समे ये बातें हो रहीं थीं तो उधर स्पार्टामें खबर पहुंची कि
प्लेटियाको ऐथिन्सकी सहायता पहुंचनेके कारण थीब्स
वाले जिन्होंने प्लेटिया पर आक्रमण कियाथा पराजित हुये
(४३१ - इ॰ पू॰) इसी पर स्पार्टाने ऐथिन्सके साथ (पहला
पिलापोनीसस) युद्धका समाचार दिया गयाथा और स्पार्टाका
राजा आर्कीडेमस पिलापोनीसस अन्य राज्योंकी सेनाका
सेनानी ठहराया गयाथा - ऐथिन्सके साथ द्वीपसमूह
और समुद्र तटस्थ राज्य थे इस कारण वह समुद्र पर बलवान
था स्पार्टाके साथ समान भ्रमण और पिलापोनीससके रा-
ज्य मिलगये थे इस कारण यह भूमी पर बलवान था - दोनों
पक्षोंमे अपने २ बलके स्थानमें युद्धका आरम्भ किया ऐथिन्स
वालोंने पिलापोनीससके तटको लूटा और स्पार्टावालोंको जि-
न्होंने एटिका पर आक्रमण कियाथा अपने देशके बचानेके लिये
पीछे आना पड़ा और जब ये पीछे हटे तो पेरीक्लीसने मेगरा
प्रदेश पर आक्रमण किया दूसरे ग्रीष्मकालमें पिलापोनीसस
वालोंने एटिकाको आ घेरा परन्तु इस समय ऐथिन्सको एक बी-
मारी महामारी ऐसीने जो एशियासे आईथी आ घेराथा और उस
से ऐथिन्समें बहुत से लोग मौतके ग्रास भये - इस युद्धके प्रा-

रम्भ होनेके छाई वर्ष पीछे पेरीक्लीस भी मरीमें मरगया था इस युद्धमें दोनों पक्षोंका प्रयत्न और विजय तुल्य रहा पेथिन्सके लोगोंने पोटिडिया नगरको लेकर वहांके निवासियोंको उससे निकाल दिया – और स्पार्टाके लोगोंने पिलेटिया नगरको पांच वर्षके युद्ध के पीछे अपने वश करके वहांके लोगोंको बड़े निर्दयसे मारा (४२७ – ई. पे.) इसी समय पेथिन्सके लोग भी वैसेही अपराधके कर्त्ता होनेसे बचगए और वह यों हुआ था कि लैसबस नामक द्वीपवालोंने पेथिन्ससे बिगड़कर स्पार्टाकी सहायता चाही परन्तु स्पार्टाके लोगोंने सहायता देनेमें अवलम्बन किया और वह द्वीप पेथिन्सके वश होगया तब पेथिन्सकी प्रजासभामें इस बातका निर्णय होनेलगा कि मिटीलीनी[1] के लोगोंको क्या दंड देना चाहिये क्लिओन नामक एक राजाधिकारीके कहनेसे यह ठहरा कि वहांकी सारी पुरुष जातिको नष्ट करना चाहिए इस आशयसे वहां एक नौका भेजी गई परन्तु उसी रातको लोगोंकी मति फिर गई और उन्होंने पूर्वोक्त निर्दय शासनको दूर करनेके लिये एक और नौका भेजी जिसके शीघ्र पहुंचनेसे मिटीलीनी के लोग मारे जानेसे बचगये स्पार्टाका जहाज़ी सेनापति जब वह लैसबसकी सहायता नकरसका तो कारसाइरा नगरको जहां बड़ा विरोध होरहाथा गया – पहले कहागया है कि कारिन्थके लोग कुछ कारसाइराके महाजन लोगोंको[2] बन्दीकर साथमें लेगयेथे वहां उन्होंने उनको बहुतसा धन देकर कारसाई नगरको कारिन्थके हाथमें देनेको प्रवृत्त

(१) मिटीलीनी नगर लैसबसमें था।
(२) अनाकटोरियामें।

किया जब ये लोग कारसाईराम आये तो उन्होंने अपना प्रयोजन लब्ध करना चाहा परन्तु बहुतसे झगड़ेके पीछे उनका उद्योग निष्फल हुआ और उनको कई प्रकारके दुःख और क्लेश उठाने पड़े आईओनियन समुद्रमें पेथिन्सकी जहाज़ी सेना के पहुंचनेसे यूनानके पश्चिम भागमेंभी युद्ध होने लगा जब डीमासथीनीस नामक पेथिन्सका जहाज़ी सेनापति जिसने उस ओरके शत्रुओंके स्थानोंको छीनलिया था अपने अधिकारके पूर्ण होने (४२५ - इ. पै.) पर पेथिन्सको आता था उसकी सेनामेंके मैसीनिअन लोगोंने उसकी आज्ञानुसार पाईलस(नैवेरीनो)में उतरकर इसको अपने वशकर लिया इस आशासे कि स्पार्टा वालोंको भय होजावे क्योंकि स्पार्टा वहांसे पचास मील पर था इसपर स्पार्टाके लोगोंने एक जहाज़ी सेना इनसे लड़नेको भेजी और स्फेकटिया द्वीपमें अपनी सेना रखी परन्तु जब वहां जहाज़ी सेना पराजित हुई तो उन लोगोंको जो स्फेकटियामें थे बड़ा क्लेश उठाना पड़ा क्योंकि वे घेरेमें आगये थे और डीमासथीनीस उनको अपने वशकर लेता यदि उसके पास थोयोग्य युद्ध सामग्री होती इस समय स्पार्टाके लोगोंने पेथिन्समें सन्धिका समाचार भेजा परन्तु क्लिओनके कहनेसे पेथिन्स वालोंने उनके नियमोंको न माना क्लिओनने यहभी कहा था कि यदि मैं सेनापति होता तो मैं स्पार्टाके सारे महाजनोंको जो स्फेकटियामें हैं बन्दी करलाता उसको यह विश्वास नहीं था कि मेरीबात मानीजावेगी परन्तु पेथिन्सके लोगोंने जो हांसीकी बात परभी अपना सर्व

(१) इसीके करक

स लगादेनेको अविलम्ब होजानेसे उसे सेनापति नियत करके वहां भेजा-वहां अकस्मात् अग्नी लगनेसे स्फेकट्रिया द्वीपको किलेबंदी जलगई और वह स्थान एथिन्सवालोंके आधिन होगया इसविजयके पीछे एथिन्सके लोगोंने सीथेरा द्वीपको लेलिया और निसीया नामक मेगाराके नौ का आश्रियस्थानका नष्टकरदिया परन्तु एथिन्सवालोंकी डीलियम नामक स्थान पर पराजय हुई उनकी (यूनानकी) उत्तरीय बस्तियें उनसे बिगड़ गईं और मेसीडनके राजा पर्डिकसने उनसे युद्धका प्रारम्भ किया इस पर स्पार्टाके लोगोंने ब्रेसिडस नामक सेनापतिको एथिन्सकी बिगडीहुई बस्तियोंकी सहायता करनेको भेजा ब्रेसिडसने एथिन्सके थ्रेस और मेसीडन प्रदेशोंमें आश्रित[1] नगरोंको लेलिया इसपर क्लियोन उससे लड़नेको गया परन्तु पराजित होकर मारागया - किन्तु स्पार्टावालोंकी विजयका फल ब्रेसिडसके मरनेसे नष्ट होगया (४२२ - इ. पै.) स्पार्टामें ब्रेसिडसके अनुयायी होनेको कोई सेनापति योग्य नहीं रहाथा स्पार्टाकी राज्यसभा स्फेकट्रियाके बन्दीजनोंको मोचन करना चाहतीथी और एथिन्सके लोग अपनी उत्तरीय बस्तियोंको अपने वशकरना चाहतेथे इसकारण दोनों पक्षोंमें परस्पर विजय त्यागकरनेके नियमोंपर पचास वर्षके लिये सन्धि होगई परन्तु इसमें स्पार्टाके साथियोंकी बड़ी हानी हुई ॥

(१) एथिन्स आश्रित

प्रकरण ४
द्वितीय पिलापोनिसिस युद्धका इतिहास
४२१- ई॰ पू॰ से ४०४- ई॰ पू॰ तक।

कारिन्थके लोग स्पार्टाकी पूर्वोक्त सन्धिसे बड़े असन्तुष्ट हुए इसलिये उन्होंने आरगसके लोगोंको स्पार्टासे लड़नेको प्रयुक्त किया और सारे लोकाधिपत्यवाले राज्योंने एथिन्स के गुप्त प्रोत्साहनसे परस्पर सन्धि करली इसबात पर उनको पेरीक्लिसके भतीजे अलसिबाईडिसने प्रयुक्त कियाथा - यह पुरुष अपने चचाकी नाईं बुद्धिमान तो था परन्तु यशलोभी था और अपने प्रयोजनको लभ्य करनेके कार्योंकी कुछ सो-चनहीं करताथा आरगस और स्पार्टामें बहुतसी खटपटी के पीछे एक बड़ा युद्ध होने वालाथा कि दोनों पक्षोंके सेनापतियों ने अपने २ देशके एकत्वको सोचकर परस्पर सन्धि करली परन्तु अलसिबाईडिसने आरगसवालोंको इस सन्धिके तोड़ने की शिक्षादी इसपर दोनों पक्षोंमे फिर युद्ध होने लगा - इसी समय आरगसमे प्रजाराज्यके स्थान लोकराज्यस्थापन हुआ और एथिन्सवालोंने अपने समुद्रीय प्रभुत्वको फिर जमानेके लिये डोरियन द्वीप मीलसपर आक्रमण किया और वहांके निवासीयोंको बुरी उद्देशासे मारा इस कर्मसे सारी यूनान एथिन्सवालोंसे अतिक्रुद्ध हुई परन्तु इस समय एक और ऐसी बात हुई कि सबलोगोंका ध्यान उसपर लगा वह बात यहथी ४१५- ई॰ पू॰ मे अलसिबाईडिसके कहनेसे एथिन्सवालों

ने सिसीली द्वीप पर चढ़ाई की इस चढ़ाई का आशा तो यह था कि
ऐथिन्स वालों का प्रभुत्व उस द्वीप में भी होजावे परन्तु लोगों को यह
जताया गया था कि चढ़ाई केवल ईजेसटन वालों को सीरैक्यू-
ज़ वासियों की निर्दयता से बचाने के लिये की गई है - नीसीयस
और साक्रेटीस (सुक्रात) इस चढ़ाई के विरुद्ध थे फिर भी ऐ-
थिन्सवालों ने अलसीबाईडिस नीसियस और लैमेकस की अ-
धीनता में एक बड़ी भारी सेना भेज दी जब यह चढ़ाई कार
साइरा के पास से चली तो वहां इसके एक सौ चालीस जंगी ज-
हाज़ देखे गये थे यदि यह सेना सीधी सिरैक्यूज़ पर जा आक्रम-
ण करती तो वह स्थान सम्भव था कि चढ़ाई वालों के हाथ आ
जाता किन्तु अलसीबाईडिस कटाना नगर में सेना को लेगया
और वहां अपने वाक्य बल से इसके निवासियों को अपने साथ
कर लिया इसके पीछे अलसीबाईडिस घर में बुलाया गया -
लोगों को यह विश्वास था कि अलसीबाईडिस ने हर्मिस नामक
देवतागण की मूर्तियों को जो ऐथिन्स के राजमार्ग पर एक निय-
त अन्तर पर लगी हुई थीं तोड़डाला है और इल्यूसियन देव-
ताओं की गुप्त पूजा का अनादर कीया है अलसीबाईडिस
अपने अपराध से वा लोगों की चंचल प्रकृति से डरकर थूरी-
अम को भाग गया और जब उसके पकड़ने के लिये पारितोषक
नियत हुआ तो वह स्पार्टा को चलागया इस समय लैमेकस के
मरने से नीसियस ही ऐथिन्स की सारी सेना का अधिपति रहा
इसने पहले तो सिरैक्यूज़ के लोगों को पराजित किया परन्तु

और उसके छलबलसे ऐथिन्ससे लोकाधिपत्यके स्थानमें कुली-
न जनाधिपत्य नियत हुआ परन्तु नए राज्याधिकारी भी अल-
सीबाईडिससे डरतेथे और उन्होंने उस दंडको जो उसपर जमा
या हुआथा निवारन न किया जब सूमिया द्वीपमें उपद्रव मचा
और ऐथिन्सकी जहाज़ी सेना इरिट्रिआ द्वीपके पास पराजित
हुई तो वहांके लोगोंने कुलीनजनाधिपत्यको हटाकर फिर
लोकाधिपत्य नियत किया और अलसीबाईडिसको बुलाया पर-
न्तु ऐथिन्सको उलटा आनेसे पहले उसने वहांके लोगोंको अ-
पनी कीर्ति दिखानी चाही और इस आशासे ऐथिन्सवालोंकी
सहायता करके स्पार्टाके जहाज़ी सेनाको पराजित किया फिर
साईज़ीकसके लेबका आश्रयस्थानमें स्पार्टावालोंकी जहाज़ी
सेनापर विजय पाई (४११ - ई. पू.) और ऐथिन्सके प्रभुत्वको
हेलिसपन्त चासो नीससमें स्थापन करके फिर ऐथिन्समें आया
और वहांका मुख्यसेनापति नियत हुआ जब अलसीबाईडिस
ऐशियामें गया तो उसने देखाकि लाईसैंडर नामक स्पार्टाके से-
नापतिने अपना बल बढ़ा रखाहै यह पुरुष अलसीबाईडिस
से निपुणता और छलमें अधिक था और उसने साईरस नामक
फारसके राजपुत्रको जोकि उस समय अल्प ऐशिया का सूबा
नियत हुआथा अपने पक्षमें करनेसे और नाविकोंका मासिक
बढ़ानेसे ऐथिन्सकी बड़ी हानी की इस समय अलसीबाईडि-
स केरिआ द्वीपमें कर (राजकर) लेनेको गया हुआथा और
उसके पीछे उसके प्रतिनिधि ऐण्टीओकस लाईसेण्डरसे युद्ध

कारके पराजित हुआ इससे ऐथिन्स वालोंको अलसीबाइडिसके प्रति फिर शङ्का हुई और उन्होंने उसे निकाल कर उसके स्थानमें दस सेनापति नियत कीए - इसके पीछे लाईसैण्डरके अधिकारका वर्ष समाप्त होगया और उसका अनुयायी कलीक्रैटिस उससे जितना निपुणतामें न्यून था उतनाही शूरतामें अधिक था फिर आरगीन्यूसी नामक द्वीप समूहके पास एक युद्धमें स्पार्टा वालोंका पराजय हुआ परन्तु ऐथिन्स वाले आन्धीके कारण इस विजयसे उपकार न पासके इससे पिलापोनिसस युद्ध थोड़े दिन तक ठहरगया परन्तु जब लाईसैण्डर फिर सेनापति नियत हुआ तो उसने ऐथिन्सकी सारी जहाजी सेनाका ईगसपोटेमस नामक नदीके दहानेके समीप नष्ट कर दिया केवल आठ नावें बची और उनको कानन नामक सेनापति साईप्रस द्वीपमें लेगया (४०६ - ई.पू.) परन्तु लाईसैण्डरने सारे बन्दी जनोंको बड़े निर्दयके साथ मारा फिर लाईसैण्डरने ऐथिन्सके आश्रित द्वीपोंको अपने वश करके उस नगरमें अनाज जाना रोकदिया और अपनी एकसौ पचास नावोंको लेकर समुद्र भागसे और एगिस दूसरा राजा भूमी परसे ऐथिन्स पर चढ़आये पहले तो वहांके लोगोंने उनसे युद्ध किया फिर अन्तमें उनको इन नियमों पर आश्रित होना पड़ा - अपने प्रजाधिपत्यके स्थानमें तीस कुलीन जनोंको अधिपति बनावें अपनी सारी नावोंका त्याग करें - अपने सारे आश्रित राज्यों पर प्रभुत्व त्यागें - और युद्धमें स्पार्टाकी ध्वजाके पीछे चलें

परन्तु फिरभी ये नियम कारिन्थ और थीवस वालोंके निन्दित नि-
यमोंसे अच्छेथे एथिन्सके लोगोंको बडा शोकहुआ और मई
मासके सोलवें प्रविष्टे (४०४ - ई. पै. मे) जिसदिन एथिन्स
वालोंने सेलेमिस स्थानपर विजय पाईथी उनके शत्रुओंने ब-
ड़े आनन्द और तुर्णीय आदि शब्दोंके साथ एथिन्सकी शहरप-
नाह गिरादी - परन्तु स्पार्टाके लोगोंने अपनी विजयको तब-
तक पूर्ण न समझा जबतक अलसीबाईडिस जीताथा इस
समय अलसीबाईडिस सूसाको जाकर फारसके राजा आर्टे-
ज़ारक्सिसको उसके भाई साईरसकी शत्रुता और राजद्रोहने-
को सन्धिजताना चाहताथा - परन्तु जब यह बात फारने-
बेज़ुसने सुनी तो उसने अलसीबाईडेसको (लाईसेन्डरके
कहनेसे) मारडालना चाहा अलसीबाईडिस फ्रीजियामे रहता
था परन्तु उसका इतना भयथा कि उसके मारने वाले उसके
पास पहुंचनेसे डरतेथे इसलिये उन्होंने उस स्थानको जिसमे
वह रहताथा अग्नि लगादी जब एथिन्सवालोंने उसका मर
ना सुना तो बड़ा विलाप किया।

प्रकरण ५

एथिन्समे स्पार्टाके प्रजा पीड़क राज्य और तृतीय पिलापोनीसिस युद्धका वर्णन।
४०४ - ई. पै. से ३६१ - ई. पै. तक।

स्पार्टाके साथियोंने यदि एथिन्सके बलके तोड़नेमे तो स
हायता की परन्तु थोड़ेकालमेही जब स्पार्टाका प्रभुत्व बढ़ा

और उसके शासिता उनको ऐसा दंड देने लगे तो उन्होंने पश्चात्ताप किया लाईसेण्डर बड़ा भारी प्रजापीड़क और निर्दयी शा-सकथा और एशियामेंकी यूनानी बस्तियें फारस राज्यकी छत्र छायाको उसकी दयासे अच्छा समझतीथीं — प्रत्येक राज्यमे स्पार्टावालोंने अपने सहायक बना रक्खे थे ऐथिन्सके ऐक्रोपुलिसमें इनकी सेना रहतीथी जो तीस राज्याधिकारियों की रक्षा करतीथी इस सेनाकी सहायतासे उन राज्याधिकारियोंने नगर में बड़ा उपद्रव मचाया जिसको चाहतेथे मार देतेथे और जिसका धन देखते उससे छीन लेते नगरमें दो प्रकारके लोग बन गये एक तो वह जो इन उपद्रवों को करातेथे और दूसरे जिन पर इन उपद्रवोंका फल होताथा जो इन तीस शासिताओंकी सहायतामेथे उनके बिना और सब निवासियोंके शस्त्र छीने गयेथे और जो नये राज्य प्रबंध को बुरा समझतेथे वे मारे जातेथे वा देशसे निकाले जातेथे जहाज़ वा नौका बननेका स्थान गिराया गयाथा बीमा जो (प) नीकस पहाड़ी पर था समुद्रकी ओर से भूमीकी ओर[1] फेरा गयाथा ताकि वक्ताजन पिछले समुद्रीय प्रभुत्वको प्रजाको स्मरण न करावें और वक्ताजनोंको सभामें बोलना छुड़ा गयाथा — थीबसवाले ऐथिन्सवालोंके बड़े भारी शत्रुथे परन्तु जब उन्होंने इनपर इतना अनर्थ देखा तो उनके मनमें भी दया आगई इसलिये जितने ऐथिन्सवाले भागकर वहां जाते उनको बड़े आदरसे शरण देते होते होते थीबसमें इन

(१) जब वक्ताजन बोलनेको खड़े हों तो उनका मुख समुद्रकी ओरसे विपरीत दिशामें हो।

झगोड़ोंका एक बड़ा भारीगण होगया इनमे थ्रेसीब्यूलस (प्रथम) नामक एक ऐथिन्सका बड़ा बुद्धिमान सेनापतिथा इसकी सहायतासे इन लोगोने पहलेतो फीलिनामक एटीका प्रदेशकी सीमापरके स्थानको लेलिया और फिर तीस शास्ताओंको पराजय करके पीरियसको अपने वशकरलिया इस समय उन तीस शास्ताओंके अधिकार छीने गयेथे और उनके स्थान दस नये राज्याधिकारी नियत हुये इन्होंने और भी अधिक उपद्रव मचाना प्रारम्भ किया और अपने बलके स्थित रखनेके लिये स्पार्टावालोंसे सहायता मांगी लाईसेण्डर उनको सहायता करनेको आया और उसने आतेही पीरियसको घेर लिया परन्तु स्पार्टावाले लाईसेण्डरसे इस समय बड़े क्रुद्धथे इसलिये उन्होंने दूसरे राजे पाउसेनियसको सेना देकर ऐथिन्सपर चढ़ भेजा इसने जातेही उन दस नये शास्ताओंके अधिकार छीन लिये पुरातन ऐथिन्सका राज्य प्रबन्ध फिर स्थापन करदिया और स्पार्टाकी सेनाको ऐथिन्ससे हटा लिया (४०३-ई.पै.) पिछले शास्ताओंमेंसे कई तो ईल्यूसिसको भाग गये कई मारे गये और शेष सर्वापराध(१) क्षमासे आकर बचगये - पुरातन राज्य प्रबन्ध स्थापन होनेके थोड़े काल पीछे ऐथिन्स वालोने (जिनके आचरण बिगड़े हुयेथे) साक्रेटीज़ (सरीखे) बड़े प्रसिद्ध महात्मानीको बिना अपराध अपवादित करके (कि वह युवा जनोंके आचरणोंको बिगाड़ताहै) विष खिलाकर मारडाला (४०० - ई.पै.) यह महात्माजन अपने अन्त समय

(१) यह बात थ्रेसीब्यूलसके कहनेसे हुई थी

नक अपने शिष्योंको वे उनमदार शनिक शिक्षा देता रहा जो उसके शिष्य पलेटो (अफलातून) ने उसके पीछे लिखी हैं -

एक और सक्रातका शिष्य ज़ेनोफन नामक इस समय पेशियासे फारस वालोंकी नोकरीमेंथा डारायसनोथसने अपने मरनेके समय फारसकी राजगद्दी अपने बड़े बेटे आरटेज़ारक्सिसको देदी और साईरस दूसरे बेटेको एशियामाईनरका सूबा बनाया परन्तु साईरस अपनी माता पैरीसेटिस (जो अपने बड़े बेटे राजासे क्रुद्ध थी) के कहनेसे अपने बड़े भाईसे इसदेश पर राजगद्दी छीनना चाहता था कि वह (साईरस) उस समय उत्पन्न हुआथा जब उनका पिता राजगद्दी पाया परन्तु आरटेज़ारकसिस तब उत्पन्न हुआ था जब डारायस राजा नही बनाथा साईरसने अपने भाईसे लड़नेके लिये यूनान वालोंसे सहायता ली और नौ हज़ार यूनान (स्पार्टा ऐथिन्स आदि) के लोग उसके साथ होलिये इनमे एक ज़ेनोफन प्रसिद्ध इतिहासिक था - इस और अपनी सेनाको ले साईरस फारसको चला और बैबीलोनियामे कूनाक्सा स्थानपर उसकी आरटेज़ारकसिससे लड़ाई हुई (४०० - ई. पू.) साईरसतो मारागया और उसकी सेना भाग निकली तब यूनानी लोगोंको फारस वालोंका सारा क्रोध उठाना पड़ा फारस वालोंने यूनानी सेनापतियोंको सन्धि करनेके लिये बुलाकर धोखेसे मारडाला इसपर यूनानियोंको औरभी क्लेश हुये तब उन्होंने नये सेनापति नियत किये और[1] अपनी बचीहुई सेना

[1] इनमें मुख्य ज़ेनोफनथा।

को जो दस हजार थे बड़ी बुद्धिमत्ता और बलसे और मार्गमें शत्रु-
ओंको पराजय करते हुये हजार मीलके अन्तरसे बचाकर अपने
देशमें लाये इस यात्राको दस हजारका पीछे हटजाना कहतेहैं
इन लोगोंमेंसे बहुतसे स्पार्टोके साथ होलिये क्योंकि वे एशि-
याके यूनानियोंको विजयी आर्टेजरक्सिसके आक्रमणसे
बचाना चाहतेथे कईएक अल्प युद्धोंके पीछे यूनानियोंकासेना-
पति ऐजेसीलेयस (स्पार्टोका राजा) नियत हुआ - इसी सम-
य लैसेडीमनके लोगोंने स्पार्टावालोंके नष्ट करनेको मिलेहन
के कहनेसे सन्धिकी परन्तु स्पार्टावाले बचगये (३९६- ई. पू. ज-
ब ऐजेसीलेयस एशियाको गया तो लाइसैण्डर भी उसके साथ
होलिया परन्तु जब इसने देखा कि ऐजेसीलेयस उसका निरा-
दर करताहै और उसका बलहीन होताजाताहै तो वह स्पार्टोको हट
आया इसके पीछे ऐजेसीलेयसने फारसवालोंको कईएक युद्धों
मे पराजित किया और यहभी सम्भवहै कि वह आर्टेजरक्सिस
का राज खोजानेके भयमें डालदेता यदि इस समय यूनानमें एक
उपद्रव न उठता जिससे द्वितीय पिलापोनीसिस युद्धका प्रारम्भ
हुआ - एक निकम्मे और मिथ्या हेतुसे लाइसैण्डर और पाजे-
नियस स्पार्टोके अधिपतियोंने बेओशिया प्रदेशपर आक्रमण कि-
या - लाइसैण्डर हैलीआरटस नगर घेरनेको गया परन्तु लड़ा-
ईमें पराजित होकर मारागया (३९५ - ई. पू.) पाजेनियस अप-
मानित होकर बेओशियाको त्यागआया परन्तु स्पार्टोके बहुतसे
लोग लज्जासे मरगये। - इसपराजयका समाचार जब यूनानमें

पहुंचा कईएक राज्योंने जैसे आरगस, थीवस, पेथिन्स, कारिन्थ
आदि मिलकर सन्धिकरली स्पार्टावालोंने ऐजेसीलेयसको
ऐशियासे बुलाभेजा और वह अपने साथि सिपाहियोंकी अधी-
नतामे सेना ऐशियामे छोड़ पीछे चला आया - कोनन ऐथिन्स
वालोंका मुख्य सेनापति जिसने आरगीन्यूसी[1] पर विजय पाई थी
अपने देशवालोंसे अपवादी होकर साइप्रसके राजा ईवैगोर-
सके पास चलागया जिसके द्वारा वह आर्टेज़रक्सिससे जामि-
ला फारसके राजाने जो स्पार्टा वालोंका बल तोड़ना चाहताथा
कोननको सहायताकेलिये सेनादी इस और अपनी सेनाके सा-
थ कोननने (स) नाईडस नामक स्थानमे स्पार्टावालोंपर
पूरी विजय पाई और शत्रुका समुद्रीय प्रभुत्व तोड़कर ऐथिन्स
का प्रभुत्व जमाया - इस पराजयका समाचार ऐजेसीलेयसको
उस समय पहुंचा जब वह कोरोनियामे (३९४ - ई. पै.) थीवस
वालोंसे लड़ने गया था उसने बड़ी धीरजताके साथ लड़ाईमे जीती
परन्तु इसमे स्पार्टाके मुख्य सेनानी मारेगये - इस युद्धमे जो आठ
वर्ष तक रहा येही दो ((स) नाईडस और कोरोनिया) की लड़ाई-
ये हुई परन्तु कारिन्थके समीप बहुत युद्ध होते रहे जिनसे स्पार्टा
और आरगस वालोंकी शत्रुतासे उस धनाढ्य नगरको बड़ी हानी
हुई - अब कोनन फारसके धनकी सहायतासे ऐथिन्स नगर बना
रहाथा और अपनी सेनाकी सहायतासे ऐथिन्सका समुद्रीय प्रभु-
त्व जमारहाथा तो आर्टेज़रक्सिसको शंका हुई कि वह एशिया
वाले यूनानियोंको फारसके विरुध करना चाहता है - इस शंका

(१) स्पा.-९२

को स्पार्टावालोंने और भी अधिक किया और अपने लाभके आशय से भिन्न सन्धि करनी चाही - आर्टेज़रक्सीसने कोननको पकड़कर बंदीखानेमे मरवादिया[1] और स्पार्टाके साथ (जिसकी ओर से पेन्टलसाईडस वहां भेजागयाथा) इन नियमोंपर सन्धि करली १ कि एशियामेके यूनानी नगर फारसकेआधीनरहैं २ अन्य यूनानी राज्य स्वतन्त्र होजावें पिछला नियम इसलिये बनायागयाथा कि एथिन्स और थीबस अपने प्रभुत्वको न बढ़ावें (३८७ - ई.पू.) औलिन्थस नगर निवासीयोंने जो मेसीडोनिया प्राय द्वीपमेथा स्पार्टावालोंको अपने पर क्रुध करलिया इसपर स्पार्टाकी एक सेना भेजीगई परन्तु चार वर्षके युद्धके पीछे जिसमे स्पार्टावाले कईवार पराजय हूये औलिन्थस नगर स्पार्टाके अधीन होगया इस युद्धमे फीबीडस एक स्पार्टाके सेनापतिने सन्धिके नियमोंको तोड़कर थीबसके किले कैडमिया को हाथमेलेलिया (३८३ - ई.पू.) थीबसके मुख्य स्वदेश प्रियालोग वहांसे भागकर एथिन्समे चलेगये और स्पार्टावालोंने अपने अधीन थीबसमे वैसाही अल्प राज्यप्रबन्ध स्थापन किया जैसापीछे एथिन्समे कियाथा - इन भगोड़ोंमेंसे पीलोपीडसने थ्रेसीब्यूलस की नाईं अपने देशको स्वतन्त्र करना चाहा इस आशासे उसने उन मुख्य निवासियोंके साथ जो थीबसमे थे गुप्त सन्धि[2] की इन्होंने थीबसमे स्पार्टाके मुख्य अधिकारियोंको भोजन खिलानेके लिये बुलाकर हाथमे मारडाला मारने वाले स्त्रियोंका वेष बनाकर अन्दर आसगयेथे (३७८ - ई.पू.) अब

(१) [illegible]

(२) परस्पर सम्मति की

ऐथिन्ससे सहायता पहुंची सब स्पार्टाके लोग पकड़ेगये और थी-
बस स्वतन्त्र हुआ - स्पार्टावालोंने यह समाचार सुनतेही अपने
राजे क्लीओम्ब्रोटसको बहुतसी सेना देकर थीबसपर चढ़ाया
ऐथिन्सवाले अपनी सहायता देनेका पश्चात्ताप करने लगे पर-
न्तु एक स्पार्टाके सेनापतिने उसी प्रकार छलसे पीरियस बन्द-
रगाहको लेलिया जैसे फीबीडसने कैडमियाको लेलियाथा
इस बातके होनेसे ऐथिन्सवाले क्रुध होकर स्पार्टासे लड़नेको
प्रवृत्त हुये पिलोपाईडसने जो थीबसवालोंकी सेनाका सेना-
नी बनायागयाथा स्पार्टावालोंको टनागरा और टेजीराकी ल-
ड़ाईयोंमे पराजित किया एजेसीलियसने भी बीओशिया पर
आक्रमण करके स्पार्टावालोंकी जय करनी चाही परन्तु उसके
सब उद्योग निष्फल हुये इधर ऐथिन्सवालोंने इनकी जहाजी
सेनाको पराजयकर पिलापोनीससके तटस्थ प्रदेशोंको लूट-
ना फूंकना प्रारम्भ किया और इफिक्रेटीसने(१) जो लड़ाईकी नवी-
न रीति निकालीथी, पुरातन लेसीडीमन युद्धकी रीतिसे प्रबल
और फलदायकथी और यदि थीबसवाले गर्वमें आकर बीओशि-
या निवासियोंको दुःख न देते तो सम्भव था कि स्पार्टावालोंका ब-
ल सर्वथा नष्ट होजाता - फारसके राजाने मिसरमें एक बलवे
के दबानेकेलिये यूनानियोंसे सहायता लेनी चाही इसवा-
स्ते उसने सब यूनानी राज्याओंसे वहांके मुख्य राज्याधिकारी
(दूत) स्पार्टामें बुलाये (३६२ - ई.पै.) थीबसकी ओरसे ईस-
मीनानडस जो यूनानमें सबसे अच्छा सेनापति और पैरीक्लिस

(१) इसने भारी शस्त्रधारी सेनाके स्थान लघु शस्त्रधारी सेना बनाई

से पीछे सबसे बड़ा बुद्धिमान राज्याधिकारी हुआ भेजागया था इसने वहां जाकर अपने वाक्यबलसे इनोंके मनोंको स्पार्टाके विरुध करदिया इस सभाका फल इसके बिना और तो कुछ न हुआ कि स्पार्टावालोंका भय (दबदबा) जाता रहा - अगली बसंत ऋतमें क्लीओम्ब्रोटसने सेनालेकर बिओशियाको जा घेरा परन्तु वह ईपामीनानडसमें लूक्ट्रा की लड़ाईमे पराजय होकर मारागया इस लड़ाईका यह फलहुआ कि स्पार्टाके आधीन अल्प राज्य स्वतन्त्र होने लगे- थेसिलवाले यद्यपि स्पार्टावालोंके विरुध थे तथापि इसलड़ाईसे असन्तुष्ट हुये और इसलिये उन्होंने थीवस वालोंसे सन्धितोड़ली इसपर थीवसवालोंने थेसलीके मुख्यसेनानी जेसनसे सन्धिकरली यह कुलीनजन अपने आपको यूनानका राजा बनाना चाहताथा परन्तु (३७०- इ.पे.) मे मारागयाथा स्पार्टाके आधिन प्रदेशोंने जो उस से स्वतन्त्र होना चाहते थे बीओशियावालोंसे सहायतामांगी तब पिलोपाइडस और इपामीनानडस सेना लेकर लेकोनियामे आये (पांचसौ बर्षसे इस समयतक इस प्रदेश में शत्रुकी सेना नहीं आईथी) और इन्होंने (३६९ - इ.पे.) उस प्रदेशको लूट लूटा और इपामीनानडसने मेसीनि नगरको बसाकर वहांपर अपनी सेना जमाई और उस नगर के पुराने निवासियोंको बुलाभेजा - इस समय थीवसके इन सेनानियोंने समाकि थेबिन्सवालोंने स्पार्टावालोंसेस-

(१) २ॱ ॱ ॱ, ५.A

न्धिकरलीहै और इफिक्रेटसको सेनाटेकर उनकी सहायताको भेजा
तब थीबसवालोंने लेकोनिया प्रदेशका त्यागकिया परन्तु जब
वे घरमे पहुंचे तो वहांकी राज्यसभाने इन सेनानियोंको नियत स-
मयसे अधिक समयतक सेनानीपने रहनेकेलिये अपवादितकि-
या- पिलोपाईडस तो बडी कठिनतासे बचा परन्तु इपामीनानडस
ने अपने वाक्यबलसे सबको धमकाया- पिलापोनीसस युद्ध औ-
र छै वर्षतक होतारहा इस समयमे स्पार्टावाले अपनी बिगडीहुई
(राजद्रोह) प्रजाको उंडेदेतेरहे और थीबसवाले फौरीके अधिपति
सिकंदरासे जो जेसनके पीछे थैसलीमे मुख्याधिकारी बनगयाथा
और टालमीसे जिसने मैसीडनके राजको छीनलियाथा लडतेर-
हे पिलोपाईडस सेनाटेकर इन शत्रुओंके साथ लडने भेजागया
था इसने सिकंदरासे उननियमोंपर जो थीबसकी राज्यसभाने लि-
खभेजेथे सन्धिकरवाई और पार्डीकस मैसीडनके स्वत्वाधिकारी
राजाको वहांकी गद्दी दिलवाई पिलोपाईडस जब थीबसको आ-
या तो आते हुये मैसीडनसे वहांके कईएक राजकुमार और कुली-
नजनोंको शरीर बन्धक बनाकर लाया इनमे पार्डीकस राजाका
भाई फिलिपभी था इसके पीछे फौरीके अधिपतिने पिलोपाई-
डसको छलसे बन्दीखानेमे डालदिया और इपामीनानडसने
फिर सिकंदराको अधीनकरके पिलोपाईडसको छुडाया तब
पिलोपाईडस फारसमे दूत बनाकर भेजागयाथा और वहां उस-
ने अपने आचारविचारसे फारसके राजाको स्पार्टावालोंसे सन्धितोड
[illegible] परन्तु तब [illegible] के कईएक राजे

ने ममाना ले इपामीनानडस तीसरीवार फिर सेनाले पिलापोनी-
ससमें आया कि स्पार्टाके शत्रुओंको सहायतासे बलवान कियाजा
वे (३६६-ई.पू.) बहुतकाल तो योंही बितीत हुआ क्योंकि उसके
साथी मनसे होकर उसको सहायता देनी नहीं चाहतेथे इसी स-
मय पिलोपाईडस फीरीके अधिपतसे लडताहुआ मारागया
(३६४- ई.पू.) परन्तु थोडे दिन पीछे सिकंदरभी अपने घरके
लोगोंके हाथसे मारागया अगले वर्ष इपामीनानडस अपना
अन्तिम कूच करने चला यह बात समझकर कि स्पार्टा खालीपड़ा
है वह सेनाको लेकर उसीकी ओर चला और उसने अचानक उ-
सपर आक्रमण किया परन्तु ईजीसिलासके पुत्रने थोडेसे
योद्धाओंके साथ थीबस वालोंको पीछे हटादिया फिर इपामी-
नानडस मेनटीनिया नगर पर जिसमें बहुतसा धनथा आक्रम-
ण करनेको चला परन्तु ऐथिनसवालोंकी सहायता पहुंचजा-
नेसे उसका यह प्रोग्राम भी निष्फल हुआ तब उसने लडाईमें
शत्रुका सामना करना चाहा और मेनटीनियाके समीप एक
बडी भारी लडाई हुई थीबसवालोंकी जय तो हुई परन्तु इपा-
मीनानडसने विजयके हर्षोंपर मिलकर स्वाम देदिये- इस
लडाईका यह फल हुआ कि सब यूनानी राज्योंमें दुर्बलता
होगई थीबसकी प्रतिष्ठाभी दूर होगई (पिलोपाईडस और
इपामीनानडस) के मरनेके साथही नष्ट होगई - अन्तमें अ-
र्टेजरक्सीसके कहनेसे यूनानमें इस नियम पर शान्ति हो
गई कि प्रत्येक राज्यका अपने२ अधिकार और राज्य ऐसे

ऐथिन्समे आकर अपने दोनों साथियोंको राज्यसभामे अपवादित
कर बुलाया और जब वे आये तो उनको देशत्याग मिला चेरस
जो अब अकेला सेनापति रहगयाथा ऐथिन्सके शत्रुओंके अधी
न करनेके स्थान आर्टेबेज़स फारसके सूबेको (फारसके राजा
के विरुध) सहायता करने लगा परन्तु जब फारसके राजाने क्रु
ध होकर ऐथिन्स वालोंको धमकाया तो इन्होंने अपनी सेनाको
पीछे बुलालिया (३५८ - ई.पै.) सन्धित राज्य जो अब स्वतन्त्र
होगयेथे बीस वर्षके पीछे सारी यूनान सहित मेसीडनके व-
श होगयेथे - जब स्पार्टा थीब्स और ऐथिन्सका प्रभुत्व एक दू-
सरेके पीछे नष्ट होगया तो ऐमफिक्टियन राज्यसभा फिर
यूनानके राज्य व्यवहारोंमे हाथ डालने लगी(१) इसने फोसियनपर
अपालो देवताकी भूमिमे खेती करनेसे और स्पार्टावालोंपर कैडमि-
याके लेनेके कारण भारी धनदंड लगाया (३५७ - ई.पै.)
फोसियनके सेनापति फिलोमीलसने आज्ञामाननेके स्थान डेल-
फीके नगर और मन्दिरको जालूटा इसपर थीब्स और लोकरि-
सवाले देव मन्दिरके बदला लेनेको प्रयुक्त हुये दोनों पक्षोंमें
लड़ाई हुई परन्तु भारी लड़ाई एकही हुई जिसमे फिलोमील-
स ऊंचे चटान परसे गिरकर मरगया (३५३ - ई.पै.) फिलोमी-
लसका भाई ओनोमारकस शेष सेनाको बचाकर डेलफीमेंला-
या और वहां आकर उसने धनके द्वारा लीकोफ्रन फेरेसीके
मुख्य राजाको अपनी सहायतामें लिया और बियोशिया और
लोकरिस प्रदेशोंको लूटा थीब्सवालोंने फिलिप मेसीडनके राजा

(१) इसहमाने

को अपनी सहायताके बुलाया (३५२ - ई.पै.) यह राजा चाहता ही था कि यूनानके राज्यकाजोंमें हाथ डाले इसलिये इसने आते ही फोसियनवालोंको पराजय किया और ओनोमार्कसको देश को (जब वह लड़ाईमें मारागया) इसीके लड़का फेलस अ-थेंस फोसियनके सेनापतियोंके भाईने फिर लड़ाईका आरम्भ किया फिलिप थर्मापिलीके दरेको लेने आया परन्तु वहां ऐथिन्सवालोंको देख पीछे घरको चलागया थ्रेस, ऐथिन्स आदि प्रदेशोंके कई एक शत्रु प्रजाओंको धनका लोभ देकर अपने वशमें करलिया यह युद्ध दो तीन वर्ष होता रहा जब डेल्फीका खज़ाना खाली होने पर आया तो फोसियन लोगोंने शान्तिकी कामनाकी परन्तु थीबसवाले उनके भारी शत्रु थे इन्होंने फिर फिलिपको बुलाकर उनपर आक्रमण करवाया फिलिपने फोसियनवालोंको पराजय करके उनके प्रदेशको उजाड़ा और [illegible] को लूटा (३४६ - ई.पै.) इस युद्धके पीछे एक और पवित्र युद्ध छिड़ा - ऐथिन्सके दूत इसचाइनसने जो ऐमफिक्टीयन सभामें था और जो फिलिपका पक्षपाती था ऐमफीसाके लोकरियनवालों को सिर्हीयन भूमिमें खेती करनेसे जो प्रथम पवित्र युद्धमें देवताको अर्पण की गई थी अपवादित किया जब लोकरियनवालोंने भी सभाकी आज्ञाको नमाना तो सभाने फिलिपको बुलाया (३३९ - ई.पै.) इसने[२] आतेही ऐमफीसाको लेलिया परन्तु [illegible] लेटीयाको ले और उसमें अपनी सेना रख यूनानको अपने आधीन करना चाहा इसपर ऐथिन्स और थीबस [illegible] परन्तु

(१) इस नगरको अब सालोनिका कहते हैं (२) [illegible] फिलिपके [illegible] रोकना [illegible] इसने इस समय भी ऐथिन्सवालोंको [illegible]

[illegible] कर सकते थे इनके सेनानी भी युद्धयोग्य नहीं थे इसलि-ये जब चिरोनिया में लड़ाई हुई तो फिलिपकी जय हुई और यूना-नियों स्वतन्त्रताका नष्ट हुआ। इसपर जो ऐम्फिक्टियन सभा का-रिन्थ में हुई उसमें फिलिप सारे यूनानका कप्तान जनरैल बनाया गयाथा और फ़ारस पर चढ़ाई करनेको नियत कियागयाथा (३३८ ई. पू.)

अध्याय ११

मैसीडन का इतिहास

प्रकरण १

भूगोल

मैसीडनके उत्तरमे हीमस पर्वतथा जो इसे और थ्रेस को सम्पूर्णसे भिन्न करताथा और दक्षिणमे कैम्ब्यूनियन पर्वत इसको थैसेलीसे भिन्न करताथा इस देशका पुराना नाम इमाथिया और इसकी वृद्धिके समय इसकी ये सीमायीं उत्तरमे स्ट्रीमन नदी पूर्वमे इजियन समुद्र दक्षिणमे कैम्ब्यूनियन पर्वत और पश्चिममे ऐड्रीएटिक समुद्र पश्चिमी भागमे टालान्टी नामक जंगली लोग बसतेथे इसी स्थान एपीड्रैमनस(१) नगरथा टालान्टी वस्तियोंके दक्षिणमे ऐलीमिओटा जाति रहतीथी इनके पूर्वमे एक छोटीसी योरेस्टस नामकी राजधानीथी - इमाथिया वा मैसीडोनिया असलीमे उडेसा और पीला नगरथे इमाथिया के समुद्र तटस्थ भूमीको पीरिया कहतेथे और म्यूज़जके नाम पवित्र गिनतेथे इसमे पीड्ना, फीलेस, और डीउम नगरथे इसके उत्तर पूर्वमे ऐम्फैकसीटस प्रदेश थामेक खाडीपरथा इसमे थरमा जिसको पीछे थैसेलोनी कहतेथे (सैलोनिची) और स्टैगीरा (अरस्तूका जन्मस्थान) नगरथे - चैलसीडियन प्रायद्वीपमे पालीनी, पोटीडिया (कारिन्थवालोंकी बस्ति), टोरोनी, औलिन्थस (यह कईवार ग्रीसमे आयाथा), ऐम्फीपोलिस (ऐथिन्सवालोंकी बस्ति), सकोटसा, और स्ट्रीनाइडस (जिसका नाम फिलिप सिकंदरके

---

(१) रोमियोंने इसका नाम डिरैकलियम रक्खाथा और अब इसे डराजो कहते हैं

जिनमे फिलिपी रक्खाथा) बड़े प्रसिद्ध नगर थे पिछली तीन बस्तियां इस्टोनिया प्रदेशमें थीं मेसीडनके प्रसिद्ध पर्वत ये थे - स्काइ-यन, पैंगियस (जिसमे सोने चांदीकी खान थी) पेथस और ओलि-म्पस इनमेसे स्काइयन और पेथस पर लकड़ीके जंगल थे मेसीडनकी मुख्य नदियें ये थीं पैनीपेसस, पेपसस, लेथस, मीलीज्नस पेड्रीयेटिक समुद्रमे गिरतीथी, हेलीयकमन श्री-मान, पेक्सियस और सट्रीमन इजियन समुद्रमें गिरतीं थीं मेसीडनकी भूमि उर्वरा थी इसके समुद्र तटस्थ प्रदेशोंमे मद्य, अनाज, तेल आदि बहुत होताथा इसके पर्वतोंमेंसे आकरी न-ल बहुत होतीथीं और इससे अच्छे २ घोड़े बहुत उत्पन्न होतेथे।

प्रकरण २

मेसीडन की राजधानी का इतिहास

८१३- ई. पू. से ३३३- ई. पू. तक

कहतेहैं कि आरगस वालोंने जो हैनस की सहायतासे इतरदेशोंमे बसनेके लिये आईथे चकाशावाली द्वारा इमाथि-या को जीता और बकरियोंके पीछे २ चल इडेसा नगर जा लि-या (८१३- ई. पू.) इस नवीन राजधानीकी वृद्धि होतीगई पर-न्तु अमिन्टस राजाके समय यह फारसवालोंके अधीन होगई (५१३- ई. पू.) पार्डिकस द्वितीय के समय (४५४- ई. पू.) एथी-नियन और थ्रेसके लोगोंने मेसीडन वालोंको बहुत क्लेश दिया और जब प्रथम पिलोपोनीसस युद्धमे एथिन्सवाले इसके वि-रुद्ध इसके भाईको सहायता देतेथे तो यह स्पार्टावालोंकी ओर होगया

था- आरचीलेयस (पार्डीकसके पुत्र) के समय शिष्टाचार और
विद्याका प्रचार हुआथा (४१३- ई.पै.) इसने सुकरातको[1] बुला
या और युरीपाईडस को (जो ऐथिन्ससे निकाला गयाथा) बड़े
आदरसे अपने पास रखा- इस राजाको इसके मीथ क्रेटीसने
(४०० - ई.पै. मेंमारडाला और कितने कालतक देशमे उपद्रव
होता रहा अन्तमे जब पार्डीकस तृतीय मरा तो फिलिप[2] तीबससे
भाग आकर राजा बना (३५९- ई.पै.) इस समय मैसीडनके कईए
क शत्रु उत्पन्न होगये परन्तु इसने अपनी राजनीति उत्तमतासे इ
लीरिया, पीओनिया और थ्रेसवालोंको धनके लोभसे प्रसन्न कर
आरजियस और उसके ऐथिनियन[3] सहायकोंको पराजय किया
जब राज मे इस प्रकार शान्ति हुई तो फिलिप युद्धकी नई रीतियें
इपामीनानडसकी नाईं जिसका यह शिष्य था विधान करने
लगा इसने भी सेनाकी क्रमशः श्रेणियोंकी रीति निकाली जिस
का नाम मैसीडोनियन फैलैंक्स[4] पड़गया इसको इस प्रकारकी
सेनासे बड़े लाभ हुये- पीओनियावाले वश होगये और इली-
रियावाले पराजय हुये जब ऐथिन्सवाले अपनी बस्तियोंके साथ
लड़ रहेथे फिलिप ऐम्फीपोलिस, पीडन, पोटीडिया और थ्रेसके
राजाकोटीस से भी कईएक स्थान लेलिये - इसके पीछे उसने थे
सेली और इपाइरसके विरुद्ध लड़ना प्रारम्भ किया और थेसेली
वालोंसे करलेना करलिया - जब युद्ध समाप्त हुई तो उसने इपाई
रसके राजाकी पुत्री ओलिम्पियस को विवाहा (३५७- ई.पै.) जब
यूनानमे द्वितीय धर्मयुद्ध[5] होरहाथा तो फिलिपने मीथोनीको लेलि

(१) महात्मा सुकरात (२) महासिकंदरका पिता (३) ऐथिन्सवाले (४) पहले ऐसी श्रेणी होतीथी :::::::::::: । ::::: फिलिपने ऐसी बनाई
(५) अथवा पवित्र

था परन्तु इस समय उसका एक नेत्र जाता रहा जब उसको धर्म युद्धमे बुलाया गया तो उसने फोसियन वालोंका पराजय करके थरमापिलीका दरा लेना चाहा परन्तु न लेसका (३५२-ई.पे.) इस स्थान और युबिया द्वीपसे उसको ऐथिन्स वालोंने पीछे हटाया और यह उपकार डीमासथनीका था क्योंकि यह फिलिपके विरुध ऐथिन्स वालोंको उकसारहाथा इसके पीछे उसने ओलिंथस को जा लिया (३४९-ई.पे.) डीमासथनीने उसके रोकनेका यत्न किया परन्तु कुछ न बनपड़ा क्योंकि फिलिपके पक्षी व ऐथिन्सके ओजन लोगोंको ओलिन्थसकी सहायता करनेसे रोकतेथे- तब फिलिपने सारे थेलसीडियन प्रायद्वीपको लेलिया इस समयभी फिलिपने अपने धनके लोभसे ऐथिन्सवालोंको उठने नदिया किन्तु उनकी आज्ञासे इसने पिलापोनिसस तक अपने प्रभुत्वको बढ़ाया और फोसियन का नष्टकर धर्म युद्धकी समाप्ती की- कई वर्षतक फिलिप थ्रेसियन चरसोनीसस और परोपौंटस पारके नगरोंको लेतारहा ऐथिन्स वाले उसके बलको रोकते रहे अन्तमे तृतीय धर्मयुद्धके होनेसे वह फिर यूनानमे बुलाया गया उसने आतेही ऐम्फीसाको ले इसका नष्ट करदिया (३३८-ई.पे.) और इलेसियामे अपनी सेना रखकर यूनानमे यह कहला भेजा कि तुम मेरे वश होजाओ इसपर थीबस और ऐथिन्स वाले उठे परन्तु किरोनियाके युद्धमे पराजय हुये दूसरे वर्ष जो कारिन्थमे राज्यसभा हुई उसमे फिलिप सारी यूनानकी सेनाका मुख्य सेनानी बनाया गया परन्तु जब वह फारसके युद्धके लिये यत्नमे सामग्री बना रहाथा तो पासेनियस

(८) अपनी पुत्री का विवाह के आरंभ में था

एक मैसीडनके कुलीन जनने उसे मारडाला (३३६-ई.पै.) फिलि
पका पुत्र सिकंदर जिसको महासिकंदर कहते हैं केवल बीस वर्ष
की अवस्थाका था जब वह राजगद्दीपर बैठा थ्रेस इलीरिया और२
कई प्रदेशोंके लोग इस समय अपनी स्वतन्त्र को पुनर्लब्ध करने
केलिये मैसीडनसे बिगड़े परन्तु सिकंदरने थोड़े कालमेंही उनपर
आक्रमणकर उनको फिर अपने वशकर लिया जब सिकंदर उन
प्रदेशोंको विजय कर रहाथा यूनानमें यह झूठी खबर उड़गई
कि सिकंदर मारागया इसपर थीबस वालोंने मैसीडनके अधिपति
को जो फिलिपने उनपर नियत किया हुआथा मारडाला और कैड-
मियामें मैसीडनकी सेनाको घेरलिया (३३५-ई.पै.) चौदह दिनके
अनन्तर सिकंदरने थीबसको आलिया और इसे गिराकर भूमिके
साथ मिलादिया और इसके निवासियोंको उनके बिना जो पिंदरकी
वीके वंशमेंसेथे सबको दासीजन बनाकर बेचडाला वा मारडाला
इस विजयसे सारी यूनानमें सिकंदरका भय होगया और सबने
सिकंदरको फिलिपकी नाईं अपना मुख्य सेनानी माना - सिकंदर
ने ऐन्टीपेटरको मैसीडन और यूनानका (अपने स्थान) अधिपति
बनाकर आप सेना (तीस हज़ार पियादा और पांच हज़ार सवार)
लेकर पेशिया पर चढ़ाईकी (३३४-ई.पै.) यह सेना सीसटससे
हैलस पांट पारसे उत्तर पेशियामें गई - मीमनन (रोडेसमैन)
फारसके सेनानीने फारसके सूबों को बड़ी अच्छी सम्मति दी थी(१)
परन्तु इन सूबियोंने सेनाले ग्रेनिकस नदीपर मैसीडन वालोंको
जा रोका सिकंदरने नदीको लंघकर फारसवालोंको पराजितकिया

(१) उन प्रदेशोंको उजाड़ दो जिनमेंसे मैसीडनवालोंने गुजरना है, इसप्रकार शत्रु आपही पीछे हटजावेंगे

था और प्रथम सङ्ग्रामकी समाप्तीके पहलेही सारे एशिया माईनर को लेलिया जब दूसरा सङ्ग्रामका प्रारम्भ हुआ सिकंदर फोनिशियाको ले सिलीशियामे गया और आईससकी खाडीपर पहुंचा वहां दारयस फारसका राजा अपनी सेनाको ले आईससकी (पहाडियोंकी) संकोच घाटियोंमे सिकंदरकी ढूंढमे फिरता था सिकंदरने उसे इस स्थानमे जा घेरा और अपने प्रसिद्ध फेलेंक्सके साथ फारस वालोंको पराजित किया दारयस तो लडाईके प्रारम्भमेही भाग निकलाथा इसलिये जब उसकी सेना पराजय हुई तो उसका सारा धन, माल, सेना स्त्री पुत्र माता आदि कैद किये गयेथे - सिकंदरने इनराज कैदियोंको बडे आदरके साथ रक्खाथा और जो यूनानी फारसवालोंकी ओर होकर लडे उनको भी छोड दिया तब सिकंदरने समुद्र तटस्थ प्रदेशोंको लेना चाहा इस आशासे उसने टाइरपर चढाई की परन्तु टाइरवाले जो आजतक किसीके वशमे नहीं हुयेथे सिकंदरके कब [1]अधीन होजाते तब सिकंदरने उस नगरको घेर लिया और सात महीनेके घेरेके पीछे उसे लेलिया (३३२ - ई.पू.) और इसके निवासियोंको मारा और दास बनाया इस विजयसे सारी पेलसटाइन गाज़ा नगरके बिना सिकंदरके अधीन होगया गाज़ाके साथभी वैसी हुई जैसी टाइरके साथ हुईथी - इसके पीछे सिकंदरने मिसरको जा लिया और वहां अपने नामपर एक नगर सिकंदरियां बसाया - जब यूनान और मेसीडनसे सेना पहुंची तो सिकंदर अपना चौथा सङ्ग्राम आरम्भ करनेके लिये थापसकसके पास फ्रात नदीपर से उतरा और दजलाके पारजा असीरियामे प-

(१) लडाईके बिना

हुंचा डारायस अपनी सेना समेत गागामेला स्थानमें लड़नेको ख-
ड़ा हुआथा सिकंदर थोड़े दिनके पीछे लड़नेको चला इस भारी ल-
ड़ाईमें (जिसको आर्बेलाकी लड़ाई[1] कहते हैं) चाली हजार फा-
रसवाले मारेगयेथे सिकंदरने इस अपनी जयको पारसीपोलिस न-
गरको एक वेश्याके कहनेसे जलाकर कलंक लगाया - जब डेरि[2]-
स इस लड़ाईसे भागा तो उसने मीडियामें शरण लेनी चाही पर-
न्तु इस बातको सुनकर सिकंदर एकबटानामें पहुंच गयाहै यह
हीरकानियाको चलागया इस स्थानके बेसस नामक सूबेने उसे
कैदकरलिया सिकंदर इसबातको सुन बेससके पीछे चला परन्तु
निर्दय सूबे और उसके साथियोंने दाराको भारी २ घाव लगाकर

उसे मार्गमें पड़ा छोड़ा(१) सिकंदरके पहुंचनेसे पहले डारायस
ने प्राण देदियेथे परन्तु यूनानी महावीरने डारायसका (जिसका
वह अब उत्तराधिकारी था) इसका बदलालेना चाहा - पहले तो बेसस
का पीछाकर उसको पकड़ा और बड़ी दुर्दशासे उसे मारा फिर फारस
के पोव सूबियों को जैसे बकट्रीया (बलख) पेरापेमिसिया (अफगा-
निस्तान) गीसिया (काबल) आरमाजिआना वा पेरीया (हिरात) ड्रें-
गशिया (मेक्रान) और सागडियाना (तातार) अपने वशकरलिया
(३२९ - ई.पू.) जब इधरमें सिकंदर राजधानीसे बाहर था यूनान
में थेबीज़ और एथन्सके लोगोंने अपने ऐगिस राजाके कहनेसे मेसीडन
वालोंके विरुद्ध युद्ध विधान किया परन्तु ऐन्टीपेटरने इनको पराजय
किया परन्तु सिकंदरने उनका अपराध क्षमा किया (३३० - ई.पू.)
इसी समय सिकंदरने थेसिअन्स वालोंको भी स्वतंत्र किया क्योंकि उस

(१) ३३१-ई.पू. में हुई
(२) दारा

मे उसे इसतारनसको निकालदेनेके लिये जो मेसीडनवालोंका
मत्स्यानीथा आजादी तब सिकंदरने (३२७ - ई.पू.) मे हिन्दुस्ता
न पर चढ़ाई की और[1] काबुलके समीपसे होताहुआ अटक पर
पहुंचा अटकके कनारेपर एक तक्षला नामक राजाने उसकी
आधीनता स्वीकार करली फिर जब वह जेलम (हीडेसपस
र) पर पहुंचा तो इसके दूसरे कनारे पर एक पोरस[2] नामे राजासे
लड़ाई की पोरस लड़ाईमे बंदी कियागया परन्तु सिकंदरने उस
को छोड़ दिया और उसे अपना आश्रित राजा बनाया फिर सिकं
दर (चिनाब) एसीनिज़ (रावी) हाईड्रोटस नदियोंको लंघक
र (सतलज) हीफेसस पर पहुंचा इस स्थानपर उसकी सेनाने
आगे बढ़नेका इनकार किया तब सिकंदर जेहलमको उलटा
चलागया और वहां नदीके मार्गसे होताहुआ नीचे समुद्रपर प
र पहुंचा मार्गमे मेलाई (मुलतान) नगरके लेनेमे बड़ा दुःख
उठाया - समुद्रपर पहुंच कर सिकंदरने अपनी सेनाके दो भाग
किये एकभाग को समुद्रके मार्गसे फारसमे भेजा और दूसरे भा
गको अपने साथले समुद्रतटस्थके प्रदेशोंमे होता हुआ बेबी-
लनमे पहुंचा इस स्थानको उसने अपनी राजधानी बनानी औ-
र अर्बदेश पर आक्रमण करना चाहा परन्तु अचानक बीमार
होगया और आठ दिनके पीछे (३२३ - ई.पू. २८ मई) म-
रगया

(१) फारससे हिरात को गया वहां से सीसतान मे पहुंचा और सीसतानसे दूसरे मार्गसे हेरात [illegible] और तुर्किस्तान की ओर आया यहां से [illegible] गया फिर उत्तर को गया और [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] होता हुआ [illegible] [illegible]

प्रकरण २

मैसीडन राजधानी का फूट पडना

सिकंदरने अपने मरनेके समय पर्डीकस नामक (मैसीडनी) एक मुख्य सभासदको अपनी मुंदरी दी इससे यह विश्वास होता था कि राजाने उसे अपने पीछे राजप्रतिनिधि (रीजेंट) स्थापन कियाहै यह राज्याधिकारी बड़ा भला पुरुष था परन्तु इसके साथी अहंकारी थे और किसीको अपनेसे बड़ा नहीं मानना चाहतेथे पहलेतो मैसीडनकी सिपाही सेनाने सिकंदरके अल्पबुद्धिवाले भाईको राजा बनाना चाहा और जब उसने स्वीकार न किया तो पर्डीकसकोही मुख्यमाना रोकसाना सिकंदरकी स्त्रीकेलिये जो गर्भवतीथी अलग विधान कियागयाथा और जनैलोंको भिन्न २ प्रदेशोंके सूबे बनाया गयाथा पर्डीकस सिकंदरकी भइन क्लीओपेट्रा से विवाह करना चाहताथा परन्तु इसकोभी वह रोकागया था - इन झगड़ोंमे दो वर्ष व्यतीत होगये और इनमे सिकंदरकी समाधीभी न बनसकी परन्तु इस समय एक उपद्रव मचा कि जिससे सब राजधानीमे मारधाड होनेलगी - एशियामाइनरके केपेडोसिया और पेफलेगोनिया प्रदेशोंकी जंगलीजातियोंने सिकंदरके मरने पर स्वतन्त्र होना चाहा पर्डीकसने यूमीनीज़ को सेनादेकर उनपर चढ़ाभेजा और एन्टीगोनस और लेओनेटस सू-बियोंके नाम यूमीनीज़को सहायता देनेकेलिये लिखभेजा इन दोनोंने इस आज्ञाको नमाना इसपर पर्डीकसने उन जंगली लोगोंको पराजय किया और इन दोनों सूबियोंको बुलाभेजा कि

कौंसल (राज्यसभा) में आकर आज्ञाभंगकर उजाड़ दें - ऐन्टीगोनसने यह बात सुनकर ऐन्टीपेटर (मेसीडनके सूबे) और टालामी (मिसरके सूबे) से मिलकर पर्डीकसके नष्ट करनेकी सन्धि की पर्डीकसने यूमीनीज़को एशियामाईनर में छोड़ आप टालमीपर चढ़ाईकी - यूमीनीज़ने ऐन्टीगोनसके सहायकों (क्रेटेरस और नियोपोलीमस) को पराजय किया परन्तु पर्डीकस पल्यूसमको लेता हुआ मारागया (३२१ - ई.पै.) जब एशियामे युद्ध हो रहे थे यूनानमे स्वतन्त्रताके लिये एक युद्ध होगया जिसका नाम लेमीयाका युद्ध है - हाईपेरीडस और डीमासथनीसके कहनेसे एथिन्स वालोंने यूनानको स्वतन्त्रकरना चाहा ईटोलिया डोरिस और फोसिसवालोंने सहायता देना अंगीकार करलिया (३२३ - ई.पै.) ऐन्टीपेटर यह बात सुनकर थर्मापिलीके दर्रेको रोकने चला परन्तु एथिन्सवालोंसे लड़कर पराजय हुआ तब उसने लेमीया नामक (थेसिलीकीखाड़ी पर) किलेमे जा शरणली एथिन्सवालोंने किलेको जाघेरा परन्तु उनका सेनापति लियोसथनी मारागया तब एन्टीफाइलस नामक सेनानी बना परन्तु ऐन्टीपेटर अवकाश पाकर किलेसे निकलगया और इसने तीसरी लड़ाईमे एथिन्सवालोंको पराजय किया और ये नियम उनको मनाये (१) लोकराज्य हटादें (२) अपने किलोंमे मेसीडनकी सेना रखें (३) वक्ताओंको ऐन्टीपेटरके हाथमे दें - ऐन्टीपेटरने हाईपेरीडसको मरवा दिया परन्तु डीमासथनीज़ विष खाकर मरगया -

ईटोलियाके लोग फसादकरानेकी इच्छासे ऐन्टीपेटरने पारडीकस
के विरुध जानेके समय इनसे सन्धि करली जब सलामी के
पारडीकसके मारेजानेकी खबर पहुंची तो वह राजसेनाको
आमिला सेनाने सन्तुष्ट होकर उसे रीजेंट बनाना चाहा परन्तु
उसने नमाना तब अरहीडियस और पाईथन रीजेंट बने प-
रन्तु पहलेकी (१) रानीने दोनोंसे अधिकार छीनलिये अंतिम ऐन्टी
पेटर ऐन्टीगोनस और सील्यूकस की सहायतासे आप
रीजेंट बना जब ऐन्टीपेटर मुख्याधिकारी बनगया तो उसने ऐन्टी
गोनसको यूमीनीज़से लड़नेके लिये नियत किया कैसेन्डर ऐन्टी-
पेटरका पुत्र ऐन्टीगोनस की सहायताकेलिये भेजा गयाथा परन्तु इनदोनों
मे विरुध होजानेसे कैसेन्डर यूरपको चलागया यूमीनीज़ने परा
जय होकर नोरानगार मे जा शरण ली परन्तु उसने ऐन्टीगोनसका
पक्षपाती होना अंगीकार नकिया (३१९ - ई.पू.) ऐन्टीपेटरने मर
नेके समय अपने पुत्रकोछोड़ पालीस्परचनको रीजेंट बनाया
पालीस्परचनने यूमीनीज़का पक्षपाती बननेसे ऐन्टीगोनसको
अपने विरुध करलिया इसने और दो बातेंभी बदलकीं (१) ओलि
पीअस सिकंदरकी माताको जिसे ऐन्टीपेटरने देशसे निकाला था
वापिस बुलालिया (२) यूनानके राज्योंमे लोक राजस्थापन करना
चाहा- जबलोक राज्य स्थापन करनेका समाचार ऐथिन्समे पहुं
चा तो वहां बड़े आनन्द मंगलाचार हुये ऊलीनजन राज्यके पक्ष
पाती राज्यशत्रु ठहराएगये और कईएक भलेपुरुष जिनमे फो
शियनथा मारेभी गये (३१८ - ई.पू.) कैसेन्डरने दक्षिण यूनान

(१) इसका नाम यूरीडाइका था और यह कैसेंडरकी स्त्री थी

को अपने वश करलियाथा और एथिन्सके बंदरगाहें भी इसीके
हाथमेंथीं इसने निकेनारको सेनादे ऐन्टीगोनसकी सहायताको
भेजा निकेनारने राज्यअदकी[1] सेनाको पराजयकिया तब ऐन्टी-
गोनस एशियामें बलवान होगया और कैसेन्डरने एथिन्सको
लेलिया- इससे एथिन्सको कुछ हानी न हुई क्योंकि डेमी
ट्रीयस फेलीरियसने जो अब राज्यशासक[2] नियत हुआथा न-
र निवासियोंको प्रसन्न रक्खा पालीस्परचन सेनालेकर पिलापो
नीससमें भागा इसके पीछे ओलिम्पियसने अरहीडीयस औ
र यूरीडायसको मारडाला कैसेन्डरने यह समाचार सुनकर मैसी
डन पर चढ़ाईकी और ओलिम्पियसको पकड़कर मारडाला-
सिकंदरकी स्त्री और पुत्रको कैदकरलिया और सिकंदरकी पुत्रीसे
विवाह करलिया पालीस्परचन पिलापोनीसस मेंही रहा-
यूमीनीज़ अबतक मैसीडनके राज्यका सहायक बनकर
इसके शत्रु ऐन्टीगोनससे लड़ता रहा परन्तु अन्तिम लड़ाई में
सेनाके[3] उसभागने जो सिकंदरकी रक्षक सेनाथी और जिसे आ-
र्गीरसपाइडस कहतेथे उसे पकड़कर ऐन्टीगोनसके हाथमें
देदिया (३१५- ई०पू०) ऐन्टीगोनसने ऐसे सच्चे[4] भक्तको मारडाला
परन्तु उसने आर्गीरसपाइडसको भी दूरदेशोंमें जंगली जाति
योंके विरुद्ध भेजकर मरवाडाला इसके पीछे ऐन्टीगोनसने सा
रे मैसीडनके राज्यका राजा बनना चाहा इसलिये इसने प्रथम बि
गड़े हुये क्षत्रियोंको दंड देना चाहा- फारसके सूबे प्यूसेस्टसको
देशत्यागमिला - मीडियाका सूबा पाइथन मारागया और सेल्यू

(१) [illegible]
(२) कैसेन्डर के अधीन
(३) [illegible]
(४) [illegible]

नका सूबा सिल्यूकस मिसरको भागगया तब इसने सारे राज्य मे उपद्रव मचादिया और कईएक अपने शत्रु बनालिये - ऐन्टीगोनसके उपद्रव और ऐश्वर्य लोभके कारण भिन्न २ स्थानोंमे युद्ध होने लगे ऐन्टीगोनसका पुत्र डेमीट्रियस टालमीसे लड़नेको गया पहली बेर पराजय हुआ परन्तु दूसरे युद्धमे इसने इतनी विजय पाई कि टालमीको मिसरके खोजानेका भय हुआ ऐन्टीगोनसके ऐथिनियस नामक एक सेनानीने पेट्रानगरको लूटलिया और वहांवाले अर्ब लोगोंने इस सेनानी पर आक्रमण करके अपना छीना हुआ माल और शत्रुके धनको लेलिया डेमीट्रियसने यह समाचार सुनकर ऐथिनियसकी सहायतामे अर्ब वालोंसे बदला लेना चाहा परन्तु उसके उपाय निष्फल हुये सल्यूकसने अवकाश पाकर बेबीलनलेलिया और जब फारस और मीडियाके सूबे जो ऐन्टीगोनसके अधीनथे उसको वहांसे निकालने आये तो एक लड़ाईमे (३१२ - ई. पू.) पराजय हुये इस विजयसे सल्यूकस राज्यवंश और शाका चलाया इन हमलोंके होनेसे ऐन्टीगोनसने अपने पुराने शत्रुओंसे सन्धिकर ली - कैसेन्डरने यूनानके नगरोंको स्वतन्त्र कर देना अंगीकार किया टालमीने यह माना कि ऐन्टीगोनस अपने वर्तमान समयके अधिकारोंको रखे लाईसीमेकसने ऐशियामाईनरके उत्तरीय प्रदेशोंको अपने राज्यके साथ मिलालेना चाहा और इन सबने सिकन्दरके पुत्रको अपना राजा माना परन्तु यह सन्धि चिरस्थाई नहीं थी क्योंकि सबके मनमे कपट और लोभथा - इसके पीछे कैसे-

न्डरने मैसीडनवालों पर क्रुध होकर रोकसाना, सिकंदर ऐगस (सि-
कंदरका पुत्र) और ओलिम्पिया और हरक्यूलिसको मरवाडाला एन्टीगो-
नसने यह देखकर कि उसके साथ छल हुआ अपने पुत्रको यू-
नानमें भेजा कि यूनानियोंको अपनी सहायतामें करले - डेमी-
ट्रियसने आतेही ऐथिन्सवालोंको स्वतन्त्रताका शब्द सुनाकर
संतुष्टकिया (३०८ - ई.पू.) वहांसे वह साइप्रस द्वीपके लेने-
कोगया और इस द्वीपके समीप मिस्रवालोंको पराजय किया ऐ-
न्टीगोनसने अपने पुत्रकी विजय देखकर उसको यूनानका अ-
नानजानेल निपत करना चाहा तब सब सामन्त राजाओंने ऐ-
न्टीगोनसका नष्ट करना चाहा कैसेन्डर, टालमी लाईसीमेक-
स और सल्यूकस चारों ओरसे चढआये - परन्तु लाईसीमेक-
स और सल्यूकसने मिलकर फरीजियाके इपसस स्थानपर ए-
क लड़ाईमें एन्टीगोनसको पराजय किया (३०१ - ई.पू.) एन्टी-
गोनस मारागया और चारों अधिपतियोंने प्रदेशोंके नये भाग[1] इ-
स प्रकार करलिये - सल्यूकस उत्तरीय एशियाका राजा बनग-
या - टालमीने सीरिया मिस्रके साथ मिलालिया - लाई-
सीमेकसने एशियामाईनरके उत्तरीय प्रदेशोंको थ्रेसके साथ मि-
लालिया और कैसेन्डरको मैसीडन यूनान और सिसीलिया
दियेगये इसप्रकार महासिकंदरकी बड़ी राजधानी थोड़ेकाल
मे टूट फूट कर नष्ट होगई और सिकंदरया नगरके सिवा उस म-
हावीर के पीछे उसकी स्मारणार्थक कोई वस्तु नरही ॥

(१) ये चारों राजधानियें बननईथीं

अध्याय १२।

उनराज्योंका इतिहास जो मैसीडनकी राजधानीके टूटने से बने थे।

प्रकरण १

इपसस के युद्ध से मैसीडन और यूनानका रोमियों के अधीन होनेतक हत्तान्त

३०१ - ई. पै. से - १४६ - ई. पै. तक।

इपससकी लड़ाईके पीछे डेमीट्रियस एथिन्सको भागगया इस आशासे कि उसस्थानके लोग जिनसे उसने अपनी इच्छाके सम थ भलाई कीथी इस आपदामे उसकी सहायता करें परन्तु लोगों ने उसको नगरमे न आनेदिया फिर वह पिलापोनीससमे जारहा और लाईसीमेकसके साथ लड़ता रहा कसन्डरने इसकी[1] पुत्री विवाहली और इससे परस्पर सन्धिकरली (२९६-ई.पै.; मे) कैसन्डर मरगया इसके पीछे उसके तीन पुत्र राज्यके अधिकारीहु ये इनमेसे फिलिपतो थोड़े कालपीछे मरगया शेष दोनोंमे शत्रु ता होगई एन्टीपेटर लाईसीमेकसके पास जाकर मरगया तीस रे सिकंदरने लाईसीमेकससे डरकर पिरहस और डेमीट्रियस को अपनी सहायताको बुलाया परन्तु उनके आनेसे आपभी मा रागया[2] और राजगद्दीको डेमीट्रियसने लेलिया यदि डेमीट्रिय स थोर लोभ नकरता तो सर्वदा यूनानमे राजकरता रहता- परन्तु जब उसने एशियामे अपना प्रभुत्व जमाना चाहा तो से ल्युकस और टालमीने लाईसीमेकस और पिरहसको उसके

(१) डेमीट्रियसकी

(२) डेमीट्रियसके बलदारा मारागया

विरुध करदिया तब डैमीट्रियस वहांसे भागकर अपने पुत्र ऐन्टी-
गोनस गोनेटसके पास पिलापोनीससमे आगया (२८७ - ई.पै.)
पिरहसने मैसीडनके राज्यको लेलिया परन्तु सात महीनेके पी-
छे लाईसीमेकसने उसे निकाल राज्य छीनलिया डैमीट्रियस
ऐशियापर आक्रमण करता हुआ पकड़ागया और मरन पर्य-
न्त बंदीखानेमे रहा (२८४ - ई.पै.) लाईसीमेकसने अपनी स्त्री
के कहनेसे अपने पुत्र ऐगाथोक्लीज़को मारडाला परन्तु इसकी
विधवास्त्रीने अपने भाई टालामीसीरानस सहित सल्यूकसकी श-
रण ली[1] इसपर लाईसीमेकस सल्यूकससे लड़ता हुआ मारा
गया (२८२ - ई.पै.) परन्तु दूसरे वर्ष टालामीसीरायसने सल्यूक-
सको मारा (२८१ - ई.पै.) और मैसीडनका राज छीनलिया -
इसी वर्ष पिरहसने इटलीपर टारेनटाइन लोगोंकी सहायताके
चढ़ाई की यूनानमे एकियन सन्धित राज्यसभा नियत हुई औ-
र कैपेडैसिया, आरमीनिया, पांटस, पारथिया, बेकट्रिया, आदि प्र-
देश स्वतन्त्र राज्य बनगए - ऐशियामे जो महासिकंदरके उत्तराधि
कारियोंसे प्रजा बिगड़ती रही उसका कारण यह था कि सिकंदरकी
नाई (जो सर्वके लोगोंको यूनानी बनाना चाहताथा) ये लोग
भी अपनी प्रजाके धर्माचार और लोकरीतिको तोड़ना चाहतेथे
इस समय एक गालजातिका बड़ा भारी दल मैसीडनमे आघुसा
टालामीसीरानस (२७९ - ई.पै.) मेमारागया और यह जंगली
लोग डैलफीके मंदिरको लूटने चले इनकी सेनाके एक भागको
ईटोलियावालोंने नष्ट किया और बहुतसे पारनासस पर्वतमे मारे

(१) कसैन्ड्रा (ऐगाथकीज़की) विधवाने सल्यूकसको अपने भरतार लाईसीमेकससे अपने पतिका बदला लेनेको उभारा

गये परन्तु जो शेषबचे वे एशियामे गये और वहां उन्होंने एक प्रदेशको ले
उसका नाम गालेशियारखा - एन्टीगोनस डेमीट्रियसका पुत्र
तीनवर्षके युद्धके पीछे मैसीडनका राजाबनगया परन्तु दक्षिण
यूनान इसके हाथमे नरहा क्योंकि एकियन सन्धिके बननेसे वह
देश स्वतन्त्र होगयाथा - जब पिरहस इटलीसे लौट आया तो
उसने आतेही एन्टीगोनसको निकाल मैसीडनका राज्य छीनलि
या और फिर पिलापोनीसस मेभी अपना प्रभुत्व जमाना चाहा इस
आशासे उसने स्पार्टापर आक्रमण किया परन्तु वहांसे पराजय
हो आर गासपर चढ़ाईकी इस नगरमे उसकी एन्टीगोनसके साथ
लड़ाई हुई परन्तु एक स्त्रीने अपने छापरसे एक पत्थर फेंक उसे
मारडाला (२७१- ई.पै.) तब एन्टीगोनसने पिरहसके अवसिक
दरको पराजयकर मैसीडनको फिर लेलिया - इस समय एकिय
न सभा बलमे बढ़ती जातीथी प्रथम इसमे पेट्री, डाइमी, ट्रीटी
और फेरी नामक नगर थे (२५१- ई.पै. मे) सीसीयन फिर कारि
न्थ, ट्रीज़ीनी, इपीडारस और (२२९- ई.पै. मे) एथिन्स भी मिल
गयेथे इस सन्धित सभाका इतना प्रभुत्व बढ़ा कि मिसरके राजाने
इससे सन्धिकरनेकी काङ्क्षाकी एन्टीगोनस गोनेटसके मरने पर
(२४२- ई.पै.) उसका पुत्र डेमीट्रियस द्वितीय मैसीडनका राजाब
ना इस राजाने दशवर्ष राजकिया परन्तु उस समयमे इटोलिय
नसे लड़तारहा इसके मरनेपर (२२९- ई.पै.) इसका भाई एन्टी
गोनसडोसन वा एन्टीगोनस तृतीयने अपने भतीजे फिलिप
द्वितीयके नाम राज्याधिकार अङ्गीकार किया इसी समयमे एकाये

भी इसमें एक बड़ा उपद्रव मचने वाला था- धन और भोगविलास
के बढ़ जानेसे स्पार्टाके लोगोंने लाईकरगसकी रीतिको त्यागदि-
या था एगिस तृतीयने (२४४- ई.पै. मे) राजनीतिको सुधारना
चाहा परन्तु लियोनीडस दूसरे राजाने विरुध होकर उसको रोका
(२४१- ई.पै.) ईफोरीकी आज्ञासे एगिस, अपनी माता और दादी
सहित मारागयाथा और लियोनीडसने उसकी स्त्रीको अपने पु-
त्र क्लीओमीनीज़ को विवाहदिया क्लीओमीनीज़ भी एगिसकी रीति
को चलाने लगा (२२६ - ई.पै.) ईफोरी[1]को दूर किया सब लेसे-
डीमन वालोंको नगरनिवासी पदवीका अधिकार दिया फिर इस
ने ऐकियन सभा वालोंके साथ लड़ना प्रारम्भ किया (२२४- ई.पै.)
आरगस और कारिन्थको उस सभामे निकाला डाईमी स्थानपर
सन्धिनसभाकी सेनाको पराजय किया और ऐरेटस[2]को ऐसा क्ले-
श दिया कि उसने मेसीडन वालोंकी सहायता मांगी ऐन्टीगोनस
ने आतेही क्लीओमीनीज़को सीलासिया स्थानपर पराजय किया
(२२२- ई.पै.) और लैसेडीमनको लेलिया क्लीओमीनीज़ मिसर
मे भागगया ऐन्टीगोनस (२२१- ई.पै.मे) मरगया और नव फिलि-
प द्वितीय राजकरने लगा - इटोलियन लोग सीलासियाकी ल-
ड़ाईकी सन्धिसे असन्तुष्ट हुये और जब उन्होंने ऐन्टीगोनसका म-
रना सुना तो उन्होंने मेसीनिया और मेसीडनको लूटना प्रारम्भ कि-
या - फिलिप कारिन्थमे गया जहांपर ऐकियन राज्यसभा हुई
सबने मिलकर ईटोलियनके साथ युद्ध करनेकी सम्मति दी पर-
न्तु स्पार्टा और ईलिया वाले इस सन्धिमें नहीं थे - इस समय

(१) अर्थात् इफोरी पदवी को दूर किया
(२) सिसीयोनका अधिपति

बाईज़ेनशीयम और रोढियनमे युद्ध होपड़ा क्योंकि बाईज़ेनशीयम
वाले व्यापारियोंसे जो कृष्णसागर समुद्रमे जातेथे वहुत करलेते
थे (२२२- ई.पै.) जब स्पार्टावाले ईटोलिया वालोंसे मिलगए
तो क्लियोमीनीज़ने अवकाश पाकर स्पार्टामे आना चाहा परन्तु
मिसरके राजाने उसे कैदकरदिया तब क्लियोमीनीज़ने सिकंदरि
यामे उपद्रव मचाया और जब उससे कुछ न बनपड़ा तो विष
खाकर मरगया फिलिप और ईटोलिया वालोंमे कुछ कालतक
बड़ी क्रूरतासे युद्ध होतारहा परन्तु रोम और कारथेजमें युद्धोंके
होनेसे यूनानियोंने परस्पर सन्धिकरनी चाही क्योंकि उन्होंने सो
चा कि उनदोनों राज्योंमेसे जो कोई अन्तमे विजय पावेगा
वह कभी न कभी हमपर आक्रमण करेगा इसलिये नपाकटस
मे ईटोलिया और एकियन सभावाले इकट्ठ हुये फिलिपने इन
सबको सन्धिकरादी (२१७ - ई.पै.) इसके पीछे फिलिपने हैनी
बालसे मिलकर पिरहसकी नाई इटलीमे विजय पानी चाही
परन्तु इसने ऐरेटस सिसीयोनके अधिपतिको मारडाला और
सारी यूनानको अपने वश करलिया - रोमियोंने ईटोलिया
वालोंको सन्धि तोड़नेकी सम्मति दी और इस बातकी प्रतिज्ञाकी
कि इसके बदलेमे अकारनेनिया और आईओनियन टापुओंमेंसे
इस नवीन सन्धिमे जो फिलिपके विरुध की गईथी स्पार्टावाले
ईलसवाले और पारगेमसका राजाभी भागी हुये (२११- ई.पै.)
फिलिपके साथ विओशिया अकारनेनिया और एकियन होगए
परन्तु रोमी हैनीबालके साथ इटलीमे लड़रहेथे और पारगेमस

के राजापर विथीनिया वालोंने आक्रमण कियाथा इसलिये इनमेसे ईटोलियन वालोंको कोईभी सहायता न देसका फिलोपीमनने जो ऐरेटसका अनुयाई और ऐकियन सभामे मुख्याधिकारीथा जैसे ईमनके सन् अधिकारपूर्वक राजा मेचेनीडसको पराजयकर उसे अपने हाथसे मारा तब ईटोलिया वालोंने सन्धि करली (२०८ - ई. पै.) इसके पीछे फिलिपने विथीनियाके राजा परूसियसके साथ पारगेमस ऐटेलसके राजके विरुध और सीरियाके राजासे मिसरके राजाके विरुध सन्धिकरली - इनसन्धियों से तृप्त होकर इसने रोडिस वालोंसे लड़ना प्रारम्भ किया परन्तु कीओसके समीप उनसे (समुद्रीयुद्धमे) पराजय हुआ (२०१ - ई. पै.) तब इसने ऐथिन्सवालोंको अपना शत्रुबनालिया परन्तु इनलोगोंने जो एकसमे यूनानमे मानीय और बड़े बलवानथे अपनी निर्बलताके कारण रोमियोंको अपनी सहायतामे बुलाया - रोमी सेनाने आतेही ऐथिन्सको मैसीडनवालोंके आक्रमणसे बचाया और फिर विथोशियावालोंको फिलिपके विरुध किया दूसरे युद्धमे जब फ्लेमीनियस कोंसल यूनानमेकी रोमी सेनाका सेनापति नियत हुआ तो फिलिपके भाग्य छीन होनेलगे उसके साथियोंने (ऐकियन वालोंने विशेषकर) रोम वालोंसे सन्धिकरली फिलिपने फिरभी लड़नेका विधानकिया परन्तु साईनासीफेली (स्वानशिर) स्थानपरकी लड़ाईमे पराजय हुआ (१९६ - ई. पै.) इस अवस्थामे फिलिपने अपनी सब नावके जैशाओंकोदे और यूनानपरसे अपना अधिपतिता त्याग सन्धि[1]करली - इसके पी

(१) रोमियों के

लेमेलियस और साईकरगसकी रीतिके दूरकिया जब रोमियों ने स्पार्टाको ऐसे दुःखमे देखा तो वे ऐकियन पर बड़े क्रुध हुये और उनको कहाकि तुम सन्धिके नियमोंको बदलदो - परन्तु ऐकियन वालोंको इस समय बड़ाभारी क्लेश मिला क्योंकि जब वे मेसेनियन लोगोंसे लड़रहेथे उनका सेनानी फिलोपीमन एक लड़ाईमे पकड़ाजाकर मारागयाथा (१८३-इ.पे.) फिलिप रोमियोंसे बड़ा अप्रसन्नहुआ परन्तु इसका बड़ाबेटा डेमीट्रियस जो सीनासीफेलीकी लड़ाईमे शरीरबन्धक बनाकर रोम मे भेजागयाथा अपने पिता और रोमियोंमे युद्ध नहीं होने देता था अब वह घरमे आया तो उसके भाई परसीयसने अवकाश पाकर फिलिपको उसपर इतना क्रुधकरवाया कि फिलिपने उसे मरवाडाला परन्तु जब फिलिपको यह विदित हुआ कि वह परसीयसके छलमे आगया तो उसने ऐन्टीगोनसको युवराज बनाना चाहा परन्तु थोड़ेकालमे अपने पुत्रके वियोगसे मरगया (१७९-इ.पे.) परसियसने राजाबननेही ऐन्टीगोनसको मार डाला और रोमवालोंसे विवाद प्रारम्भ किया यदि परसीयस इल्लीरियाके राजा जेन्टीयससे मिलजाता तो उसको बड़ालाभ होता परन्तु उसने उसे सहायताभी (जिसकी उसने प्रतिज्ञाकी थी) नदी - रोमियोंने इल्लीरियामे आतेही उस राजधानीको एकमासके भीतरमे छीनलिया थोड़े काल पीछे लूशियस, ईमीलियस, पालस रोमका सेनानी सेनाले मैसीडनमे गया (१६८-इ.पे.) और पीडनाकी लड़ाईमे परसियसको सम्पूर्ण पराजय किया

परासियस कैद किया गया था और जैत्राकी जय उत्सव(१)मे बंदीजनोंके साथ प्रकाशित करनेके लिये रोममे भेजा गया था - पीदनाकी लड़ाईके पहले रात्रको चंद्र ग्रहण हुआ था - सी - सलपीसियस - गालस एक रोमी अफसर्ने अपनी सेनाको पहले ही ग्रहणका होना कह छोड़ा था ताकि लड़ाईमें सपाही लोग डर न जावें - इस लड़ाईके पीछे रोमियोंने ऐकियनको कहा कि जिन लोगोंने परासियस को सहायता दी थी उनको मरवा दो ऐकियन लोग यह बात सुनकर क्रुध होए तब रोमवालोंने उनको अपराधि ठहराया और उनमेसे एक हजारसे अधिक प्रतिष्ठित लोगोंको रोममे बुलाया ये लोग वहां सतारा बर्षतक बंदीजन बनाकर रखेगये इनमेंसे कई एक लोगोंने जो यूनानमे लौट आये यूनानियोंको रोमी हूनोंके विरुध उकसाया थे हूत ऐकियन और स्पार्टामे सन्धि करानेके लिये कारिन्थमे आये हूये थे (१४८ - ई.पै.) यूनानियोंके विवादसे युद्ध होपड़ा तब मूमियस रोमी कांसल और सेनापतिने ऐकियन लोगोंको प्रत्येक स्थानमे पराजयकर कारिन्थको जालिया और इसे जलादिया (१४६ ई.पै.) इसके पीछे सारी यूनान [illegible] कायाके नामसे रोमी राजधानी का एक सूबा बनगया।

प्रकरण २।

सेल्यूकसके वंशके समय सीरियाकी राजधानी।

३१२ - ई.पै. से ६४ - ई.पै. तक।

३०४ - ई.पै. मे सेल्यूकसने फारस और मीडिया के सूबियों को पराजय कर अपनी राजधानी स्थापन की - चारवर्षके [illegible]

(१) रोममे यह रीति थी कि जब को रोमी मुख्य सेनानी किसी भारी शत्रु पर विजय पाता था तो [illegible] यह रोममे [illegible] सूबधानी [illegible] एक भारी विजय उत्सव होताथा जैत्राका विजय मानसे नानीका [illegible] उस जेत्राके आगे २ लजाय जाते थे [illegible] [illegible] के बंदीजन शत्रुओंके होतेथे [illegible] हो जाता था।

रमे उसने अपने राज्यको ओकसस (आमू), अटक और फ़रात नदि-
यों तक बढ़ाया (३०६ - इ.पै.) फिर इसने हिन्दुस्तान पर आ-
क्रमण किया और गंगानदी तक पहुंचकर संडराकोटस (चंद्र
गुप्त) से सन्धि की इसी सन्धिसे जो हाथि लियेथे वे इपससकी
लड़ाईमे बड़े उपकारक हुये इपससकी लड़ाईके पीछे से-
ल्यूकसने सीरियामे अपनी राजधानीका स्थान नियत किया
और इससे अठारैं वर्षके अन्तरमें कईएक नवीन नगर ब-
नाए जैसे एन्टीओक नगर सीरियामे और दो सेल्यूसियस
एक दजलापर और दूसरा ओरांटसपर (२८१ - इ.पै.मे वह
टाल्मी सीरानसके हाथसे मारागया था -

तब इसका पुत्र एन्टीओकस जिसका उपनाम सेटर (ब-
चानेवाला) था राजा बना इसने अपनी बेटी एन्टीगोनस गा-
नेटसको विवाह दी परन्तु अपने शत्रुओंसे पराजय ही होता
रहा नीकोडीमस बीथीनियाके राजासे जिसको गालजातिके
लोगोंकी सहायताथी (२७५ - इ.पै.मे), और पारगेमसके राजा
से (२६३ - इ.पै.मे) पराजय हुआ इसपर एशियामाइनरके
नवीन राज्यस्थित होगये तब एन्टीओकसने मिसरके राजाके
भाई मेगसके साथहो मिसरपर चढ़ाई की परंतु दोनों पराजय हुये
फिर एन्टीओकस गाली लोगोंके साथ एफीसस नगरके समी-
प लड़ता हुआ मारागया (२६२ - इ.पै.)।

इसके पीछे इसका बेटा एन्टीओकस द्वितीय जिसका उप-
नाम थीयस (परमेश्वर) था राजा हुआ इसने अपने पिताका

बदला गालीलोगोंसे लिया परन्तु जब वह अपनी प्रजाको स्वा-
मी बनाने लगा तो कईएक सूबे उसके हाथसे जाते रहे - फिर
जब इसने मिस्रके राजाके साथ सन्धि की तो इसको सन्धिके
नियमानुसार टालामी राजाकी पुत्री बीरीनाइस विवाहनी पड़ी
और अपनी पहली स्त्री लिओडाइस को छोड़ना पड़ा - टालामी
के मरनेपर इसने लियोडाइसको फिर लेलिया जिसने अपना
बदला[1] लेनेके लिये राजाको विषदेकर मारदिया (२४७ - ई. पै.)
और बीरीनाइस और उसके पुत्रोंको मरवा दिया।

तब सेल्यूकस जिसका उपनाम कैलीनीकस (प्रसिद्धविजयी)
था राजगद्दी पर बैठा और टालामी इवरजीटससे लड़नेलगा
मिस्रके राजाने बेबीलोनिया, फारस, पैलिसटाइन प्रदेश आदि
पर आक्रमणकर उन्हे लूटा और सेल्यूकसको पीछे हटाते हुये प-
राजय किया - पारगेमसके राजा यूमीनीज़ने इस लड़ाईमे अ-
वकाश पाकर अपना राज्य बढ़ाया हीरक्स सेल्यूकसके भाईने
गालीलोगोंके साथ मिलकर राज्य छीनना चाहा परन्तु सेल्यू-
कसने उसको पराजयकर मिस्रमे भगादिया जहां वह कैदहो-
कर चोरोंके हाथसे मारागया - तब सेल्यूकस पारथियन लो-
गोंसे पराजय हुआ (२३८ - ई. पै.) और पारथियन राजधानी
इसी लड़ाईसे स्थापन हुई दूसरी लड़ाईमे पारथियन लोगोंने
सेल्यूकसको कैदकर लिया (२३६ - ई. पै.) और उसको मरनेपर
यन्त न छोड़ा (२२७ - ई. पै.) - सेल्यूकस तृतीय जिस
का उपनाम सीरानस (वज्र) था अपने पिताके पीछे राज्यक-

(१) क्योंकि राजाने उसे छोड़दिया था

रने लगा परन्तु (२२४ - ३. पै.) मे विषसे मारागया।
पेन्टीओकस (जिसका उपनाम महापेन्टीओकस था) तृतीय ने राज्य पर बैठतेही अपने मन्त्रीके कहनेसे ऐचियस सूबेसे जिसने उसे राजा बनाया था बिगड़ली - परन्तु ऐचियस सारडसमे पकड़ागया था और मारागया था मोलन और सिकंदर दो और सूबे भी जिनको पेन्टीओकस ने नियत कियाथा बिगड़े परन्तु (२२० - ३. पै.) मे जब राजाने इनपर चढ़ाई की तो वे विषखाकर मरगए - पेन्टीओकसने सिली सीरिया को लेलिया परन्तु टालामीसे रेफिया (जो गाजाके समीप है) की लड़ाई मे पराजय हुआ (२१७ - ३. पै.) तब पेन्टीओकसने पारथिया और बैकट्रिया वालों पर (२१४ - ३. पै.) मे विजय पाई परन्तु बैकट्रियाके राजाके पुत्र डेमीट्रियसको अपनी पुत्री विवाह दी और उत्तरीय हिन्दुस्तानपर (२०६ - ३. पै.) मे चढ़ाई की इसके पीछे राजा ने महासिकंदरकी नाई फारसकी खाड़ीपर व्यापार दृष्टि करनी चाही टालामी फिलोपेटर (२०३ - ३. पै.) मे मरगया तब पेन्टीओकसने मैसीडनके राजा फिलिपसे मिलकर मिसरको परस्पर बांटलेना चाहा पेन्टीओकसने सिली सिरिया और पैलसटाइनको लेलिया परन्तु रोड्सवालों, राजा पेटेलस और रोमवालोंने उसे आगे बढ़नेसे रोकदिया इसपर पेन्टीओकसने एशियामाइनर और यूनानमे अपना प्रभुत्व जमाना चाहा (१९६ - ३. पै.) रोमियोंने इस बातसे रोका परन्तु राजा हैनीबाल (जो कारथेजसे भागकर उसके पास आया हुआथा) के कहनेसे न रुका इसपर रोमियोंने युद्ध करना प्रारम्भ किया और सिपीलस पर्वतके समीप मैगनिशिया स्थान

पर ऐन्टीओकसको पराजय किया इसपराजयसे ऐन्टीओकसको ब-
हुतसे प्रदेश छोड़ने पड़े और (१८७ – ई. पै.) में वह अपने नोकरों
के हाथसे मारागयाथा।

सेल्यूकस चतुर्थ जिसका उपनाम फिलोपेटर (पितृप्रिय) था
राजाबना इसने अपने भाई ऐन्टीओकसको (जो रोममें शरीर बं-
धक बनाकर पिछली लड़ाईमें भेजागयाथा) बुलालिया और
उसके स्थान अपने पुत्र डेमीट्रियसको वहांभेजा परन्तु हीलि-
ओडोरस (मन्त्री) ने सेल्यूकसको विषदेकर मारडाला (१७६ ई. पै.)
और राज छीनलिया।

ऐन्टीओकस चतुर्थने हीलिओडोरसको निकालदिया और रा-
जाबनकर अपना उपनाम ईपीफेनस (प्रतिष्ठित) रखा परन्तु
वह ईपीमेनस (पागल) के नामसे प्रसिद्ध है इस राजाने मिसरके
राजासे लड़ाई प्रारम्भकी और   इतना विजयमान हुआ कि
सिकंदरिया नगरतक पहुंचा और टालामी फिलोमीटरसे जिस-
को उसके भाईने सिकंदरियासे निकालदियाथा सन्धिकी जब
ऐन्टीओकस पीछे हटा तो दोनों भाई मिलकर उसके विरुध हो-
गये इसपर उसने मिसरपर चढ़ाईकी परन्तु रोमवालोंने उसे
रोकदिया और मिसरके लीयेहुये प्रदेश उससे लेदिये (१६८ ई. पै.)
तब ऐन्टीओकस अपनी प्रजाको रोमी और यूनानी बनानेलगा
जिससे सारी प्रजाको अपनेपर क्रुध किया यहूदी लोग मैकेबीज़
की सहायतासे स्वतन्त्र होगए और फारसवालोंने उपद्रव मचाया
ऐन्टीओकस उत्तरीय सूबियोंको वशकरानेगया परन्तु पराजय हुआ

और शोकसे (१९५ - ई.पै. मे) मरगया।

इसके पीछे इसका बेटा सूपेटर गद्दीपर बैठा परन्तु डेमीट्रियसने रोमसे ग्रातेही उससे राज्य छीनलिया (१६२ - ई.पै.) और उसे मारडाला थोडेकाल पीछे डेमीट्रियस भी एक लडाईमें सिकंदर-वालसके (१५० - ई. पै.) हाथसे मारागया परन्तु वालसको डेमीट्रियसके पुत्र निकेटरने[1] पराजयकर अर्बमे भगादिया (१४५-ई.पै.) ट्राईफनने निकेटरको निकाल वालसके पुत्रको राजा बनाया और थोडेदिन पीछे उसे मार आप राजा बनगया डेमीट्रियस निकेटरको यूनानी और मेसीडन बस्तियोंवालोंने पारथिया से उनसे बचानेको बुलाया (१४० - ई.पै.) पहले तो वह विजय पाता रहा परन्तु पीछे पकडागया और दसवर्षतक कैदरहा इसके भाई पेन्टीयोकस साईडीटसने ट्राईफनको निकाल राज्य छीनलिया परन्तु पारथियावालोंसे लडता हुआ मारागया (१३० - ई.पै.) निकेटर कैदसे भाग आकर राजा बनगया परन्तु ज़ेबीनस[2] (१२६ - ई.पै.) के हाथसे पराजय हुआ और मारागया - निकेटरके पुत्र सेल्यूकसको भी ज़ेबीनससे लडना था उसकी माता क्लीओपट्राने मरवाडाला क्योंकि वह अपने प्रिय पुत्र पेन्टीओकस ग्रीपस को राजा बनाना चाहतीथी ग्रीपसने राजाबनकर अपनी माताको[3] मारडाला (१२२ - ई.पै.) तबसे राजमें उपद्रव मचने लगा और ग्रीपस (९० - ई.पै. मे) मारागया सीरिया वालोंने दुःखी होकर सेल्यूकसके वंशसे राज छीनलिया और टिग्रेनस आर्मीनियाके राजाको अपना राजा बनाया (८२ - ई.पै.) रोम वालोंने टिग्रेनस

(१) अर्थात् डेमीट्रियस निकेटर
(२) वालसका बनावटी बेटा
(३) अपने भाईके बदलेमे

के पराजय कर सीरियाको अपनी राजधानीसे मिलालिया (६४-
ई. पै.) इसप्रकार सीरियाकी राजधानी समाप्त हुई और सेल्यूकस
का वंश भाई टोलेमीके मरने पर (जिसको उसकी स्त्री क्लीओपेत्रा
ने मिसरका राजा बनायाथा और फिर मरवा दियाथा) अन्त हुआ।

प्रकरण ३।

(ध) टालमी वंशके समय मिसरका इतिहास।

३०१ ई. पै. से ३० ई. पै. तक

महासिकंदरके सब उत्तराधिकारियोंमे से (१) टालमी (ले-
गसका बेटा) बड़ा बुद्धिमान था इपससके युद्धके पीछे जब (१)
टालमीको मिसरका राज्य मिला इसने सब प्रकारसे अपनी प्रजा
को सन्तुष्ट किया सेल्यूकस वंशकी नाईं मिसरवालोंको यूनानी
नहीं बनाना चाहा किन्तु उनके प्राचीन धर्माचारोंका फिर प्रचा-
र किया देशके विभाग नोमोसे फिर किये गये मैमफस और (५)
था स्थानोंकी प्रतिष्ठा स्थापनकी एक विद्यालय (म्यूज़ियम)
सिकंदरिया नगर में बनाई जिसमे हर देशान्तरके विद्वान लोग
आकर उपजीविका पाते थे और विद्याकी उन्नति करते थे सिकंदरि-
यानगरको खूब सजाया और इतरदेशीय लोगोंको बुलाकर उ-
समे बसाया जिससे भिन्न २ जातिके लोगोंने अपने देशोंको उपद्रव औ-
र युद्धोंके कारण त्यागकर मिसरको शान्ति भूमिमे आ शरण ली
इनमेंसे यहूदियोंने सिकंदरियामे एक अपना मन्दिर बनाया
और तौरेतको इबरानी भाषासे यूनानी भाषामें उलथा किया
सिकंदरियामें बंदरगाह और फेरस (आकाशदीपस्थान) जोक

आश्रयस्थान पर बनाये - इनवल्लओंकी उन्नति उसके उत्तराधि-
कारियोंके समयमे भी होतीरही और विद्याकी उन्नतिका एक फल
यह हुआ कि पपेराके कागज़ बन ने लगे इस समयसे पहले कि-
सी प्रकारका कागज़ नहीं था जिसपर लिखनेका कामकियाजाये
(प) टालामीने सीरिनीकी प्राचीन राजधानी, इथियोपिया औ-
र सीरियाके कईएक प्रदेश, और साईप्रस द्वीपको अपनी राज-
धानीमे मिलालियाथा जब मिसवालोंको बहुतसी सदियोंके
पीछे आराममिला और वे अपनी देशकी उन्नति करने लगे जब
२८४ - ई. पै. मे (प) टालामी मरा तो सारी प्रजाने इतना शोक
किया मानो उनका पिता मराथा - इसके पीछे (प) टा-
लामी द्वितीय जिसका उपनाम फिलैडेलफस (भ्रातृप्रिय) था
राजकरने लगा इसके समयमे मिसरके व्यापारकी बडी उन्नति
हुई लालसमुद्रपर आरसिनी (स्वेज़), मीओस आरमज (को-
सीयर) आदि स्थानमे बंदरगाहें बनाई गई इथियोपिया और
एफरीकाके हास्य स्थानोंके साथ व्यापार होने लगा परन्तु जैसे
धनकी वृद्धिहुई उसीप्रकार विषय भोग विलास आदि राज्य दरबा-
रमे भी बढे और आश्चर्य काम होने लगे राजाने अपनी स्त्रीको
त्याग अपनी भगिनी आरसिनी नामनीसे विवाह किया -
इसीराजाने जब पिरहस इटलीसे निकालागयाथा (२७४ - ई.पै.)
रोममे दूत भेजे और सन्धिकी और जब रोमके दूत मिसरमे आ-
ये तो राजाने उन्हे कईएक बातें (यूनानीविद्याकी) सिखाई -
फिलैडैलफसके मरनेके पीछे (प) टालामी तृतीय जिसका उप

नाम इवरजीटीज़ (उपकारक) था २४६-ई.पै. मे राजा बना यह राजा बडा युद्धशील और साहसी था इसने पूर्व और दक्षिणमे बड़ी विजय पाई पूर्वमे बैकट्रीयातक देशोंको लूटलाया दक्षिण मे अर्ब और ऐबीसीनिया (हबश) के कईएक प्रदेशलेलिये (सेल्यूकस द्वितीयका समय देखो) इवरजीटीज़ २२१-ई.पै. मे मरा और इसीके साथ (प) टालामी वंशका प्रताप अस्त हुआ

इसके पीछे इसका पुत्र जिसका उपनाम फिलोपेटर (पितृप्रिय) था राजगदीपर बैठा यह राजा अस्पष्ट दिखनाया और विषयी था अपने पहले मंत्री सोसीवियसके कहनेसे अपने भाई मेगस और क्लीओमीनीज़ स्पार्टाके राजाको मारडाला एक चमत्कारभी दिखाया अर्थात् महाएन्टीओकसको रैफियामे पराजय किया परन्तु यहूदी प्रजाको बडा क्लेशदिया इसके पीछे राजाने अपनी भगिनी स्त्रीको मारडाला और अगाथक्लीज़ (जो सोसीवियसके स्थान मन्त्रीबनाथा) की भइन अगाथक्लीयाको विवाहा परन्तु २०५-ई.पै. मे अधिक स्त्रीभोगके कारणसे मरगया इसका पुत्र (प) टालामी पंचम जिसका उपनाम इपीफेनस (प्रतिष्ठित) था और जो पिताके मरनेके समय पांचवर्षकी अवस्थाकाथा राजाबना जब इस राजाके रक्षकोंसे राज्य बिगडने लगा तो रोमकी सिनेट रक्षक बनादीगई यह राजाभी विषयी और बुद्धिहीन था १८१-ई.पै. मे मरगया और दोपुत्र (प) टालामी जिसका उपनाम फिलोमीटर (मातृप्रिय) था और फीसकोन छोडगया — इसी समय मिसर और सीरियामे युद्ध होपड़ा और सीरियाके राजा एन्टीओकस इपीफेनस

आश्रयस्थान पर बनाये - इनवस्तुओंकी उन्नति उसके उत्तराधिकारियोंके समयमे भी होतीरही और विद्याकी उन्नतिका एक फल यह हुआ कि पटेराके कागज़ बन ने लगे इस समयसे पहले किसी प्रकारका कागज़ नहीथा जिसपर लिखनेका कामकियाजावे (प) टालामीने सीरिनीकी प्राचीन राजधानी, इथियोपिया और सीरियाके कईएक प्रदेश, और साईप्रस द्वीपको अपनी राजधानीसे मिलालियाथा तब मिसरवालोंको बहुतसी सदियोंके पीछे आराममिला और वे अपनी देशकी उन्नति करने लगे जब २८४-इ.पै. मे (प) टालामी मरा तो सारी प्रजाने इतना शोक किया मानो उनका पिता मराथा - इसके पीछे (प) टालामी द्वितीय जिसका उपनाम फिलेडेलफस (भ्रातप्रिय) था राजकरने लगा इसके समयमे मिसरके व्यापारकी बड़ी उन्नति हुई लालसमुद्र पर आरसिनी (स्वेज़), मीओस आरमज़ (कासीयर) आदि स्थानमे बंदरगाहें बनाई गई इथिओपिया और ऐफरीकाके हरस्थ स्थानोंके साथ व्यापार होने लगा परन्तु जैसे धनकी वृद्धि हुई उसीप्रकार विषय भोग विलास आदि राज्य दरबारमेभी बढे और आश्चर्य काम होने लगे राजाने अपनी स्त्रीको त्याग अपनी भगिनी आरसिनी नामनीसे विवाह किया - इसीराजाने जब पिरहस इटलीसे निकालागयाथा (२७४-इ.पै.) रोममे दूत भेजे और सन्धिकी और जब रोमके दूत मिसरमे आये तो राजाने उने कईएक बातें (यूनानीविद्याकी) सिखाई. फिलेडेलफसके मरनेके पीछे (प) टालामी तृतीय जिसका उप

नाम इवरजीटीज़ (उपकारक) था २४६-ई.पै. मे राजा बना यह राजा बड़ा युद्धशील और साहसीथा इसने पूर्व और दक्षिणमे बड़ी विजय पाई पूर्वमे वैकट्रीयातक देशोंको लूटलाया दक्षिण मे अर्ब और ऐबीसीनिया (हबश) के कईएक प्रदेशलेलिये (सेल्यूकस द्वितीयका समय देखो) इवरजीटीज़ २२१-ई.पै. मे मरा और इसीके साथ (प) टालामी वंशका प्रताप अन्त हुआ

इसके पीछे इसका पुत्र जिसका उपनाम फिलोपेटर (पितामित्र) था राजगद्दीपर बैठा यह राजा अस्थबुद्धि रखताथा और विषयी था अपने पहले मंत्री सोसीवियसके कहनेसे अपने भाई मेगस और क्लीयोमीनीज़ स्पार्टाके राजाको मारडाला एक चमत्कारभी दिखाया अर्थात् महाऐन्टीओकसको रेफियामे पराजय किया परन्तु यहूदी प्रजाको बड़ा क्लेशदिया इसके पीछे राजाने अपनी भगिनी स्त्रीको मारडाला और अगाथक्लीज़ (जो सोसीवियसके स्थान मन्त्री बनाथा) की भहन अगाथक्लीयाको विवाहा परन्तु २०५-ई.पै. मे अधिक स्त्रीभोगके कारणसे मरगया इसका पुत्र (प) टालामी पंचम जिसका उपनाम इपीफेनस (प्रतिष्ठित) था और जो पिताके मरनेके समय पांचवर्षकी अवस्थाकाथा राजाबना जब इस राजाके रक्षकोंसे राज्य बिगड़ने लगा तो रोमकी सिनेट रक्षक बनाईगई यह राजाभी विषयी और बुद्धिहीनथा १८१-ई.पै. मे मरगया और दोपुत्र (प) टालामी जिसका उपनाम फिलोमीटर (मातामित्र) था और फीसकोन छोड़गया - इसी समय मिसर और सीरियामे युद्ध होपड़ा और सीरियाके राजा ऐन्टीओकस इपीफेनस

ने फिलोमीटरको जो निकालागयाथा अपने साथ मिलाया[1] परन्तु सीरियावालोंके पीछे हटजाने पर जब फीसकोनने फिलोमीटर को फिर राज्यसे निकाला तो उसने रोमवालोंकी सहायतासे राज्य बांटलिया तब फिलोमीटरने बालसकी डेमीट्रीयसके विरुध सहायता की और उसे सीरियाका राजा बनाया परन्तु जब वह कृतघ्न हुआ तो फिलोमीटरको उसपर चढ़ाई करनी पड़ी लड़ाई मे जय तो हुई परन्तु अधिक घाव लगनेसे वह मरगया (१४६-इ.पे.) फीसकोनने क्लीओपेटरा (जो फिलोपेटरकी भगिनी और स्त्री भी थी) विवाही और स्वतन्त्र[2] राजकरनेलगा परन्तु अपने भतीजेको मरवा डाला इसकारण प्रजा इतनी क्रुध हुई कि सिकंदरियावालोंने इस को निकालदिया, और इसकी बहन क्लीओपेटराको राजतिलक दिया परन्तु फीसकोनने क्लीओपेटराको पहले छोड़ उसकी (अपनी भतीजी पुत्री (क्लीओपेटरा नाम्नी) को विवाहाथा परन्तु इस सेनाकी सहायतासे फिर राजको ग्रहण किया — और अपने मरनेके पीछे (११७-इ.पे.) दो बेटे छोड़े जो इसकी भतीजीसे उत्पन्न हुये थे एकका नाम (५) टालामी (लेथीरस) और दूसरेका नाम (५) टालामी (सिकंदर) था क्लीओपेटरा अपने छोटेबेटेको राजदेना चाहती थी परन्तु सिकंदरियावालोंने लेथीरसकोही राजा बनाया परन्तु राणीने जिसपरभी लेथीरसको साईप्रसका राजदे सिकंदरको मिसरका राजा बनाया जब सिकंदरने अपनी माताको मारा तो प्रजाकोपी और लेथीरसको राजदियागया लेथीरस (८९-इ.पे.अं) मरा और एकबेटी बीरीनीस और दो बेटे (५) टालामी (साईप्रसका) और

(१) पेज २६ पौ. ४ पंक्ति देखो
(२) क्योंकि फिलोमीटर तो कब ही मरगया था

(५) टालमी आलीटीज़ छोटे तब देशमे उपद्रव मचा और लड़ाई
फ़साद होनेलगे अन्तमे आलीटीज़ राजाबना परन्तु तीनवर्षके
पीछे मरगया – आलीटीज़की चार सन्तति थी परन्तु इनमें से
प्रसिद्ध क्लीओपेटरा अपने मोहन रूपके बलसे प्रथम जूलि-
यसकैसर और फिर मार्क ऐन्टनीकी सहायता द्वारा राणीबनी
रही ऐकशियम युद्धके पीछे जब आगसटसकैसरने क्लीओपे
टराको पकड़कर रोमको लेजाना चाहा तो वह विषसे मरगई
(३०- ई.पै.) तबसे मिसर रोमराजधानीका एक सूबा बनाया
गयाथा।

प्रकरण ४

पश्चिमी एशियाकी अल्पराजधानियोंका वर्णन।

३०९- ई.पै.से ईसाके जन्म तक।

इन राजधानियोंके ये नामहैं।

(१) पारगेमस (२) बिथीनिया (३) पेफलेगोनिया (४) पांर-
स (५) कैपेडोसिया (६) बड़ाआरमीनिया (७) छोटाआरमीनि-
या (८) जूडिया (९) पेटरा (१०) रोड्स।

(१) इस राजधानीको लैसीमेकसके सेनापति फिलीटीर-
सने अपने स्वामीसे बिगड़कर स्थापन कियाथा परन्तु ऐटेल-
स प्रथमके समय जो रोमके पक्षमे होगयाथा इसराजका प्र-
तापबढा और ऐटेलस द्वितीयको रोमवालोंने कईएक प्रदेश
भी देदियेथे क्योंकि वह रोमवालोंका बड़ा प्रियथा इसके भ-
तीजे ऐटेलस तृतीयने मरनेके समय राज्य रोमवालोंको देदि-

था (१३०-३.पे.) पेरेलस प्रथमसे पेरेलस तृतीय तक सबरा-
जा विद्वानोंका बड़ा आदर और विद्याकी उन्नति करते रहे - चम
ड़ेका कागज़ पहले यहांही बना और एक पुस्तकालय सिकंद
रियाके कुतबखानेके तुल्य बनायागयाथा।

(२) यह राजधानीभी उसी समय नियत हुई जब पारगेमस
की हुईथी - इसका प्रसिद्ध राजा प्रूसियसथा जो रोमके पक्ष-
पातीथा और जिसने हेनीबालको पकड़वा देना चाहाथा
(८२-३.पे.) इसको इसके बेटे निकोडीमसने मारडाला परन्तु
निकोडीमसके साथभी वैसीहुई क्योंकि इसके पुत्र सक्रातने
इसे मार मिथ्रेडेटस राजाकी सहायतासे राजछीनलिया
परन्तु सीला रोमीसेनापतिने उसे गद्दीसे उतार निकोडीमस
तृतीयको राजाबनाया और इस राजाने मरनेके समय राज्य
रोमियोंको देदिया (७५-३.पे.)।

(३) और (४) पेफलेगोनियाकी राजधानी अकमर कर[1]
के पांटसके अधीन रही - इपसमके युद्धके पीछे पांटस स्व
तन्त्र होगया और इसका प्रसिद्ध राजा मिथ्रेडेटस सप्तम हु
आ जिसका नाम महामिथ्रेडेटसथा यह राजा छोटी अव-
स्थामे गद्दीपर (१२१-३.पे.) बैठाथा परन्तु ऐसा बलवान
और बुद्धिमान निकला कि थोड़ेकालमे माननीय होगया
कालचिसकी राजधानीको जीतलिया सीथिया वालोंको पराज
य किया और जब रोमवालोंकी आंख फिरी देखी तो इसने टिग
रेनस आरमीनियाके राजाको अपनी पुत्री बियाहदी और उस-

(१) ७३५७

को साथ ले रोमवालोंसे लड़ना प्रारम्भ किया (८८-ई.पै.) अन्त
[illegible]को लेकर वह यूनानमें गया और वहां उसने ऐथिन्सको लि-
या रोमवालोंने सीला और फिम्ब्रिया सेनापतियोंको उसके विरु-
द्ध भेजा सीलाने यूनान और फिम्ब्रियाने ऐशियामें मिथरेडेटस
की सेनाको पराजय किया अन्तमें (८५-ई.पै.में) मिथरेडेटस
ने दुःखी होकर सन्धिकी — ८३-ई.पै. में म्यूरेनस ऐशि-
यामेंके रोमी सूबेने सेनाले मिथरेडेटस पर चढ़ाई की परन्तु
पराजय हुआ तब मिथरेडेटसने कईएक रोमी प्रदेश लेलि-
ये और बिथीनियाकी राजधानी भी छीनली (८२-ई.पै.)
परन्तु सलियसके मारे रोड द्वीपमें पराजय हुआ - जबरो-
ममें इन लड़ाइयोंका समाचार पौंहचा तो उन्होंने ल्यूकल-
स सेनापतिको भेजा इस सेनानीसे पहले तो कुछ न होसका
परन्तु अन्तमें जब राजा साईजीकसको घेररहाथा ल्यूकलस-
ने इतना पराजयकिया कि वह आर्मीनियाको भागगया
तब टिग्रेनस और मिथरेडेटस दोनों लड़ने आये परन्तु ल्यूक-
लसने फिर उन्हे पराजय किया (७०-ई.पै.) ल्यूकलसके बु-
लाये जानेपर (क्योंकि उसका सहायक सेनानी ट्रिएरियस शत्रु-
ओंसे पराजय हुआथा) गैलेब्रीओ सेनापति नियत हुआ पर-
न्तु अन्तमें महांपांपी बड़े भारी अधिकारों सहित सेनाले ऐशि-
यामें आया और इसने मिथरेडेटसको घेरकर पराजय किया
राजा पहले आरमीनियामें गया परन्तु विपदामें अपने भी पर
ये बनजाते हैं इसलिये वह सीथियाके जंगलोंमें जाछिपा

पांपी दोवर्षतक उसको ढूंढकर पीछे हट आया और रोमवालोंको यह विश्वास हुआ कि उनका शत्रु मरगया है थोड़ेकालके पीछे मिथरेडेटसने अपनी राजधानीको आलिया और रोमीलोग उसका आना सुन आश्चर्य्य रहगये परन्तु इस समय इसके सम्बन्धि इसके शत्रु बनगये इसके पुत्रने राज्य छीनलिया इसकी सेना बिगड़गई और जब रोमी सेनाने चढ़ाई की तो वृद्ध राजाने अतिदुःखी होकर एक गाली सिपाहीके हाथसे अपने प्राण अन्तकिये (६४ - ई.पै.) इस प्रकार पांटसकी राजधानी नष्ट हुई नीरोके समयतक इसके अपने राजा तो बनते रहे परन्तु फिर वह रोम राजधानीके साथ मिलाई गई थी।

(५) कैपेडोसियाकी राजधानी इपससकी लड़ाईके पीछे स्थापन हुई थी इसके राजा प्रसिद्ध नहीं हुये परन्तु इसके कईएक लोग ट्रागलोडाइट अर्थात् गुफानिवासीथे ये गुफा पहाड़ोंमे खोदकर बनाई जाती थीं।

(६) और (७) ये राजधानियें तब बनीथीं जब महाएन्टीओकसके रोमियोंसे पराजय होने पर (१९० - ई.पै.) उसके सेनापति स्वतन्त्र होगयेथे - दोनों आरमीनियाका प्रसिद्ध राजा टिगरेनस हुआ परन्तु इसके साथभी मिथरेडेटसकीसी हुई और आरमीनिया रोमियोंके हाथ आगयाथा ईसाई शाकाके प्रारम्भके समय उसे पारथिया वालोंने लेलिया परन्तु रोमीलोग सर्वदा पारथियावालोंके साथ और इनके पीछे फारस वालोंके साथ (पारथियाकी राजधानी नष्ट होनेके पीछे फारसकी अपनी राजधानी स्था

पन होगई थी) आर्मीनियाकी मालकियत (अधिकार) के लिये युद्ध करते रहे- ८ और ९ का भिन्न २ प्रकरणोंमे वर्णन किया जावेगा।

(१०) सिकंदरके मरनेके पीछे रोड्सवालोंने डेमीट्रीयस पालीओरसीटीज़के साथ लड़नेमे जब वह रोड्सको घेर रहाथा बड़ी सूरमापन दिखाया डेमीट्रीयसने नगरकी दो दीवारोंको गिरा दिया परन्तु रोड्सवालोंने फिर एक तीसरी दीवार बना ली अंतमें यूनानी दूतोंने सन्धि करा दी (३०५-इ.पै.) इस लड़ाईमें डेमीट्रीयसने उन स्थानोंको नहीं गिरायाथा जिनमे प्रोटोजीनीज़ चित्रकारकी बनाई हुई मूर्तियेंथीं इसी घेरेके स्मरणकेलिये कालोससकी धातु मूर्ति बनाई गईथी - जब पेन्टीओकस और रोमीयोंमे युद्ध होपड़ा तो रोड्सवाले रोमवालोंके सहायक बनते रहे परन्तु पीछे इनमे ईर्षा पड़गई तो रोमवालोंने इस द्वीपमें अपने दूत भेजे जो वहांजाकर शास्ता बनबैठे इस समयसे इसकी स्वतन्त्रता हरहोगई जब मिथरेडेटसने रोड्स पर आक्रमण किया तो रोड्सवालोंने जूलियसकैसरके साथ हो उसे पराजय किया पांपी और कैसरमे युद्ध होपड़ने पर रोड्सवाले उसका पक्ष करते रहे जो बलवान होताथा - कलाडियसकैसरके समय जब रोड्सवालोंने दो रोमी नगर निवासियोंको मारा तो इनकी शेष स्वतन्त्रता भी हर की गई परन्तु वेसपेसियनके समय (७- इ.पै.) मे यह द्वीप रोमराजधानीका एक सूबा बनगया था।

प्रकरण ५

बैकट्रिया और पारथिया का इतिहास

२५६ – ई. पै. से १२६ – ई. पै. तक

बैकट्रियाकी[1] राजधानी यूनानी राजधानी थी क्योंकि डि-
ओडोटस यूनानी सूबेने सीरियाके राजासे बिगड़कर (२५६ –
ई. पै. में) इसे स्थापन कियाथा बैकट्रियाके राजाओंने हिन्दु-
स्तानमें (१९१ – ई. पै.) गंगानदीतक और चीनकी सीमातक
अपना राज्य बढ़ायाथा – जंगली जातियोंने जो कैसपीयन
झीलके उत्तरमें रहतीथी बैकट्रियापर आक्रमणकर यूनानियों
को वहांसे निकालदिया – ये लोग ऐसा मालूम होताहै या-
कूनदीपासे उतरकर (१२६ – ई. पै. में) हिन्दूकुश पर्वतमें
जाबसे – तबसे बैकट्रियाकी राजधानी पारथिया वालोंके हा-
थआई – पारथिया राजधानीभी उसी समय बनी मालूमहो-
तीहै जब बैकट्रियाकी राजधानी नियत हुईथी इसकी सी-
मायें फ़रात, सिन्ध और आमू नदियेंथी किन्तु कभी २ वे ब-
ढ़भी जातीथी – यद्यपि पारथियावाले फारसमें राजकरते
रहे किन्तु न तो राजालोग अपने आपको फारस राजा (साइर-
स) के वंशमें गिनना चाहतेथे और न फारसकी प्रजा इनको
देशीय राजा मानतीथी इसप्रकार राजा और प्रजामें प्रीतिनहीं
होतीथी पारथिया राजा (जो अरसेसीडी राजवंशमेंसेथे) यूना-
नी धर्माचार, आचरण और यूनानी लोगोंको चाहतेथे और इ-
न्होंने फारस देशके व्यापारको रोकदियाथा तबसे वह व्यापार पा-

(१) बलख

लमाईरा और सिकंदरियाके मार्गमें होनेलगा - आरसेसस प्रथमने स्वतन्त्र होने और अपना राज स्थापन करनेके लिये (२५६-ई.पै.) युद्ध आरम्भ कियाथा पारथियाकी राजधानी फारूलवांजागीरदारीकी रीतियरथी अर्थात् पारथियावाले जागीरदार युद्धमें राजाकी सहायता करतेथे केवल आरसेसनका इतनाही बड़ा अधिकार था कि जो राजाहो उसीके वंशमेंसेहो - सीरियावालोंसे कई एक युद्ध हूये और ये युद्ध (१२१-ई.पै. में जब ऐन्टीयोकससिडीटस सम्पूर्ण पराजय हुआ) अन्त हूये इन युद्धोंमें पारथियाकी सवारीसेना बड़ाकाम देतीरही इसके पीछे कईवर्षतक पारथियावाले उन जंगली जातियोंको पराजय करतेरहे जन्होंने वैकट्रियाकी राजधानीको तोड़ाथा और जब यह काम होचुका तो रोमीलोग इनके पड़ोसी आबने - कैरसस रोमी हाई अंबर (तीन मुख्य रोमी राज्याधिकारियोंमेंसे एक) ने (५३-ई.पै.) पारथियापर आक्रमण किया परन्तु पराजय हुआ और मारागया रोमी गृहयुद्धोंमें[1] पारथियावाले तो पांपीके साथरहे फिर बहुत पीछे सहायक बने आगस्टस कैसरने अपने बलसे इनसे वे शस्त्र और निशान लेलिये जो कैरससके पराजयसे उनके हाथ आये थे - रोमियों और पारथियावालोंमें युद्ध होतेहीरहे परन्तु इनका कुछ फल न निकला - पारथियावाले प्रथम समयके ईसाई लोगोंकी भी रक्षा करतेरहे परन्तु फारसवाले इनके अधीन नावने - अन्तमें आरदेशर बाबेगनने (जिसको यूनानीलोग आरटेज़रकसिस कहतेहैं) इन पारथियावालोंको (२२६-ई.पै.

[1] गृहेश सम्बन्धि

देशसे निकाल दिया सासनवंशका फारसमें राजस्थापन किया फारसका नाम ईरान रखदिया ज़रदुश्तनवा ज़ेरोपेसटरके मत- का प्रचार किया और ईसाई मतको रोकदिया - पारथियाकी राजधानी उसीसमय नष्ट हुई जब यूरपमें रोमकी पश्चिमी राजधानी दूर हुई।

प्रकरण ६

ईडूमिया और उसके मुख्य नगर पेट्राका इतिहास

१०४८ - ई.पै. से १२२ - ई.पै. तक

जब इसराईली लोग मिसरमें कैदभोग रहेथे ईडूमियावा- ले जो एसौकी सन्तानथे बड़े धनवान और बलीबनगयेथे इन्होंने शाईर पर्वतोंमे अपने बड़े २ कठिन दुर्ग बनाये - इन- के देशकी राजधानीको यहूदीलोग बोज़रह कहतेथे और यूना- नीलोग पेट्रा बोलतेथे यह नगर होर पर्वतके नीचे पहाड़ोंके बीचमें स्थितथा इसको एक बड़ा संकोच मार्ग जाताथा जिसका दरा इतना संकोचथा कि दो सवार कठिनतासे इसमेंसे चलसक- तेथे - देशमें भी एक घाटीथी जिसके पर्वतोंमे गुफा बनी हुई थीं यर्मियाह नबीने इसके राज्य नष्ट होनेके विषयमें भविष्यक- थन किया है - जब दाऊद राज्य करताथा उस समय ईडूमि- यावालोंने अपने राज्यको बहुत बढ़ायाथा अकाबाकी खाड़ी पर के बंदरगाहें (इलथ और ईज़ियन) इनहीके वश थे औ- र इनके देशद्वारा हिन्दुस्तान और इथियोपियासे व्यापार होता था दाऊदके जरनैल (अबीशै) ने ईडूमियावालोंको सम्पूर्ण

पराजयकिया परन्तु सुलेमानके राज्यमें हादद एक इडूमिया (अदूम) के युवराजने अपनेदेशके स्वतन्त्र करनेको आक्रमणकिया परन्तु यहूसिफ़तके राज्यतक वे लोग स्वतन्त्र न होसके (८८९-ई.पै.) [1] राजाओंकी पहली पुस्तक ११-१४ - [2] राजाओंकी दूसरी पुस्तक ८-२० - [3] गिनतीकी दूसरी पुस्तक २५-११- देखो जब कैल्डियनवालोंने जरूसेलमका नष्टकियाथा तो इडूमिया वालोंने [4] शत्रुओंकेसाथ मिलकर यहूदियोंको बड़ा क्लेशदियाथा अमूस और अबदिया नबियोंकी पुस्तकें देखो - जब यहूदी लोग कैदमेंथे तो इडूमिया (अदूम) वालोंने पैलस्टाइनका दक्षिणभाग लेलियाथा तबसे जो लोग पैलस्टाइनकी सीमापर बसतेथे उनको अदूमी वा इडूमी कहतेथे और जो पेट्रामेंथे उनको नबाथियन बोलतेथे - ऐन्टीगोनस सीरियाके राजे- ने अपने सेनापति ऐथीनियसको पेट्रापर चढ़ा भेजा इसने जातेही पेट्राको लूटा (नगरके लोग कहीं बाहर व्यापार करने गये हुयेथे) और बहुतसी लूटलेकर पीछे चला आया जब नबाथियनको यह समाचार मिला तो उन्होंने अपनी सेनासे सीरियावालों का पीछाकिया और उनका राजाके समीप आ नष्ट किया - डेमीट्रियस सीरियाकी सेनासे बदला लेने चला परन्तु मार्गमें रयात्राके क्लेश देखकर हट आया - मैकेबीज़के युद्धोंमें यहूदियोंने इडूमियावालोंको सब पराजित किया परन्तु जानहिरकेनियसने उनको (१३०-ई.पै.) वशकिया और मूसाई मत परचलाया तबसे यहूदियोंसे इनकी भिन्नता [5] दूरहोगई और ईसासे प-

(१), (२), (३) अंजीलदेखो (४) यहूदियोंके शत्रुओं

(५) क्योंकि यहूदियों और इडूमिया वालोंका धर्म एक होगयाथा

क सदी पीछेतक इनका नाम निशानभी न रहा - क्वाथियन लोग बहुतकालतक स्वतन्त्र रहे और अपने बलके कारण पांपी और ट्रोजन आदि रोमी मुख्याधिकारीयोंके हाथभी नआये - परन्तु जब व्यापार और मार्गोंसे होने लगा तो पेट्राकाभी समयपाकर नष्ट होगया (यरमियाह नबी ३४-११-देखो)

प्रकरण २।

यहूदियोंका इतिहास इनके (बेबीलनसे) कैद से छूटकर आनेसे जरूसेलमके नष्ट तक।

५३६ - ई. पै. से ७२ - ई. पी. तक

जब साईरसने (५३६-ई. पै. मे) यहूदियोंको बेबीलन से अपने देशको जानेकी आज्ञा दीथी उससमय यहूदाके अंत म राजाका पोता जेरूबाबल इनका अधिपति था पचास हजार के समीप यहूदीलोग पैलसटाइनमे आयेथे किन्तु जब समेरियावालोंने यहूदियोंमे मिलजाना चाहा तो येरूबाबलने नमाना तबसे इन दोनों जातियोंमे सर्वदा शत्रुता होतीरही और समेरियावालोंने फारसके राजाओंको यहूदियोंके विरुध करदिया कहा परन्तु कुछन बनपड़ा उपरायस हिसटैसपीसने (५१६-ई. पै.) मे साईरसकी आज्ञाको दूसरीबार चलाया तब यहूदियों ने तीनवर्षमे मन्दिरको बनालिया - जरकसिसके समयमेंभी यहूदियोंका मान बनारहा और इन्होंने यूनानके युद्धमे राजाको सहायताभी दीथी - आर्टजरकसिसने अपने मन्त्री हामानके कहनेसे यहूदियोंकानष्ट करना चाहा परन्तु उसकी ईस्थरराणी

ने जो यहूदनी थी इनको बचाया- इसी समय राजाकी आज्ञासे पेज़रानबी और भी बहुतसे यहूदीयोंको अपने देशमे लाया- पेज़रा १२ वर्ष शास्ता बनारहा इसने सब धर्म्म पुस्तकोंको इकट्ठा करके पुराने नियमकी पुस्तक (जिसमे तोरेत जबूर आदि हैं) बनाई अपने धर्म्माचारका फिर प्रचार किया और कई एक नवीन व्रत और पर्व स्थापन किये इन बातोंके कारण यहूदी लोग इसे दूसरा मूसा गिनते हैं पेज़राके पीछे नहमियाह जो फारसके राजाका (साकी) शराब पिलानेवाला था शासिता नियत हुआ (४४५-इ. पै.) इसके समयमे जेरूसेलम नगर सम्पूर्ण बनाया गया था और विश्रामवार (शनिश्चरवार) की रीति फिर दृढ़ की - नहमियाहके पीछे जहूदा सीरियाके सूबेके अधीन होगया मालूम होता है - जब महा सिकंदरने फारस पर आक्रमण किया और टायरको लेलिया तो जाहूआ मुख्य पुजारीने अधीनता अंगीकार करली सिकंदरके पीछे ज़हूदाके राज्यको बड़ा क्लेश मिला यह देश सीरिया और मिसरकी राजधानीके बीचमे था इसलिये उन दोनों देशोंके राजा इसको लेना चाहते थे टालामी सोटरने ज़ेरूसेलम पर आक्रमण कर वहांके एक लाख निवासियोंको बंदी कर लेगया और उनको मिसर लीबिया आदि देशोंमे फैला दिया - इस समय साइमन जिसका उपनाम न्यायाधीश था शास्ता था इसके अधिकारमे पुराना नियम फिर सुधारा गया (२९२-इ. पै.) इसी समय सैडूसी मत निकला टालामी फिलेडैल्फसके समय मिसरमे अंजीलका तर्जमा यू-

नानीमे कियागयाथा[1] — यह मिसरका राजा यहूदियोंपर बड़ा प्रस-
न्नथा परन्तु उन्होंने बड़ी मूर्खतासे इसे छोड़ पेन्टीओकसकी अ-
धीनता अंगीकार करली — सीरियाके राजा अपनी प्रजाको यू-
नानी बनाना चाहतेथे जिसका यह फल हुआथा कि पहले तो
फारसके लोग प्रसन्न होगयेथे और फिर यहूदी भी बिगड़गयेथे
ओनियस मुख्य पुजारीने साईमन मन्दिरके हाकमको निकाल
दिया साईमनने सीरियाके राजाको यहूदियोंके विरुध बहुत
कुछ सिखलाया जब पेन्टीओकस इपीफनस राजा बना तो
ओनियस निकालागया और जेसन उसके स्थान स्थापन हुआ
जेसनका यहूदी नाम जीज़सथा परन्तु वह यूनानी आचरणोंको
इतना चाहताथा कि इसने अपना नामभी यूनानी (जेसन) रखा
और यहूदी धर्मकार्यभी यूनानी रीतिपर करदिये मेनीलेयस
अपने भाई जेसनको निकाल आप शास्ता बनबैठा और उस
से अधिक यहूदी धर्मको बिगाड़ा इसने ओनियसको मरवादि-
या और प्रजाको इतना दुःख दिया कि बलवा होगया — जब
पेन्टीओकसने मिसरपर (१७० — ई. पे. मे) आक्रमण किया
तो सीरिया और पैलस्टाइनमे यह चरचा फैलगई कि राजा
मिसरमे मारागयाहै — जेसनने अवकाशपाकर ज़रूसेलमको
आघेरा और इसके कईएक निवासियोंको मारा — परन्तु जब पे-
न्टीओकस मिसरसे पीछे आया तो जेसन भागगया पेन्टीओक-
सने यह सुनकर कि यहूदीलोगोंने उसके पीछे बलवा कियाथा
ज़रूसेलमको आलिया हज़ारों नगरनिवासियोंको मारा और ह-

(१) इस तरजमेको सेपचूएजेंटर कहतेथे क्योंकि सत्तर मनुष्योंने तरजमा कियाथा

ज़ारोंको दासबनाया मन्दिरमें जा जूपीटर ओलिम्पीयसकी प्रतिमा
स्थापन की कईएक यहूदीधर्म्मसम्बन्धी रीतियें जैसे विश्रामवार र-
खना और खतनाकरना बन्दकरदिया अन्तमें राजाने यहूदियोंके
धर्म्मको तोड़ उन्हें मूर्ति पूजक बनाना चाहा यहूदीलोग राज्यपी-
ड़ासे जंगलोंमें भागगये परन्तु वहांभी राजाके दूतोंने उनका पी-
छानछोड़ा एक गुफामें एक हज़ार यहूदी विश्रामवारका व्रतउपा
र रहाथा राजाके दूतोंने उन्हें वहां आमारा - मैटाथियस जो अस-
मोनियन वंशका शिरोमणीथा इससमय अपने मोडिन नामके
गांवमे रहताथा राजाके दूत यहांभी पहुंचे और उन्होंने कहाकि
जो मूर्तिपूजन अंगीकार करलेगा उससे राजा बड़ा प्रसन्न रहेगा
कईएक लोगोंने आज्ञाको माना परन्तु जब उनमेंसे एक टोने ब-
लीदेनेका प्रारम्भ किया तो मैटाथियसने उसे मारडाला और सी-
रियाके दूतोंको निकालदिया इसपर मैटाथियस वहांसे जंगल
में भागगया और जो लोग अपने धर्म्मको नहीं छोड़ना चाहतेथे
उसे वहांजामिले मैटाथियसने कईएक नगरोंसे सीरियावालोंको
निकालदिया परन्तु (१६६ - ई. पू. मे) मरगया और मरनेके सम-
य अपने बेटे जूडसको धर्म्मयुद्धके सहायक होनेको कहगया
इस समयसे सीरिया और यहूदियोंमे युद्ध होने लगा जो यहूदीलो-
ग लड़नेथे उनका नाम मैकेबीज़ पड़गयाथा क्योंकि उन्होंने अप-
ने निशानोंपर चार इबरानी अक्षर ([illegible]), लिखेहुयेथे (याबकी
पुस्तक - १५ - ११ - अंजील) मैकेबीज़ लोगोंने सीरियावालों
को कईबार पराजय किया और बेथसूरा[1]की विजयके पीछे इन्होंने

(१) स्थानका नाम है

ज़रूसेलमको ले लिया। और उसमे फिर अपने धर्म्माचारका प्रचारकिया परन्तु सीरियाके सेनानी वेशीडससे जूडस पराजय हुआ और (१६१- इ.पै.मे) वह मारागया पहूदियोंने इसका बड़ा विलापकिया - वेशीडसने ज़रूसेलमको लेलिया और मैकेबीज़लोगोंसे जो जूडसकेभाई जोनाथन के अधीनथे सन्धि करली और सिकंदरबालसने जो डेमीट्रियसके साथ सीरियाके राज्यकेलिये लडरहाथा जो नाथनको मुख्य और प्रधान पुजारी बनाया - जोनाथनके समय जूडियाके राज्यकी बड़ी बढ़ती हुई इसने रोमियों और स्पार्टावालोंसे सन्धि करलीथी परन्तु (१४३- इ.पै.) वह ट्राईफनके[1] हाथसे मारागया - उसके पीछे मेटाथियसका श्रेष्ठबेटा साईमन मुख्याधिकारी हुआ - इसने सीरियाके राजाकी आज्ञानुसार सिक्का चलाया - आठवर्षके पीछे टालामीने अपने सुसरालसाईमन और उसके बेटोंको मारडाला परन्तु साईमनका छोटाबेटा हिरकेनियस बचकर भागगयाथा और वह लोगोंकी सहायतासे राजा बनगयाथा इसीके समय इडूमी लोग मिलायेगयेथे वह फैरीसीस मतका सहायकथा और (राजा मुख्यपुजारी और नबी) तीनों पदवियें रखताथा इसके मरनेके पीछे इसकाबेटा ऐरिसटाबूलस गद्दीपर बैठा परन्तु थोड़ेकालके पीछे अपने भाईको मरवाने के शोकमे मरगया - इसके पीछे सिकंदर जेनियस राजा और प्रधान पुजारी बना इसके समय फैरीसीसमत ने बहुत उपद्रव मचायाथा यह राजा विषयी शत्रुथा (७९- इ.पै.मे) मरगया और मरनेके समय उसने अपनी स्त्री

(१) यह वही ट्राईफन है जिसका सीरिया राजधानीमे ऊपर वर्णन होचुका है

सिकंदराको मुख्याधिकारी बनाया - सिकंदराने अपने बड़े पुत्र हिरकेनियसको राजा बनाया और फैरेसीस लोगोंकी सहायतासे अपने दूसरे पुत्र एरिसटोबूलसको बन्दीमें रखा सिकंदराके मरने पर एरिसटोबूलसने अपने भाईसे राज छीन लिया परन्तु ऐन्टीपेटर नामक एक इडूमी (यहूदी) हिरकेनियसको पेटरामें लेगया और वहांके अर्बवालोंकी उसकी सहायतामें ला एरिसटोबूलसको जेरूसलममें घेर लिया एरिसटोबूलसने रोमियोंसे सहायता मांगी और दोनों पक्षोंने पांपीको अपना न्यायक माना - एरिसटोबूलसको यह समझ गया कि पांपी उसके भाईको राज देगा तब उसने जेरूसलममें जाकर रोमियोंसे लड़ना चाहा परन्तु जब वह डरकर फिर पांपीके पास आया तो रोमियोंने उसे कैद कर लिया - पांपीने जेरूसलमको जालिया और उसकी दीवार गिरा दी - इस समय बारह हज़ार यहूदी मारागयाथा तब हिरकेनियस मुख्याधिकारी बना परन्तु थोड़े काल पीछे ऐन्टीपेटर उसके स्थान नियत हुआ यह राजाधिकारी पहले तो पांपीके पक्षमें रहा परन्तु उसके मरने पर इसने कैसरको (जब वह सिकंदरियामें था) सहायता दी इसके बदलेमें ऐन्टीपेटरका दूसरा पुत्र हेरड (हेरूदीस) गैलीलीका सूबा बना - इसके पीछे ऐन्टीपेटर विषसे मारागया उसका बड़ा बेटाभी मार दियागयाथा और हेरडको देशनिकाला हुआ - परन्तु मारक ऐन्टनीने हेरडको फिर बुलाकर जूडियाका राजा बनादिया (४० - ई. पू.)

परन्तु यहूदीलोग उससे असन्तुष्ट[1] थे महाहेरड बड़ी क्रूरतासे राज करतारहा इसने मुख्यपुजारी और अपनी स्त्रीको मरवाडाला- जब वह ऐसे उद्धतकाम कररहाथा " कई ज्ञानियोंने यरूसलममे आकर कहाकि यहूदियोंका राजाजो उत्पन्न हुआ सोकहांहै" (मत्तीकी अंजील २- २से १९ तक) हेरड सत्तर वर्षकी अवस्था भोगकर मरगया और उसके पीछे उसका पुत्र आरचीलेयस राजाबना - इसने प्रजाको इतना क्लेश दियाकि उन्होंने कैसरकेपास अरजी दी कैसरने हेरडके राज्यको उसके पुत्रोंमें बान्ट दिया आरचीलेयस ऐथनारची (अल्पराजा) की पदवीसे जूडियाका अधिपति बनायागया परन्तु आरचीलेयस ऐसा बुरा निकला कि रोमियोंने उसे गालदेशमे निकाल दिया तबसे जूडिया रोमी राजधानीका एक सूबा बनायागया - २०- ई.पी. मे पाईलेट सूबा नियत हुआ परन्तु यहूदीलोग इसके आनेसे प्रसन्न नहुये क्योंकि जब वह यरूसलममे आयाथा तो वह अपने साथ रोमी धंजा[2] लायाथा जिनको यहूदियोंने यह समझाथा कि वह मूर्तियें लायाहै - इसके समयमे युहन्ना बपतिसमा देनेवाला जंगलमे लोगोंको सिखाताथा मत्ती ३-१-से १२ तक अंजील - जब ईसा तीसवर्षका हुआ तो उसने युहन्नासे बपतिसमा पाया और तबसे लोगोंको मेरना प्रारम्भ किया (मत्तीकी अंजील ३- और ४) हेरड ऐन्टीपसने अपने भाई फिलिपकी स्त्रीको[3] विवाहलिया इससे प्रजा बड़ी क्रुध हुई युहन्नाने ऐन्टीपसको जाकर अपवादित किया तब हिरोडियसने

(१) क्योंकि यह इडूमीया था इसको महा हेरड कहतेथे (२) इन धंजाओंपर देवताओंकी मीटू, रोम आदिकी आकृतियें लगी हुई होतीथीं
(३) हिरोडियस नामनी

अपनी छुरीके द्वारा अपने भतोंको कहाकर शुद्धात्माको कैदमे मार डाला - जब ईसा लोगोंको परमेश्वरकी ओर फेररहाथा यहूदियोंने उसे अपवादित किया कि वह रोमीराजधानीका नष्ट करना और आपराजा बनना चाहताहै - पाईलेटने उसे दो और दोषयोंके साथ सूलीपर मरवादिया - (३३ - ई. पी.) (ईसाके मरन और जी उठनके विषयमे अंजील देखो) - पेंटीकोस्टके दिन जब ईसाके शिष्योंपर पवित्र आत्मा उतरा था तीनहज़ार ईसाई बनगए और फिर दिनपर दिन बढ़ती होतीरही - इसका कारण यहथा कि यहूदी लोगोंके आचरण बिगड़े हुयेथे और इनमे ईसाईलोग अपने शुद्ध आचरणोंके कारण पवित्र और धार्म्मिक गिने जातेथे इनमे एकता,[1] मनकी शुद्धता और आपसमेकी प्रीति बड़ीथी ईसाईलोग धर्मके लिये अपनी जान देदेतेथे जैसे एकस्टीफन नामक ईसाई ईसापर विश्वास रखनेके कारण पत्थरोंसे मारागयाथा और मारनेहारोंने "अपने वस्त्र साल (सोलस) नाम एक तरुण के पावोंपास रखदिये" (प्रेरितोंकी क्रिया ७ - ५८ अंजील) साल ईसाय़ोंका बड़ाभारा शत्रुथा परन्तु पीछे वह ईसाई हुआ और ईसाके नामको देशोंमे फैलाने लगा (प्रेरितोंकी क्रिया ९ वां- प- देखो) पाईलेट अपनी क्रूरताके कारण अपने राज्य प्रबन्धके लिये उत्तरदेनेको रोममे बुलायागया और वहांसे (जब वह रूठा हुआ) गालमे देशनिकाला दियागया जहां वह अपने हाथसे मरगया - हैरिड ऐगरीपा महा हैरिडका पोता जो

(१) जो किसीके पास धन रुपेया होताथा वह सब ईसाईयोंका धन समझा जाताथा और उसे सब बरतेथे।

ग्रीपाने मेया कैलीगूलाके समय छोड़गया और यहूदियाका रा-
जा बनायागया (४१- ई.पी.) क्लाडियसके समय ऐगरीपाने अ-
पने राज्यको औरभी बढ़ाया परन्तु वह यहूदियोंके प्रसन्न करने
केलिये ईसाईयोंको क्लेशदेतारहा यूहनाका भाई सेन्टजेमस
मारागयाथा और पितरस (पीटर) कैदकियागयाथा ऐगरीपा
के मरनेपर रोमियोंने यहूदाकी राजधानीको फिरलेलिया परन्तु
इसदेशमे भारा उपद्रव मचनेलगा बटमार और लुटेरोंसे प्रजाने
बड़ाक्लेश उठाया और एक प्रकारके लोग जो अपने तंई अतिश-
उरके (शिकारी) कहलातेथे बड़े २ बुरे काम करतेथे इनमेसे
फेलक्स सूबाबनकर आया इसके समयपाल वापौलस (स-
लका ईसाई नाम) अपिवादित कियागया फेरिलोंकी किया ५४
५९- प्र. इसने पौलसको कैद किया और जब इसकी जागा
फेसटस आयातो उसे कैदमेही छोड़गया फेसटसके साम्हने
पौलसका न्याय फिर होनेलगा परन्तु पौलसने रोममे जाकर
कैसरके आगे न्याय कराना चाहा इसीलिये पौलस रोमको भे-
जागया फेसटसके पीछे एलबीनस आया और एलबीनसके
जागा फलोरस सूबाबना (६४- ई.पी.) यह एकबड़ा बुराहु-
आथा सारी यहूदी जातिने इसके[२] कहनेसे रोमवालोंसे बिगाड़की
(६७- ई.पी.) यह नीरोका समयथा और वेसपेसियन नामक
सेनानी यहूदियोंसे लड़नेके लिये भेजागया - वेसपेसियनके
मरने परकैसाकेहर एक स्थानपर लड़े परन्तु वह सीज़रियामे
पहुंचकर वहां इस आशयसे ठहरगयाकि यहूदी लोग परस्पर

(१) इसका एक बड़ा भाग गलाथा
(२) यह समझताथा कि प्रजाके बिगड़नेसे उसके अपने बुरे काम छिपे रहेंगे